



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

सी.जी.-डी.एल.-सा.-03102020-222203
CG-DL-W-03102020-222203

साप्ताहिक/WEEKLY
प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 40] नई दिल्ली, शनिवार, अक्टूबर 3—अक्टूबर 9, 2020 (आश्विन 11, 1942)
No. 40] NEW DELHI, SATURDAY, OCTOBER 3—OCTOBER 9, 2020 (ASVINA 11, 1942)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।
(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

विषय-सूची

पृष्ठ सं.

पृष्ठ सं.

भाग I—खण्ड-1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं.....	491
भाग I—खण्ड-2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं.....	641
भाग I—खण्ड-3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं.....	7
भाग I—खण्ड-4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं.....	1579
भाग II—खण्ड-1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम.....	*
भाग II—खण्ड-1क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ.....	*
भाग II—खण्ड-2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट.....	*
भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (i)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिनमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल हैं).....	*
भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (ii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को	

छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं.....	*
भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (iii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (जिसमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी प्राधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं).....	*
भाग II—खण्ड-4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश.....	*
भाग III—खण्ड-1—उच्च न्यायालयों, नियंत्रक और महालेखापरीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार से सम्बद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं.....	1017
भाग III—खण्ड-2—पेटेंट कार्यालय द्वारा जारी की गई पेटेंटों और डिजाइनों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं और नोटिस.....	*
भाग III—खण्ड-3—मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं.....	*
भाग III—खण्ड-4—विविध अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं.....	303
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा जारी किए गए विज्ञापन और नोटिस.....	1149
भाग V—अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़ों को दर्शाने वाला सम्पूर्ण.....	*

*आंकड़े प्राप्त नहीं हुए।

CONTENTS

	Page No.		Page No.
PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	491	by the Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*
PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	641	PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts, published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than Administration of Union Territories)	*
PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence	7	PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence	*
PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence	1579	PART III—SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India	1017
PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations	*	PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs	*
PART II—SECTION 1A—Authoritative texts in Hindi language, of Acts, Ordinances and Regulations	*	PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	*
PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills	*	PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	303
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (i)—General Statutory Rules (including Orders, Bye-laws, etc. of general character) issued by the Ministry of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*	PART IV—Advertisements and Notices issued by Private Individuals and Private Bodies	1149
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and		PART V—Supplement showing Statistics of Births and Deaths etc. both in English and Hindi	*

*Folios not received.

भाग 1—खण्ड 1**[PART I—SECTION 1]**

[(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं]

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 26 जनवरी 2020

सं. 49-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, बिहार पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार प्रदान करते हैं:—

श्री विवेक कुमार,	असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार
-------------------	-------------------------	-------------------------------------

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

7 मार्च, 2017 को सीआरपीएफ कोबरा-कैंप, जिला-गया, बिहार को एक खुफिया सूचना मिली कि नक्सली संगठन के जोनल कमांडर अनिलजी उर्फ दीपक को गया और नवादा जिले की सीमा पर गांव नवाडीह, परोरियातरी बसकटवा और थमकोला क्षेत्र के निकट कुछ अन्य खूंखार संगठनों के साथ देखा गया। यह क्षेत्र घने वन क्षेत्र से घिरा हुआ है। इस सूचना की जांच की गई और इसकी पुष्टि होने के बाद कमांडेंट, 205 कोबरा बटालियन, कैम्प गया और वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, गया ने इस पर चर्चा की तथा उनकी गिरफ्तारी के लिए छापेमारी की योजना बनाई।

श्री दिलीप मल्लिक, डिप्टी कमांडेंट और श्री दिवेश मिश्रा, असिस्टेंट कमांडेंट के नेतृत्व में कोबरा बटालियन, कैंप- गया की दो टीमों नं. 7 और नं. 9 बनाई गई। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, गया ने पैरा मिलिट्री फोर्स की प्रत्येक टीम का साथ देने के लिए पुलिस लाइन- गया के दो सिविल पुलिस अधिकारियों, असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर श्री विवेक कुमार और असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर श्री सुरेन्द्र राम दोनों को तैनात किया, क्योंकि ये सिविल पुलिस अधिकारी पहाड़ी और घने वन क्षेत्र में एकत्र होने वाली जगह की स्थलाकृति से परिचित थे।

छापा मारने वाली उपर्युक्त पार्टी ने उस स्थान तक ट्रेन से पहुँचने का फैसला किया, क्योंकि घने जंगल, चट्टानी पत्थरों और घनी झाड़ियों से घिरे इस इलाके तक पहुँचना बहुत मुश्किल था। टीम आधी रात को गया- रेलवे स्टेशन से ट्रेन में सवार हुई और बसकटवा के पास एकत्र होने वाली संभावित जगह से बहुत पहले नीचे उतर गई। हालाँकि, यह क्षेत्र घनी झाड़ियों और चट्टानी पत्थरों के कारण लगभग दुर्गम था, लेकिन छापेमारी पार्टी किसी तरह से गांव- थमकोला की ओर बढ़ी तथा गांव थमकोला और परोरियातरी के उत्तर-पश्चिम में लगभग 1.5 किलोमीटर की दूरी पर पहुँच गई। छापेमारी पार्टी को फिर से पता चला और पुष्टि हुई कि जोनल कमांडर अनिल जी उर्फ दीपक अन्य संगठनों के साथ पास की एक पहाड़ी पर डेरा डाले हुए है।

अब सामरिक रणनीति के साथ इन संगठनों को घेरने का निर्णय लिया गया। दो सर्च टीमों और दो कॉर्डन टीमों बनाई गई। दो सर्च टीमों में से एक का नेतृत्व असिस्टेंट कमांडेंट, श्री दिवेश मिश्रा द्वारा किया गया। इस टीम को गया-पुलिस लाइन के एसआई विवेक कुमार, सिविल पुलिस अधिकारी और सीपीएमएफ टीम नंबर -7 के सदस्य, एसआई अभय शर्मा, हवलदार चन्नील सिंह, कांस्टेबल पवन कुमार, कांस्टेबल बलविंदर सिंह, कांस्टेबल विनोद कुमार चौधरी, कांस्टेबल दिलीप कुमार, कांस्टेबल अनूप कुमार और कांस्टेबल महेंद्र कुमार को मिलाकर किया गया था। दूसरी खोज सर्च टीम का गठन डिप्टी कमांडेंट दिलीप मल्लिक के नेतृत्व में सीपीएमएफ टीम नंबर 9 के सदस्यों को मिलाकर किया गया। दोनों सर्च टीमों, पहली असिस्टेंट कमांडेंट दिवेश मिश्रा के नेतृत्व में एसआई विवेक कुमार के साथ और दूसरी, डिप्टी कमांडेंट दिलीप मल्लिक के नेतृत्व में लक्ष्य की ओर आगे बढ़ गई और उनके पीछे एसआई अभय शर्मा के साथ टीम के कुछ सदस्य थे। इस क्षेत्र का घेराव करने के लिए दो कॉर्डन टीमों, एक सीपीएमएफ टीम नं. 7 के सदस्यों को शामिल करके और दूसरी सीपीएमएफ टीम नं. 9 के सदस्यों को मिलाकर बनाई गई।

सभी रणनीतिक तरीके से लक्ष्य की ओर बढ़ गए और जब टीम वहाँ मौजूद संगठनों के करीब पहुँची, तो उन्होंने असिस्टेंट कमांडेंट, दिवेश मिश्रा और एसआई विवेक कुमार वाली पहली सर्च टीम की ओर गोलियां चला दीं। उन्होंने किसी तरह से वहाँ बड़े बड़े पत्थरों के पीछे आड़ ले ली, लेकिन सर्च टीम के सदस्यों का जीवन खतरे में था, क्योंकि उन पर लगातार गोलीबारी हो रही

थी। छापेमारी टीम ने चिल्लाकर कहा, कि वे पुलिसकर्मी हैं और नक्सलियों से आत्मसमर्पण करने के लिए कहा, परंतु इसके बावजूद नक्सलियों की ओर से भारी गोलीबारी हुई और वे "माओवादी जिन्दाबाद" के नारे लगाने लगे। सर्च टीम के कमांडर ने आखिरकार अपनी जान बचाने के लिए नक्सलियों की गोलीबारी का जवाब देने का फैसला किया। नक्सलियों ने दूसरी सर्च टीम की ओर भी फायरिंग शुरू कर दी, उन्होंने फायर का जबाब फायर से दिया। कॉर्डन टीमों अपेक्षाकृत एक सुरक्षित पोजीशन में थीं, क्योंकि वे नीचे की ओर एक सुरक्षित दूरी पर थीं, लेकिन दोनों सर्च टीमों का जीवन खतरे में था। दोनों सर्च टीमों के सदस्य नक्सल की गोलीबारी का जवाब देते हुए धीरे-धीरे रेंगते हुए आगे बढ़ गए। नक्सलियों द्वारा दागी गई गोलियां लगातार बड़े बड़े उन पत्थरों से टकरा रही थीं, जिनकी आड़ में छापेमारी करने वाली पुलिस पार्टी की जान बची हुई थी। कुछ गोलियां पुलिसकर्मीयों के पास से भी निकली, जिनसे उनकी जान को खतरा हो सकता था। कुछ समय बाद नक्सलियों की ओर से फायरिंग बंद हो गई और फिर पुलिस पार्टी ने नक्सलियों की गतिविधियों को जानने की कोशिश की, लेकिन जब खुद आश्वस्त हो गए कि नक्सली कोई हरकत नहीं कर रहे हैं, तो वे अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़े और उन्हें खोजना शुरू किया। उन्हें वहां चार शव पड़े मिले। अत्याधुनिक हथियार और गोला-बारूद, खाली कारतूस, मोबाइल फोन, पिडू बैग आदि वहां पड़े मिले। यह भी देखा गया कि पुलिस की गोलीबारी के कारण नक्सली पार्टी के अन्य सदस्य उस जगह से भाग गए थे। कॉर्डन टीम ने कुछ दूरी तक उनका पीछा भी किया, लेकिन घने जंगलों वाले इलाके होने के कारण नक्सली भागने में सफल हो गए।

घटनास्थल पर, नक्सलियों द्वारा छोड़ी गई दो इंसास राइफल, एक एके -47 राइफल, एक एसएलआर और इसकी मैगजीन, भारी मात्रा में गोला-बारूद, आईईडीएस, डेटोनेटर, खाली कारतूस और अन्य सामान बरामद कर जब्त कर लिया गया है। (जब्त सूची की प्रति संलग्न)

सभी चार शवों की पहचान बाद में 1. अनिल यादव उर्फ दीपक 2. चंदन यादव उर्फ नेपाली 3. सुखरी चौधरी उर्फ प्रमोद उर्फ तोफानी जी 4. अरविंद वर्मा उर्फ अरविंद जी उर्फ लुल्हा के रूप में हुई। सभी का पिछला आपराधिक इतिहास रहा है तथा वे गया और नवादा जिले के कई मामलों में वांछित थे। (मामलों की सूची संलग्न)

इस घटना के बारे में, नवादा जिले के सिरदला पुलिस स्टेशन में आईपीसी की धारा 147/148/149/333/332/337/324/342/307/379/411, यूएपी अधिनियम की धारा 15/18/19 और आयुध अधिनियम की धारा 25 (1-बी) ए/26/35/27 के तहत एक प्राथमिकी सिरदला-पीएस केस संख्या 47/17 दिनांक 09.03.2017 दर्ज है।

इस पूरी घटना में, दोनों सर्च टीमों ने असाधारण और परम शौर्य, साहस और कर्तव्य के प्रति निष्ठा का प्रदर्शन किया है। असिस्टेंट पुलिस सब इंस्पेक्टर, श्री विवेक कुमार, जो एक सिविल पुलिस अधिकारी हैं, और पैरा मिलिट्री फोर्स के रूप में प्रशिक्षित नहीं हैं, ने अपनी जान को खतरा होने पर भी पूरा साहस दिखाया। उनकी समर्पण भावना एवं वीरतापूर्ण कार्य की सराहना और सम्मान किया जाना चाहिए।

इस ऑपरेशन में, श्री विवेक कुमार, असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 08/03/2017 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/102/2019-पीएमए)

(No. 18004/01/2020—CA-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 50 -प्रेज/2020—राष्ट्रपति, बिहार पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

1	अमरेन्द्र किशोर	सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक
2	बैजनाथ कुमार	सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार
3	देवराज इंद्र	सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक
4	संतोष कुमार सिंह	सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार

5	रूपक रंजन सिंह	सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक
6	पंकज आनंद	सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

मधुबनी जिले के एक खूंखार अपराधी रंजीत महतो उर्फ रंजीत डॉन को गिरफ्तार करने के लिए सब इंस्पेक्टर अमरेन्द्र किशोर के नेतृत्व में विशेष कार्य बल (एसटीएफ) के अधिकारियों की एक टीम गठित की गई, जिसमें सब इंस्पेक्टर देवराज इंद्र, संतोष कुमार और बैजनाथ कुमार शामिल थे। यह अपराधी लंबे समय से न्यायिक हिरासत से भगोड़ा घोषित था और उस पर 50,000 रुपये का ईनाम था। रंजीत महतो हत्या, लूट, डकैती और जबरन धन वसूली के मामलों सहित 20 आपराधिक मामलों में मुख्य आरोपी था। उसकी आवाजाही और आपराधिक गतिविधियों के बारे में खुफिया जानकारी एकत्र करने के दौरान यह पाया गया कि वह अपने गिरोह के सदस्यों के साथ लेयनगर में रह रहा था और एक जघन्य अपराध की योजना बना रहा था।

विशेष कार्य बल की टीम दिनांक 15.5.2017 को मधुबनी पहुंच गई। रंजीत डॉन को गिरफ्तार करने के लिए पुलिस अधीक्षक, मधुबनी के निर्देशों के तहत उनकी जिला पुलिस की टीम के साथ तालमेल बैठकर एक रणनीतिक योजना तैयार की गई। उसके गिरोह के सदस्यों के उसके साथ मिलने के स्थान के बारे में एक गुप्त सूचना पर कार्रवाई करते हुए छापेमारी करने वाला पुलिस दल दो टीमों बनाकर दिनांक 16.05.2017 को रात्रि लगभग 1.10 बजे लक्षित गाँव, गोबरही के लिए निकल पड़ा। निर्धारित योजना के अनुसार स्ट्राइक टीम, जिसमें एसआईपी अधिकारी, सब इंस्पेक्टर अमरेन्द्र किशोर, देवराज इंद्र, संतोष कुमार और बैजनाथ कुमार के साथ सब इंस्पेक्टर रूपक रंजन सिंह और पंकज आनंद, मधुबनी डीपीएफ भी शामिल थे, ऑपरेशन की पूरी गोपनीयता बनाए रखने के लिए पुलिस की गाड़ी को डुल्लीपट्टी गांव के पास छोड़कर पैदल ही गोबरही गांव की ओर चल पड़ी। लगभग 30-35 मिनट चलने के बाद यह टीम गोबरही में ईंट से निर्मित एक घर के पास पहुंची। योजना के अनुसार कार्रवाई करते हुए, गिरोह के सदस्यों को एल आकार में घेरने के लिए सब इंस्पेक्टर संतोष कुमार सिंह और देवराज इंद्र को ईंट से निर्मित एक पुराने घर के पास तैनात करके सब इंस्पेक्टर अमरेन्द्र किशोर और बैजनाथ कुमार रेंगते हुए सावधानी से आगे बढ़े। जब पंकज आनंद और रूपक रंजन सिंह के साथ सब इंस्पेक्टर अमरेन्द्र और बैजनाथ कुमार अपराधियों के छिपने के स्थान के पास पहुंचे, तो उन्होंने चांद की उपलब्ध रोशनी में ईंट से निर्मित एक घर के आहाते के सामने एक मोटरसाइकिल खड़ी देखी। स्ट्राइक टीम के लीडर, सब इंस्पेक्टर अमरेन्द्र ने खुद को पुलिस अधिकारी बताते हुए आवाज लगाई। 20-25 सेकंड की खामोशी के बाद, अचानक ही घर से गोलियों की बौछार शुरू हो गई। पुलिस टीम ने जमीन पर निर्मित मेड़ के साथ पोजीशन लेकर उन्हें आत्मसमर्पण करने के लिए कहा। अपराधियों ने पुलिस की परवाह न करते हुए, इरादतन लगातार गोलियों की बौछार जारी रखी। चूंकि गोलीबारी सीधे स्ट्राइक टीम की तरफ आ रही थी, इस कारण स्थिति और भी अधिक गंभीर बन गई और पुलिस अधिकारियों को आत्मरक्षा में जवाबी गोलीबारी करने के लिए मजबूर होना पड़ा। इस बीच, सब इंस्पेक्टर संतोष कुमार और देवराज इंद्र ने अपनी पीछे की पोजीशन को छोड़ा तथा वे स्ट्राइक टीम के सब इंस्पेक्टर बैजनाथ कुमार और रूपक रंजन सिंह के साथ जा मिले और ऐसा करते वक्त उन्होंने यह परवाह नहीं की, कि अपराधियों की गोलियां उन्हें लग सकती हैं और वे ईंट से निर्मित इस लक्षित घर के पास कच्ची और उबड़-खाबड़ जमीन पर पूर्व से उत्तर की तरफ रेंगते हुए आगे बढ़े और उन्होंने एल आकार में पोजीशन ले ली, ताकि वे अपराधियों की घेराबंदी करने और उनके भागने के रास्तों को बंद कर सकें। एक-दूसरे पर यह गोलीबारी 20-25 मिनट तक जारी रही, जिसमें अपराधियों ने अंधाधुंध गोलीबारी की, जबकि स्ट्राइक टीम के सदस्यों ने नियंत्रित और सटीक गोलीबारी की। सुबह लगभग 4.45 बजे घटना स्थल की तलाशी ली गई। ईंट से निर्मित इस घर के आहाते में एक उठी हुई जगह के बगल में एक शव पड़ा मिला, जिसके दायें हाथ में 9 एमएम के 5 जिंदा कारतूसों वाली मैगजीन के साथ एक देशी निर्मित कार्बाइन थी। शव से लगभग 06 मीटर दूर पश्चिम में 9 एमएम के 5 जिंदा कारतूसों से भरी हुई मैगजीन के साथ एक रेगुलर कार्बाइन बरामद की गई। घटना स्थल से कई जिंदा और खाली कारतूस बरामद किए गए। भारी मात्रा में हथियारों और अन्य सामग्री की बरामदगी से यह पुष्ट होता है कि मारे गए व्यक्ति के साथ एक से ज्यादा अपराधी पुलिस टीम पर गोलीबारी करने में शामिल थे, लेकिन वे गोलीबारी की आड़ में भागने में सफल रहे।

शव की पहचान रंजीत डॉन उर्फ रंजीत महतो के रूप में हुई। हाल ही में इस अपराधी के गुर्गों ने जयनगर बाजार में एक ईंट व्यापारी नंद युक्ले की दिनदहाड़े हत्या कर दी थी। लेयनगर की जनता, विशेष रूप से ट्रेडरों और कारोबारियों ने राहत की सांस ली तथा पुलिस पार्टी की वीरता और दृढ़ता की अत्यधिक सराहना की।

इस संयुक्त ऑपरेशन में, नामितों ने स्वयं को सौंपे गए कार्य को पूरा करने में अदम्य साहस, सराहनीय धैर्य और प्रतिबद्धता का प्रदर्शन किया। टीम का नेतृत्व करते हुए सब इंस्पेक्टर अमरेन्द्र किशोर ने, अपराधियों में से एक को मार गिराने के लिए एक चतुराई पूर्वक योजना बनाई और उसे अंजाम दिया तथा उनके सहयोगियों सब इंस्पेक्टर बैजनाथ कुमार, संतोष कुमार सिंह, देवराज इंद्र, पंकज आनंद और रूपक रंजन सिंह ने योजना को अंजाम देने के दौरान अत्यंत वीरता का प्रदर्शन किया। इस ऑपरेशन में, सब इंस्पेक्टर अमरेन्द्र किशोर, देवराज इंद्र, बैजनाथ कुमार और संतोष कुमार सिंह को चोटें आईं, लेकिन योजना का कड़ाई से पालन करते हुए उन्होंने फोर्स की कमी, कम रोशनी और बैकअप टीम के देरी से पहुंचने जैसी सभी बाधाओं के बावजूद लक्ष्य की दिशा में सकारात्मक

कार्रवाई की, जिसके परिणामस्वरूप एक बहुत ही खतरनाक, बेखौफ और शैतान अपराधी रंजीत डॉन को मारा जा सका और परिष्कृत हथियारों की बरामदगी हुई।

इस ऑपरेशन में, सर्व/श्री अमरेन्द्र किशोर, सब इंस्पेक्टर, बैजनाथ कुमार, सब इंस्पेक्टर, देवराज इंद्र, सब इंस्पेक्टर, संतोष कुमार सिंह, सब इंस्पेक्टर, रूपक रंजन सिंह, सब इंस्पेक्टर और पंकज आनंद, सब इंस्पेक्टर ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 17.05.2017 से दिया जाएगा।

(संख्या 11020/175/2019-पीएमए)

(No. 18004/01/2020—CA-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन

विशेष कार्य अधिकारी

सं. 51-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, छत्तीसगढ़ पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01.	इंदिरा कल्याण एलिसेला, आईपीएस	अपर पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक
02.	रमाकांत तिवारी	इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार
03.	संतोष बघेल	असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक
04.	लुबेंद्र पुजारी	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
05.	दिनेश खांडे	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

बीजापुर पुलिस ने जनवरी 2016 में महाराष्ट्र पुलिस के साथ मिलकर महाराष्ट्र राज्य से सटे हुए जिले के उत्तरी हिस्से माओवादियों की नेशनल पार्क एरिया कमिटी) में दो संयुक्त ऑपरेशन चलाए हैं, और एक प्लाटून कमांडर रैंक के माओवादी और मिलिशिया सदस्य को मार गिराने में सफलता प्राप्त की। बरामद किए गए सामान में, अन्य चीजों के अलावा एक इंसान राइफल, मजल लोडिंग गन, डेटोनेटर आदि शामिल थे। तेलंगाना में डिवीजनल कमिटी मेंबर (डीवीसी) रैंक के एक आत्मसमर्पणकर्ता काडर से पूछताछ के दौरान प्राप्त गोपनीय सूचना के आधार पर बहुत कम समय में फरवरी माह में एक और संयुक्त ऑपरेशन शुरू किया था। उसे पहले के ऑपरेशनों की घटनाओं की जानकारी थी। श्री कल्याण एलिसेला, अपर पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन), बीजापुर और श्री संतोष कुमार सिंह, अपर पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन), सुकमा द्वारा 10 फरवरी, 2016 को पूछताछ की गई थी तथा ओन्द्री, गुंडोपुरी, रेंगावाया, गार्टुल, इडापल्ली और सेंदरा गाँवों के आसपास के जंगलों को निशाना बनाते हुए जल्द ही ऑपरेशन शुरू करने का निर्णय लिया गया।

ऑपरेशन की योजना श्री आई.के. एलिसेला, आईपीएस, अपर पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन), बीजापुर द्वारा तैयार की गई तथा उसे सूचना और आवश्यक सहयोग के लिए श्री मंजूनाथ सिंघे, आईपीएस, अपर पुलिस अधीक्षक गढ़चिरौली को भेजा गया।

श्री कल्याण एलिसेला के नेतृत्व में 11 फरवरी, 2016 की दोपहर में जिला रिजर्व गार्ड्स (डीआरजी), बीजापुर के कुल 76 लोग रवाना हुए और थाना- बेदरे के पास उतर गए तथा लक्ष्य क्षेत्र की ओर बढ़ गए। जल्दी सूर्यास्त होने और चंद्रमा की रोशनी न होने के कारण पार्टियों ने रेंगवेया गांव के पास पहाड़ियों में शीघ्र ही एक एल्यूमीनियम ले लिया। फिर पार्टियां चतुराई से आगे बढ़ीं और आसपास के गांवों में तलाशी ऑपरेशन चलाया। टीम को तीन समूहों में विभाजित किया गया था, जिनकी कमान श्री कल्याण एलिसेला, अपर पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन), अब्दुल समीर, इंस्पेक्टर और रमाकांत तिवारी, इंस्पेक्टर को दी गई थी।

पुलिस पार्टी 12 फरवरी की सुबह के समय लक्ष्य क्षेत्र की ओर बढ़ गई। जैसे ही पुलिस पार्टी 1045 बजे के आसपास जंगलों में एक छोटी सी धारा (गुंडोपुरी नाला) के पास पहुंची, इंस्पेक्टर रमाकांत तिवारी की अगुवाई वाली पार्टी के दाहिने ओर गोलीबारी होने लगी। बीच में और बाईं ओर तैनात अन्य दो पार्टियां कवर लेते हुए बचाव के लिए पहुंच गईं और उन्होंने माओवादियों, जो दो या तीन समूहों में दिखाई दे रहे थे, पर गोलीबारी की। अगले तीस से पैंतीस मिनट के लिए माओवादियों और सुरक्षा बलों के बीच लगातार गोलीबारी होती रही।

असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर संतोष बघेल और कांस्टेबल दिनेश खांडे की सहायता से इंस्पेक्टर रमाकांत तिवारी के नेतृत्व वाली पार्टी गोलीबारी के दौरान मजबूती से डटी रही और जवाबी कार्रवाई करते रही। इस बीच, अपर पुलिस अधीक्षक कल्याण एलिसेला की कमान में बीच में तैनात पार्टी ने कांस्टेबल लुबेंद्र पुजारी की मदद से जवाबी हमला किया, जिससे माओवादी मैदान छोड़ कर पहाड़ियों की ओर भाग गए। हालाँकि, वह असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर संतोष बघेल की मदद में आगे बढ़ते रहे और जान को खतरा होने के बावजूद नक्सलियों का पीछा करते रहे। इंस्पेक्टर अब्दुल समीर ने उन्हें सहायता प्रदान की और आगे बढ़ती पार्टी को कवर फायर प्रदान किया। पीछा करने के दौरान गोलीबारी बराबर होती रही। पिछले ऑपरेशनों में हुई चूकों से सबक लेते हुए, अपर पुलिस अधीक्षक, कल्याण एलिसेला ने अपने आदमियों को माओवादियों द्वारा छोड़े गए खून के निशान का पीछा करने का आदेश दिया। उनकी यह तरीक़ीब काम कर गई और गोलीबारी की जगह से काफी दूर उन्होंने एक माओवादी का शव बरामद किया। यह सुनिश्चित करने के बाद कि दोनों तरफ से गोलीबारी बंद हो गई है, ऑपरेशन वाले इलाके की छानबीन की गई। इसके परिणामस्वरूप, माओवादियों के दो और शव, (कुल तीन), एक 303 राइफल, दो 315 राइफल, तीन मजल लोडिंग गन, एसएलआर के ज़िंदा कारतूस, एके47 आदि बरामद किये गए। इसके अतिरिक्त, माओवादियों के पिडू बैग, उनकी दैनिक उपयोग की वस्तुएं, बैटरी, तार, किताबें भी बरामद की गईं। गोलीबारी में कोई भी सुरक्षाकर्मी घायल नहीं हुआ।

बीजापुर जिले के निकटतम पुलिस स्टेशन पहुंचने में काफी लंबी दूरी तय करनी पड़ती इसलिए यह निर्णय लिया गया कि महाराष्ट्र सीमा की ओर बढ़ना चाहिए। चूंकि, गोलीबारी होने के कारण पुलिस की मौजूदगी का पता चल चुका था, इसलिए टीम को समूहों में विभाजित किया गया था। इंस्पेक्टर अब्दुल समीर की अगुवाई में एक समूह गार्हुल गांव की ओर रवाना किया गया, जिसने समस्त सामान बरामद किया, जबकि इंस्पेक्टर रमाकांत तिवारी, कांस्टेबल दिनेश खांडे और लुबेंद्र पुजारी की सहायता वाला अपर पुलिस अधीक्षक श्री कल्याण एलिसेला के नेतृत्व में दूसरा समूह मुठभेड़ स्थल के दक्षिण की ओर बढ़ा। वे नक्सलियों के अम्बुश से बचने के लिए लंबे रास्ते पर चल पड़े। पार्टियों ने 12 फरवरी की रात को अलग-अलग जगहों पर एल्यूमीनियम लिया और 13 फरवरी, 2016 तड़के महाराष्ट्र बॉर्डर पर स्थित थाना- दमरांचा की ओर चल पड़ी। थाना-दमरांचा को मुठभेड़ की जानकारी दी गई और इसलिए उन्होंने कॉरिडोर सुरक्षा प्रदान करने के लिए उस रास्ते पर मार्च किया, जिस पर बीजापुर पुलिस को जाना था। टीमों ने महाराष्ट्र पुलिस की टीमों के संरक्षण में इंद्रावती नदी को सुरक्षित पार कर लिया और थाना दमरांचा पहुंच गई। टीम के सभी सदस्य भारतीय वायु सेना द्वारा समय पर उपलब्ध कराए गए एमआई-17 हेलीकॉप्टर द्वारा वापस बीजापुर आ गए।

बाद में, मारे गए नक्सलियों की पहचान पल्लो सुक्कु, कमांडर, एरिया एक्शन टीम, कुम्मा सोमा, सदस्य, मिलिशिया और सुखराम, सदस्य मिलिशिया प्लाटून के रूप में हुई। बीजापुर पुलिस टीम के असाधारण साहस के कारण यह ऑपरेशन सफल रहा। पुलिसकर्मियों ने राष्ट्रीय हित में अपनी जान खतरे में डाल कर सफलतापूर्वक तीन माओवादियों को मार गिराया, जिनके शव बाद में कब्जे में लिए गए। मुठभेड़ स्थल के पास मिले पर्याप्त सबूतों से कई नक्सलियों के घायल होने का पता चला और शायद बाद में उनकी मृत्यु भी हो गई हो।

श्री कल्याण एलिसेला ने अपने लोगों, जो मारक क्षेत्र में आ गए थे, की जान के लिए खतरे को भांपते हुए, अपने लोगों को प्रेरित करने में असाधारण साहस और सूझबूझ दिखाई तथा जवाबी कार्रवाई की। उनके नेतृत्व और निर्भीक कार्रवाई के परिणामस्वरूप जान-माल का कोई नुकसान हुए बिना सफलता प्राप्त की गई। लक्ष्य क्षेत्र के नजदीक पार्टियों को विभाजित करने और फायरिंग के बाद फिर से उन्हें एकजुट करने की उनकी रणनीति तथा माओवादियों की ओर से जवाबी कार्रवाई को रोकने के लिए अलग-अलग रास्तों पर अग्रसर होना सराहनीय कदम था। तेलंगाना और महाराष्ट्र सीमावर्ती राज्यों के साथ उनका बेहतर तालमेल बहुत फायदेमंद साबित हुआ। तेलंगाना से इनपुट हासिल करके और छत्तीसगढ़ (बीजापुर पुलिस) के जवानों के मुसीबत में होने के समय महाराष्ट्र का सहयोग पा कर यह ऑपरेशन संयुक्त कार्रवाई करने का एक उदाहरण बन गया है। अंतर-राज्यीय ऑपरेशन के लिए उनकी यह पहल और सीमावर्ती राज्यों से सहयोग प्राप्त करने में उनका श्रमसाध्य प्रयास उनकी पेशेवरता का प्रमाण है।

इस ऑपरेशन में, सर्वश्री इंदिरा कल्याण एलिसेला, आईपीएस, अपर पुलिस अधीक्षक, श्री रमाकांत तिवारी, इंस्पेक्टर, श्री संतोष बघेल, असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर, श्री लुबेंद्र पुजारी, कांस्टेबल और श्री दिनेश खांडे, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 12/02/2016 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/33/2018-पीएमए)

(No. 18004/01/2020—CA-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 52-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, छत्तीसगढ़ पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक/ वीरता के लिए पुलिस पदक (मरणोपरांत)/ वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	रमन उसेंडी	इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार
02	रमेश कुमार सोरी	असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार
03	स्व. विनोद सिंह कौशिक	सब इंस्पेक्टर (मरणोपरांत)	वीरता के लिए पुलिस पदक (मरणोपरांत)

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

बेचा क्षेत्र में सशस्त्र नक्सलियों के एक बड़े समूह की मौजूदगी होने के बारे में खुफिया सूचना मिलने पर दिनांक 17.11.2016 को रमन उसेंडी, इंस्पेक्टर को अपने सैनिकों के साथ जिला दंतेवाड़ा के गांव बारसोर से एक सर्व ऑपरेशन पर भेजा गया था। इस सर्व ऑपरेशन के दौरान दिनांक 18.11.2016 को लगभग 14.45 बजे, इंस्पेक्टर रमन उसेंडी को डीआरजी नारायणपुर के अपने लोगों के साथ गांव-बेचा, पुलिस स्टेशन- छोटेडोंगर, जिला-नारायणपुर के दक्षिण पूर्व में पहाड़ियों के पास माओवादी की कंपनी नं. 06 के पी-एलजीए काइरों की अंधाधुंध गोलीबारी का सामना करना पड़ा। माओवादी, सुरक्षा बलों को नुकसान पहुंचाने और उनके हथियार लूटने के इरादे से स्वचालित और अर्ध स्वचालित हथियारों से गोलीबारी कर रहे थे। सुरक्षा बलों ने अपनी पहचान का खुलासा किया और सशस्त्र नक्सलियों को गोलीबारी रोकने तथा आत्मसमर्पण करने की चेतावनी दी। सशस्त्र नक्सलियों ने चेतावनी को नजरअंदाज कर दिया और सुरक्षा बलों पर अंधाधुंध गोलियां बरसाते रहे। इंस्पेक्टर रमन उसेंडी और सब इंस्पेक्टर विनोद सिंह कौशिक ने एक दृढ़ और सच्चे सेनापति की तरह, अपने सैनिकों को सतर्कता और आक्रमकता के साथ आगे बढ़ते हुए जवाबी गोलीबारी करने का आदेश दिया।

स्थिति को भांपते हुए, इंस्पेक्टर रमन उसेंडी, सब इंस्पेक्टर विनोद सिंह कौशिक और असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर रमेश सोरी, डीआरजी टीम के साथ रंगते हुए आगे बढ़ने लगे, जबकि उन पर गोलियां चलाई जा रही थीं। आपसी गोलीबारी लगभग एक घंटे तक जारी रही और फिर अंततः नक्सली जंगलों में भाग गए। इलाके की तलाशी लेने पर पुलिस पार्टी ने 03 महिला और 02 पुरुष नक्सलियों के शव, 12 बोर की 03 राइफल, 315 बोर की 01 राइफल, 12 बोर के 42 ज़िंदा कारतूस और 03 गोला बारूद, 315 बोर राइफल के 17 ज़िंदा कारतूस और 04 गोला बारूद, 04 नक्सल पाउच, नक्सल साहित्य आदि बरामद किया।

गौरतलब है कि सब इंस्पेक्टर श्री विनोद सिंह कौशिक ने दिनांक 24.01.2018 को माओवादियों के साथ मुठभेड़ के दौरान असाधारण शौर्य, धैर्य और दृढ़ संकल्प का प्रदर्शन किया, लेकिन अपने कर्तव्य निभाने के दौरान उन्होंने अपना जीवन बलिदान कर दिया।

इस ऑपरेशन में सर्वश्री रमन उसेंडी, इंस्पेक्टर, श्री रमेश कुमार सोरी, असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर और स्वर्गीय श्री विनोद सिंह कौशिक, सब इंस्पेक्टर (मरणोपरांत) ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 08/11/2016 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/95/2018-पीएमए)

(No. 18004/01/2020—CA-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 53-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, दिल्ली पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	ओमवीर सिंह , आईपीएस	डीसीपी	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	डॉ. हेमंत तिवारी, आईपीएस	एसीपी	वीरता के लिए पुलिस पदक
03	मनीष जोशी	इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 07.07.2017 को मेट्रो अस्पताल, प्रीत विहार, दिल्ली के डॉ. श्रीकांत गोड के "गायब" होने की सूचना पुलिस स्टेशन- प्रीत विहार में दी गई थी। यह सूचित किया गया था कि उन्होंने गौतम नगर, दिल्ली में स्थित अपने घर जाने के लिए दिनांक 06.07.2017 की रात को प्रीत विहार मेट्रो स्टेशन से एक ओला कैब बुक की थी। इस संबंध में, एक एफआईआर सं. 168/17 भी दर्ज की गई थी।

तत्पश्चात्, ओला कंपनी की ओर से भी एक शिकायत प्राप्त हुई थी, जिसमें यह बताया गया, कि ओला कैब सं. डीएल-1आर-टीसी-1611 के चालक ने एक यात्री का अपहरण कर लिया है और वह चालक यात्री को छोड़ने के लिए 05 करोड़ रु. की फिरोती मांग रहा था। दोनों रिपोर्टों/सूचना के आधार पर यह निश्चित किया गया था कि कथित ओला कैब चालक और उसके सहयोगियों ने फिरोती के लिए डॉ. श्रीकांत गोड का अपहरण किया। प्रारंभिक जांच से यह पता चला कि अपहरणकर्ता पश्चिमी उ.प्र. और उत्तराखंड के विभिन्न स्थानों से फिरोती के लिए कॉल कर रहे थे। तदनुसार, कई टीमों गठित की गईं। पीड़ित की सुरक्षित रिहाई के लिए वार्ता हेतु फिरोती मांगने वालों की टेलिफोन कॉल को सुनने के लिए श्री ओमवीर सिंह, आईपीएस, तत्कालीन डीसीपी/पूर्वी जिला, दिल्ली को टीम के प्रभारी के रूप में नामित किया गया था, जिन्हें इस कार्य में डॉ. हेमंत तिवारी, आईपीएस और इंस्पेक्टर मनीष जोशी सहायता कर रहे थे। श्री ओमवीर सिंह, आईपीएस के नेतृत्व में टीम को पश्चिमी उ.प्र. भेजा गया था।

दिनांक 19.07.2017 को, अपहरणकर्ताओं और पीड़ित के शताव्दी नगर, मेरठ, उ.प्र. में होने के बारे में विशेष जानकारी प्राप्त हुई थी। उसी समय, बहुत सी टीमों रवाना की गई थी, जिनमें डॉ. हेमंत तिवारी, आईपीएस और इंस्पेक्टर (एग्जी) मनीष जोशी से सहायता प्राप्त श्री ओमवीर सिंह, आईपीएस के नेतृत्व वाली टीम भी शामिल थी। संदिग्धों के मकान को घेर लिया गया था और उनमें रहने वालों को बाहर आने के लिए चेतावनी दी गई थी। श्री ओमवीर सिंह, आईपीएस तत्कालीन डीसीपी/ पूर्वी जिला, दिल्ली और उनकी टीम ने उस कमरे के प्रवेश द्वार पर पोजीशन ले ली, जहां पीड़ित को बंधक बनाकर रखा गया था। अपहरणकर्ताओं को कहा गया था कि दरवाजा खोल दें और पुलिस टीम के समक्ष समर्पण कर दें, परंतु उन्होंने इस बात को नजर अंदाज कर दिया। अतः, श्री ओमवीर सिंह विश्वास के साथ दरवाजे को तोड़ने का आदेश दिया। वहाँ पर तैनात पुलिस टीम ने दरवाजे को बलपूर्वक खोल दिया। अपहरणकर्ताओं ने मकान से बाहर निकलते समय पुलिस टीम पर गोलियाँ चलाई, जिसमें श्री ओमवीर सिंह, आईपीएस और पुलिस टीम गोली से बाल-बाल बच गई। इस गोलीबारी में, श्री हेमंत तिवारी की गोली से एक अपहरणकर्ता/आश्रयदाता घायल हो गया। इस हाथापाई में, श्री ओमवीर सिंह विश्वास और इंस्पेक्टर मनीष जोशी, ने अपनी जान की परवाह किये बिना अपहृत पीड़ित व्यक्ति डॉ. श्रीकांत गोड को उनके चंगुल से छुड़ा लिया और वे पीड़ित को सुरक्षित स्थान पर ले गए। उसके बाद, जख्मी व्यक्ति सहित चार दोषी व्यक्तियों को श्री ओमवीर सिंह, आईपीएस के नेतृत्व में सुचारु कार्रवाई के दौरान उस स्थान से गिरफ्तार कर लिया गया।

समूची कार्रवाई अनुकरणीय साहस, समर्पण भावना और उच्च स्तर की पेशेवरता के साथ की गई थी। इस मौजूदा चुनौतीपूर्ण स्थिति में, श्री ओमवीर सिंह, आईपीएस, तत्कालीन डीसीपी/पूर्वी जिला, दिल्ली (पुलिस टीम के प्रमुख), डॉ. हेमंत तिवारी, आईपीएस, (तत्कालीन एसीपी/प्रीत विहार) तथा इंस्पेक्टर (एग्जी) मनीष जोशी (तत्कालीन एसएचओ/मधुविहार) ने अपनी जान की परवाह न करते हुए दृढ़ साहस, महान शौर्य और वीरता का परिचय दिया। उनके वीरतापूर्ण प्रयासों से न केवल अपहृत डॉ. श्रीकांत गोड को सफलतापूर्वक छुड़ाया जा सका, अपितु तनावपूर्ण मुठभेड़ के दौरान अधिकारी के प्रेरणादायी नेतृत्व के फलस्वरूप इस शत्रुतापूर्ण क्षेत्र में कोई अप्रिय घटना नहीं घटी, जहाँ कि काफी जानें जा सकती थी और साथ ही अपहृत पीड़ित व्यक्ति का जीवन भी खतरे में पड़ सकता था।

इस ऑपरेशन में, सर्वश्री ओमवीर सिंह, आईपीएस, डीसीपी, डॉ. हेमंत तिवारी, आईपीएस, एसीपी और मनीष जोशी, इंस्पेक्टर ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 19.07.2017 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/01/2019-पीएमए)

(No. 18004/01/2020—CA-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 54-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, दिल्ली पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार प्रदान करते हैं:—

सर्वश्री

01	उमेश बर्थवाल	इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार
02	मुकेश सिंह	सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल, साहुन पुत्र रहमान, निवासी ग्राम-बिशम्बरा, पुलिस स्टेशन-शेरगढ़, मथुरा (उत्तर प्रदेश) नामक उत्तर प्रदेश के अंतर-राज्यीय स्तर पर इनामी, वांछित और पकड़ में न आ सकने वाले खतरनाक गैंगस्टर की तलाश कर रही थी। उसकी पूरे भारत

के 7 राज्यों में जोर-शोर से तलाश थी। दिल्ली पुलिस ने उपर्युक्त अभियुक्त साहुन की गिरफ्तारी पर 2 लाख रुपए का नगद इनाम घोषित किया था। उस पर कथित तौर पर उत्तर प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान और मध्य प्रदेश पुलिस की ओर से भी इनाम रखा गया था।

उसकी अलग-अलग राज्यों की पुलिस के साथ 5 बार भीषण मुठभेड़ हुई है, किंतु वह हर बार बचकर भाग जाने में कामयाब रहा है। वह ऐसा सरगना है, जिसको सशस्त्र पुलिस की हिरासत से बचकर भाग जाने की कला में महारथ प्राप्त है तथा वह उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश से इस प्रकार तीन बार निकलकर भाग चुका है।

दिनांक 08.11.2017 को सुबह तड़के प्राप्त सूचना पर कार्रवाई करते हुए, अभियुक्त साहुन को कालिन्दी कुंज चौक, दिल्ली में देखा गया। जब पुलिस दल ने उसे गिरफ्तार करने का प्रयास किया, तो साहुन ने आगे बढ़ रही पुलिस टीम पर गोलीबारी शुरू कर दी। इंस्पेक्टर उमेश बर्थवाल और सब इंस्पेक्टर, मुकेश सिंह ने सूझबूझ के साथ असाधारण बहादुरी का परिचय दिया तथा अपनी जान को खतरे में डालकर, वे घुटनों के बल रेंगते हुए आगे बढ़े और बेधड़क होकर गोलीबारी के ठिकाने के निकट पहुंच गए। इंस्पेक्टर उमेश बर्थवाल और सब इंस्पेक्टर मुकेश मोर्चे पर सबसे आगे थे। उन्होंने सर्वाधिक खतरे का सामना भी किया, तथापि वे अंधाधुंध गोलीबारी की परवाह न करते हुए, वहां तक पहुंच गए, जबकि उनके पास कोई कवर उपलब्ध नहीं था। वे गैंगस्टर को धर-दबोचने में कामयाब हो गए और इस गोलीबारी में इंस्पेक्टर उमेश बर्थवाल और सब इंस्पेक्टर मुकेश सिंह ने अपनी-अपनी 9 एम.एम. पिस्टल से तीन-तीन राउंड फायर किए।

उसके कब्जे से 7.65 बोर यूएस निर्मित पिस्टल और उसके 5 जिंदा कारतूस बरामद किए गए। इसके अलावा, उसकी निशानदेही पर 315 बोर की एक दो नाली बंदूक और इसी बोर के 10 जिन्दा कारतूस भी बरामद किए गए थे।

इस वीरतापूर्ण कार्रवाई और बहादुरी के कृत्य से उन्हें न केवल अलग-अलग राज्यों के वरिष्ठतम पुलिस रैंक और मीडिया से वाहवाही मिल, अपितु जनता द्वारा भी उनकी बड़े पैमाने पर सराहना की गई। उन्होंने अपने बहादुरी और कर्तव्य के प्रति बचनबद्धता का उदाहरण प्रस्तुत किया।

इस ऑपरेशन में, सर्वश्री उमेश बर्थवाल, इंस्पेक्टर और मुकेश सिंह, सब इंस्पेक्टर ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 08/11/2017 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/98/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन

विशेष कार्य अधिकारी

सं. 55-प्रेज़/2020—राष्ट्रपति, दिल्ली पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं :—

सर्व/श्री

01	सुनील कुमार	इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	यशपाल सिंह	एसआई	वीरता के लिए पुलिस पदक
03	गुलाब सिंह	एसआई	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

कश्मीर में आतंकवादियों की आवाजाही के बारे में 21/22 नवम्बर, 2018 की मध्य रात्रि को सूचना प्राप्त होने पर, तत्काल ही इस सूचना पर कार्रवाई करने के लिए एक टीम श्रीनगर भेजी गई, जिसमें इंस्पेक्टर सुनील कुमार, एसआई यशपाल सिंह, एसआई गुलाब सिंह और अन्य व्यक्ति शामिल किये गए थे। श्रीनगर पहुंचने पर, प्रतिकूल माहौल में भी सूचना को पुष्टा किया गया। यह मालूम पड़ा था कि आईएसआईएस दिल्ली में आतंकवादी गतिविधियों को फैलाने के लिए जम्मू एवं कश्मीर स्थित अपनी यूनिट को मजबूत कर रही है। विभिन्न स्रोतों से एकत्रित की गई समूची जानकारी का डीसीपी, विशेष सेल के पर्यवेक्षण में विश्लेषण किया गया और विशेष सेल, दिल्ली के वरिष्ठ अधिकारियों से अनुमोदन लेने के पश्चात तत्काल कार्रवाई करने का निर्णय लिया गया था। विभिन्न प्रकार की जानकारियों को पुष्टा करने, विभिन्न जानकारियों का मिलान करने और संभावित ठिकानों का जासूसी दृष्टि से सर्वेक्षण करने के उपरान्त, इस विशेष जानकारी को आगे दिनांक 24.11.2018 को पुलिस घटक, कश्मीर के साथ साझा किया गया। जानकारी के आधार पर, तत्काल ही श्रीनगर

के मध्य में ट्रिज्म रिसेप्शन सेंटर (टीआरसी) के पास एक विशेष नाका लगाया गया। ट्रिज्म रिसेप्शन सेंटर (टीआरसी), श्रीनगर का सबसे अधिक आबादी वाला क्षेत्र है तथा दोपहर के बाद यहां विदेशी पर्यटक और अन्य कई लोग आते-जाते रहते हैं।

वाहनों की जांच के दौरान, एक मोटर साइकल सवार, दो व्यक्तियों को एक मोटर साइकल, रजिस्ट्रेशन नं. जेके01एबी 5154 से ले जा रहा था, को इंस्पेक्टर सुनील कुमार, एसआई यशपाल और एसआई गुलाब द्वारा देखे जाने पर सभी अन्य टीमों को सतर्क कर दिया गया। मोटर साइकल सवार नीचे कूद गया और उसके पीछे बैठे एक व्यक्ति ने पुलिस पार्टी पर ग्रेनेड फेंकने की कोशिश की। इस पुलिस पार्टी में पीसी श्रीनगर और पीएस-कोठीबाग की स्थानीय पुलिस टीम शामिल थी। घटना की गंभीरता को देखते हुए, अंदर के घेरे में तैनात इंस्पेक्टर सुनील कुमार, एसआई यशपाल सिंह और एसआई गुलाब सूझबूझ एवं असाधारण साहस का परिचय देते हुए और अपनी जान की परवाह किए बिना आतंकवादियों पर टूट पड़े। जैसे ही एक दुर्दांत आतंकवादी हरीस मुश्ताक धमाका करने के उद्देश्य से सेफ्टी पिन खोलने की कोशिश कर रहा था, तो इंस्पेक्टर सुनील कुमार ने उसे तत्काल काबू कर लिया और उसी समय एसआई यशपाल ने उसके हाथ मजबूती से पकड़ लिए, जिससे आतंकवादी ग्रेनेड से सेफ्टी पिन नहीं निकाल सका। हाथ पकड़ने के दौरान ग्रेनेड गिर गया, किंतु ग्रेनेड फटा नहीं, क्योंकि सेफ्टी पिन निकली नहीं थी। एक और ग्रेनेड व पूरी तरह भरी हुई पिस्तौल भी उनसे जब्त की गई। घटना का यह समय बहुत ही जोखिम भरा था। उसी समय, एसआई गुलाब और अन्य व्यक्तियों ने एक अन्य दुर्दांत आतंकवादी ताहिर अहमद खान को काबू में कर लिया और इससे पहले कि वह कोई हानि पहुंचाता, उससे ग्रेनेड और भरी हुई पिस्तौल छीन ली। तीसरा आतंकवादी, आसिफ सुहैल जो मोटर साइकल चला रहा था, भी इसी कार्रवाई के दौरान पकड़ा गया। समय पर की गई इस कार्रवाई से, विदेशी पर्यटकों की भीड़-भाड़ वाले ट्रिज्म रिसेप्शन सेंटर (टीआरसी), श्रीनगर में असंख्य जानें बच गईं।

इस संबंध में, आरपीसी की धारा 307, आयुध अधिनियम की धारा 7/25 और यूएलए (पी) अधिनियम की धारा 16(बी), 18 के तहत पीएस- कोठीबाग, श्रीनगर में एफआईआर सं. 93/2018 द्वारा एक मामला दर्ज किया गया था। ये सक्रिय आतंकवादी तीन ग्रेनेडों और दो भरी हुई अत्याधुनिक पिस्तौलों के साथ मोटर साइकल पर आए थे। आतंकवादियों की पहचान करने में पुलिस टीम की मुश्तैदी से श्रीनगर के बीचों-बीच में ग्रेनेड धमाके को रोक लिया गया और इस्लामिक स्टेट ऑफ जेएंडके (आईएसजेके) के तीन कुख्यात आतंकवादी नामतः i) हंस मुश्ताक खान ii) ताहिर अहमद खान, iii) आसिफ सुहैल को भी पकड़ लिया गया। श्रीनगर में इन तीन सक्रिय आतंकवादियों का पकड़ा जाना एक वीरतापूर्ण प्रयास है और इसके फलस्वरूप कई सारी जानकारी एकत्रित हो सकी। निरंतर पूछताछ के दौरान, बहुत महत्वपूर्ण जानकारी पता चली, जिसके आधार पर इस मॉड्यूल के एक दर्जन से ज्यादा ठिकानों पर छापे मारे गए और इस अनवरत कार्रवाई में, आईएसजेके के छः और आतंकवादी इस मामले में गिरफ्तार किए गए। इस मामले की गंभीरता के मद्देनजर, एनआईए ने मामले की जांच अपने अधिकार में ले ली है।

इस ऑपरेशन में, सर्वश्री सुनील कुमार, इंस्पेक्टर, यशपाल सिंह, एसआई और गुलाब सिंह, एसआई ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 24/11/2018 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/87/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 56-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, दिल्ली पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	पूरन चंद यादव	इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	संजीव कुमार यादव	इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 26.04.2018 को, तीन बाइक सवार हथियारबंद लुटेरों ने डीएसआईडीसी वर्धमान मॉल, नरेला, दिल्ली के पास एसआईएस प्रोसेगुर कंपनी की एक कैश वैन पर हमला किया। लुटेरों ने कैश वैन के कैशियर और गनमैन पर लगभग 30 राउंड दागे और उन्हें सरेआम गोली से मार दिया। दोनों को गोली से मारने के बाद, वे 12 लाख रुपये लेकर फरार हो गए। इस संबंध में नरेला पुलिस स्टेशन में आईपीसी की धारा 394/397/302/34 और आयुध अधिनियम की धारा 25/27 के तहत एफआईआर संख्या 306/18

के मार्फत मामला दर्ज किया गया। सनसनीखेज हत्या के कारण जनता के बीच काफी आक्रोश पैदा हो गया। यह घटना प्रिंट मीडिया के साथ-साथ इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में भी सुर्खियों में रही। बाहरी दिल्ली और हरियाणा से सटे हुए इलाके में भी इसी तरह की कई अन्य घटनाएं सामने आईं। गिरोह द्वारा घटना को अंजाम देने के तरीके का विश्लेषण करने से पता चला कि गिरोह के सदस्य को नकदी के रखवालों पर अंधाधुंध गोलियां चलाने की आदत थी, चाहे वे सुरक्षा गार्ड/गनमैन हों अथवा कर्मचारी हों। सबसे पहले वे सुरक्षा गार्डों/बंदूकधारियों पर गोली चलाते थे, ताकि उनके मन में डर पैदा हो जाए और इसके बाद वे नकदी लूट लेते। वे रखवालों और यहां तक कि आम जनता पर भी अंधाधुंध गोलीबारी करते, ताकि कोई भी उन्हें पकड़ने या पीछा करने की हिम्मत न कर सके।

इंस्पेक्टर संजीव कुमार और इंस्पेक्टर पूरन चंद यादव की अगुवाई में विशेष सेल की एक टीम ने इस सनसनीखेज अपराध में शामिल अपराधियों को पकड़ने के लिए सामंजस्य के साथ मेहनतपूर्वक कार्य किया, स्रोतों को तैनात किया और तकनीक आधारित निगरानी भी की। टीम की कड़ी मेहनत दिनांक 01/05/2018 को रंग लाई, जब एक खबर मिल पाई, कि इस डकैती एवं हत्या में शामिल आरोपी हरिद्वार गए हैं और वे वापस लौट रहे हैं।

दिनांक 01.05.2018 को, एक जाल बिछाया गया और गिरोह के सदस्यों नामतः 1. महाबीर पुत्र श्री कांची लाल, निवासी के-143, घोघा डेयरी, नरेला, दिल्ली, 2. दीपक उर्फ मंतर पुत्र श्री जवार सिंह, निवासी ग्राम-राणापुर, जिला-बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश और 3. गुरुचरण पुत्र श्री वेदपाल, निवासी मकान नंबर- 152, गली नंबर-1, प्रेम कॉलोनी, नरेला को शाहबाद रोड, सेक्टर -26, रोहिणी को हथियारों और गोला-बारूद के साथ पकड़ा गया।

इस संबंध में, पीएस स्पेशल सेल में आयुध अधिनियम की धारा 25/54/59 के तहत एफआईआर संख्या 51/18 के मार्फत एक मामला दर्ज किया गया और आरोपी व्यक्तियों से पूछताछ में पता चला कि नरेला इलाके में डकैती सहित दोहरी हत्या का अपराध भारत भूषण उर्फ टोनी ने अपने साथियों नामतः दीपक उर्फ मंतर, जीतू और विकास के साथ मिलकर किया और ये सभी नरेला, दिल्ली के निवासी थे। आरोपी दीपक के पास से डकैती सहित इस दोहरी हत्या में इस्तेमाल की गई एक .32 बोर की पिस्टल और 3 लाख रुपए नकद बरामद किए गए।

तदनुसार, गिरोह के सरगना भारत भूषण उर्फ टोनी और उसके साथियों जीतू और विकास को पकड़ने के लिए छापे मारे गए थे। आरोपी विकास पुत्र हरीश निवासी मकान संख्या-409, दादा माई वाली कॉलोनी, बंकनेर, नरेला को पॉकेट- 5ए, नरेला से गिरफ्तार किया गया। उसकी निशानदेही पर नरेला पुलिस स्टेशन के अंतर्गत हुए इस अपराध में इस्तेमाल की गई एक .32 बोर की पिस्टल बरामद की गई। इसके अलावा, उसके पास से लूटी गई नकदी में से उसके हिस्से के 1.9 लाख रुपये भी बरामद किए गए। आरोपी भूषण उर्फ टोनी और जीतू अभी फरार हैं। आरोपी भारत भूषण उर्फ टोनी नरेला पुलिस स्टेशन का कुख्यात हिस्ट्रीशीटर था। पुलिस को चकमा देने के लिए उसने अपना घर अपने साथी दीपक को किराए पर दे दिया और वह खुद घोघा डेयरी इलाके में बस नाम के लिए एक डेयरी चला रहा था, लेकिन वह अत्यंत सक्रिय था और अपने साथियों के साथ बाहरी दिल्ली और हरियाणा के पड़ोसी इलाकों में सशस्त्र डकैतियों में लिप्त था।

एक और सूचना मिली कि आरोपी भारत भूषण उर्फ टोनी ईको कार नं डीएल-3सीसीएफ-2417 से दिनांक 02.05.2018 को तड़के खैर ग्राम नहर के पास अपने साथियों से मिलने आएगा। आरोपी द्वारा घटना को अंजाम देने के तरीके से यह स्पष्ट था कि उसके पास अत्याधुनिक हथियार होंगे और जाल में फंसने की स्थिति में वह निश्चित रूप से पुलिस टीम पर गोलियां चलाएगा। ऑपरेशन के लिए तैनात पुलिस टीम को तदनुसार जानकारी दी गई थी और टीम को बुलेट प्रूफ जैकेट समेत सभी सुरक्षा उपाय करने को कहा गया। टीम को विशिष्ट निर्देश दिए गए थे कि गैंगस्टर द्वारा गोलीबारी की स्थिति में न्यूनतम बल का प्रयोग किया जाएगा और कोई भी गैंगस्टर पर निशाना साधते हुए गोली नहीं चलायेगा, क्योंकि उसको पकड़ना बहुत जरूरी था और उसके पकड़े जाने से सशस्त्र डकैती और हत्याओं के कई मामले खुल सकते हैं। इस सूचना के आधार पर, एक जाल बिछाया गया। प्रातः लगभग 5:20 बजे उपर्युक्तानुसार एक ईको कार प्रहलादपुर की तरफ से आती नजर आई। कार को रुकने का इशारा किया गया, लेकिन कार चालक ने गति बढ़ा दी। इंस्पेक्टर संजीव कुमार, जो वाहन में आगे थे, ने ड्राइवर को रुकने के लिए चेतावनी दी, लेकिन उसने इसे नजर अंदाज कर दिया और खतरनाक तरीके से गाड़ी चलाता रहा। उसने संजीव कुमार को लगभग कुचल ही दिया था, कि वे बाल-बाल बच गए। तात्कालिकता को देखते हुए, संजीव कुमार ने वैन के टायर को निशाना बनाया और उसे पंचर कर दिया। चालक ने वैन पर से अपना नियंत्रण खो दिया और उसका वाहन फुटपाथ से टकरा गया। चालक, भारत भूषण एक हाथ में बैग और दूसरे हाथ में अत्याधुनिक पिस्टल के साथ बाहर निकला। इंस्पेक्टर पूरन चंद यादव ने फिर से भारत भूषण को रुकने और आत्मसमर्पण करने की चेतावनी दी, लेकिन उसने हत्या करने और भागने के इरादे से पुलिस टीम पर गोलीबारी शुरू कर दी। दोनों इंस्पेक्टर बाल-बाल बच गए। इस बात को अच्छी तरह से जानने के बाद भी कि गैंगस्टर फिर से गोलीबारी करेगा, इंस्पेक्टर पूरन चंद यादव और इंस्पेक्टर संजीव कुमार ने अपनी जान की परवाह न करते हुए गैंगस्टर का पीछा किया और इंस्पेक्टर पूरन चंद यादव ने भारत भूषण उर्फ टोनी को भागने से रोकने के लिए दो बार हवा में गोली चलाई। जैसा कि प्रत्याशा थी, गैंगस्टर ने जवाब में फिर से गोलीबारी की और दो गोलियां एक कांस्टेबल की बुलेट प्रूफ जैकेट पर लग गईं। अंततः आरोपी को पैर में गोली लगी और हाथापाई के बाद उसे पकड़ लिया गया। उसके बैग

से दो जिंदा कारतूस समेत एक .32 बोर की पिस्टल, पांच जिंदा कारतूस समेत एक स्पेयर मैगजीन और 3.3 लाख रुपये नकद बरामद किए गए। उसे तुरंत अस्पताल ले जाया गया। इस संबंध में पीएस स्पेशल सेल में आईपीसी की धारा 186/353/307 और आयुध अधिनियम की धारा 25/27/54/59 के तहत एफआईआर संख्या 53/18 के मार्फत एक मामला दर्ज किया गया और अस्पताल में उपचार के बाद आरोपी भारत भूषण उर्फ टोनी पुत्र स्वर्गीय श्री जयपाल, निवासी गली नंबर-01, प्रेम कॉलोनी, नरेला, दिल्ली को इस मामले में गिरफ्तार किया गया।

दिल्ली पुलिस के इंस्पेक्टर, संजीव कुमार और इंस्पेक्टर, पूरन चंद यादव की बहादुर और वीरतापूर्ण कार्यवाही ने न केवल विभिन्न राज्यों की पुलिस के सर्वोच्च रैंक और मीडिया से, बल्कि आम जनता से भी प्रशंसा प्राप्त की। इन अपराधियों की गिरफ्तारी समय की एक जरूरत थी, क्योंकि, आरोपी व्यक्ति नकदी के रखवालों की हत्या करने अथवा उन्हें घायल करके कई हथियारबंद डकैतियों में शामिल थे, जिसने दिल्ली में कहर और आतंक का माहौल पैदा कर दिया था। इन हथियारबंद डकैतियों, जिसमें कई लोग मारे गए थे, की वजह से नकदी इकट्ठा करने अथवा एटीएम में नकदी को फिर से भरने वाली एजेंसियों पर इतना असर हुआ था कि उन्होंने कुछ इलाकों में जाने से इंकार करना शुरू कर दिया था। दोनों अधिकारियों ने ऑपरेशन को चुनौती के रूप में लेते हुए वीरता और अपने कर्तव्य के प्रति समर्पण भावना का उदाहरण दिया। पूरे ऑपरेशन के दौरान, उनके पास अपनी सुरक्षा के लिए कोई कवर उपलब्ध नहीं था और वे प्रत्यक्ष रूप से खतरनाक अपराधी की गोलीबारी के क्षेत्र में थे। उन्होंने खूंखार अपराधी द्वारा चलाई गई गोलियों का नजदीकी से सामना किया। अडिग और अप्रभावित रहते हुए, उन्होंने अपनी जान को जोखिम में डाला और वीरतापूर्वक अपराधियों का सामना किया तथा खतरनाक अपराधियों को पकड़ने में असाधारण साहस, अपने कर्तव्यों के प्रति निष्ठा और समर्पण भावना, अनुकरणीय पेशेवरता, बुद्धिमानी, दिमाग के इस्तेमाल और सूझ-बूझ तथा साथ ही दुर्लभ वीरता का प्रदर्शन किया। उन्होंने उपरोक्त खतरनाक अपराधियों को पकड़ने में और सनसनीखेज दोहरी हत्या-सह-कैश बैंक डकैती मामले समेत कई मामलों को सुलझाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा दिल्ली एवं हरियाणा के सटे हुए क्षेत्र में नागरिकों के बीच संरक्षा और सुरक्षा की भावना पैदा की, इसलिए उन्हें पुरस्कृत किया जाना चाहिए।

इस ऑपरेशन में, सर्व/श्री पूरन चंद यादव, इंस्पेक्टर और संजीव कुमार यादव, इंस्पेक्टर ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 02.05.2018 से दिया जाएगा।

(संख्या 11020/100/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 57-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, दिल्ली पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	प्रमोद सिंह कुशवाह, आईपीएस	डीसीपी	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	अमूल त्यागी	इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 20.01.2018 को, एक विशिष्ट सूचना के आधार पर विशेष सेल की टीम द्वारा दिल्ली के गाजीपुर इलाके में एक जाल बिछाया गया। सायं लगभग 08:07 बजे, सफेद रंग की एक सैंट्रो कार नम्बर यूपी21सीए 7164 को देखा गया, जिसमें दो व्यक्ति बैठे हुए थे। मुखबिर ने कार में बैठे सह-यात्री की पहचान अब्दुल रहमान उर्फ अब्दुल सुभान उर्फ तौकीर के रूप में की। पुलिस टीम के वाहनों ने सैंट्रो कार को रोकने की कोशिश की, लेकिन वे खोड़ा कॉलोनी, उत्तर प्रदेश की ओर भाग निकले। अंततः, उप पुलिस आयुक्त, प्रमोद सिंह कुशवाह के नेतृत्व में टीम ने सरकारी जिप्सी से पीछा करने के बाद, सैंट्रो कार को रास्ते में रोक लिया। सहायक पुलिस आयुक्त, गोविंद शर्मा, इंस्पेक्टर अमूल त्यागी और कर्मचारी भी वहां पहुंच गए। उप पुलिस आयुक्त ने अपनी पहचान बताने के बाद ऊंची आवाज में कार सवारों को आत्मसमर्पण करने की चेतावनी दी। आत्मसमर्पण करने के बजाय, अब्दुल सुभान कुरैशी तौकीर ने पुलिस पार्टी पर दो राउंड फायर दिए। एक गोली उप पुलिस आयुक्त प्रमोद सिंह कुशवाह की बुलेट प्रूफ जैकेट पर लगी और दूसरी गोली से सहायक पुलिस आयुक्त गोविंद शर्मा बाल-बाल बच गए। बिना किसी देर के, उप पुलिस आयुक्त, प्रमोद सिंह कुशवाह और सहायक पुलिस आयुक्त गोविंद शर्मा ने आतंकवादी को घेर लिया, जिसने फिर से दो राउंड दागे, लेकिन दोनों पुलिस अधिकारियों ने हाथापाई के बाद उसे काबू में कर लिया। उप पुलिस आयुक्त और सहायक पुलिस आयुक्त ने भी

आत्मरक्षा में दो-दो राउंड दागे। कार चालक, मोहम्मद अजीज ने भी पुलिस पार्टी पर निशाना साधते हुए गोलीबारी की। उसके द्वारा चलाई गई एक गोली इंस्पेक्टर अमूल त्यागी की बुलेट प्रूफ जैकेट पर लगी, लेकिन वे तब भी बदमाश का पीछा करते रहे। इंस्पेक्टर ने भी आत्मरक्षा में दो राउंड दागे। तथापि घने पेड़ों, अंधेरे और खुले मैदान का लाभ उठाते हुए, मोहम्मद अजीज भागने में सफल रहा। आरोपी अब्दुल सुभान कुरैशी तौकीर के पास से पांच जिंदा कारतूस के साथ भरी हुई एक पिस्टल "स्मिथ एंड वेसन स्प्रिंगफील्ड एमए यूएसए एसडब्ल्यू9वीई" बरामद की गई। इसके बाद, इंस्पेक्टर अमूल त्यागी की शिकायत पर पीएस विशेष सेल में उनके खिलाफ आयुध अधिनियम की धारा 25/27 और आईपीसी की धारा 186/353/307/34 के तहत एफआईआर संख्या 8/18 दिनांक 20.01.18 के माफत एक मामला दर्ज किया गया।

इस ऑपरेशन में, सर्व/श्री प्रमोद सिंह कुशवाह, डीसीपी, उप पुलिस आयुक्त और श्री अमूल त्यागी, इंस्पेक्टर ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 20.01.2018 से दिया जाएगा।

(संख्या 11020/171/2018-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 58-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	सरफराज बशीर गनाई	डीएसपी	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	मोहम्मद अकबर लोन	एसजीसीटी	वीरता के लिए पुलिस पदक
03	मोहम्मद अशरफ लोन	सीटी	वीरता के लिए पुलिस पदक

सेवा का विवरण, जिसके लिए पुरस्कार प्रदान किया गया है

दिनांक 24.10.2016 का तड़के वारनाव लोलाब क्षेत्र के सिवर कवारी गाँव में एक आतंकवादी की मौजूदगी होने के बारे में एक विशिष्ट इनपुट प्राप्त हुआ। इनपुट पर अतिरिक्त सूचना एकत्र की गई और इसे 18 आरआर के साथ साझा किया गया। श्री आरिफ अमीन शाह, अपर पुलिस अधीक्षक कुपवाड़ा, श्री सरफराज बशीर, उप पुलिस अधीक्षक, पीसी लोलाब और आई/सी पीपी खुरहामा की निगरानी में कुपवाड़ा पुलिस और 18 आरआर की टुकड़ियों द्वारा एक संयुक्त ऑपरेशन की योजना बनाकर इस ऑपरेशन को शुरू किया गया। इलाके की घेराबंदी कर दी गई और रणनीतिक स्थानों पर नाके लगाए गए। उचित तैनातियां करके भागने के सभी रास्तों को बंद कर दिया गया। बाहरी घेराबंदी में भी सीआरपीएफ की 148वीं बटैलियन की 01 कंपनी को तैनात किया गया।

तुरंत ही पुलिस अधिकारियों/एसपीओ की दो समर्पित टीमें बनाई गई और एक टीम को तलाशी करने का कार्य सौंपा गया, जबकि दूसरी टीम को तलाशी टीम को सुरक्षा कवर प्रदान करने का कार्य सौंपा गया। सब इंस्पेक्टर अब. राशिद, नंबर 125/पीएयू, हेड कांस्टेबल गुलाम मोहम्मद, नंबर 55/केपी, एसजीसीटी मोहम्मद अकबर, नंबर 620/एपी 7वीं, कांस्टेबल इमरान खान, नंबर 406/पी, कांस्टेबल सरजन यूसुफ नंबर 545/केपी, कांस्टेबल नूर उल अलमास, नंबर 868/केपी, एसपीओ फारूक अहमद, नंबर 36, सरवर हुसैन, नंबर 677, फैयाज अहमद, नंबर 219, मारूफ बशीर, नंबर 93, मोहम्मद सुल्तान, नंबर 755, मुश्ताक अहमद, नंबर 847, नसीर अहमद, नंबर 309 तलाशी और कवर टीमों का हिस्सा बनने के लिए स्वेच्छा से आगे आए। मौके पर मौजूद ऑपरेशनल अधिकारियों की गहन निगरानी में सर्च ऑपरेशन शुरू किया गया और इसका नेतृत्व अपर पुलिस अधीक्षक कुपवाड़ा ने किया। संदिग्ध इलाके में तलाशी करते समय, अचानक ही तलाशी टीम उस एक आतंकवादी की भारी गोलीबारी की चपेट में आ गई, जिसने मोहम्मद अब्दुल्ला नाजर के घर में शरण ली हुई थी, जो सिवर कवारी के निवासी अब्दुल अहद नाजर का दत्तक दामाद है। तलाशी टीम पूर्ण रूप से सतर्क थी और हमले के दौरान इसे कोई नुकसान नहीं हुआ। घर के निवासियों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए, गोलीबारी का जवाब नहीं दिया गया और घर के निवासियों को सुरक्षित तरीके से बाहर निकलने के लिए सावधानीपूर्वक रणनीति बनाई गई। मौके पर मौजूद अन्य ऑपरेशनल अधिकारियों के निर्देशों का पालन करते हुए, कवर टीम ने चतुराईपूर्वक जवाबी गोलीबारी के साथ छिपे हुए आतंकवादी को उलझा लिया और उसे मकान में एक तरफ रोके रखा। इसी बीच, एसपी कुपवाड़ा के नेतृत्व वाली तलाशी टीम जिसे, अब मकान में फंसे निवासियों को सुरक्षित निकालने का कार्य सौंपा गया था, ने बिना किसी नुकसान के इस कार्य को सफलतापूर्वक पूरा कर लिया। बाद में, छिपे हुए आतंकवादी को भारी जवाबी गोलीबारी में सफलतापूर्वक उलझा लिया गया और घेर लिया गया।

अपनी मौत को करीब देखकर, वह भागने के लिए उक्त घर से कूद गया, लेकिन उसे तुरंत ही उक्त घर के परिसर में गोली से मार दिया गया। कांस्टेबल (ऑपरेशन) मोहम्मद अशरफ नंबर 3025/पीडब्लू की भूमिका सराहनीय थी, क्योंकि उन्होंने बेहतर समन्वय के उद्देश्य से तैनात बलों के बीच संचार को बनाए रखा, जिसके अंततः वांछित परिणाम मिले। इलाके की तलाशी करने पर आतंकवादियों की ओर से उनकी कोई गतिविधि/उपस्थिति नजर नहीं आई और अंततः ऑपरेशन को बंद कर दिया गया। मुठभेड़ स्थल से हथियार/गोला-बारूद बरामद किया गया, जिसमें 01 एके -47 राइफल, 03 एके -47 मैगजीन, एके -47 के 85 राउंड और 01 आई-कॉर्न वायरलेस सेट शामिल थे। इस मामले में की गई जांच से पता चला है कि मारा गया यह आतंकवादी एक विदेशी था और लश्कर-ए-तैयबा संगठन से जुड़ा हुआ था। उसकी पहचान साद उर्फ शाहिद, ए+ श्रेणी के आतंकवादी के रूप में की गई। उक्त घटना के लिए, लालपोरा पुलिस स्टेशन में आरपीसी की धारा 307, आईए अधिनियम की धारा 7/27 के तहत मामला एफआईआर संख्या 137/2016 दर्ज है और इस पर आगे की जांच चल रही है। पूरे ऑपरेशन के दौरान, घरों में फंसे निवासियों को बाहर निकालने में और विशेष रूप से लश्कर-ए-तैयबा के खूंखार आतंकवादी के सफाए में श्री सरफराज बशीर, उप पुलिस अधीक्षक केपीएस-125839, एसजीसीटी मोहम्मद अकबर, नं. 620/एपी 7वीं और कांस्टेबल (ऑपरेशन) मोहम्मद अशरफ, नं. 3025/पीडब्लू की भूमिका सराहनीय रही, जिन्होंने अपनी जान की परवाह किए बिना भारी सशस्त्र आतंकवादी के साथ सामने से बंदूक की एक भीषण लड़ाई लड़ी।

इस ऑपरेशन में, सर्व/श्री सरफराज बशीर गनाई, डीएसपी, मोहम्मद अकबर लोन, एसजीसीटी और मोहम्मद अशरफ लोन, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 24.10.2016 से दिया जाएगा।

(संख्या 11020/118/2018-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 59-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	शफकत हुसैन	अपर पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	मशकूर अहमद	उप पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार
03	बिलाल अहमद भट	एसजी कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
04	जावेद अहमद फाफू	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 04.02.2017 को, लगभग 11:40 बजे नसीम-बाग बाईपास, सोपोर के आम क्षेत्र में हिजबुल मुजाहिदीन के आतंकवादियों, जो पुलिस और सुरक्षा बल पर एक बड़ा हमला करने के प्रयास में श्रीनगर की तरफ जा रहे थे, की आवाजाही/मौजूदगी होने के बारे में एक विशेष खुफिया इनपुट पर कार्रवाई करते हुए, सोपोर पुलिस ने आतंकवादियों के खात्मे के लिए कई नाके स्थापित करने के अलावा एसओजी पार्टी बरामूला और 52-आरआर के साथ मिलकर नसीम-बाग बाईपास, सोपोर के उस विशेष क्षेत्र की घेराबंदी कर दी और सर्च ऑपरेशन आरंभ किया। इस दौरान, श्री शफकत हुसैन-केपीएस, एसपी (ऑपरेशन), बरामूला के नेतृत्व वाली एक नाका पार्टी, जिसमें श्री मशकूर अहमद-केपीएस, एसजी फारूक हुसैन 762/बी, कांस्टेबल मोहम्मद यूनिस्, 743/एसपीआर, कांस्टेबल इरशाद अहमद, 668/एसपीआर, कांस्टेबल तौसीफ अहमद 689/एसपीआर, कांस्टेबल जावेद अहमद, सं. 706/आईआरपी, 13वीं बटालियन, एसपीओ तारिक अहमद, 422/एसपीओ-बीडीएम, एसपीओ मोहम्मद रफीक, 68/एसपीओ-एसपीआर, एसपीओ रेयाज अहमद, 226/एसपीओ-बीएलए, एसपीओ अशाक हुसैन, 1610/एसपीओ-बीएलए शामिल थे, ने दो आतंकवादियों को रोक लिया। आतंकवादियों को चुनौती दिए जाने पर उन्होंने नाका पार्टी पर एक ग्रेनेड फेंका और गोलीबारी की, जिसके फलस्वरूप शफकत हुसैन, सं. 017356-केपीएस, एसपी (ऑपरेशन), बरामूला घायल हो गए। इस अधिकारी ने घायल होने के बावजूद, तुरंत अपनी पोजीशनों को सुरक्षित रखा और आतंकवादियों के विरुद्ध कार्रवाई हुए समय उच्च स्तर की पेशेवरता, साहस और धैर्य का प्रदर्शन किया तथा गोलीबारी का मुंहतोड़ जवाब दिया। चूंकि, बाईपास सड़क पर भारी यातायात था और सड़क के दोनों ओर से बड़ी संख्या में पैदल यात्री भी आ जा रहे थे, इसलिए अधिकारी ने यह भांप

लिया कि आतंकवादी यातायात और लोगों की आवाजाही का फायदा उठाकर वहां से भाग सकते हैं। इस अधिकारी ने बिना समय गवाए, अपनी टीम के साथ आतंकवादियों की तरफ बढ़ना शुरू कर दिया। इस कार्रवाई में उनकी टीम को इंस्पेक्टर मशरत अहमद, एआरपी-026108, कांस्टेबल जहीर अहमद, 682/आईआर, 6वीं बटालियन, कांस्टेबल इरशाद-अहमद, 395/आईआर, 13वीं बटालियन, कांस्टेबल जावेद अहमद, 684/बी, कांस्टेबल बिलाल अहमद, 624/एसपीआर, एसपीओ मोहम्मद शाह, 502/एपीओ-बीडीएम, एसपीओ मोहम्मद जाहिद, 141/एसपीओ-बीएलए, एसपीओ एजाज अहमद 295/एसपीओ-बीएलए को शामिल करके बनाई गई एक अन्य टीम के द्वारा कवर फायर/बैकअप फायर प्रदान किया गया। पुलिस पार्टी को अपनी ओर बढ़ते हुए देखकर दोनों आतंकवादियों ने अपनी सोची-समझी रणनीति के अनुसार अलग-अलग दिशाओं की ओर भागना शुरू कर दिया। श्री शफकत हुसैन-केपीएस (ऑपरेशन), बारामूला के नेतृत्व वाली पुलिस पार्टी स्वयं को गंभीर खतरे में डालते हुए तुरंत ही आतंकवादियों के सामने खड़ी हो गई और पार्टी ने अपने अदभुत शौर्य/पेशेवरता का प्रदर्शन करते हुए आतंकवादियों पर गोलियों की बौछार कर दी, जिसके फलस्वरूप एक आतंकवादी मारा गया। इसी दौरान दूसरे आतंकवादी ने दूसरी दिशा से बच कर भाग निकलने का प्रयास किया, लेकिन इंस्पेक्टर मशरत अहमद सं. एआरपी-026108 के नेतृत्व वाली दूसरी पुलिस पार्टी ने तुरंत ही उक्त आतंकवादी को गोलीबारी में उलझा दिया और वह दूसरा आतंकवादी भी एक छोटी सी मुठभेड़ में गोलीबारी से मारा गया, जिसमें सुरक्षा बलों को कोई हानि नहीं हुई। बाद में, मारे आतंकवादियों की पहचान हिजबुल मुजाहिदीन संगठन के मोहम्मद अजहर खान उर्फ उमर पुत्र नजीर अहमद खान, निवासी-तुर्ग कीगम नतनूसा कुपवाड़ा (श्रेणी 'ग') और सज्जाद अहमद लोन उर्फ बाबर पुत्र मोहम्मद अकबर, निवासी- ईदीपोरा बोमई, सोपोर (श्रेणी 'ग') के रूप में हुई। मारे गए आतंकवादियों के कब्जे से जो हथियार/गोलाबारूद बरामद हुआ, उनमें 01 एके-47 राइफल (शॉटगन), 01 एके-47 राइफल (क्षतिग्रस्त), मैगजीन सहित 01 पिस्तौल, एके-47 की 63 गोलियां, पिस्तौल की 07 गोलियां, 05 एके-47 मैगजीन, चितरा की 02 थैलियां (01 क्षतिग्रस्त) और 04 हथगोले शामिल थे। इस संबंध में, तारजू- पुलिस स्टेशन में आरपीसी की धारा 307 और आयुध अधिनियम की धारा 7/27 के तहत एक प्राथमिकी संख्या 09/2017 दर्ज की गई है।

इस ऑपरेशन में, सर्वश्री शफकत हुसैन, अपर पुलिस अधीक्षक, मशकूर अहमद, उप पुलिस अधीक्षक, बिलाल अहमद भट, एसजी कांस्टेबल और जावेद अहमद फाफू, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 04/02/2017 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/119/2018-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 60-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	गुलाम जीलानी वानी	वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार
02	आमिर हसन लोन	एसजी कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
03	जाविद अहमद राथेर	एसजी कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 14.02.2017 को खान मोहल्ला, हाजिन कालगुंड में आतंकवादियों की मौजूदगी होने के बारे में हंदवाड़ा पुलिस द्वारा जुटाई गई विशेष जानकारी को लेकर हाजीन गांव और उसके आसपास के क्षेत्रों में हंदवाड़ा पुलिस और 30आरआर द्वारा एक संयुक्त ऑपरेशन की योजना बनाकर कार्रवाई आरंभ की गई। आतंकवादियों की मौजूदगी की जगह का पता लगाया गया और छिपे हुए आतंकवादियों के इर्दगिर्द की गई घेराबंदी को और अधिक मजबूत किया गया। तलाशी ऑपरेशन के दौरान, छिपे हुए आतंकवादियों द्वारा भारी मात्रा में गोलाबारी करने से स्थानीय नागरिकों के बीच भय का माहौल पैदा हो गया। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, हंदवाड़ा, श्री गुलाम जीलानी वानी-केपीएस के नेतृत्व वाली पुलिस और सेना की एक संयुक्त पार्टी, जिसमें एसजीसीटी आमिर हसन सं. 715/एपी13वीं और कांस्टेबल जाविद अहमद सं. 193/एच शामिल थे, ने नागरिकों को सुरक्षित स्थान पर ले जाने का उत्तरदायित्व स्वेच्छा से अपने ऊपर लिया। इस कार्य में जोखिम होने के बावजूद, उन्होंने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की बिल्कुल भी परवाह न करते

हुए गोलियों की बौछार के बीच नागरिकों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया। वहां मौजूद नागरिकों को सुरक्षित बाहर निकाल लेने के पश्चात, स्वयं को बिना किसी नुकसान के साथ इन खूंखार आतंकवादियों को मार गिराने के लिए आक्रमणकारी टीम तैयार की गई। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, हंदवाड़ा, गुलाम जीलानी वानी-केपीएस, एसजी कांस्टेबल आमिर हसन और कांस्टेबल जाविद अहमद इस कार्य के लिए एक बार फिर स्वेच्छा से आगे आए और विभिन्न दिशाओं में छिपे हुए आतंकवादियों की तरफ आगे बढ़ गए और इस प्रकार घेराबंदी को और अधिक मजबूत किया गया तथा आतंकवादी हमले का तुरंत जवाब दिया गया। चूंकि, आतंकवादी भारी हथियारों से लैस थे और भली भांति प्रशिक्षित थे, उन्होंने आक्रमणकारी टीम पर अंधाधुंध गोलाबारी आरंभ कर दी और कई ग्रेनेड फेंके। इस भीषण गोलाबारी के दौरान 30 आरआर के सतीश दया नामक एक मेजर गंभीर रूप से घायल हो गए। आक्रमणकारी टीम ने कुशलतापूर्वक घायल अधिकारी को सुरक्षित बाहर निकाल लिया, जिन्हें स्वास्थ्य उपचार के लिए ले जाया गया, जहां उन्होंने दम तोड़ दिया। आतंकवादियों के इस अचानक हमले ने आक्रमणकारी टीम के लिए इस ऑपरेशन को और अधिक कठिन बना दिया। भीषण जवाबी कार्रवाई में, उल्लिखित वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, हंदवाड़ा, गुलाम जीलानी वानी-केपीएस, एसजी कांस्टेबल आमिर हसन और कांस्टेबल जाविद अहमद स्वयं की जान की परवाह किए बिना जांबाजी दिखाते हुए, खूंखार आतंकवादियों की तरफ बढ़े और छिपे हुए आतंकवादियों के एकदम निकट पहुंच गए। छिपे हुए आतंकवादियों पर अंतिम आक्रमण के दौरान आक्रमणकारी टीमों ने उन्हें कवर फायर दिया, जिसके फलस्वरूप लश्कर-ए-तैयबा संगठन के तीन मोस्ट वांटेड विदेशी आतंकवादियों को मार गिराया गया। बाद में, उनकी पहचान (01) दारदा, निवासी- पाकिस्तान (02) साद, निवासी- पाकिस्तान और (03) माविया, निवासी- पाकिस्तान के रूप में की गई। आतंकवाद-रोधी इस संयुक्त ऑपरेशन के दौरान आक्रमणकारी टीमों के अन्य सहभागियों को आतंकवाद-रोधी ऑपरेशन के दौरान उनके द्वारा निभाई गई भूमिका के अनुरूप ओटीपी/कन्वर्जन और समुचित पुरस्कार प्रदान किया गया/इसके लिए सिफारिश की गई। तथापि, समूचे ऑपरेशन में वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक हंदवाड़ा, गुलाम जीलानी वानी-केपीएस, एसजी कांस्टेबल आमिर हसन और एसजी कांस्टेबल जाविद अहमद ने अदम्य साहस और कर्तव्य के प्रति सर्वोच्च समर्पण भावना का प्रदर्शन किया और यह सुनिश्चित किया कि नागरिकों को सुरक्षित बाहर निकाला जाए। उनके द्वारा दिखाए गए अद्भुत शौर्य के परिणामस्वरूप, सुरक्षा बलों को बिना किसी नुकसान के यह ऑपरेशन सफलतापूर्वक पूरा किया जा सका।

इस ऑपरेशन में, सर्वश्री गुलाम जीलानी वानी, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, आमिर हसन लोन, एसजी कांस्टेबल और जाविद अहमद राथेर, एसजी कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 14/02/2017 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/120/2018-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 61-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	निसार अहमद दारजी	उप पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	मोहम्मद सैदिक	एसआई	वीरता के लिए पुलिस पदक
03	गुलाम मुस्तफा कटोच	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 15.08.2016 को बारामूला की पुलिस को विश्वसनीय सूत्रों से यह जानकारी प्राप्त हुई कि बिझामा पुलिस स्टेशन के गौड़ाथाल माइयां में 05 विदेशी आतंकवादी देखे गए हैं। इनपुट के बारे में और अधिक जानकारी जुटाई गई और इस जानकारी को 17 जेएके राइफल्स के साथ साझा किया गया। उक्त सूचना पर कार्रवाई करते हुए, बारामूला पुलिस, अपर पुलिस अधीक्षक, बारामूला की देख रेख में 17 जेएके राइफल्स के साथ उक्त गांव की ओर रवाना हो गई। ऑपरेशन टीम ने उस इलाके की घेराबंदी की और रणनीतिक जगहों पर नाके स्थापित किए। भागने के सभी जगहों पर सुरक्षा बलों की समुचित तैनातियां की गईं। सेना की 01 कंपनी और कुछ पुलिस कर्मियों तथा एसपीओ को बाहरी घेरे में तैनात किया गया। तत्काल ही, दो पीओ का गठन किया गया और एक को तलाशी करने का काम सौंपा गया, जबकि दूसरे को तलाशी टीम को कवर प्रदान करने की जिम्मेदारी सौंपी गई। श्री निसार अहमद, उप पुलिस अधीक्षक (ओपीएस) बारामूला, एसआई मोहम्मद मुर्तजा, एसआई

मोहम्मद सादिक, सं. 39/बी, एचसी अज़ाज़ अहमद, सं. 79/बी (तब 125/एसपीआर), एसजी कांस्टेबल मोहम्मद सलीम, सं. 515/बी, एसजी कांस्टेबल जावीद इकबाल, सं. 305/एपी 5वीं, एसजी कांस्टेबल परवेज़ अहमद, सं. 1336/बी, एसजी कांस्टेबल शौकत अली, सं. 964/बी, एसजी कांस्टेबल नासिर अहमद, सं. 556/बी, एसजी कांस्टेबल मुश्ताक हुसैन, सं. 451/बी, एसजी कांस्टेबल गुलाममुस्तफा, सं. 66/एपी 9वें (एडब्ल्यूपी), कांस्टेबल अब्दुल वाहिद, सं. 601/आईआर 9वीं, कांस्टेबल बिलाल अहमद, सं. 510/आईआर 14वीं, कांस्टेबल मुज़फ़्फ़र अहमद, सं. 737/आईआर 13वीं बटालियन, कांस्टेबल जावीद अहमद, सं. 447/आईआर 13वीं बटालियन, कांस्टेबल अमीत पाल सिंह, सं. 1117/बी, कांस्टेबल रमीज अहमद, सं. 731/बी, कांस्टेबल मोहम्मद यूसुफ, सं. 338/आईआर 8वीं बटालियन, कांस्टेबल गुलज़ार अहमद, सं. 497/एपी 13वीं बटालियन, एसपीओ जावेद अहमद, सं. 148/एसपीओ, एसपीओ वसीम अहमद, सं. 1014/एसपीओ, एसपीओ तौसीफ अहमद, सं. 310/एसपीओ, एसपीओ हाकिम दीन, सं. 747 एसपीओ (बारामूला), एसपीओ गुलज़ार अहमद, सं. 83/एसपीओ, एसपीओ मोहम्मद आरिफ, सं. 297/एसपीओ, एसपीओ अमजद खान, सं. 1014/एसपीओ, एसपीओ सैयद सुहील, सं. 885/एसपीओ, एसपीओ सरीर अहमद, सं. 1074/एसपीओ, एसपीओ फैयाज अहमद, सं. 1538/एसपीओ, एसपीओ मोहम्मद अमीन, सं. 1741/एसपीओ, एसपीओ बशीर अहमद, सं. 723/एसपीओ, एसपीओ उमर मजीद, सं. 95/एसपीओ, एसपीओ मोहम्मद इकबाल, सं. 588/एसपीओ और एसपीओ अब्दुल रहमान, सं. 703/एसपीओ तलाशी और कवर टीमों का हिस्सा बनने के लिए स्वेच्छा से आगे आए। तलाशी ऑपरेशन, घटना स्थल पर मौजूद अधिकारियों की नजदीकी देखरेख में आरंभ किया गया और इस तलाशी ऑपरेशन का नेतृत्व श्री निसार अहमद, उप पुलिस अधीक्षक (ओपीएस) बारामूला के द्वारा किया गया। संदिग्ध इलाके की छानबीन के दौरान, छिपे हुए आतंकवादियों ने तलाशी टीम पर अचानक भारी गोलीबारी शुरू कर दी। तलाशी टीम सतर्क थी और इस हमले में उसे कोई भी नुकसान नहीं हुआ। घर में फंसे हुए लोगों की सुरक्षा और संरक्षा को ध्यान में रखते हुए, गोलीबारी का जवाब नहीं दिया गया और आसपास के घरों के लोगों के साथ-साथ घर में फंसे हुए लोगों को सुरक्षित बाहर निकालने के लिए एक ठोस रणनीति बनाई गई। अधिकारी और घटनास्थल पर मौजूद अन्य ऑपरेशनल अधिकारियों के आदेशों को पालन करते हुए, कवर टीम ने छिपे हुए आतंकवादियों को रणनीतिक ढंग से जवाबी गोलीबारी करके उलझा दिया और उन्हें घर के एक छोर में घकेल दिया। इसी बीच, श्री निसार अहमद, उप पुलिस अधीक्षक (ओपीएस) बारामूला के नेतृत्व वाली तलाशी टीम, जिसे घर में फंसे लोगों को सुरक्षित निकालने का काम सौंपा गया था, ने यह काम बिना किसी नुकसान के सफलतापूर्वक पूरा कर लिया। नागरिकों को बाहर निकालने के इस कार्य के पूरा हो जाने के तुरंत बाद, बचाव पार्टी को भी तलाशी ऑपरेशन में लगा दिया गया, क्योंकि वे स्वयं इस घातक कार्रवाई का हिस्सा बनने के लिए आगे आए थे। आतंकवादियों ने उक्त टीम पर अंधाधुंध गोलीबारी आरंभ कर दी और घेराबंदी को तोड़ने का प्रयास किया। तथापि, गोलीबारी का मुंहतोड़ जवाब दिया गया। पुलिस टीम अपने कार्य के प्रति पूर्ण रूप से वचनबद्ध थी और इस प्रकार उन्होंने आतंकवादियों को घेराबंदी से भागने नहीं दिया। संयुक्त ऑपरेशन की टीमों द्वारा आउटर कवर सपोर्ट के साथ आक्रमण टीम और आतंकवादियों के बीच यह भयानक मुठभेड़ कई घंटों तक जारी रही। अपनी मौत को नजदीक आते देख, छिपे हुए आतंकवादी अपने छिपने के स्थान से बाहर निकल गए और नजदीकी जंगलों में भागने के प्रयास में उन्होंने आक्रमण टीम पर अंधाधुंध गोलीबारी आरंभ कर दी, किंतु आक्रमण टीम अडिग रही और सभी पांच आतंकवादी तुरंत मार गिराए गए। क्षेत्र में और अधिक तलाशी करने के पश्चात यह सुनिश्चित किया गया, कि अब आतंकवादियों की ओर से कोई आवाजाही/उनकी मौजूदगी नहीं है। अंततः, इस ऑपरेशन को समाप्त कर दिया गया। मुठभेड़ स्थल से बरामद किए गए हथियारों/गोलाबारूद में 02 एके-47 राइफल, 03 एके-56 राइफल्स, 03 यूबीजीएल, एके-47/56 की 22 मैगजीन, एके-47 के 420 कारतूस, 69 खाली कारतूस (खोखा), 21 चाईनीज हथगोले (जिनको घटनास्थल पर ही नष्ट कर दिया गया), 27 यूबीजीएल ग्रेनेड, 03 आईईडी (क्षतिग्रस्त), 01 बीपी पटखा, 05 थैलियां, 03 घड़ियां, 01 स्टॉप वॉच, 02 चाकू, 04 लाइटर, 05 बैग (हॉकरसेक्स), 01 इस्पागोल (पाकिस्तान निर्मित), 08 टेबलेट ब्रूफिन (डाइक्लोफेनिक) (पाकिस्तान निर्मित), 05 टेबलेट ग्लोबिन (खुले हुए) और 01 फ्रेश अप (पाकिस्तान निर्मित) शामिल थे। इस संबंध में, इस मामले में की गई जांच से यह पता चलता है कि ये आतंकवादी विदेशी थे और इन्होंने घाटी में विध्वंसकारी गतिविधियों को अंजाम देने के लिए हाल ही में घुसपैठ की थी। उक्त घटना के संबंध में, आयुध अधिनियम की धारा 7/27, आरपीसी की धारा 307 के तहत बिजहामा- पुलिस थाने में प्राथमिकी संख्या 15/2016 दर्ज की गई है, जिस पर आगे जांच चल रही है।

इस ऑपरेशन में, सर्वश्री निसार अहमद दारजी, उप पुलिस अधीक्षक, मोहम्मद सैदिक, एसआई और गुलाम मुस्तफा कटोच, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 15/08/2016 से दिया जाएगा।

(संख्या 11020/121/2018-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 62-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	एजाज अहमद जरगर	अपर पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	बिलाल अहमद शेख	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

2 अगस्त, 2017 को, एक विश्वसनीय खुफिया इनपुट के मिलने के बाद, कुलगाम पुलिस ने 9/62 आरआर और सीआरपीएफ की 18 वीं बटालियन की सहायता से वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, कुलगाम के नेतृत्व में गोपालपोरा गांव में एक संयुक्त ऑपरेशन आरंभ किया। शुरू में ही घेराबंदी को मजबूत कर दिया गया, भाग निकलने के सभी मार्गों को बंद कर दिया गया, नागरिकों को सुरक्षित निकालने के लिए प्रयास किए गए और आतंकवादियों को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया। छिपे हुए आतंकवादियों ने भागने के प्रयास में पुलिस/सुरक्षा बलों पर अंधाधुंध गोलीबारी की, हथगोले फेंके और एक नजदीकी नाले में दुबक गए। श्री एजाज अहमद, अपर पुलिस अधीक्षक, कुलगाम ने अपने साथी कांस्टेबल बिलाल अहमद के साथ तुरंत ही नागरिकों को गाँव से निकालकर सुरक्षित स्थानों तक पहुंचाया, ताकि किसी भी नागरिक को क्षति से बचाया जा सके और पास के नाले में छिपे हुए आतंकवादियों का पीछा करने का हर संभव प्रयास किया। अधिकारी ने कुशल नेतृत्व क्षमता का प्रदर्शन किया और इलाके की घेराबंदी को और अधिक मजबूत करने के लिए अपनी टीम को शानदार ढंग से तैयार किया। घनघोर-अंधेरा और घने बागों से घिरा हुआ नाला, ऑपरेशन को पूरा करने में ऑपरेशनल पार्टी के लिए सबसे बड़ी रुकावट थी। फंसे हुए आतंकवादी सुरक्षा बलों को चकमा देने की पूरी कोशिश कर रहे थे ताकि वे वहाँ से भाग सकें। अधिकारी और उनके साथी ने उन्हें वहाँ से भाग जाने का अवसर नहीं दिया। बहादुर अधिकारी ने स्वयं की सुरक्षा की परवाह किए बिना जोखिम उठाया और वे एक खुले मैदान में आतंकवादी के करीब पहुँच गए। आतंकवादियों ने अपने सामान (बहुमूल्य जानकारी और साक्ष्यों) को पानी में फेंककर उन्हें नष्ट करने का प्रयास किया। अपर पुलिस अधीक्षक, कुलगाम के कमान वाली पुलिस पार्टी ने जवाबी कार्रवाई करते हुए दोनों आतंकवादियों को मार गिराया और स्वयं को बिना कोई नुकसान उठाए इस ऑपरेशन को सफलतापूर्वक पूरा किया। इस ऑपरेशन की एक और खास बात यह थी कि श्री हिलाल खालिक केपीएस डीएसपी पीसी कुलगाम ने अपने साथी कांस्टेबल अर्शद अहमद, सं. 488/एसपीएन (अब 1076/केजीएम) और इंस्पेक्टर विशाल शूर ने अपने साथी कांस्टेबल अनिल सिंह, सं. 481/आईआर 2nd के साथ मिलकर मुठभेड़ स्थल की बाहरी परिधि को सील कर दिया और पेशेवर ढंग से ऑपरेशनल टीम का सहयोग किया तथा भीड़ इकट्ठा नहीं होने दी, अन्यथा कानून और व्यवस्था बिगड़ने की स्थिति उत्पन्न हो सकती थी। इन बहादुर अधिकारियों/पदाधिकारियों के अथक प्रयासों और कुशल प्रबंधन के कारण, इस ऑपरेशन को एकदम सफाई के साथ अंजाम दिया गया, जो जिले की सुरक्षागत संवेदनशीलता को ध्यान में रखते हुए असाधारण है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि टीम ने लोक व्यवस्था इस तरह बनाए रखी, कि कहीं भी कोई कानून और व्यवस्था की समस्या उत्पन्न नहीं हुई और राष्ट्र विरोधी तत्वों को इस तरह के संवेदनशील क्षेत्र में युवाओं को उकसाने/भड़काने का मौका नहीं दिया। पुलिस, सीआरपीएफ और आरआर अधिकारियों और उनकी पार्टियों ने स्थानीय आबादी को किसी भी नुकसान से बचाते हुए स्थिति को पेशेवर ढंग से संभाला और दोनों आतंकवादियों को मार गिराया। आतंकवादियों को मार गिराने के बाद, अधिकारियों ने सुनिश्चित किया कि आतंकवादियों के शवों, उनके हथियारों और विस्फोटकों को सुरक्षित रूप से कब्जे में लिया जाए। यह गोलीबारी एक घंटे तक चली और इसके परिणामस्वरूप प्रतिबंधित संगठन हिजबुल मुजाहिदीन (एचएम) के निम्नलिखित आतंकवादियों को मार गिराया गया। इन आतंकवादियों की पहचान अकीब हुसैन इट्ट पुत्र अब्दुल हमीद निवासी-गोपालपोरा (श्रेणी "ग"), सुहैल अहमद राथेर पुत्र आरिफ हुसैन राथेर निवासी-तांत्रेपोरा (श्रेणी "ग") के रूप में हुई। यहाँ यह उल्लेख करना समीचीन होगा कि श्री अजाज़ अहमद, अपर पुलिस अधीक्षक, कुलगाम और उनके साथी कांस्टेबल बिलाल अहमद, सं. 929/केजीएम के साहस और वीरतापूर्ण कार्रवाई के बिना इन आतंकवादियों का खात्मा करना मुश्किल होता। यदि अधिकारी और उनके साथी ने अपने पेशेवर कौशल का प्रदर्शन नहीं किया होता, समझदारी न दिखाई होती, और यदि वे राष्ट्रीय अखंडता और राज्य की सुरक्षा के खातिर अपने जीवन का बलिदान करने के लिए तैयार न रहते, तो आतंकवादी हथगोलों के धमाकों और अंधेरे की आड़ में भागने में कामयाब हो सकते थे। इस विशेष ऑपरेशन के संचालन में उनकी भूमिका अनुकरणीय और उत्कृष्ट थी।

इस ऑपरेशन में, सर्वश्री अजाज़ अहमद जरगर, अपर पुलिस अधीक्षक और बिलाल अहमद शेख, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 02/08/2017 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/123/2018-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 63-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	मो. सुभान नाइक	एसजीसीटी	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	इम्तियाज अहमद मलिक	एसजीसीटी	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 29.01.2016 को लालपोरा इलाके के दर्दपोरा गांव में भारी हथियारों से लैस आतंकवादियों के एक समूह की मौजूदगी होने के बारे में एक विशेष इनपुट विश्वसनीय सूत्रों से प्राप्त हुआ था। इनपुट के संबंध में और अधिक जानकारी जुटाई गई और श्री एजाज अहमद (तत्कालीन एसएसपी कुपवाड़ा), श्री फैयाज हुसैन (तत्कालीन एसएसपी कुपवाड़ा) और श्री हिलाल खालिक (तत्कालीन उप पुलिस अधीक्षक, पीसी लोलाब) के नेतृत्व में जिला पुलिस कुपवाड़ा द्वारा एक ऑपरेशन की योजना बनाकर ऑपरेशन आरंभ किया गया। इस ऑपरेशन में पुलिस स्टेशन- लालपोरा, पीसी सोगम तथा सेना की 28 आरआर और सीआरपीएफ की 162वीं बटालियन की टुकड़ियों को शामिल किया गया। लक्ष्य क्षेत्र की घेराबंदी की गई और सर्व ऑपरेशन चलाया गया। एसजीसीटी मोहम्मद सुभान, सं. 338/केपी (अब एचसी) और एसजीसीटी इम्तियाज अहमद, सं. 713/केपी (अब एचसी), एसजीसीटी तनवीर अहमद, सं. 601/एपी 7th, कांस्टेबल मुश्ताक अहमद, सं. 813/केपी, कांस्टेबल मंजूर अहमद, सं. 1049/पीआई, कांस्टेबल मुनीर अहमद, सं. 931/केपी, एसपीओ शाबिर अहमद, सं. 638/एसपीओ, एसपीओ मोहम्मद इकबाल, सं. 1031/एसपीओ, एसपीओ जहांगीर अहमद, सं. 13/एसपीओ, एसपीओ अब्दुल मजीद, सं. 367/एसपीओ, एसपीओ मंजूर अहमद, सं. 1024/एसपीओ और एसपीओ फैयाज अहमद, सं. 16/एसपीओ स्वेच्छा से टीमों में शामिल हुए और उन्होंने सर्व ऑपरेशन में हिस्सा लेने तथा सर्व पार्टी को कवर प्रदान करने की जिम्मेदारी ली। शाम को, जबकि सर्व ऑपरेशन जारी था, छिपे हुए आतंकवादियों ने हत्या के इरादे से सेना और पुलिस की सर्व पार्टी पर भारी गोलीबारी आरंभ कर दी। सर्व पार्टी सतर्क थी और उसने आतंकवादियों के हमले को नाकाम कर दिया। कवर पार्टी द्वारा गोलीबारी का प्रभावी ढंग से जवाब दिया गया, जिसके दौरान एक आतंकवादी तुरंत ही मारा गया। शेष 02 आतंकवादियों ने मंजूर अहमद चौहान पुत्र शाह ज़मान निवासी-लोहार मोहल्ला दर्दपोरा के घर में शरण ले ली। चूंकि, उक्त इलाके में पहले से ही पुलिस और सेना की घेराबंदी थी, इसलिए आतंकवादियों को घटना स्थल से भागने का कोई रास्ता नहीं मिला और उन्होंने पुलिस पार्टी पर भारी गोलीबारी आरंभ कर दी। अंधेरे के कारण, सुरक्षा बलों/घर में फंसे हुए लोगों को किसी भी प्रकार के नुकसान से बचाने के लिए सर्व ऑपरेशन को रोक दिया गया था। दिनांक 30/01/2016 को सुबह-सुबह, घर में फंसे हुए लोगों को सुरक्षित बाहर निकाला गया तथा उसके बाद अधिकारियों/पदाधिकारियों और उपरोक्त अधिकारियों की एक समर्पित टीम ने ऑपरेशनल कार्रवाई करते हुए आतंकवादियों पर अंतिम हमला किया। आतंकवादियों के छिपने की सटीक जगह का पता लगाया गया और भयानक गोलीबारी के पश्चात, दोनों आतंकवादियों को मार गिराया गया। इलाके की पुनः गहन छानबीन की गई, किन्तु और अन्य आतंकवादियों की कोई मौजूदगी नहीं देखी गई/सूचना नहीं मिली और आखिरकार ऑपरेशन समाप्त कर दिया गया। पूरे ऑपरेशन में, 03 कट्टर आतंकवादियों को मार गिराया गया, जिनकी पहचान लश्कर-ए-तैयबा के 1. मुजमिल उर्फ अबू उसामा (क+ श्रेणी) 2. मरूफ उर्फ दुजाना (क+ श्रेणी) और इसार (क+ श्रेणी) के रूप में की गई। ये आतंकवादी वर्ष 2013 से जिला कुपवाड़ा, विशेष रूप से लोलाब पट्टी में सक्रिय थे और सुरक्षा बलों पर होने वाले विभिन्न हमलों में शामिल थे। इनके खात्मे के साथ ही लश्कर के आतंकवादियों का एक पुराना बचा हुआ समूह समाप्त हो गया। ऑपरेशन के दौरान बरामद हथियारों/गोलाबारूद में एके-47 राइफल- 3, एके-47 मैगजीन- 14, एके-47 के 427 राउंड, 9 एमएम पिस्टल- 1, पिस्टल मैगजीन- 2, 9 एमएम के 20 राउंड, 2810 रुपए की भारतीय मुद्रा, रेडियो (रुबीना)- 01 और युद्ध का अन्य सामान शामिल है। इस ऑपरेशन के संबंध में, आरपीसी की धारा 307 और आयुध अधिनियम की धारा 7/27 के तहत मामला एफआईआर सं. 07/2016 पुलिस स्टेशन- लालपोरा में दर्ज है। इस मामले में आगे की जांच चल रही है।

इस ऑपरेशन में, सर्वश्री मोहम्मद सुभान नाइक, एसजीसीटी और इम्तियाज अहमद मलिक, एसजीसीटी ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 29/01/2016 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/128/2018-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 64-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	सैयद माजीद मोसावी	उप पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	आसिफ इकबाल कुरैशी	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 26.01.2016 को, अब्दुल रशीद वानी सुपुत्र अब्दुल खालिक वानी, निवासी खल्हार, कोकेरनाग के घर में आतंकवादियों की मौजूदगी होने के बारे में श्रीनगर/अनंतनाग पुलिस को सूचना प्राप्त हुई। तदनुसार, 19 आरआर की सहायता से एसओजी, कोकेरनाग/एसओजी श्रीनगर ने एक संयुक्त ऑपरेशन शुरू किया। सैयद मजीद मोसावी, उप पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन) पीसी, श्रीनगर और श्री मोहम्मद असलम, उप पुलिस अधीक्षक ऑपरेशन (पीसी) के नेतृत्व वाली दो टीमों, जिनमें श्री जाविद इकवाल, उप पुलिस अधीक्षक, केपीएस-125737, महिला/हेड कांस्टेबल डॉली कौर, 26531 एसजीसीटी रसपाल, 647/आईआरपी, कांस्टेबल राकेश पंडित, 817/एस, कांस्टेबल मोहम्मद फिरदौस, 32/एडब्ल्यूपी, एसजीसीटी आसिफ इकबाल, सं. 1344 /ए, एसपीओ उमर बशीर 197/एसपीओ, एसपीओ शौकत अहमद 176/एसपीओ, एसपीओ जाविद अहमद, 1352/एसपीओ, एसपीओ गौहर हुसैन, 160/एसपीओ, एसपीओ शौकत अहमद, 93/एसपीओ और एसपीओ मोहम्मद इशाक, 912/एसपीओ आदि शामिल थे, को कासो कार्रवाई करने के लिए तैनात किया गया था। दोनों अधिकारियों ने 19 आरआर के साथ समन्वय किया तथा पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन), अनंतनाग की निगरानी और वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, अनंतनाग की संपूर्ण निगरानी में गांव को घेर लिया। उपर्युक्त अधिकारियों के नेतृत्व में ऑपरेशनल घटक और 19 आरआर ने लक्ष्य घर का पता लगा लिया। पुलिस पार्टियों को लक्ष्य घर की ओर आते देख, अन्दर छिपे हुए आतंकवादी ने पुलिस बलों को हताहत करने और घेरा तोड़ने के लिए उन पर अंधाधुंध फायरिंग शुरू कर दी, परंतु उत्कृष्ट बुद्धि तत्परता और श्री सैयद मजीद मोसावी, उप पुलिस अधीक्षक पीसी श्रीनगर और श्री मोहम्मद असलम, उप पुलिस अधीक्षक पीसी कोकेरनाग के नेतृत्व वाली टीमों पर मजबूत कमान होने के कारण आतंकवादियों को घेरा तोड़ने का कोई मौका नहीं मिला और वे दोनों टीमों अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना लगातार लक्ष्य घर की ओर बढ़ती रहीं। यह टीमों की असाधारण बहादुरी का ही एक प्रयास था, कि दोनों टीमों आतंकवादियों की ओर से गोलियों की बौछार होने के बावजूद आगे बढ़ीं। अधिकारियों ने किसी भी आम नागरिक/स्वयं की हानि से बचने के लिए, पड़ोसी आबादी को खाली करा दिया और लक्ष्य घर की ओर रुख करते गए। घबराहट में आतंकवादी घर से बाहर निकल आया और उसने घेरा तोड़ने और भागने के प्रयास में पुलिस पार्टियों पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी, परंतु श्री सैयद मजीद मोसावी, उप पुलिस अधीक्षक, पीसी श्रीनगर और श्री मोहम्मद असलम, उप पुलिस अधीक्षक, कोकेरनाग और उनकी टीम के साहस एवं वीरतापूर्वक कार्रवाई से वे अपने जीवन की परवाह किए बिना न केवल आतंकवादी को खत्म करने में सफल रहे, बल्कि इस क्षेत्र के नागरिकों को कोई हानि नहीं हुई और निकासी भी सुनिश्चित ढंग से कर ली गई। मारे गए आतंकवादी की पहचान बाद में मुश्ताक अहमद हारु उर्फ आदिल, पुत्र मोहम्मद अमीन हारु, हिजबुल मुजाहिदीन गुट, (ख-श्रेणी) पुशवारा, अनंतनाग के निवासी के रूप में की गई। ऑपरेशन के दौरान बरामद हथियारों/गोलाबारूद में एके-47 राइफल- 1, एके-47 मैगजीन- 4, एके-47 के 107 राउंड, 1 पाउच और 1 आधार कार्ड (क्रम सं. 480319198834) शामिल हैं। इस संबंध में, आरपीसी की धारा 307 और आयुध अधिनियम की धारा 7/27 के अंतर्गत प्रकरण एफआईआर संख्या 11/2016 थाना-कोकेरनाग में पंजीकृत है।

यहां यह उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं है कि मारा गया आतंकवादी वर्ष 2015 से ही सक्रिय था तथा क्षेत्र में शांति और अमन-चैन के लिए बहुत बड़ा खतरा था। वह सुरक्षा बलों पर आतंकवादी हमला करने के लिए कई बार से कोकेरनाग क्षेत्र का दौरा कर रहा था और एसओजी, कोकेरनाग के रडार पर था। मारा गया आतंकवादी अनंतनाग/कोकेरनाग शहरों में हिजबुल मुजाहिदीन के क्षेत्र को फिर से बनाने के लिए युवाओं को आतंकवादी रैंकों में शामिल होने के लिए प्रेरित कर रहा था।

इस ऑपरेशन में, सर्वश्री सैयद माजीद मोसावी, उप पुलिस अधीक्षक और आसिफ इकबाल कुरैशी, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 26.01.2016 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/133/2018-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन

विशेष कार्य अधिकारी

सं. 65-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	मसरत अहमद मीर	इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार
02	मोहम्मद हाफिज	सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक
03	मंगा राम	हेड कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 30.07.2017 को लगभग 03.30 बजे, गांव- तहब, पुलवामा में आतंकवादियों की आवाजाही के बारे में पुलवामा पुलिस को विश्वस्त सूचना प्राप्त हुई थी। इस सूचना को श्री सैयद जहीर अब्बास जाफरी, उप पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन), पुलवामा के साथ साझा किया गया था और यह पता चला कि आतंकवादी अब्दुल खालिक भट सुपुत्र मोहम्मद रजब भट के घर में छिपे हुए हैं। इस सूचना को फिर 55 आरआर 182/183वीं बटालियन सीआरपीएफ के साथ साझा किया गया और एक संयुक्त ऑपरेशन शुरू करने का निर्णय लिया गया। हेड कांस्टेबल जहूर अहमद 1376/पीएल, हेड कांस्टेबल जफर इकबाल 906/पीएल, कांस्टेबल मुश्ताक अहमद 1619/पीएल, कांस्टेबल मुश्ताक अहमद 1544/पीएल, कांस्टेबल जाहिद अब्बास 1297/पीएल, फॉलोवर मोहम्मद असगर 21/एफ/अन्य वाले पुलवामा पुलिस घटक के साथ वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, पुलवामा और उप पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन) पुलवामा, 55 आरआर तथा 182/183वीं बटालियन सीआरपीएफ के अधिकारियों/कर्मचारियों को साथ ले कर तहब गांव की ओर रवाना हुए और उनके द्वारा एक संयुक्त घेराबंदी की गई। एसपीओ सबजार अहमद 596/एसपीओ, एसपीओ सोमनाथ, 63/एसपीओ-जम्मू, एसपीओ मोहम्मद शफी, 463/एसपीओ, एसपीओ बशीर अहमद, 330/एसपीओ, एसपीओ इरशाद अहमद, 115/एसपीओ, एसपीओ आशिक हुसैन, 145/एसपीओ, एसपीओ अख्तर हुसैन, 382/एसपीओ और एसपीओ इम्रियाज अहमद, 161/एसपीओ और अन्य को शामिल करके बनाई गई सब इंस्पेक्टर मोहम्मद हाफिज एआरपी-1059251 के नेतृत्व वाली एसओजी, पुलवामा आतंरिक घेराबंदी वाली पार्टियों में शामिल हो गई। आतंकवादियों ने उन पर गोलीबारी शुरू कर दी। इस जबाबी गोलीबारी के दौरान, इंस्पेक्टर मसरत अहमद मीर, एआरपी 026108, सब इंस्पेक्टर मोहम्मद हाफिज, एआरपी 109251 और हेड कांस्टेबल मंगा राम, नं. 586/आईआर 7वीं बटालियन लक्ष्य घर में प्रवेश करने में कामयाब हो गए और उनकी आतंकवादियों के साथ आमने-सामने की भिड़ंत हो गई, जिसमें इंस्पेक्टर मसरत अहमद मीर, सब इंस्पेक्टर मोहम्मद हाफिज और हेड कांस्टेबल मंगा राम बाल-बाल बचे। चूंकि, आतंकवादी एक फायदेबंद स्थिति में थे, इसलिए वे इंस्पेक्टर मसरत अहमद मीर के नेतृत्व वाली टीम पर हमला कर पाए। हालांकि, अधिकारी और उनके साथियों ने गोलीबारी का प्रभावी ढंग से जबाब दिया और आतंकवादियों का मनोबल कम करने में सफल हुए। साथ ही, स्वयं की हानि से बचने के लिए, अधिकारियों ने घर के दो अलग-अलग हिस्सों में अपना मोर्चा संभाला। कुछ समय के लिए परस्पर गोलीबारी रुक गई। इस बीच, कांस्टेबल मुदस्सिर अहमद, 1533/पीएल ईएसके 127104 और फॉलोवर शब्बीर अहमद कूली, एफ-46/आईआर 11वीं, एआरपी-135666 के साथ उप पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन), पुलवामा लक्ष्य घर के समीप पहुंच गए। आतंकवादी ने पुलिस पार्टी को अपनी ओर आते देखकर, उप पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन) पुलवामा और उनकी टीम पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। पुलिस पार्टी अपनी जान की परवाह किए बिना, मृत्यु के द्वार के समीप होते हुए भी सचेत रही और परिस्थिति का बहादुरी से सामना किया, जिसके फलस्वरूप खुले मैदान में आतंकवादियों का सफाया कर दिया गया। मारे गए आतंकवादियों की पहचान शौकत अहमद मीर उर्फ शब्बीर (श्रेणी-ग) सुपुत्र मोहम्मद एहसान मीर, निवासी मेहन्द श्री गुफवारा अनंतनाग और शारिक अहमद शेख (श्रेणी-ग) सुपुत्र अली मोहम्मद शेख, निवासी-गुलजारपोरा, अवंतीपोरा के रूप में की गई थी। ऑपरेशन के दौरान बरामद हथियारों/गोलाबारुद में 1 एसएलआर राइफल (क्षतिग्रस्त), 1 इन्सास राइफल (क्षतिग्रस्त), 2 एसएलआर मैगजीन (1 क्षतिग्रस्त), 1 इन्सास मैगजीन (क्षतिग्रस्त), 1 एलएमजी मैगजीन (क्षतिग्रस्त), 32 एसएलआर जिंदा कारतूस, 12 इन्सास कारतूस और 2 पाउच शामिल हैं। इस संबंध में आरपीसी की धारा 307 और आयुध अधिनियम की धारा 7/27 के अंतर्गत प्रकरण एफआईआर संख्या 245/2017 पुलिस थाना- पुलवामा में पंजीकृत हैं।

इस ऑपरेशन में, सर्वश्री मसरत अहमद मीर, इंस्पेक्टर, मोहम्मद हाफिज, सब इंस्पेक्टर और मंगा राम, हेड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 30.07.2017 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/138/2018-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 66-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार/वीरता के लिए पुलिस पदक का तृतीय बार प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	हरमीत सिंह	वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक का तृतीय बार
02	सजाद अहमद गनई	सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक
03	फारूख अहमद मंटू	असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार
04	मज़फर अहमद तंत्रे	हेड कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार
05	अकील अहमद मलिक	एसजीसीटी	वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 05.08.2017 को लगभग 12.30 बजे, सोपोर पुलिस को अमरगढ़, सोपोर के जामिया मोहल्ला में लश्कर-ए-तैयबा के आतंकवादियों, जो पुलिस/सुरक्षा बल के प्रतिष्ठानों पर कुछ बड़ा हमला करने का प्रयास कर रहे थे, की मौजूदगी/आवाजाही होने के बारे में सूचना प्राप्त हुई। सूचना पर कार्रवाई करते हुए, सोपोर पुलिस ने सेना की 52 आरआर के जवानों और 179/177/92वीं बटालियन, सीआरपीएफ के दस्ते के साथ इस क्षेत्र की घेराबंदी की और तलाशी ऑपरेशन शुरू कर दिया। तलाशी के दौरान, आतंकवादियों से एक संपर्क स्थापित हुआ, जो बशीर अहमद गनई सुपुत्र गुलाम नबी गनई, निवासी- जामिया मोहल्ला, अमरगढ़, सोपोर के घर में छिपे हुए थे। चूंकि, बहुत रात हो चुकी थी और लोग गहरी निद्रा में थे, इसलिए यदि टारगेट हाउस में कार्रवाई की जाती, तो नागरिकों की क्षति होने की पूरी संभावना थी। अतः नागरिक क्षति से बचने के लिए, पुलिस/सेना/सीआरपीएफ की दो संयुक्त पार्टियां बनाई गईं। पहली संयुक्त पार्टी में सब इंस्पेक्टर सजाद अहमद, एआरपी-109307, असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर युसूफ-उल-उमर, 29/आईआर तीसरी बटालियन, असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर फारूख अहमद, 24/सोपोर, हेड कांस्टेबल मुजफ्फर अहमद, 34/सोपोर, एसजीसीटी तारिक अहमद, 222/सोपोर, एसजीसीटी फैयाज अहमद, 45/सोपोर, एसजीसीटी अकील अहमद, 46/सोपोर, एसपीओ आसिफ रसूल 198/एसपीओ, एसपीओ मोहम्मद अशरत, 420/एसपीओ, एसपीओ शाबिर अहमद खान, 285/एसपीओ, एसपीओ अब्दुल मजीद, 306/एसपीओ, एसपीओ इश्फाक अहमद, 10/एसपीओ और एसपीओ एजाज अहमद, 208/एसपीओ शामिल थे और इस पार्टी का नेतृत्व हरमीत सिंह, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, सोपोर कर रहे थे तथा दूसरी संयुक्त पार्टी में इंस्पेक्टर सब्जार अहमद, सं. 7179/एनजीओ, हेड कांस्टेबल जाविद अहमद, 210/सोपोर, एसजीसीटी विलास अहमद, 709/सोपोर, कांस्टेबल मयसर अहमद, 475/सोपोर, कांस्टेबल नाजिर अहमद, 593/सोपोर, कांस्टेबल मुबाशिर अहमद, 588/सोपोर, एसपीओ जहर अहमद, 324/एसपीओ, एसपीओ होशियार सिंह, 497/एसपीओ-अनंतनाग, एसपीओ परवेज अहमद, 152/एसपीओ, एसपीओ फैयाज अहमद, 295/एसपीओ, एसपीओ मोहम्मद अल्ताफ, 89/एसपीओ और एसपीओ एजाज अहमद, 308/एसपीओ शामिल थे और इस टीम का नेतृत्व उप पुलिस अधीक्षक (ऑप्स), सोपोर कर रहे थे। दोनों टीमों को पहले फंसे हुए नागरिकों को निकालने का कार्य सौंपा गया और तदनुसार, पहली संयुक्त पार्टी ने खुद को एक बड़े जोखिम में डालकर नागरिकों को बाहर निकालना शुरू किया और दूसरी संयुक्त पार्टी द्वारा पहली संयुक्त पार्टी को सुरक्षा प्रदान करने का कार्य सौंपा गया। फंसे हुए नागरिकों को घेराबंदी क्षेत्र से सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया तथा घेराबंदी को और अधिक मजबूत कर दिया गया। छिपे हुए आतंकवादियों को आत्मसमर्पण के लिए कहा गया, लेकिन उन्होंने जवाब में संयुक्त पार्टियों पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। शुरूआती गोलीबारी में ही असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर युसूफ उल उमर घायल हो गए और उन्हें उपचार के लिए तुरंत वहां से बाहर निकालकर अस्पताल पहुंचाया गया। श्री हरमीत सिंह, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सोपोर के नेतृत्व में सब इंस्पेक्टर सजाद अहमद वाली पहली संयुक्त टीम, जो पहले ही अग्रिम मोर्चे पर थी, ने इस तथ्य के बावजूद अपना मनोबल नहीं गिरने दिया, कि भारी गोलीबारी के जवाब में उनका एक साथी गोली लगने से घायल हो चुका है, वे जबाबी फायर करते रहे, जिसके फलस्वरूप गोली की यह लड़ाई अधिक भयंकर हो चुकी थी। चूंकि, आतंकवादी घर के अंदर थे, उनकी संख्या तीन थी और वे रक्षात्मक स्थिति में थे तथा तीन अलग-अलग दिशाओं से संयुक्त पार्टियों पर लगातार गोलीबारी कर रहे थे। पहली संयुक्त पार्टी अंतिम हमला करने के लिए टारगेट हाउस के पास तक पहुंचने के लिये स्वेच्छा से तैयार हो गई और दूसरी संयुक्त पार्टी उन्हें कवर फायर/सुरक्षा फायर प्रदान कर रही थी। पहली संयुक्त पार्टी ने टारगेट हाउस की ओर बढ़ना शुरू किया और दूसरी संयुक्त पार्टी ने उन्हें कवर फायर/सुरक्षा फायर प्रदान किया तथा जैसे ही पहली संयुक्त पार्टी टारगेट हाउस के मुख्य दरवाजे के समीप पहुंचने वाली थी, तभी दो छिपे आतंकवादी घर के मुख्य दरवाजे से बाहर कूदे और उन्होंने अपने अत्याधुनिक हथियारों से एडवांस पार्टी पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी, परंतु एडवांस पार्टी ने नजदीक दूरी होने और प्रतिकूल परिस्थिति में भी अत्यधिक वीरता, पेशेवरता, तत्परता और सूझबूझ का प्रदर्शन करते हुए गोलीबारी का प्रभावी ढंग से जवाब दिया तथा इस गोलीबारी में दोनों आतंकवादियों को तत्काल मार दिया। इसी बीच, छिपा हुआ अन्य आतंकवादी भी यह जानकर कि उसके दोनों साथी मारे गए हैं, खिड़की से घर के बाहर कूद गया और वह घर से बाहर निकलते समय पुलिस/सुरक्षा बलों पर लगातार गोलीबारी करता रहा। भागते समय उसने अपने आप को छिपाने और टारगेट हाउस के समीप गहरे नाले में सुरक्षित छिपने/पोजीशन लेने का प्रयास किया, परंतु दूसरी संयुक्त टीम बाहर की तरफ पहली टीम को बैक अप फायर प्रदान करने के लिए तैनात थी। इस प्रकार, लगातार हमले के दौरान, तीसरे आतंकवादी को भी मार गिराया गया। मारे गए आतंकवादियों की पहचान आबिद हामिद मीर सुपुत्र अब्दुल हामिद, निवासी- मीर मोहल्ला हाजिन, जिला-

बांदीपोर (ग-श्रेणी, लश्कर-ए-तैयबा), जावेद, अहमद डार सुपुत्र मोहम्मद अकबर डार, निवासी- कुमार मोहल्ला खानपोरा, जिला- बारामूला (ग-श्रेणी, लश्कर-ए-तैयबा) और दानिश हसन डार उर्फ फरकान सुपुत्र गुलाम हसन डार, निवासी- मुमखाक, सोपोर के रूप में की गई थी। ऑपरेशन के दौरान बरामद हथियारों/गोलाबारूदों में 3एके-47 राइफल, 6 एके-47 मैगजीन और एके-47 के 10 राउंड कारतूस शामिल हैं। इस घटना के संबंध में, आरपीसी की धारा 307 और आयुध अधिनियम की धारा 7/27ए के अंतर्गत पुलिस थाना-तारजू में प्रकरण एफआईआर सं. 82/2017 पंजीकृत है और इस पर जांच शुरू की गई है।

इस ऑपरेशन में, सर्व/श्री हरमीत सिंह, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, सजाद अहमद गनई, सब इंस्पेक्टर, फारूख अहमद मंटू, असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर, मजफर अहमद तंत्रे, हेड कांस्टेबल और अकील अहमद मलिक, एसजीसीटी ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 05.08.2017 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/140/2018-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 67-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	मोहम्मद असलम	वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार
02	सैईद जहीर अब्बास जाफरी	उप पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार
03	ताजदार अहमद गैनई	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 03/04-07-2017 को लगभग 0700 बजे, पुलवामा के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक को बामनू पुलवामा गांव में आतंकवादियों की मौजूदगी होने के बारे में विश्वसनीय जानकारी प्राप्त हुई थी। इस जानकारी को आगे श्री चन्दन कोहली- आईपीएस, अपर पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन), पुलवामा और श्री सैईद जहीर अब्बास जाफरी, उप पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन), पुलवामा के साथ साझा किया गया। उक्त जानकारी को आगे अपर पुलिस अधीक्षक पुलवामा द्वारा पुष्टा किया गया और बताया गया कि आतंकवादी बामनू गांव के तीन घरों में छिपे हुए हैं, जो मोहम्मद युसुफ वागे पुत्र अब्दुल खालिक वागे, अब्दुल रशीद वागे पुत्र अब्दुल खालिक और अली मोहम्मद वागे पुत्र मोहम्मद जमाल के हैं। यह सूचना 44 आरआर और सीआरपीएफ की 182/183वीं बटालियन के साथ भी साझा की गई थी और एक संयुक्त ऑपरेशन चलाने का निर्णय लिया गया था। इसके पश्चात, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक पुलवामा, अपर पुलिस अधीक्षक पुलवामा और उप पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन) पुलवामा पुलिस घटक-पुलवामा की पुलिस पार्टी, 44 आरआर और सीआरपीएफ की 182/183वीं बटालियन के साथ टारगेट मोहल्ला की घेराबंदी करने के उद्देश्य से गांव बामनू, पुलवामा की ओर रवाना हो गए, ताकि टारगेट मोहल्ला की संयुक्त घेराबंदी की जा सके और फिर संयुक्त घेराबंदी कर दी गई। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, पुलवामा के निरीक्षण/कमान के अधीन एसओजी कैम्प, पुलवामा की एक रैपिड एक्शन टीम, जिसमें कांस्टेबल बाबर मोहि-उद-दीन सं. 1465/पीएल ईएक्सके-127400, कांस्टेबल ताजदार अहमद सं. 11261/पीएल ईएक्सके-115833, कांस्टेबल जावेद अहमद सं. 1618/पीएल ईएक्सके-127363, कांस्टेबल जफर बशिर सं. 1630/पीएल ईएक्सके-127646, कांस्टेबल मोहम्मद मुजफ्फर सं. 1078/पीएल ईएक्सके-116473, कांस्टेबल अनीस अहमद सं. 1130/पीएल ईएक्सके-119927, एसपीओ बिलाल अहमद सं. 87/एसपीओ, एसपीओ राऊफ अहमद सं. 250/एसपीओ, एसपीओ मुदसिर मंजूर सं. 130/एसपीओ, एसपीओ मुस्तफा कमाल सं. 267/एसपीओ और एसपीओ ओवैस अहमद शेख सं. 139/एसपीओ शामिल थे, ने ज्यादा समय गवाए बिना, 44 आरआर, 182/183वीं बटालियन सीआरपीएफ की पार्टी के साथ उत्तर, पूर्वोत्तर और उत्तर-पश्चिम दिशाओं से लक्षित मकानों की घेराबंदी कर दी। श्री सैईद जहीर अब्बास जाफरी, उप पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन) ने इसी कैम्प की एक अन्य पार्टी, जिसमें कांस्टेबल राशिद सं. 1021/पीएल ईएक्सके-111871, कांस्टेबल सुहैल हुसैन सं. 1170/पीएल ईएक्सके-112111, कांस्टेबल मोहम्मद इब्राहिम सं. 812/पीएल ईएक्सके-106257, कांस्टेबल बिलाल हुसैन सं. 1305/पीएल ईएक्सके-135578, एसपीओ मोहम्मद इस्माइल सं. 1100/एसपीओ, एसपीओ बिलाल अहमद सं. 221/एसपीओ, एसपीओ अर्शीद अहमद सं. 44/एसपीओ, एसपीओ विजय कुमार सं. 19/एसपीओ, एसपीओ बिलाल अहमद सं. 21/एसपीओ, एसपीओ निसार अहमद सं. 99/एसपीओ और एसपीओ एजाज अहमद

सं. 540/एसपीओ शामिल थे, 44आरआर, 182/183वीं बटालियन, सीआरपीएफ की दूसरी पार्टी के साथ मिलकर दक्षिण, दक्षिण-पूर्व और दक्षिण-पश्चिम दिशाओं से क्षेत्र की घेराबंदी कर दी। इन अधिकारियों ने आंतरिक घेराबंदी को संभाले रखा और सतर्क रहे। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, पुलवामा और उप पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन), पुलवामा ने लक्षित मकानों के चारों ओर की गई घेराबंदी की मजबूती का व्यक्तिगत रूप से निरीक्षण किया। घेराबंदी करने/इसे मजबूत करने के बाद लक्षित मकानों के भीतर आतंकवादियों की तलाश शुरू की गई। चूंकि, ये मकान एक दूसरे से सटे हुए थे और आकार में बड़े थे, इसलिए दो विभिन्न दिशाओं से खोजी पार्टियों का नेतृत्व करने का निर्णय लिया गया। एक पार्टी का नेतृत्व वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, पुलवामा ने किया, जिसमें एसआई इशितयाक सं. 166/आईआर 11वीं बटालियन और कांस्टेबल ताजदार अहमद सं. 1126/पीएल शामिल थे तथा दूसरी पार्टी का नेतृत्व उप पुलिस अधीक्षक पुलवामा ने किया, जिसमें पुलिस हेड कांस्टेबल अब्दुल खालिक और कांस्टेबल सुहैल हुसैन शामिल थे। श्री चंदन कोहली, अपर पुलिस अधीक्षक, पुलवामा ने अपने सहयोगी कांस्टेबल नजीर सं. 1046/पीएल के साथ आंतरिक घेरा बनाए रखते हुए पुलिस पार्टी की सहायता से उपरोक्त पार्टियों को कमरे में प्रवेश करने के लिए कवर फायर प्रदान किया। दोनों पार्टी एक साथ दो विभिन्न दिशाओं से पहुंची और लक्ष्य मकान में प्रवेश करने में सफल हो गए। आतंकवादियों ने पुलिस पार्टियों को अपनी ओर आते देखकर उन पर अंधाधुंध फायरिंग की, जिसमें वे बाल-बाल बचे। हालांकि, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, पुलवामा, उप पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन), पुलवामा और कांस्टेबल ताजदार अहमद ने अदम्य साहस और बुद्धि तत्परता को दर्शाते हुए तुरंत अपनी पोजीशन ली और अपने बचाव में जवाबी फायरिंग की, जिससे आतंकवादी रक्षात्मक पोजीशन में आने को विवश हो गए। दोनों पार्टियाँ, लक्ष्य मकान के अंदर स्थान की जांच करने के बाद घेरे में सुरक्षित लौट आए, लेकिन इस बार ऑपरेशन को अंजाम देने की रणनीति पूरी तरह व्यवस्थित थी। घेरे को मजबूती दी गई और जवाबी फायरिंग का कार्य दृढ़ता से किया गया। आतंकवादी तीन दिशाओं से सुरक्षा बलों पर अंधाधुंध फायर करते रहे, जिसके कारण जवानों और इन नागरिकों की जान जा सकती थी, जो दिन के समय हमेशा की तरह पैदल चल रहे थे। लेकिन कांस्टेबल ताजदार अहमद के सहयोग से वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, पुलवामा और उप पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन) पुलवामा ने इस गंभीर परिस्थिति को संभाला और गोलीबारी का जवाब पूरी बहादुरी से दिया। ऑपरेशन दिन भर चला, परंतु दिन के समय आतंकवादियों के विरुद्ध कोई सफलता नहीं मिली। रात्रि के दौरान, आतंकवादियों पर हावी होने के लिए विभिन्न उपाय किए गए, ताकि वे घेराबंदी से बचकर न पाएं। अगली सुबह अर्थात् दिनांक 04.07.2017 को 0500 बजे वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक पुलवामा/उप पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन), पुलवामा ने पुलिस/सुरक्षा बलों के समक्ष अपने हथियार डालने के लिए आतंकवादियों को उस क्षेत्र के गणमान्य लोगों के माध्यम से चेतावनी दी। आतंकवादियों ने चेतावनी को नजरअंदाज किया और सुरक्षाबलों को मारने एवं कार्डन से बच निकलने के इरादे से पुलिस और सुरक्षाबलों पर अंधाधुंध फायरिंग शुरू कर दी। वहां उपस्थित पुलिस के अधिकारी/जवान अपनी जान की परवाह किए बिना सतर्क रहे और उन्होंने बहादुरी से जवाबी कार्रवाई की। आतंकवादियों की ओर से फायरिंग रुकने पर पुलवामा पुलिस/आर्मी/सीआरपीएफ के अधिकारियों/जवानों को मिलाकर एक संयुक्त सर्च पार्टी बनाई गई। तलाशी के दौरान मारे गए आतंकवादियों के तीन शव पाए गए और बाद में, जिनकी पहचान अख्तर आलम खान (श्रेणी-ग) पुत्र नूर आलम खान, निवासी- विजयपुर रियासी, जम्मू, जहांगीर अहमद खांडे (श्रेणी-ग) पुत्र गुलाम रसूल खांडे, निवासी- केल्लर, शोपियां और किफायत अहमद खांडे (श्रेणी-ख) पुत्र मोहम्मद एहसान खांडे, निवासी- राजपोरा बमनू, पुलवामा के रूप में की गई। ऑपरेशन के दौरान बरामद किए गए हथियार/गोलाबारूद का ब्यौरा जब्ती मेमो में उल्लिखित है। इस संबंध में, आरपीसी की धारा 307 और आयुध अधिनियम की धारा 7/27 के तहत एक मामला एफआईआर सं. 40/2017 राजपोरा-पुलिस स्टेशन में दर्ज की गई है।

इस ऑपरेशन में, सर्वश्री मोहम्मद असलम, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, सैड ज़हीर अब्बास जाफरी, उप पुलिस अधीक्षक और ताजदार अहमद गैनई, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 03/07/2017 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/143/2018-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 68-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को वीरता के लिए पुलिस पदक (मरणोपरांत) प्रदान करते हैं:—

स्व. श्री अमन कुमार	उप पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक (मरणोपरांत)
---------------------	------------------	------------------------------------

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 02.09.2017 की सुबह-सुबह, गांव- तंत्रेपोरा, कुलगाम में आतंकवादियों की मौजूदगी होने के बारे में एक विश्वसनीय इनपुट के आधार पर कार्रवाई करते हुए, श्री श्रीधर पाटिल आईपीएस, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक कुलगाम, श्री एजाज अहमद, अपर पुलिस अधीक्षक कुलगाम, श्री अमन कुमार, उप पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन), हातीपोरा की देखरेख में एक ऑपरेशन शुरू किया गया था। ऑपरेशन में पीसी मंजगाम/62 आरआर और 18वीं बटालियन, सीआरपीएफ के सैनिकों को शामिल किया गया, जिन्होंने उक्त गांव की घेराबंदी की। सुरक्षाबलों की आवाजाही का पता लगने पर छिपे हुए आतंकवादियों ने अंधेरे का फायदा उठाकर भागने की कोशिश की। आतंकवादी को आत्मसमर्पण करने को कहा गया था, लेकिन उसने ऐसा करने से मना किया और सर्च पार्टी पर अंधाधुंध गोलीबारी की। उस दिन, मुस्लिम पर्व ईद-उल-अजहा होने के कारण, एक रणनीति बनाई गई और आतंकवादी को भागने दिया गया, ताकि आम नागरिकों के हस्तक्षेप से बचने हुए उसे गांव के बाहर पकड़ा जा सके। रणनीति के अनुसार श्री अमन कुमार, उप पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन), हातीपोरा की देखरेख में बगीचे के नजदीक एक अम्बुश लगाया गया था। आतंकवादी पकड़ने के लिए बनाई गई इस पार्टी में एसजीसीटी निसार अहमद सं. 812/केजीएम, कांस्टेबल मोहम्मद अब्बास 703/आईआरपी एआरपी-085717, कांस्टेबल शाहनवाज़ अहमद सं. 582/केजीएम ईएक्सके-077504, कांस्टेबल आशिक अहमद सं. 988/केजीएम ईएक्सके-116619, एसपीओ मोहम्मद अब्बास सं. 371/के, एसपीओ कुलवंत सिंह सं. 181/के, एसपीओ मोहम्मद शरीफ सं. 248/के और एसपीओ मोहम्मद यानूस 398/के शामिल थे। श्री अमन कुमार, उप पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन), हातीपोरा और ऊपर वर्णित टीम के अन्य बलों के साथ मिलकर किए गए अथक प्रयास, योजना और बेहतर निरीक्षण/ तालमेल के फलस्वरूप आमने-सामने की घमासान लड़ाई में दुर्दांत आतंकवादी को मारने में सफलता मिली। दूसरी तरफ, हेड कांस्टेबल चैल सिंह सं. 149/आईआर 9वीं और एसजीसीटी नसीर अहमद सं. 807/केजीएम ने मुठभेड़ की जगह के बाहरी घेरे को भलीभांति नियंत्रित किया। अधिकारियों और जवानों द्वारा मिलकर किए गए सामूहिक प्रयासों के फलस्वरूप एक आतंकवादी नामशः इश्फाक अहमद पट्टर पुत्र अब्दुल रहमान पट्टर को बिना किसी अतिरिक्त क्षति के ढेर कर दिया गया। यह लश्कर-ए-तैयबा का श्रेणी 'ग' का आतंकवादी था, जिसे श्रेणी 'ख' के लिए अनुशंसित किया गया था। मुठभेड़ स्थल से बरामद किए गए सामानों में एके राइफल-1, एके राइफल की खाली मैगजीन (क्षतिग्रस्त)-2, एके के 42 जिन्दा कारतूस, पुल थू- 1, 540 रुपए के साथ पर्स- 500 रुपए का एक अस्वीकृत नोट, एक पहचान पत्र (आधार सं. 795851432635) और मोबाइल चार्जर-1 शामिल है। इस संबंध में, आरपीसी की धारा 307 और आयुध अधिनियम की धारा 7/27 के तहत एक एफआईआर सं. 71/2017 पुलिस स्टेशन- यरिपोरा में दर्ज है।

यह उल्लेख किया जा सकता है कि यह इलाका असुरक्षित था और इस बात की पूर्ण आशंका थी कि आतंकवादी को भागने में मदद करने के लिए आम नागरिक मुठभेड़ स्थल पर पहुंचने की कोशिश करते और आतंकवादियों से सहानुभूति रखने वाले/ओजीडब्ल्यू भी ईद का लाभ उठाकर आम लोगों विशेषकर युवाओं को पत्थरबाजी करने के लिए उकसाते। एसजीसीटी नसीर अहमद सं. 807/केजीएम के साथ हेड कांस्टेबल चैल सिंह ने स्थिति का आकलन करने के बाद अन्य अधिकारियों के साथ मिलकर रणनीति बनाई और उस स्थान को भली-भांति सील कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप बिना किसी बाधा के ऑपरेशन संपन्न हुआ तथा ईद-उल-अजहा की नमाज शांतिपूर्वक सुनिश्चित हो सकी, जबकि उस समय स्थिति के अनियंत्रित होने की आशंका थी। इन बहादुर अधिकारियों ने पुलिस और आरआर की संयुक्त टीमों का नेतृत्व पेशेवर ढंग से किया और सौहार्दपूर्ण तरीके में स्थिति को संभाला, जिसके फलस्वरूप आतंकवादी को मारा जा सका, जो जनता/राज्य की सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा था।

इस ऑपरेशन में, स्व. श्री अमन कुमार, उप पुलिस अधीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किया जाता है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 02/09/2017 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/144/2018-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन

विशेष कार्य अधिकारी

सं. 69-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं :—

सर्व/श्री

01	जान मोहम्मद गनई	सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	रॉबिन रविन्दर	एसजीसीटी	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 06-10-2016 को, 05:05 बजे, हंदवाड़ा पुलिस को सूचना प्राप्त हुई कि हथियारों से पूरी तरह लैस आतंकियों ने बटालियन हेडक्वार्टर, 30 आरआर कैम्प, लंगेत पर हमला कर दिया है, जिनका उद्देश्य कैम्प में जबरदस्ती घुस कर वहाँ आत्मघाती हमला करना था। तदनुसार, पुलिस पार्टी घटनास्थल की तरफ चल पड़ी। घटनास्थल (30 आरआर कैम्प) में पहुंचने के उपरांत, सेना के अधिकारियों ने जानकारी दी, कि 30 आरआर बटालियन मुख्यालय के पिछले भाग पर 2/3 आतंकवादियों ने आत्मघाती हमला किया है। आतंकवादी कैम्प की दीवार पर लगी बाड़ को लांघने में सफल हो गए थे, लेकिन अभी भी वे आर्मी पोस्ट के नजदीक छिपे हुए थे। जानमाल की भारी हानि के बिना भारी हथियारों से लैश आतंकवादियों को मारने के लिए एक ठोस योजना बनाई गई थी। लंगेत क्षेत्र से सटे हुए मोहल्लों सहित पूरे क्षेत्र की घेराबंदी की गई। चूँकि, आर्मी कैम्प के पिछले भाग के नजदीक आतंकवादियों की मौजूदगी होने का पता लगा लिया गया, इसलिए सेना और पुलिस की एक संयुक्त ऑपरेशन टीम तैयार की गई थी, जिसमें सब इंस्पेक्टर कजान मोहम्मद सं. 248/पीएयू और कांस्टेबल रॉबिन रविन्दर सं. 848/एपी 7वीं अपनी मर्जी से हमले वाली इस टीम में जाने के लिए तैयार हुए। हमला करने वाली टीम श्री जीलानी वानी, एसएसपी हंदवाड़ा के नेतृत्व में छिपे हुए आतंकियों की तरफ बढ़ने लगी। इस पार्टी में सब इंस्पेक्टर जान मोहम्मद गनई एआरपी-109243, हेड कांस्टेबल मोहम्मद शफी 111/एच, एसजीसीटी इरशाद अहमद 467/एच, एसजीसीटी रॉबिन रविन्दर एआरपी -095475, कांस्टेबल इमरान अहमद 618/एच, कांस्टेबल जावीद अहमद 624/एच, कांस्टेबल शौकत अहमद 366/एच, एसपीओ लतीफ अहमद 16/एक्स, एसपीओ तारिक अहमद 112/एसपीओ, एसपीओ कासिम रशीद 47/एक्स, एसपीओ फिरदोस अहमद 340/एसपीओ, एसपीओ वसीम रजा 204/एसपीओ, एसपीओ खुशीद अहमद 397/एसपीओ, एसपीओ रईस अहमद 126/एसपीओ, एसपीओ फिरदोस अहमद 105/एसपीओ और एसपीओ नाजिर अहमद 582/एसपीओ शामिल थे। यद्यपि, आतंकवादियों ने उन पर भारी मात्रा में गोलाबारी शुरू कर दी थी। टीम के सदस्य अपनी जान की प्रवाह किए बिना एक दूसरे को कवर फायर देने के क्रम में जवाबी कार्रवाई करते हुए आतंकवादियों के करीब पहुंच गए। इस कार्रवाई के दौरान सभी ने एक दूसरे का साथ दिया, जिससे आतंकवादियों के खिलाफ सभी सुरक्षित रहे और उसी समय उन्होंने एक आतंकवादी को मार गिराया। हमला पार्टी की इस जवाबी कार्रवाई से आतंकवादी कमजोर पड़ गए, हालांकि उन्होंने पहले ही फायदेबंद पोजीशन ले ली थी, जिसके कारण कार्य ज्यादा कठिन होता जा रहा था। लगभग 0615 बजे, एसजीसीटी रॉबिन ने बड़ी तेजी से जवाबी कार्रवाई करते हुए, आतंकवादियों पर एक जोरदार हमला किया। बन्दूक की यह भयंकर लड़ाई आधे घंटे तक चलती रही और जवाबी कार्रवाई के दौरान, बचे हुए तीन आतंकवादी में मारे गए। यद्यपि, समस्त हमला टीम ने खूंखार आतंकवादियों को मार गिराने के दौरान अदम्य साहस का परिचय दिया, लेकिन सब इंस्पेक्टर जान मोहम्मद और एसजीसीटी रॉबिन रविन्दर का अदम्य साहस और अभूतपूर्व जोश ही था कि आतंकवादियों के आत्मघाती हमले को विफल किया गया। इन खूंखार आतंकियों की पहचान बाद में लश्कर-ए-तैयबा के आतंकवादी हताफ, निवासी- पाकिस्तान, श्रेणी 'क' प्लस, खिताब, निवासी- पाकिस्तान, श्रेणी 'क' प्लस और इलियास, निवासी- पाकिस्तान, श्रेणी 'क' के रूप में हुई।

इस ऑपरेशन में, सर्व/श्री जान मोहम्मद गनई, सब इंस्पेक्टर और रॉबिन रविन्दर, एसजीसीटी ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 06/10/2016 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/153/2018-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन

विशेष कार्य अधिकारी

सं. 70-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	आरिफ अमीन शाह	एसपी	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	फराज हुसैन शाह	उप पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक
03	मुस्ताक अहमद मीर	असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 14/03/2017 को सुबह तड़के जिला कुपवाड़ा के बटपोड़ा हैमा क्षेत्र के कुन्नाई जुगियाल गांव में आतंकवादियों की मौजूदगी होने के बारे में एक सूचना जुटाई गई। इस सूचना को और अधिक पुष्टा किया गया और इसे 41 आरआर के साथ साझा किया गया।

तदनुसार, कुपवाड़ा पुलिस और 41 आरआर द्वारा एक संयुक्त ऑपरेशन की योजना बनाकर ऑपरेशन शुरू किया गया। कार्डन और सर्व ऑपरेशन की प्रक्रिया में 41 आरआर को भी शामिल किया गया। सीआरपीएफ, 98वीं बटालियन की 01 कंपनी को बाहरी घेराबंदी में तैनात किया गया। पूरे एरिया की मजबूत घेराबंदी की गई, लेकिन ऑपरेशन के दौरान तलाशी करने वाली टीम उन आतंकवादियों की भारी गोलीबारी की चपेट में आ गई, जो एक घर में छिपे हुए थे, जिसके मालिक संयुक्त रूप से फरीद अहमद और शौकत अहमद दोनों पुत्र श्री नेक आलम, निवासी-कुन्नाई, जुगियाल थे। उस हमले के दौरान, एक कांस्टेबल नामतः दानिश अहमद 1087/केपी, जो तलाशी टीम का एक सदस्य था, घायल हो गया और उसे उपचार के लिए हवाई मार्ग से 92 बेस आर्मी हॉस्पिटल, श्रीनगर ले जाया गया। जमीनी वास्तविकताओं के आधार पर, एक रणनीतिक टीम-योजना तैयार की गई और एसएसपी कुपवाड़ा के नेतृत्व में, एसपी आरिफ अमीन, उप पुलिस अधीक्षक फराज हुसैन, उप पुलिस अधीक्षक फयाज हुसैन, सब इंस्पेक्टर मो. इकबाल एपीआर 109315/केपी, सब इंस्पेक्टर हरविन्दर सिंह एआरपी 109247, असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर मुस्ताक अहमद 152/केपी, हेड कांस्टेबल अब्दुल रशीद 300/केपी, हेड कांस्टेबल मेहराजुद्दीन 196/केपी, एसजी कांस्टेबल सरताज अहमद 178/आईआरपी 8वीं बटालियन, कांस्टेबल मंजूर अहमद 1081/केपी, कांस्टेबल मुश्ताक अहमद 1040/केपी, कांस्टेबल मो. योनिश 539/केपी, कांस्टेबल मो. अशरफ 1108/केपी, कांस्टेबल मो. शाबिर 1071/केपी, कांस्टेबल इकबाल याकूब 949/केपी, कांस्टेबल इमरान खान 406/केपी, कांस्टेबल आशिक अहमद 1018/केपी, कांस्टेबल गाजी रशूल 697/केपी, कांस्टेबल दानिश मांड 1087/केपी, फोलोवर मो. शफी 22/एफ, एसपीओ नाजिर अहमद 622/एसपीओ, एसपीओ मो. इकबाल 444/एसपीओ, एसपीओ मुश्ताक अहमद 269/एसपीओ, एसपीओ अंजार हुसैन 796/एसपीओ, एसपीओ फयाज अहमद 147/एसपीओ, एसपीओ मौसम अली 177/एसपीओ, एसपीओ मो. यूसफ 346/एसपीओ, एसपीओ, जावीद अहमद 179/एसपीओ, एसपीओ मंजूर अहमद 5/एसपीओ, एसपीओ मो. हनीफ 890/एसपीओ, एसपीओ शम्स-उ-दीन चेची 718/एसपीओ, एसपीओ जावीद अहमद 1076/एसपीओ, एसपीओ परवेज अहमद 815/एसपीओ, और अन्य को मिलाकर बनाई गई हमलावर टीम को लक्ष्य की ओर आगे बढ़ने तथा आतंकवादियों पर अंतिम हमला करने का काम सौंपा गया। टीम आपरेशनल ड्रिल के साथ लक्ष्य के नजदीक पहुंच गई और उसने छिपे हुए आतंकवादियों की कड़ी प्रतिक्रिया का सामना किया, परन्तु टीम ने हौसला बनाए रखा और गोलीबारी का रणनीतिक ढंग से जवाब दिया तथा जवाबी गोलीबारी से आतंकवादियों को उलझाए रखने में सफलता प्राप्त की, जिसके दौरान लक्षित घर पर निशाना केन्द्रित किया गया। आतंकवादियों ने अंधाधुंध गोलीबारी की जिसके कारण लक्ष्यविहीन गोलियां 02 बच्चों नामतः फैजल अहमद चेची (आयु लगभग 7 वर्ष) और कनीजा (आयु लगभग 6 वर्ष) को लग गई, जो खुशी मोहम्मद, निवासी- कुन्नाई, जुगियाल के क्रमशः पुत्र और पुत्री थे। बाद में, दोनों घायल बच्चों को उपचार हेतु ले जाया गया, परंतु गम्भीर रूप से घायल होने के कारण कनीजा की मौके पर ही मौत हो गई। घायल फैजल को आगे के उपचार के लिए एसकेआईएमएस, श्रीनगर में ले जाया गया। तत्पश्चात, अंतिम हमला करते हुए, सभी 03 आतंकवादियों को मार गिराया गया। जिस घर में आतंकवादी छिपे हुए थे, वह पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया था। इस ऑपरेशन के दौरान बरामद किए गए हथियारों/गोला बारूद में 3 ए.के. राइफलें, 11 ए.के. मैगजीन, 280 ए.के. राउण्ड्स, 03 पाउच, 01 वायलेस सेट (बिना बैटरी का), 01 जीपीएस सेट, 04 हैंड ग्रेनेड (चाइनीज), 02 यूबीजीएल शैल और 01 मैट्रिक्स सीट शामिल थे। उक्त मामले में की गई जांच से यह पता चला है कि मारे गए आतंकवादी विदेशी थे और उनका संबंध लश्कर-ए-तैयबा गुट से था। उनकी पहचान अबु माला, अनास भाई और अबु मंसूर (सभी "ए" श्रेणी के आतंकवादी) के रूप में की गई। उपर्युक्त घटना के संबंध में, आरपीसी की धारा 307 और आयुध अधिनियम की धारा 7/27 के तहत मामला एफआईआर सं. 57/2017 पुलिस स्टेशन- कुपवाड़ा में दर्ज है और इस मामले पर आगे जांच की जा रही है।

इस ऑपरेशन में सर्व/श्री आरिफ अमीन शाह, एसएसपी, फराज हुसैन शाह, उप पुलिस अधीक्षक और मुस्ताक अहमद मीर, असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 15/03/2017 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/154/2018-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 71- प्रेज/2020—राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	श्रीराम दिनकर अंबरकर, आईपीएस	पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार
02	मुनीर अहमद भट	सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक

03	रवीस अहमद	हेड कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
----	-----------	---------------	------------------------

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 18.12.2017 को, शोपियां पुलिस को पुलिस स्टेशन केल्लर के बाटामुरीन वानपोरा गांव में आतंकवादियों की मौजूदगी होने के बारे में एक विशिष्ट सूचना प्राप्त हुई। यह विशिष्ट सूचना प्राप्त होने के पश्चात, शोपियां पुलिस ने 44 आरआर और 14 वीं बटालियन, सीआरपीएफ के साथ उपर्युक्त गांव में कई घरों की घेराबंदी कर दी गई। इस ऑपरेशन को सफल बनाने के उद्देश्य से आतंकवादियों की वास्तविक स्थिति/छिपने के स्थान का पता लगाने के लिए श्रीराम दिनकर अंबरकर -आईपीएस, पुलिस अधीक्षक, शोपियां पुलिस की संयुक्त देखरेख में पुलिस/सुरक्षा बल की दो टीमों गठित की गई। टीमों ने उस संदिग्ध घर को अपना निशाना बनाया, जिसमें आतंकवादी छिपे हुए थे और तदन्तर बिना किसी क्षति के उन्हें मार गिराया। सभी पार्टियों ने उपर्युक्त योजना के अनुसार अपनी-अपनी पोजीशन ले ली। घेराबंदी वाला क्षेत्र एक बहुत दुर्गम भू-भाग था, जिसमें दूर-दूर फैले हुए आवासीय घर, घने बगीचे और गहरे नाले थे। इस क्षेत्र को सील कर दिया गया और बगीचों की पगडंडियों, भीतरी सड़कों एवं गलियों/संकरी गलियों सहित बचने के सभी संभावित मार्गों को समुचित तरीके से बंद कर दिया गया। इस ऑपरेशन को सफल बनाने के लिए, संपूर्ण तैनाती को पुलिस अधीक्षक शोपियां की समग्र देखरेख में दो सैन्य दलों में विभाजित किया गया था, जिसमें 44 आरआर और 14वीं बटालियन, सीआरपीएफ के साथ पूर्ण समन्वय था। श्री वजाहत हुसैन उप पुलिस अधीक्षक के नेतृत्व में पुलिस और 44 आरआर/14वीं बटालियन सीआरपीएफ के क्यूआरटी को मिलाकर बनाई गई पहली पार्टी को उत्तर-पूर्व और दक्षिण-पूर्व की ओर संदिग्ध घर की घेराबंदी करने को कहा गया और उस पार्टी में उप-निरीक्षक मुनीर अहमद ईएक्सके109557 की सहायता ली गई। पुलिस अधीक्षक शोपियां के नेतृत्व में 44 आरआर और 14वीं बटालियन सीआरपीएफ की क्यूआरटी को मिलाकर बनाई गई दूसरी पार्टी ने उत्तर-पश्चिम और दक्षिण-पश्चिम की ओर से लक्षित घर की घेराबंदी की और उस पार्टी में उप-निरीक्षक आरिफ हामिद एआरपी115626 की सहायता ली गई। दो सर्च पार्टी गठित की गई, जिसमें पहली पार्टी में श्रीराम दिनकर अंबरकर, आईपीएस (पुलिस अधीक्षक शोपियां) की देखरेख में पुलिस शोपियां (पीसी डीपीएल) तथा 44 आरआर और 14वीं बटालियन सीआरपीएफ की क्यूआरटी को शामिल किया गया और दूसरी पार्टी में श्री वजाहत हुसैन, उप पुलिस अधीक्षक की देखरेख में पुलिस कैप केल्लर तथा 44 आरआर और 14वीं बटालियन सीआरपीएफ की क्यूआरटी को शामिल किया गया। तलाशी के दौरान, उस क्षेत्र में छिपे आतंकवादियों ने क्षति पहुंचाने और घेराबंदी को तोड़ने के लिए सैन्य दलों पर अलग-अलग दिशाओं से अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। छिपे हुए आतंकवादी अपने स्थान विशेष का पता लग जाने से बचने के लिए लगातार अपना स्थान बदलते रहे। सर्च पार्टी ने तत्काल कवर ले लिया तथा रणनीति और सटीकता के साथ जवाबी गोलीबारी की, जिसके कारण आतंकवादियों को घेराबंदी वाले क्षेत्र से बच निकलने का कोई अवसर नहीं मिला। किसी भी प्रकार से नागरिकों को हताहत होने से बचाने के लिए ऑपरेशनल कमांडर (पुलिस अधीक्षक शोपियां) ने पार्टियों को घेराबंदी वाले क्षेत्र में फंसे हुए लोगों को बाहर निकालने का निर्देश दिया। जब निकासी की प्रक्रिया चल रही थी, तो वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक शोपियां के नेतृत्व वाली हमलावर पार्टी आतंकवादियों की भारी गोलीबारी के चपेट में आ गई। तथापि, उन्होंने अपनी एकाग्रता को भंग नहीं होने दिया और अपने व्यक्तिगत जीवन की परवाह किए बिना निकासी प्रक्रिया को जारी रखा। इसी बीच, घेराबंदी को तोड़ने के इरादे से एक हिंसक भीड़ ने घेराबंदी में तैनात सैन्य दलों पर भारी पत्थरबाजी शुरू कर दी, ताकि फंसे हुए आतंकवादियों को उसे क्षेत्र से भागने का अवसर मिल जाए। तथापि, उक्त क्षेत्र में कानून एवं व्यवस्था बनाए रखने के उद्देश्य से इस काम पर लगाए गए घटकों ने अधिकतम संयम रखते हुए कुशलतापूर्वक स्थिति को संभाल लिया। चूंकि, अंधेरा हो गया था और इस बात की पूरी आशंका थी कि घिरे हुए आतंकवादी अंधेरे में घेराबंदी से बच निकलने का प्रयास कर सकते थे, इसलिए घेराबंदी को सुदृढ़ करने का निर्णय लिया गया और सैन्य दलों को कार्डिन एवं सर्च ऑपरेशन को अधिक मजबूत बनाने को कहा गया, ताकि फंसे हुए आतंकवादियों को रात के दौरान भागने का कोई मौका ना मिले। रात्रि लगभग 2000 बजे फंसे हुए आतंकवादियों ने ग्रेनेड फेंके और बाद में सैन्य दलों पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी तथा घेराबंदी वाले क्षेत्र से बच निकलने का प्रयास किया। तथापि, श्री वजाहत हुसैन उप-पुलिस अधीक्षक, सब इंस्पेक्टर मुनीर अहमद, सब इंस्पेक्टर अरिफ हामिद, हेड कांस्टेबल रवीश अहमद 1309/पीएल, एसजी कांस्टेबल अंकित कौल 479/आईआर 18वीं, एसजी कांस्टेबल रवीस अहमद 1146/ओएल, एसजी कांस्टेबल अरशद अहमद 218/आईआर 18वीं बटा., कांस्टेबल मंजूर अहमद 623/एसपीएन, कांस्टेबल अंजुम जाविद 746/आईआर 14वीं बटा., एसजी कांस्टेबल मोहम्मद अब्बास 808/आईआर 18वीं बटा., कांस्टेबल राकेश सिंह 719/आईआर 14वीं बटा., कांस्टेबल ताहिर युसुफ 708/एसपीएन, एसजी कांस्टेबल बिलाल अहमद 555/एपी 8वीं बटा., कांस्टेबल आबिद अली 644/आईआर 18वीं बटा., एसपीओ रहील अहमद काजी 125/एसपीएन, एसपीओ शाहिद अहमद 151/एसपीएन, एसपीओ काहीम फारूक 163/एसपीएन, एसपीओ मसरूर अहमद 236/एसपीएन, एसपीओ मो. इशाक रेशी 113/एसपीएन, एसपीओ शाबिर अहमद 322/बीडी, एसपीओ मुजफ्फर अहमद 14/एसपीएन, एसपीओ मो. इमरान 97/एसपीएन, एसपीओ शौकत अहमद 186/एसपीएन और एसपीओ रईश अहमद 401/एसपीएन वाली पुलिस पार्टियों के साथ भी श्रीराम दिनकर अंबरकर, आईपीएस पुलिस अधीक्षक शोपियां सामने आकर लड़े और एक विदेशी मूल के आतंकवादी सहित दो कुख्यात आतंकवादियों को मार गिराने में सफल हुए। तथापि, तीसरा आतंकवादी किसी अन्य घर में छिप गया। तीसरे आतंकवादी की तलाश रात में 2200 बजे तक चलती रही। चूंकि अंधेरा हो गया था, अतः ऑपरेशनल कमांडर ने सुबह होने तक तलाशी करने का कार्य रोक देने का निर्णय लिया। तथापि, लगभग 0400 बजे फंसे हुए आतंकवादी ने कुछ ग्रेनेड फेंके और फिर अंधाधुंध गोलीबारी की, जिसके फलस्वरूप दो सीआरपीएफ/पुलिस कार्मिक और एक महिला नागरिक गोलियों से घायल हो गए। आतंकवादी का पीछा करने की बजाय, सैन्य बलों ने घायल व्यक्तियों की जाने बचाने को प्राथमिकता

दी और उन्हें उपचार हेतु अस्पताल में पहुंचाया। दो सीआरपीएफ/पुलिस कार्मियों और एक नागरिक महिला के घायल होने से उत्पन्न स्थिति का लाभ उठाते हुए, उपर्युक्त आतंकवादी अंधेरे में उस स्थान से भागने में सफल हो गया। मारे गए आतंकवादियों की पहचान बाद में जैश-ए-मोहम्मद गुट के कहाफ उर्फ अली क्वारी, एक पाकिस्तानी आतंकवादी (श्रेणी ए+) और तनवीर अहमद भट पुत्र गुलाम नबी निवासी बाटामुरान, वानपोरा (श्रेणी बी) के रूप में की गई। ऑपरेशन के दौरान बरामद किए गए हथियार/गोलाबारूद में ए.के. सीरीज राइफल (क्षतिग्रस्त)-02, ए.के. सीरीज मैगजीन-04, ए.के. राउण्ड्स-40, पाउच चितरा-02, शेविंग किट (काले रंग का)-01, जाप माला-02, शैम्पू की बोतलें (खाली)-02, तेल की बोतलें (काले रंग की)-02 और बेल्ट-01 शामिल थी। इस संबंध में, आरपीसी की धारा 307, आरपीसी की धारा 212 और आयुध अधिनियम की धारा 7/27 के अंतर्गत मामला एफआईआर सं. 65/2017 पुलिस स्टेशन- केल्लर में दर्ज है और इस पर जांच की जा रही है।

इस ऑपरेशन में, सर्व/श्री श्रीराम दिनकर अंबरकर, आईपीएस, पुलिस अधीक्षक, मुनीर अहमद भट, सब इंस्पेक्टर और रवीस अहमद, हेड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 18/12/2017 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/156/2018-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 72-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार/वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार/वीरता के लिए पुलिस पदक का तृतीय बार प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	शेख जुल्फकार आजाद	वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक का तृतीय बार
02	राशिद अकबर मकायी	उप पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार
03	महबूब हुसैन बंदे	इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 05.06.2017 को पूर्वाह्न 03:40 बजे, बांदीपोरा पुलिस को यह सूचना प्राप्त हुई कि पाकिस्तान के 04 विदेशी आतंकवादियों वाले भारी सशस्त्र फिदायीन दस्ते का इरादा लम्बी घेराबंदी करने और एफसीआई सुम्बल के निकट स्थित सीआरपीएफ की 45वीं बटालियन को भारी क्षति पहुंचाने का है। आतंकवादियों ने कंसर्टिना तार की बाड़ को काटकर और संतरी पर गोली चलाते हुए जबरन प्रवेश करने का प्रयास किया। इसी बीच, बांदीपोरा पुलिस का पुलिस दल भी मौके पर पहुंच गया। संतरी ने तत्परता से जवाबी कार्रवाई की और जवाबी कार्रवाई के फलस्वरूप दोनों ओर से भीषण गोलीबारी हुई। श्री स्टॉजिन लोसाल, अपर पुलिस अधीक्षक बांदीपोरा, श्री बलजीत सिंह, उप पुलिस अधीक्षक पीसी बांदीपोरा, श्री राशिद अकबर मकायी, एसडीपीओ सुम्बल, श्री महबूब हुसैन बंदे, एसएचओ पीएस - सुम्बल और उनके साथी एसजी कांस्टेबल मोहम्मद रमीज 189/बीपीआर, एसजी कांस्टेबल मोहम्मद शफी 244/बीपीआर और कांस्टेबल असहाक अहमद डार 969/बीपीआर के सहयोग से श्री शेख जुल्फकार आजाद, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक बांदीपोरा के नेतृत्व में जम्मू और कश्मीर पुलिस की एक कोर टीम ने साहस का प्रदर्शन करते हुए उपर्युक्त कार्य की अगुवाई करने की इच्छा व्यक्त की। इस बचाव टीम, जिसमें श्री शेख जुल्फकार आजाद के नेतृत्व में एसजी कांस्टेबल अब्दुल हमीद 420/बीपीआर, एसजी कांस्टेबल निसार अहमद 430/बीपीआर, एसजी कांस्टेबल तारिक अहमद 3135/एसजीआर, कांस्टेबल विलायत अली 154/एपी 8वीं बटा., इफ्तिखार अहमद 342/बीपीआर, कांस्टेबल एजाज अहमद 415/बीपीआर, कांस्टेबल गुलजार अहमद 578/बीपीआर, कांस्टेबल शमस दीन 719/बीपीआर, कांस्टेबल एजाज अहमद 929/बीपीआर, कांस्टेबल फारूक 951/बीपीआर, कांस्टेबल मुश्ताक अहमद 535/एपी 8वीं बटा., एसपीओ इश्तियाक मीर 15/एसपीओ, एसपीओ रकीब अहमद 42/एसपीओ, एसपीओ हिलाल अहमद 49/एसपीओ, एसपीओ एजाज अहमद 51/एसपीओ, एसपीओ शबीर अहमद 59/एसपीओ, एसपीओ फारूक अहमद 65/एसपीओ, एसपीओ जहांगीर अहमद 82/एसपीओ, एसपीओ अली मोहम्मद 138/एसपीओ, एसपीओ अब्दुल राशिद 158/एसपीओ, एसपीओ फिरदौस अहमद 167/एसपीओ, एसपीओ शबीर अहमद 179/एसपीओ, एसपीओ मंजूर अहमद 205/एसपीओ, एसपीओ मोहम्मद आसिफ 223/एसपीओ, एसपीओ शफीकुल रहमान 233/एसपीओ, एसपीओ गाजी रसूल 278/एसपीओ, एसपीओ शबीर अहमद 310/एसपीओ, एसपीओ जहूर अहमद 316/एसपीओ, एसपीओ इम्तियाज अहमद 322/एसपीओ, एसपीओ शौकत अहमद 323/एसपीओ, एसपीओ जलालुद्दीन

416/एसपीओ और एसपीओ नासिर अहमद 425/एसपीओ शामिल थे, ने अपने जीवन को बड़े जोखिम में डाल दिया क्योंकि आतंकवादी बचाव टीमों पर अंधाधुंध गोलीबारी कर रहे थे। श्री स्टॉजिन लोसाल, अपर पुलिस अधीक्षक बांदीपोरा ने लक्षित क्षेत्र के चारों ओर कंसर्टिना तार का प्रयोग करते हुए सुम्बल पुलिस, बांदीपोरा पुलिस, एसओजी बांदीपोरा और 13 आरआर की टीमों द्वारा उस क्षेत्र को ब्लॉक करवा दिया। अपनी जान को खतरे में जानकर आतंकवादियों ने बच निकलने के लिए जगह बनाने और ऑपरेशन टीम को भ्रमित करने के उद्देश्य से भ्रामक गोलीबारी करनी शुरू कर दी, परन्तु अपने साथियों के साथ अपर पुलिस अधीक्षक बांदीपोरा, उप पुलिस अधीक्षक पीसी बांदीपोरा की बुद्धिमत्तापूर्ण योजना ने आतंकवादियों के नापाक इरादों को अंजाम तक नहीं पहुंचने दिया, उन्होंने साहसिक तरीके से जवाबी कार्रवाई की और गोलीबारी करते हुए लक्षित स्थान की ओर आगे बढ़े, जिसके परिणामस्वरूप फिदायीन दस्ते के 04 खूंखार विदेशी आतंकवादियों का सफाया किया गया। इस अभियान के दौरान बरामद किए गए हथियारों/गोलाबारूद में 4 ए.के.-47 राइफलें (क्षतिग्रस्त), 12 ए.के.-47 मैगजीन (क्षतिग्रस्त), 137 ए.के.-47 राउण्ड, 07 यूबीजीएल ग्रेनेड, 01 यूबीजीएल, 7 ग्रेनेड, गोलाबारूद के 04 पाउच और 03 पेट्रोल की बोतलें शामिल हैं। इस संबंध में, पुलिस स्टेशन- सुम्बल में आरपीसी की धारा 307 और आयुध अधिनियम की धारा 7/27 के अंतर्गत मामला एफआईआर सं. 59/2017 दर्ज है।

इस ऑपरेशन में, सर्वश्री शेख जुल्फकार आजाद, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, राशिद अकबर मकायी, उप पुलिस अधीक्षक और महबूब हुसैन बंदे, इंस्पेक्टर ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 05.06.2017 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/158/2018-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 73-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार प्रदान करते हैं:—

श्री शफात मोहम्मद नजर	उप पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार
-----------------------	------------------	---------------------------------------

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 24.01.2018 को, लगभग 1900 बजे, ग्राम चायगुंड आडूरा में आतंकवादियों के मौजूद होने के बारे में एक विशेष जानकारी मिलने पर, शोपियां पुलिस ने 44 आरआर, 14वीं बटालियन सीआरपीएफ के सैन्य दस्ते के साथ एसपी शोपियां की कमान में उक्त गांव में छिपे आतंकवादियों का पता लगाने के लिए एक संयुक्त घेराबंदी एवं तलाशी अभियान (सीएएसओ) चलाया। ऑपरेशन को सफल बनाने के लिए, संवेदनशील क्षेत्रों को प्रभावी ढंग से कवर करने हेतु 04 हमला दल गठित किए गए। तदनुसार, सभी नालों और फल के बगीचों में से होकर गुजरने वाली गलियों, छोटी गलियों और पगडंडियों सहित सभी निकास मार्गों को अवरुद्ध करके तलाशी अभियान शुरू किया गया। श्री श्रीराम दिनकर अंबरकर, आईपीएस, पुलिस अधीक्षक शोपियां के नेतृत्व में सब इंस्पेक्टर आरिफ हामिद, इंचार्ज पीसी केलर, ऑपरेशन केलर के साथ पुलिस पार्टी को संदिग्ध मकान की ओर आते देख कर, आतंकवादियों ने बचकर भाग जाने के लिए एक विशेष रास्ते की तलाश करते हुए तलाशी दलों पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी, जिस पर तुरंत श्री शफात मोहम्मद नजर, उप पुलिस अधीक्षक, ऑप्स केलर के नेतृत्व वाली पुलिस पार्टी ने कमान संभाल ली। आतंकवादियों की ओर से हो रही अंधाधुंध गोलीबारी के कारण एक युवक और 02 लड़कियों को गोली लग गई, जिन्हें तुरंत इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया। किसी भी अन्य नागरिक को घातक/गैर-घातक चोटों से बचाने के लिए, पुलिस अधीक्षक शोपियां ने सैनिकों को घेराबंदी वाले क्षेत्र में फंसे नागरिकों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने के संबंध में ब्रीफ किया। निकासी प्रक्रिया के दौरान, पुलिस दल पर भारी गोलीबारी की गई, लेकिन कोई नुकसान नहीं हुआ। तदनुसार, उपर्युक्त पुलिस पार्टी ने आतंकवादियों की ओर बढ़ने का फैसला किया। सैन्य दस्ते को रेंगकर आगे बढ़ते हुए भांपकर, आतंकवादियों ने संयुक्त दस्ते पर भारी गोलीबारी की बौछार शुरू कर दी। तथापि, हेड कांस्टेबल (डाइवर) बशीर अहमद 16/एसपीएन, हेड कांस्टेबल मोहम्मद फारूक 116/एपी 12वीं बटालियन, कांस्टेबल तनवीर अहमद 497/एसपीएन, कांस्टेबल जाविद अहमद 806/एसपीएन, कांस्टेबल संजय कुमार 488/आईआर 18वीं बटालियन, कांस्टेबल माशूक अहमद 627/ आईआर 6ठी बटालियन, एसपीओ गुलज़ार अहमद 211/एसपीएन, एसपीओ गौहर अहमद 162/एसपीएन, एसपीओ तारिक अहमद 98/एसपीएन, एसपीओ मोहम्मद रफीक 150/एसपीएन, एसपीओ गुलज़ार अहमद 349/एसपीएन, एसपीओ फारूक अहमद 06/एसपीएन तथा एसपीओ मोहम्मद फाजिल

402/एसपीएन सहित पुलिस पार्टी ने साहस के साथ अपने जीवन की परवाह न करते हुए बहुत पेशेवर ढंग से जवाबी गोलीबारी की और हिजबुल मुजाहिदीन संगठन के दो आतंकवादियों अर्थात् फ़िरदौस अहमद लोन पुत्र अब्दुल राशिद लोन निवासी मनोपोरा शोपियां (श्रेणी-बी) और समीर अहमद वानी पुत्र हिलाल अहमद वानी निवासी आडूरा चीगुंड, शोपियां (श्रेणी-सी) का खात्मा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ऑपरेशन के दौरान बरामद किए गए हथियारों/गोला-बारूद के ब्यौरे का उल्लेख जल्दी जापन में किया गया है। पुलिस स्टेशन- शोपियां में आरपीसी की धारा 307 और आयुध अधिनियम की धारा 7/27 के अंतर्गत मामला एफआईआर संख्या 21/2018 दर्ज की गई है और इस पर जांच चल रही है।

इस ऑपरेशन में, श्री शफात मोहम्मद नजर, उप पुलिस अधीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किया जाता है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 24.01.2018 से दिया जाएगा।

(संख्या 11020/159/2018-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन

विशेष कार्य अधिकारी

सं. 74-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं:—
सर्व/श्री

01	चन्दन कोहली,आईपीएस	अपर पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	गौहर अहमद भट	सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 13/14-10-2017 की मध्यरात्रि में लगभग 2330 बजे, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक पुलवामा को जिले में आतंकी हमलों को अंजाम देने के लिए गांव लिट्टेर पुलवामा में आतंकवादियों के मौजूद होने के बारे में सूचना प्राप्त हुई। तदनुसार, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक पुलवामा ने अपर पुलिस अधीक्षक पुलवामा, श्री चंदन कोहली, आईपीएस को सूचित किया और इसी बीच यह पता चला कि ये आतंकवादी तारिक अहमद मलिक, राजू मलिक, आरिफ मलिक (उक्त गांव के गुलाम हसन मलिक और बशीर अहमद मलिक के पुत्र) के संयुक्त मकान में छिपे हुए हैं। यह जानकारी 55 आरआर, 03 आरआर तथा 182/183 बटालियन सीआरपीएफ के साथ साझा की गई और उस लक्षित मोहल्ले की संयुक्त रूप से घेराबंदी की गई। तत्पश्चात, अपर पुलिस अधीक्षक, पुलवामा ने उप पुलिस अधीक्षक (ऑप्स) पुलवामा तथा अन्य लोगों के साथ-साथ हेड कांस्टेबल लतीफ अहमद 814/पीएल, कांस्टेबल यशपाल 292/आईआर प्रथम बटालियन, एसजी कांस्टेबल गु. मोहम्मद 355/पीएल, एसजी कांस्टेबल गाज़ी शाह 556/पीएल, एसजी कांस्टेबल फैयाज अहमद 342/पीएल, कांस्टेबल जावेद अहमद 853/पीएल, कांस्टेबल मकसूद अहमद 872/पीएल, एसपीओ अकीब अहमद 181/एसपीओ-एनजी, एसपीओ शोएब अहमद 314/एसपीओ, एसपीओ हिलाल अहमद 313/एसपीओ, एसपीओ मंजूर अहमद 81/एसपीओ, एसपीओ बशीर अहमद 234/एसपीओ, एसपीओ मंजूर अहमद 277/एसपीओ, एसपीओ तौसीफ अहमद 149/एसपीओ तथा एसपीओ अब्दुल राशिद 128/एसपीओ, 55 आरआर, 03 आरआर और सीआरपीएफ की 182/183 बटालियन को शामिल करके बने पुलिस कम्पोनेन्ट पुलवामा की एसओजी पार्टी के साथ उस लक्षित मकान की घेराबंदी करने के लिए गांव लिट्टेर, पुलवामा की ओर प्रस्थान किया। अपर पुलिस अधीक्षक पुलवामा ने पीसी लस्सीपोरा के इंचार्ज सब इंस्पेक्टर मोहम्मद हफीज एआरपी-109251 और पीपी लस्सीपोरा के इंचार्ज सब इंस्पेक्टर गौहर अहमद ईएक्सके-109472 को भी लक्षित स्थान पर पहुंचने का निर्देश दिया। लक्षित स्थान पर पहुंचने के बाद, अपर पुलिस अधीक्षक पुलवामा की कमान के तहत पुलवामा पुलिस द्वारा संयुक्त घेराबंदी की गई।

लक्षित मकान में छिपे आतंकवादियों के बारे में विशिष्ट जानकारी होने के बावजूद, आसपास के घरों में आतंकवादियों की तलाश शुरू की गई और किसी भी प्रकार की क्षति से बचने के लिए परिवारों को सुरक्षित स्थानों पर स्थानांतरित कर दिया गया। अपर पुलिस अधीक्षक पुलवामा अपनी टीम के सदस्यों, जिसमें सब इंस्पेक्टर मोहम्मद हफीज एपीआर-109251, सब इंस्पेक्टर गौहर अहमद ईएक्सके-109472, कांस्टेबल मकसूद अहमद 872/पीएल, एसपीओ तौसीफ अहमद 149/एसपीओ, एसपीओ अब्दुल राशिद 128/एसपीओ शामिल थे, के साथ लक्षित मकान की ओर बढ़े, जिसकी पहले ही घेराबंदी कर ली गई थी। यह मकान 03 मंजिला था और तलाशी के दौरान पहली 02 मंजिलों में कुछ भी नहीं मिला। लेकिन जब सच्य पार्टी मकान की तीसरी मंजिल पर जा रही थी, तो वहां छिपे आतंकवादियों ने सैनिकों पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। तथापि, वे इस घटना में बाल-बाल बच

गए। अधिकारियों ने मकान के अंदर से की गई गोलीबारी का मुंहतोड़ जवाब देकर अत्यधिक सूझ-बूझ और वीरतापूर्ण कार्रवाई का प्रदर्शन किया और उक्त मकान से बच कर बाहर निकलने में सफल रहे। इस बीच, अपर पुलिस अधीक्षक पुलवामा के निर्देश पर घेराबंदी कड़ी कर दी गई और जवाबी कार्रवाई को अंजाम देने के लिए 04 टीमों गठित की गई। इसमें से एक टीम, जिसमें एसओजी पार्टी के साथ अपर पुलिस अधीक्षक पुलवामा स्वयं शामिल थे और जिसमें एसजी कांस्टेबल मोहम्मद शफी 1326/पीएल, एसजी कांस्टेबल सुनील कुमार 820/आईआर 11वीं बटालियन, एसजी कांस्टेबल नासिर अहमद 884/पीएल और एसजी कांस्टेबल हेमू कुमार 818/आईआर 11वीं बटालियन और सीआरपीएफ/सेना के अन्य सैन्य दस्ते भी शामिल थे, ने दक्षिणी तरफ से मकान को घेर लिया। तदनुसार, अन्य 03 तरफ से उप पुलिस अधीक्षक (ऑप्स) पुलवामा श्री जहीर अब्बास जाफरी, सब इंस्पेक्टर मोहम्मद हफीज एआरपी-109251 और सब इंस्पेक्टर गौहर अहमद ईएक्सके-109472 ने अपनी पार्टियों और सीआरपीएफ/सेना के दलों के साथ क्रमशः उत्तरी, पूर्वी और पश्चिमी दिशाओं से घेराबंदी की। चूंकि, यहां अभी अंधेरा था, इसलिए सभी उपाय किए गए ताकि आतंकवादी बच कर न भाग सकें और लक्षित क्षेत्र में रोशनी करने के लिए जनरेटर चलाया गया। यह कार्य उपर्युक्त अधिकारियों की देखरेख में पूरा किया गया। लक्षित क्षेत्र में रोशनी हो जाने के बाद, वहां मौजूद नागरिकों को एक-एक करके बाहर निकाला गया और यह कार्य व्यक्तिगत रूप से स्वयं अपर पुलिस अधीक्षक चंदन कोहली, आईपीएस द्वारा सब इंस्पेक्टर गौहर अहमद ईएक्सके-109472 और सब इंस्पेक्टर मोहम्मद हफीज एआरपी-109251 की सहायता से आतंकवादियों की ओर से की जा रही भयंकर गोलीबारी की बौछार के बीच किया गया। उप पुलिस अधीक्षक (ऑप्स) पुलवामा श्री जहीर अब्बास जाफरी द्वारा प्रदान की गई कवरेज गोलीबारी की मदद से नागरिकों की निकासी संभव हो पायी। निकासी की प्रक्रिया के बाद, आतंकवादियों को अपने हथियार (क्षेत्र के सम्माननीय व्यक्तियों के माध्यम से) डालने का अवसर प्रदान किया गया, जिससे उन्होंने इनकार कर दिया और उन्होंने सैनिकों पर अंधाधुंध गोलीबारी जारी रखी। वहां मौजूद अधिकारी/कार्मिक जीवन और मृत्यु की परिस्थिति में सतर्क बने रहे, अपने दिमाग को शांत/सजग रखा और ऐसी नाजुक स्थिति का बहादुरी से सामना किया, जिसके परिणामस्वरूप दो आतंकवादियों का सफाया हो गया, जिनकी पहचान बाद में वसीम अहमद शाह उर्फ उसामा (श्रेणी ए++) पुत्र गुल मोहम्मद निवासी टेंगपोरा हेफफ शिरमल जैनापोरा शोपियां तथा निसार अहमद मीर (श्रेणी - बी) पुत्र अब्दुल हमीद मीर निवासी लिट्टेर पुलवामा के रूप में हुई। मारे गए आतंकवादियों से बरामद किए गए हथियारों/गोलाबारूद में 1 एके-56 राइफल (क्षतिग्रस्त), 1 एके-47 राइफल, 3 एके 56/47 मैगजीन (1 क्षतिग्रस्त), 54 एके-56/47 लाइव राउंड और 2 बॉडी पाउच चित्रा रंग (जला हुआ) शामिल हैं। इस संबंध में, पुलिस स्टेशन पुलवामा में आरपीसी की धारा 307, 148, 149, 336, 353 और आयुध अधिनियम की धारा 7/27 के अंतर्गत मामला एफआईआर संख्या 363/2017 दर्ज की गई है और जांच चल रही है।

इस ऑपरेशन में, सर्व/श्री चन्दन कोहली, आईपीएस, अपर पुलिस अधीक्षक और गौहर अहमद भट, सब इंस्पेक्टर ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोट की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 13.10.2017 से दिया जाएगा।

(संख्या 11020/160/2018-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 75-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	परवेज़ अहमद भट	सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	आरिफ अहमद शेख	सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

अक्टूबर 2017 के माह में, ईएसयू दक्षिण श्रीनगर को एक तकनीकी जानकारी प्राप्त हुई कि पाकिस्तान आधारित लश्कर-ए-तैयबा के कमांडर वालिद भाई ने घाटी में सक्रिय लश्कर-ए-तैयबा के अपने कमांडर मोहम्मद भाई निवासी पाकिस्तान को अपने कैडरों के माध्यम से श्रीनगर शहर में फिदायीन हमले को अंजाम देने का निर्देश दिया है। इस जानकारी के प्राप्त होने पर, ईएसयू दक्षिण श्रीनगर के सब इंस्पेक्टर मोहम्मद इरफान ईएक्सके-109318, सब इंस्पेक्टर परवेज़ अहमद ईएक्सके-993381, सब इंस्पेक्टर आरिफ अहमद ईएक्सके-109225, असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर मोहम्मद अमीन ईएक्सके-971365, हेड कांस्टेबल आज़ाद अहमद

ईएक्सके-984097, एस जी कांस्टेबल मोहम्मद अल्लाफ ईएक्सके -125500, एस जी कांस्टेबल शौकत अहमद ईएक्सके-075602, कांस्टेबल खुशीद अहमद ईएक्सके-096166, कांस्टेबल सलीम खान ईएक्सके-021785, एसपीओ परवेज़ अहमद मीर 196/एसपीओ, एसपीओ सुहेल मुश्ताक 158/एसपीओ, एसपीओ जाविद अहमद 950/एसपीओ, एसपीओ अब्दुल गनी डार 122/एसपीओ, एसपीओ गु. मोहम्मद 534/एसपीओ और एसपीओ मोहम्मद सलीम सं. 209/एसपीओ ने लश्कर-ए-तैयबा के कमांडर मोहम्मद भाई निवासी पाकिस्तान के ऑपरेशन क्षेत्र अर्थात् अनवान हंदवाड़ा, मागम और रफियाबाद सोपोर का दौरा किया और क्षेत्र के स्थानीय स्रोतों को सक्रिय किया। दिनांक 21/10/2017 को 2000 बजे, सब इंस्पेक्टर मोहम्मद इरफान, सब इंस्पेक्टर परवेज़ अहमद, सब इंस्पेक्टर आरिफ अहमद, असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर मोहम्मद अमीन, हेड कांस्टेबल आज़ाद अहमद, एस जी कांस्टेबल मोहम्मद अल्लाफ, एस जी कांस्टेबल शौकत अहमद, कांस्टेबल खुशीद अहमद, कांस्टेबल सलीम खान, एसपीओ परवेज़ अहमद मीर, एसपीओ सुहेल मुश्ताक, एसपीओ जाविद अहमद, एसपीओ अब्दुल गनी डार, एसपीओ गु. मोहम्मद और एसपीओ मोहम्मद सलीम द्वारा इस जानकारी को तकनीकी विश्लेषण तथा स्थानीय तौर पर बनाए गए मानव स्रोतों के माध्यम से आगे और संपुष्ट किया गया कि मोहम्मद भाई नामक पाकिस्तान निवासी लश्कर-ए-तैयबा कमांडर अनवान हंदवाड़ा के बगीचों में छिपा हुआ है। सब इंस्पेक्टर मोहम्मद इरफान और अन्य कार्मिकों की कमान में ईएसयू दक्षिण श्रीनगर की एक विशेष टीम ने उक्त गांव का दौरा किया और स्रोत से पूरी जानकारी प्राप्त की। टीम ने उस क्षेत्र की रेकी करने के बाद वापस रिपोर्ट किया। टीम उस क्षेत्र यानी अनवान हंदवाड़ा को भी चिन्हित करने में सफल रही जिसमें उक्त लश्कर कमांडर छिपा हुआ था। दिनांक 22/10/2017 को, लगभग 0400 बजे, श्री आशीष मिश्रा, आईपीएस (पुलिस अधीक्षक साउथ श्रीनगर) की देखरेख में एक टीम ईएसयू दक्षिण श्रीनगर से पर्याप्त नफरी के साथ घटना स्थल पर पहुंची। ऑपरेशन चलाए जाने से पहले, 30 आरआर/9 पारा के साथ सूचना को तुरंत साझा करने का निर्णय लिया गया और सम्पाश्विक क्षति से बचने तथा सफल ऑपरेशन करने के लिए उपर्युक्त क्षेत्र में संयुक्त ऑपरेशन की योजना बनाई गई। सभी ऑपरेशनल नफरी को दो दलों में विभाजित किया गया। 30 आरआर वाली पहली पार्टी को लक्ष्य क्षेत्र की बाहरी घेराबंदी करने का काम सौंपा गया। दूसरी पार्टी में पुलिस अधीक्षक साउथ श्रीनगर और 9 पारा शामिल थे, जिन्हें अनवान हंदवाड़ा के बगीचों में आंतरिक घेरा डालने का काम सौंपा गया, जिसमें आतंकवादी छिपा हुआ था ताकि यदि आवश्यकता पड़े, तो श्री आशीष मिश्रा, आईपीएस (पुलिस अधीक्षक साउथ श्रीनगर) की कमान में पूरे समन्वय के साथ हस्तक्षेप किया जा सके। सभी दलों ने ऊपर उल्लिखित योजना के अनुसार मोर्चा संभाल लिया। तलाशी अभियान की शुरुआत भोर के समय की गई और क्षेत्र के तलाशी अभियान को अंजाम देते समय, आतंकवादी ने संयुक्त तलाशी दल पर अंधाधुंध गोलियां बरसा दी, जिससे भीषण गोलीबारी की शुरुआत हो गई। आतंकवादी ने भारी मात्रा में हथियार/गोला-बारूद जमा कर रखा था, जिसके परिणामस्वरूप यह मुठभेड़ लंबी चली और इसके दौरान आतंकवादी ने पुलिस/सुरक्षा बलों को क्षति पहुँचाने की लगातार कोशिश की। तथापि, सतर्क संयुक्त ऑपरेशनल टीम ने असाधारण पेशेवरता/साहस का प्रदर्शन करते हुए बिना किसी सम्पाश्विक क्षति के एक पाक फिदायीन आतंकवादी को मार गिराया, जिसकी पहचान बाद में पाकिस्तान निवासी मोहम्मद भाई के रूप में हुई। मारे गए आतंकवादी के कब्जे से बरामद किए गए हथियारों/गोला-बारूद में 1 एके-47 राइफल, 3 एके मैगजीन, 35 एके लाइव राउंड, 5 एके डेड राउंड, 1 पाउच, 2 ग्रेनेड, पाक करेंसी के 3 नोट (100 रु.), पाक करेंसी का 1 नोट (500 रु.), भारतीय करेंसी के 4 नोट (500 रु.), इबुप्रोफिन दवाई की 4 गोलियां, एड्रोसेव जैक्टसाइड दवाई की 1 गोली, डोक्सीसेल दवाई की 4 गोलियां, 1 मेडिसिन अल्कोहल पैड और 01 बैंडिट मेडिसिन शामिल हैं। इस संबंध में, पुलिस स्टेशन कालगुंड हंदवाड़ा में आयुध अधिनियम की धारा 7/27 के अंतर्गत मामला एफआईआर संख्या 109/2017 दर्ज है।

यह उल्लेख किया जा सकता है कि मारा गया आतंकवादी पिछले कुछ समय से इस इलाके और उसके आस-पास के क्षेत्रों में सक्रिय था और वह सीमा पार से ऑपरेट करने वाले अपने आकाओं के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा था। उसे सीमा पार से फिदायीन समूहों को रिजीव करने और उन्हें घाटी के विभिन्न हिस्सों में भेजने की जिम्मेदारी दी गई थी। माना जाता है कि उसका सफाया पुलिस/सुरक्षा बलों के लिए एक बड़ी उपलब्धि है।

इस ऑपरेशन में, सर्व/श्री परवेज़ अहमद भट, सब इंस्पेक्टर और आरिफ अहमद शेख, सब इंस्पेक्टर ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 22.10.2017 से दिया जाएगा।

(संख्या 11020/164/2018-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 76-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	अब्दुल जब्बार, आईपीएस	वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक
02	जीएच. हसन शेख	उप पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक
03	मोहम्मद असलम	उप पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक
04	ऋषि कुमार बरवाला	सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक
05	आरिफ़ इकबाल कुरेशी	कांस्टेबल	वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 08.07.2016 को, श्री अब्दुल जब्बार, आईपीएस, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक अनंतनाग ने गाँव वोई-बामडूरा कोकेरनाग में एचएम संगठन के आतंकवादियों की मौजूदगी के बारे में एक कार्रवाई योग्य खुफिया जानकारी हासिल की। सूचना मिलने के तुरंत बाद, एसओजी श्रीनगर/अनंतनाग द्वारा 19 आरआर के साथ एक संयुक्त रणनीति बनाई गई। कार्गो श्रीनगर और एसओजी मुख्यालय अनंतनाग से एसओजी की भारी तैनाती के साथ-साथ 19 आरआर के सैनिकों की सक्रिय सहायता से वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक अनंतनाग की कमान के तहत उप पुलिस अधीक्षक (ऑप्स) पीसी कोकेरनाग और इस संवेदनशील ऑपरेशन को नियंत्रित करने और समन्वय के लिए मौके पर मौजूद जिला अनंतनाग की अन्य पुलिस पार्टी की सहायता से काउंटर इंसर्जेंसी ऑपरेशन शुरू किया गया। इस ऑपरेशन के चुनौतीपूर्ण कार्य को बहुत होशियारी से किया गया और अंततः सुनियोजित घेराबन्दी कर दी गई। पहली तलाशी टीम, जिसमें श्री अब्दुल जब्बार, आईपीएस, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, अनंतनाग के साथ श्री मोहम्मद असलम, उप पुलिस अधीक्षक पीसी कोकेरनाग, सब इंस्पेक्टर ऋषि कुमार, एआरपी-115577, एसजी कांस्टेबल आशिफ हुसैन 407/आईआरपी, एसजी कांस्टेबल संजीव सिंह 439/आईआरपी, एसजी कांस्टेबल मोहम्मद खलील 377/आईआरपी, एसजी कांस्टेबल मुश्ताक अहमद 368/आईआरपी, एसजी कांस्टेबल सुरेश कुमार 926/ए, कांस्टेबल मंजूर अहमद 1849/ए, कांस्टेबल मुश्ताक अहमद 612/एडब्ल्यूपी, कांस्टेबल आरिफ हुसैन 546/आईआरपी, कांस्टेबल शाम लाल 527/आईआरपी, कांस्टेबल ताजमुल हुसैन 1481/ए, कांस्टेबल खुर्शीद अशरफ 580/एडब्ल्यूटी, कांस्टेबल इशफाक अहमद 1616/ए, कांस्टेबल जहूर अहमद 639/आईआरपी, कांस्टेबल अजय कुमार 235/आईआरपी, कांस्टेबल आसिफ इकबाल 1344/ए, बशारत अहमद सं. 1166/एसपीओ, वहीद अहमद लोन सं. 425/एसपीओ, फिरदौस अहमद सं. 212/एसपीओ, बिलाल अहमद सं. 1298/एसपीओ, फारूक अहमद सं. 668/एसपीओ, फिरदौस अहमद सं. 1172/एसपीओ, एजाज अहमद सं. 1259/एसपीओ, आदिल हुसैन सं. 252/एसपीओ, इम्तियाज अहमद सं. 692/एसपीओ, अब. कयूम सं. 263/एसपीओ, बशीर अहमद सं. 875/एसपीओ, मोहम्मद रफीक सं. 893/एसपीओ, इरशाद अहमद सं. 204/एसपीओ, मजूर अहमद सं. 342/एसपीओ, अर्शीद अहमद सं. 552/एसपीओ और जावीद अहमद सं. 271/एसपीओ शामिल थे, ने जैसे ही घर में प्रवेश किया, उन पर 02 अलग-अलग दिशाओं से भारी गोलाबारी शुरू हो गई। दूसरी तलाशी पार्टी का गठन श्री जावेद इकबाल, केपीएस, पुलिस अधीक्षक (ऑप्स) श्रीनगर के साथ श्री गु. हसन केपीएस, उप पुलिस अधीक्षक (पीसी) श्रीनगर, सब इंस्पेक्टर गौहर राशिद एआरपी 109410, एसजी कांस्टेबल आसिफ इकबाल कुरेशी 1344/ए, हेड कांस्टेबल रमेश कुमार 2194/एस, हेड कांस्टेबल फिरोज अहमद 450/आईआरपी, हेड कांस्टेबल परमानंद थापा 129/आईआरपी, एसजी कांस्टेबल शमस दीन 378/आईआरपी, एसजी कांस्टेबल अल्ताफ हुसैन 470/आईआरपी, कांस्टेबल पवन कुमार 156/एस, कांस्टेबल शबीर अहमद 4521/एस, कांस्टेबल परवेज अहमद 552/आईआरपी, कांस्टेबल मोहम्मद मकबूल 720/आईआरपी, कांस्टेबल सुशील बाली 356/आईआरपी, कांस्टेबल राकेश पंडिता 817/एस, एसपीओ परवेज़ अहमद 362/एसपीओ, एसपीओ मुदासिर नबी 914/एसपीओ, एसपीओ इफ्तिखार अहमद 307/एसपीओ, एसपीओ मोहम्मद रमीज 260/एसपीओ, एसपीओ मोहम्मद एलियास 301/एसपीओ, मोहम्मद परवेज़ 363/एसपीओ, एसपीओ रुक़ुफ अहमद 1019/एसपीओ, एसपीओ मेहराजुद्दीन 463/एसपीओ, एसपीओ मोहम्मद अमीन 844/एसपीओ और एसपीओ फारूक अहमद 594/एसपीओ के साथ किया गया।

सर्वप्रथम बच्चों, महिलाओं और बुजुर्गों सहित सभी नागरिकों को घेराबंदी क्षेत्र से निकाला गया ताकि आम लोगों को हताहत होने से बचाया जा सके। श्री अब्दुल जब्बार, तत्कालीन वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, अनंतनाग ने नफरी को यथोचित रूप से ब्रीफ करके रणनीतिक बिंदुओं पर तैनात किया, ताकि छिपे हुए आतंकवादी बच कर न भाग पाएं। स्थिति का विश्लेषण करने के बाद, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक अनंतनाग ने सैनिकों को आत्म विश्वास बनाए रखने और घेरे को मजबूत बनाए रखने के बारे में सतर्क किया। छिपे हुए आतंकवादियों को मकान से बाहर आकर आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया। अपनी बात पर अड़े हुए आतंकवादियों ने इसका जवाब भारी गोलाबारी के साथ दिया और बच कर भागने के लिए घेराबंदी करने वाले सुरक्षा कर्मियों पर ग्रेनेड फेंके। तथापि, इस गोलाबारी का जवाब अपने अमूल्य जीवन की परवाह किए बिना प्रभावी ढंग से दिया गया, जिसके फलस्वरूप तीन आतंकवादी मारे गए, जिनमें एचएम के सबसे वांछित हार्डकोर डिवीजनल कमांडर बुरहान-उद-दीन वानी आरिफ पुत्र मुज़फ्फर अहमद वानी (ए++

श्रेणी) निवासी शरीफाबाद ताल, सरताज अहमद शेख उर्फ खालिद पुत्र मोहम्मद मुन्नवर निवासी तकिया अहमद शाह पीर तकिया कोकेरनाग (ए+ श्रेणी) और परवेज अहमद भट पुत्र वॉल मोहम्मद भट निवासी नूरपोरा ताल शामिल हैं। मारे गए आतंकवादियों से बरामद किए गए हथियारों/गोला-बारूद में 2 ए.के.-47 राइफलें, 1 ए.के.-56 राइफल, 9 ए.के.-मैगजीन, 4 यूबीजीएल ग्रेनेड, 2 यूबीजीएल थ्रोअर, 181 एके राउंड, 2 ग्रेनेड, 3 डेटोनेटर, 2 पुल थ्रो, 02 एलईडी लाइट, 3 पाउच, 3 बैटरी, 2 ईयर-फोन, 2 सेंट की बोतलें और 2 जिलेट ब्लेड शामिल हैं। इस संबंध में, पुलिस स्टेशन- कोकेरनाग में आरपीसी की धारा 307 और आयुध अधिनियम की धारा 7/27 के अंतर्गत मामला एफआईआर संख्या 117/2016 दर्ज की गई है।

यह उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं है कि आतंकवादी कमांडर बुरहान वानी पिछले छह वर्षों से सक्रिय था, जिसे पोस्टर बॉय के रूप में जाना जाता था। वह एचएम के डिवीजनल कमांडर के रूप में कार्य कर रहा था और कई आतंकवादी गतिविधियों में शामिल था। उसके निर्देश पर, एचएम ने सुरक्षा बलों/पुलिस पर हमले किए, जिसके परिणामस्वरूप कई सुरक्षा बलों/पुलिस कर्मियों की मौत हो गई और कई घायल हो गए। वह हाई-टेक सोशल मीडिया का उपयोग करके भारत सरकार के खिलाफ साइबर युद्ध छेड़ने का भी मास्टरमाइंड था। वह युवाओं को आतंकवादी रैंक में शामिल होने के लिए प्रेरित करने का मास्टरमाइंड था। मारे गए सभी तीन आतंकवादी रेलवे ट्रैक सहित एसकेआर विशेष रूप से एनएसडब्ल्यू के मुख्य शहरों अर्थात् बिजबेहेरा, अनंतनाग और अवंतीपोरा में शांति और व्यवस्था के लिए बहुत बड़ा खतरा थे।

इस ऑपरेशन में, सर्व/श्री अब्दुल जब्बार, आईपीएस, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, जीएच. हसन शेख, उप पुलिस अधीक्षक, मोहम्मद असलम, उप पुलिस अधीक्षक, ऋषि कुमार बरवाला, सब इंस्पेक्टर और आरिफ इकबाल कुरेशी, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 08.07.2016 से दिया जाएगा।

(संख्या 11020/165/2018-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन

विशेष कार्य अधिकारी

सं. 77-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक /वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार/द्वितीय बार/तृतीय बार प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

1	श्रीराम दिनकर अंबरकर, आईपीएस	पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार
2	इफरोज़ अहमद,	अपर पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार
3	आशिक हुसैन टाक,	उप पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक का तृतीय बार
4	संजय कुमार धर,	एसजी कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
5	समीर अहमद,	एसजी कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पद
6	मोहम्मद अशरफ डांगरु,	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 31.03.2018 को शोपियां पुलिस को एक विशिष्ट सूचना प्राप्त हुई कि जिला शोपियां में सक्रिय हिजबुल मुजाहिदीन आतंकवादी काडर जिला शोपियां में अधिक से अधिक विध्वंसक कारवाइयों को अंजाम देने के लिए अपनाई जाने वाली रणनीति पर चर्चा करने के लिए गांव कचदूरा में एक बैठक आयोजित कर रहे हैं। उक्त गांव घने बगीचों से घिरा हुआ था, जो आतंकवाद के दृष्टिकोण से बहुत संवेदनशील था और आतंकवादियों द्वारा उत्पन्न भय की भावना की मौजूदा स्थिति में ऐसे किसी क्षेत्र में कोई ऑपरेशन चलाना पुलिस/सुरक्षा बलों के लिए एक चुनौतीपूर्ण काम था। उक्त गांव में हिजबुल मुजाहिदीन के लीडर की मौजूदगी के बारे में विशिष्ट जानकारी प्राप्त होने पर, गांव कचदूरा में शीघ्र घेराबंदी और तलाशी ऑपरेशन शुरू करने का निर्णय लिया गया। इस ऑपरेशन को सफल बनाने के उद्देश्य से, आतंकवादियों की लोकेशन/छिपने के स्थान को घेरने तथा बाद में उन्हें बिना किसी संपाश्विक क्षति के मार गिराने के लिए पुलिस अधीक्षक शोपियां के पर्यवेक्षण में पुलिस/सुरक्षा बलों की दो टीमें गठित की गईं।

उक्त प्रयोजन के लिए, उप पुलिस महानिरीक्षक, एसकेआर अनंतनाग ने पुलिस कर्मियों को दो पार्टियों में बांट दिया। उप पुलिस अधीक्षक मुख्यालय शोपियां की सहायता से पुलिस अधीक्षक शोपियां के नेतृत्व में शोपियां पुलिस और 34 आरआर तथा 14वीं बटालियन सीआरपीएफ की क्यूआरटी वाली पहली पार्टी को उत्तर-पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी दिशा से लक्षित क्षेत्र की घेराबंदी करने के लिए कहा गया और उप पुलिस अधीक्षक पीसी केलर की सहायता से पुलिस अधीक्षक ऑपरेशन शोपियां के नेतृत्व में दूसरी पुलिस पार्टी और 34 आरआर तथा 14वीं बटालियन सीआरपीएफ की क्यूआरटी को उत्तर-पश्चिमी और दक्षिण-पश्चिमी दिशा से लक्षित क्षेत्र की घेराबंदी करने का कार्य सौंपा गया। सभी पुलिस पार्टियों ने ऊपर उल्लिखित ढंग से तैयार योजना के अनुसार अपनी पोजीशन ले ली। घेराबंदी वाला क्षेत्र एक बहुत दुर्गम क्षेत्र था, जिसमें दूर-दूर स्थित आवासीय मकान, घने बगीचे, गहरे नाले और अन्य घने पेड़-पौधे थे। इस क्षेत्र को सील कर दिया गया और बगीचों की पगडंडियों, भीतरी सड़कों एवं गलियों/उप-गलियों सहित बचकर निकलने के सभी संभावित मार्गों को पूरी तरह से बंद कर दिया गया। श्री श्रीराम दिनकर अंबरकर-आईपीएस, पुलिस अधीक्षक शोपियां और श्री आशिक हुसैन, उप पुलिस अधीक्षक के पर्यवेक्षण में शोपियां पुलिस और 34 आरआर तथा 14वीं बटालियन सीआरपीएफ की क्यूआरटी और श्री इफरोज़ अहमद, पुलिस अधीक्षक ऑपरेशन शोपियां तथा श्री माजद अली, उप पुलिस अधीक्षक ऑपरेशन केलर के पर्यवेक्षण में शोपियां पुलिस और 34 आरआर तथा 14वीं बटालियन सीआरपीएफ की क्यूआरटी को शामिल करके दो तलाशी पार्टियों का गठन किया गया। तलाशी की प्रक्रिया के दौरान, उक्त क्षेत्र में छिपे हुए आतंकवादियों ने सुरक्षा बलों को क्षति पहुंचाने और घेराबंदी को तोड़ने के इरादे से अपने अवैध स्वचालित हथियारों से अलग-अलग दिशाओं से सैन्य दस्ते पर ग्रेनेड फेंके और उसके बाद अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी, जिसके परिणामस्वरूप सेना के 03 कार्मिक गोली लगने से घायल हो गए, जिन्हें उपचार के लिए तुरंत अस्पताल ले जाया गया, तथापि बाद में चोटों के कारण उनकी मृत्यु हो गई। छिपे हुए आतंकवादी अपनी विशिष्ट लोकेशन को उजागर होने से बचाने के लिए बार-बार अपना स्थान बदलते रहे। तलाशी दल ने तुरंत कवर ले लिया और एक रणनीति तथा सटीकता के साथ जवाबी कार्रवाई की, जिसके कारण आतंकवादियों को घेराबंदी वाले क्षेत्र से जरा सी भी बचने का कोई अवसर प्राप्त नहीं हुआ। किसी भी नागरिक को हताहत होने से बचाने के लिए, ऑपरेशनल कमांडर (पुलिस अधीक्षक शोपियां) ने पार्टियों को घेराबंदी वाले क्षेत्र में फंसे हुए लोगों को बचाकर बाहर निकालने के लिए कहा। जब बचाव का कार्य चल रहा था, तो श्री श्रीराम दिनकर अंबरकर, पुलिस अधीक्षक शोपियां, श्री इफरोज़ अहमद, पुलिस अधीक्षक ऑपरेशन, श्री आशिक हुसैन, उप पुलिस अधीक्षक और श्री माजद अली, उप पुलिस अधीक्षक के नेतृत्व वाले हमलावर समूह भारी गोलीबारी में फंस गए, तथापि उन्होंने अपनी एकाग्रता नहीं छोड़ी और अपनी जान की परवाह किए बिना बचाव की प्रक्रिया जारी रखी तथा यह कार्य सफलतापूर्वक पूरा किया। इसी बीच, एक हिंसक भौड़ ने घेराबंदी को तोड़ने के इरादे से घेराबंदी में शामिल सैन्य दस्तों पर पत्थर फेंकना शुरू कर दिया, तथापि, इस उद्देश्य के लिए उक्त क्षेत्र में तैनात कानून और व्यवस्था संभालने वाले घटकों ने ज्यादा से ज्यादा संयम बरतते हुए और कम से कम बल का प्रयोग करते हुए उस स्थिति को रणनीतिक ढंग से संभाला। अंधेरे को देखते हुए, इस बात की पूरी संभावना थी कि घिरे हुए आतंकवादी रात्रि में घेराबंदी से बच निकलने का प्रयास कर सकते हैं, इसलिए, घेराबंदी को मजबूत करने का निर्णय लिया गया और सैन्य दस्तों को सीएसओ को सख्ती तथा मजबूती से जारी रखने का निदेश दिया गया ताकि फंसे हुए आतंकवादी अंधेरे में भाग न सकें। इसी बीच, घेराबंदी करने वाली पार्टी घेराबंदी के बाहर से होने वाली भारी गोलीबारी में फंस गई, क्योंकि दूसरे स्थानों वाले आतंकवादियों ने वहां फंसे हुए आतंकवादियों को घेराबंदी से बच निकलने में सहायता प्रदान करने का प्रयास किया। घेराबंदी करने वाली पार्टी ने घेराबंदी में किसी भी प्रकार की ढील दिये बिना इस गोलीबारी का प्रभावशाली ढंग से जवाब दिया और इस प्रकार उनकी नापाक योजना को विफल कर दिया। तथापि, फंसे हुए आतंकवादियों ने अंधेरे का लाभ उठाते हुए, घेराबंदी करने वाली पार्टी पर अंधाधुंध गोलीबारी करके घेराबंदी से बाहर निकलने का बार-बार प्रयास किया। घेराबंदी करने वाली पार्टी ने इस गोलीबारी का प्रभावशाली ढंग से जवाब दिया और फंसे हुए आतंकवादियों को खदेड़ कर दोबारा घेराबंदी वाले क्षेत्र में पहुंचा दिया।

भोर होने पर तलाशी ऑपरेशन पुनः शुरू किया गया और तलाशी दल उस संदिग्ध स्थान तथा उन निकटवर्ती घरों की छानबीन करने में सक्षम था, जिनमें आतंकवादियों की मौजूदगी का पता चला था। घिरे हुए आतंकवादियों को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया; तथापि, उन्होंने मना कर दिया और सुरक्षा बलों पर भारी मात्रा में गोलीबारी शुरू कर दी। श्री अमित कुमार, आईपीएस, उप पुलिस महानिरीक्षक एसकेआर अनंतनाग और श्री श्रीराम दिनकर अंबरकर, पुलिस अधीक्षक शोपियां के नेतृत्व में तलाशी दल ने साहस और बहादुरी के साथ प्रभावशाली ढंग से गोलीबारी का जवाब दिया तथा 03 शीर्ष आतंकवादियों को मार गिराया। इसी बीच, निकटवर्ती घर में छिपे हुए आतंकवादियों ने तलाशी दलों पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। इन आतंकवादियों से एक बार फिर हथियार डालने के लिए कहा गया। तथापि, उन्होंने आत्मसमर्पण करने के प्रस्ताव को स्वीकार करने से इंकार कर दिया और पुनः भारी गोलीबारी शुरू कर दी। तत्पश्चात, श्री इफरोज़, सब इंस्पेक्टर, मुनीर अहमद ईएक्सके 109557, सब इंस्पेक्टर आरिफ हामिद एआरपी-11 5778, हेड कांस्टेबल रवीश अहमद, एसजी कांस्टेबल फारिक अहमद 189/एसपीएन, एसजी कांस्टेबल फिरोज़ अहमद 493/एसपीएन, एसजी कांस्टेबल संजय कुमार 523/आईआर 18, एसजी कांस्टेबल राज पाल सिंह 510/एसपीएन, श्री मोहम्मद अख्तर 468/ एपी 14, एसजी कांस्टेबल शफीक अहमद 469/ एपी चौथी बटालियन, एसजी कांस्टेबल समीर अहमद सं. 495 पीएल, कांस्टेबल मोहम्मद अशरफ 464/एसपीवाई, कांस्टेबल मोहम्मद वसीम 3789/ पीडब्ल्यू, कांस्टेबल एजाज अहमद 543/एसपीवाई, कांस्टेबल आसिफ इकबाल 5561 एसपीएन, कांस्टेबल शबीर अहमद 789/एसपीएन, कांस्टेबल बिलाल रसूल 761/एसपीएन, कांस्टेबल नसीर अहमद 764/एसपीएन, कांस्टेबल नजीर अहमद 699/एसपीएन, कांस्टेबल इरशाद अहमद 462/एसपीएन, कांस्टेबल शौकत अहमद 529/आईआर 10वीं बटालियन, कांस्टेबल शहजाद अहमद 635/आईआर 18, एसपीओ बिलाल अहमद 413, एसपीओ मोहम्मद इकबाल 182, एसपीओ जमीर अहमद 32, एसपीओ अब. अहद 169, एसपीओ रेशपाल लाल 555/जे, एसपीओ दियाल सिंह 859/1,

एसपीओ मुजफ्फर वानी 357/एसपीएन, एसपीओ जाहिद रमजान 184/एसपीओ, मोहम्मद अशरफ 239/एसपीएन, एसपीओ अब्दुल सलाम 201/केजीएम, एसपीओ शाहिर अहमद 203, एसपीओ गु. हसन 01, एसपीओ शिराज अहमद 171, एसपीओ नाहिदा अख्तर 04, एसपीओ नासिर अहमद 316, एसपीओ गुलज़ार अहमद 66, एसपीओ इछपाल सिंह 27, एसपीओ जाविद अहमद 144 और एसपीओ नरिंदर सिंह 245/बी वाले हमलावर दलों ने आतंकवादियों की गोलीबारी का प्रभावशाली ढंग से जवाब दिया और सफलतापूर्वक दो अत्यधिक कुख्यात आतंकवादियों को मार गिराया। हिजबुल मुजाहिदीन गुट के पांच आतंकवादियों नामतः इश्फाक अहमद थोकर पुत्र अब्दुल मजीद निवासी पहरपोरा, एत्माद अहमद डार पुत्र फैयाज अहमद निवासी अम्शीपोरा, समीर अहमद लोन पुत्र गु. नबी निवासी हिलो, इकबाल मलिक पुत्र मोहम्मद इकबाल निवासी रिंगथ डी. एच. पोरा कुलगाम और गयास-उल-इस्लाम पुत्र बशीर अहमद थोकर निवासी पहरपोरा को मार गिराया गया। मारे गए आतंकवादियों के पास से बरामद किए गए हथियारों/गोला-बारूद में 01 इंसास राइफल, 109 इंसास राउंड, 03 इंसास मैगज़ीन, 02 एके-56, 04 एके-56 मैगज़ीन (01 क्षतिग्रस्त), 106 एके-56 राउंड, 16 पिस्टल राउंड और 04 एलवीएस जब्ती मेमो शस्त्र/गोला-बारूद आदि शामिल हैं। इस संबंध में, पुलिस स्टेशन शोपियां में आरपीसी की धारा 307, 336, 353 और आयुध अधिनियम की धारा 7/27 के अंतर्गत एक मामला एफआईआर सं. 91/2018 दर्ज की गई है।

इस ऑपरेशन में, सर्व/श्री श्रीराम दिनकर अंबरकर, आईपीएस, पुलिस अधीक्षक, इफरोज़ अहमद, अपर पुलिस अधीक्षक, आशिक हुसैन टाक, उप पुलिस अधीक्षक, संजय कुमार धर, एसजी कांस्टेबल, समीर अहमद, एसजी कांस्टेबल और मोहम्मद अशरफ डांगरू, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किये जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 31.03.2018 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/13/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 78-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	हिलाल खालिक भट	उप पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	डॉ. एजाज अहमद मलिक	उप पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक
03	रियाज अहमद लवय	एसजी कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
04	यासिर अहमद पठान	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 04.12.2017 को, एक आतंकवादी गुट ने सेना के काफिले पर फिदायीन हमला करने के लिए गांव-नानो बद्रजुंड, कुलगाम के नजदीक घात लगा रखी थी और उसने सेना के वाहनों पर गोलीबारी की। अपने सहयोगी एसजी कांस्टेबल रियाज अहमद सं. 1027/केजीएम के साथ उप पुलिस अधीक्षक पीसी मीरबाजार श्री एजाज मलिक के नेतृत्व में पुलिस के साथ-साथ सेना के गश्त दल को भी चोटें आईं। इसके परिणामस्वरूप, पुलिस/सेना के गश्त दल ने फिदायीन हमले को रोकने के लिए प्रभावशाली ढंग से जवाबी हमला किया। साथ ही साथ, गश्त दल ने फुर्ती से कार्रवाई की और आतंकवादी को घटना स्थल से भागने का कोई मौका नहीं दिया। इसी बीच, जिला कुलगाम, सीआरपीएफ 163 बटालियन और 10 सिखलाई के सैन्य कर्मियों के एसओजी घटकों के साथ वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक कुलगाम घटना स्थल पर पहुंचे और उक्त क्षेत्र में तलाशी ऑपरेशन शुरू कर दिया तथा उस लक्षित घर की पहचान की, जहां आतंकवादियों ने शरण ले रखी थी। एजाज अहमद मलिक, उप पुलिस अधीक्षक पीसी, मीरबाजार के नेतृत्व में ऑपरेशनल पुलिस दल तथा हिलाल खालिक, उप पुलिस अधीक्षक, कुलगाम एवं डॉ. एजाज अहमद मलिक, उप पुलिस अधीक्षक पीसी, खुडवानी मंझगाम और उनकी टीम ने इन आतंकवादियों को बंदूक की लड़ाई में उलझा दिया तथा एसएचओ काजीगुंड उप पुलिस अधीक्षक (प्रोब.) साहिल महाजन के नेतृत्व में सेना/पुलिस के बैकअप दलों द्वारा उक्त क्षेत्र की घेराबंदी कर दी गई। यह भी पता चला कि आतंकवादी जबरन एनएचडब्ल्यू के नजदीक एक निजी भवन में घुस गए हैं। आतंकवादियों को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया, परंतु उन्होंने इंकार कर दिया तथा पुलिस दल की ओर ग्रेनेड फेंके और तत्पश्चात भारी गोलीबारी की, जिसका पुलिस/सेना के संयुक्त दल द्वारा जवाब दिया गया। सर्वप्रथम, 10 सिखलाई के एक सैनिक को गंभीर चोटें

आई। पुलिस/सुरक्षा बलों ने पूरे क्षेत्र को इस घटना के बारे में अवगत कराया तथा नागरिकों को हताहत होने से बचाने के लिए उक्त क्षेत्र के स्थानीय लोगों को वहां से बाहर निकाला गया। वहां पर हुई मुठभेड़ के दौरान, 02 एफटी (पाकिस्तानी नागरिकों) और एलटी को मार गिराया गया, जिनकी पहचान फुरकान निवासी पाकिस्तान, अबु मावियाह निवासी पाकिस्तान और यावर बशीर पुत्र बशीर अहमद वानी निवासी हबीलिश के रूप में की गई। मारे गए आतंकवादियों के पास से बरामद किए गए हथियारों/गोलाबारूद में 03 एके-47 राइफल (क्षतिग्रस्त), 04 एके मैगजीन (02 क्षतिग्रस्त), 54 एके राउण्ड, 01 पाउच चित्रा, 01 ट्रिगर, 03 पत्ते दवाइयां (ओएक्स 14जी), 01 वैसलीन नफीस, 02 तेल की बोतलें (स्ट्रीक), 01 चाबी, 01 बॉल पेन, 01 काला बैग (स्टोडियस), 01 बुकलेट, 03 ब्रश (प्रयोग करने योग्य), 01 शेव मशीन (नीले रंग की), 01 नेल कटर, 01 घड़ी (काले रंग की), 04 सेल, 02 ट्यूब, 01 पैक ब्लेड सिल्वर (पाकिस्तान निर्मित), 01 मिस्वाक, 01 चार्जर (काले रंग का), 02 पाउच और 01 यूबीजीएल शामिल हैं। इस संबंध में, पुलिस स्टेशन काजीगुंड में आरपीसी की धारा 302, 120-ख तथा 332 और आयुध अधिनियम की धारा 7/27 के अंतर्गत एफआईआर सं. 333/2017 के तहत एक मामला दर्ज है।

इस ऑपरेशन में शामिल अधिकारियों/कर्मियों ने नागरिकों/पैदल यात्रियों को बचाकर सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने में सूझ-बूझ का परिचय दिया। इसी बीच, अपने सहयोगी एसजी कांस्टेबल यासिर अहमद सं. 657/केजीएम के साथ उप पुलिस अधीक्षक पीसी कुलगाम श्री हिलाल खालिक के नेतृत्व में अतिरिक्त सहायता बल और एसओजी के अन्य सैन्य दस्ते भी उस स्थान पर पहुंच गए और पेशेवर तरीके से उक्त क्षेत्र की शीघ्र घेराबंदी कर दी।

इस ऑपरेशन में, सर्व/श्री हिलाल खालिक भट, उप पुलिस अधीक्षक, डॉ. एजाज अहमद मलिक, उप पुलिस अधीक्षक, रियाज अहमद लवय, एसजी कांस्टेबल और यासिर अहमद पठान, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 04.12.2017 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/14/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 79-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	मो. नवाज खांडे	उप पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार
02	एजाज अहमद मीर	असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार
03	आशिक हुसैन यातू	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 06.03.2016 को जिला कुलगाम के उत्तर पूर्व की ओर स्थित और अतिसंवेदनशील आतंकवाद प्रभावित क्षेत्र गांव बुचरू में आतंकवादी के मौजूद होने के बारे में विशेष सूचना प्राप्त हुई। उस क्षेत्र के विशिष्ट स्थान और स्थलाकृति को ध्यान में रखते हुए कुलगाम के तत्कालीन वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्री मुमताज अहमद- जेकेपीएस के नेतृत्व में कुलगाम पुलिस/पीसी श्रीनगर के पुलिस दल को दो दलों में बांट दिया गया। प्रत्येक दल को अलग-अलग उत्तरदायित्व सौंपे गए। उप पुलिस अधीक्षक (ऑप्स) मंजगाम, श्री मो. नवाज खांडे- केपीएस की अगुवाई में उनके साथी कांस्टेबल आशिक हुसैन सं. 614/केजीएम ईएक्सके-126205 और पुलिस बल के साथ पहले दल को भीतरी घेराबंदी का काम सौंपा गया। उप पुलिस अधीक्षक (ऑप्स) मंजगाम पहले आक्रमण करने वाले दल के रूप में ऑपरेशन की अगुवाई कर रहे थे और असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर एजाज अहमद 2606/एस ईएक्सके-983076 के नेतृत्व में दूसरे दल को बाहरी घेराबंदी तथा कानून और व्यवस्था बनाए रखने का कार्य सौंपा गया। आतंकवादी ने गांव बुचरू (मीर मोहल्ला) में शरण ले रखी थी, जो घने जंगलों से घिरा घनी आबादी वाला क्षेत्र है और जहां से बच निकलने के बहुत से रास्ते हैं। घेराबंदी कड़ी कर दी गई और आतंकवादियों द्वारा घेराबंदी को तोड़ने के लिए कोई स्थान रिक्त नहीं छोड़ा गया। उप पुलिस अधीक्षक (ऑप्स) मंजगाम की अगुवाई में उनके खास रक्षक बल/पुलिस बल के साथ पहले दल ने अपनी जान की परवाह किए बगैर पेशेवर तरीके से सिविल वाहन में घेराबंदी की ताकि किसी को पता न चल पाए। आतंकवादी ने गांव से भाग निकलने के लिए आगे बढ़ रहे पहले दल के ऊपर गोलीयों की बौछार कर दी और ग्रेनेड फेंक कर जानलेवा हमला करने का प्रयास किया, जिसमें उप पुलिस अधीक्षक (ऑप्स) मंजगाम अपने साथी के साथ बाल-बाल बचे, तथापि उन्होंने आतंकवादी का बहादुरी के साथ मुकाबला किया। उप पुलिस अधीक्षक (ऑप्स) कुलगाम, उप पुलिस अधीक्षक (ऑप्स) मंजगाम ने विशेष रूप से असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर शाहनवाज अहमद 3656/एस, असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर सुरेन्द्र सिंह 45/आई आर 11वीं बटालियन, एचओ सुखदेव सिंह 04/आई आर 11वीं

बटालियन, हेड कांस्टेबल आजाद अहमद नाइक 3856/एस, एसजी कांस्टेबल मंजूर अहमद 961/एस, कांस्टेबल रुकसार अहमद 656/केजीएम, कांस्टेबल मो. अल्ताफ 4529/एस, कांस्टेबल मुख्तार अहमद 4546/एस, कांस्टेबल फिदा हुसैन 718/केजीएम, मो. इकबाल 973/केजीएम, एसपीओ रियाज-उल-इस्लाम 563/एसपीओ, एसपीओ मंजीत सिंह 182/एसपीओ, एसपीओ सुरेन्द्र सिंह 839/एसपीओ, एसपीओ मो. अशरफ 388/के, एसपीओ बिलाल अहमद 375/के, एसपीओ वसीम अहमद 472/के वाले पुलिस दल के साथ बहादुरी/सूझबूझ से स्थिति को संभाला और आतंकवादी पर गोली चलाई। उसे आगे इधर-उधर जाने से रोकने और आम नागरिकों को मारे जाने से बचाने के लिए, क्योंकि उक्त क्षेत्र के लोग आतंकवादी के निशाने के बहुत करीब थे, उप पुलिस अधीक्षक (ऑप्स) मंजगाम ने अपने साथी के साथ हर जोखिम उठाते हुए उन्हें गोलियां लगने से बचाया क्योंकि आतंकवादी आम नागरिकों को निशाना बनाना चाह रहा था ताकि वह कानून और व्यवस्था की समस्या पैदा करके वहां से भाग सके। उप पुलिस अधीक्षक (ऑप्स) मंजगाम ने अपने साथी और एसओजी दल तथा 1 आरआर के साथ बिना यह विचार किए कि वे एक भयंकर मुठभेड़ में हैं और आतंकवादी के निशाने के बहुत निकट हैं, हर जोखिम उठाते हुए उस इलाके से अधिकतर लोगों को बाहर निकाला और उन्हें सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया। आतंकवादी गांव में छिपा हुआ था और दोनों ओर से गोलीबारी हो रही थी। दूसरी ओर, श्री जहीर अब्बास, उप पुलिस अधीक्षक (ऑप्स) कुलगाम के नेतृत्व में उनके साथी कांस्टेबल मो. अल्ताफ के साथ पुलिस दल ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए तत्काल बाहरी घेराबंदी कर ली। असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर सुरेन्द्र सिंह और असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर शाहनवाज अहमद ने भीड़ को इकट्ठा नहीं होने दिया और स्थिति को बड़े ही बुद्धिमत्तापूर्ण ढंग से नियंत्रित किया। मुठभेड़ के दौरान समय टीम ने अपनी जान की परवाह किए बगैर महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। दोनों ओर से लगभग चार घंटे तक गोलीबारी होती रही और हिजबुल मुजाहिदीन के एक खतरनाक आतंकवादी नामतः दाऊद अहमद शेख (ए+ श्रेणी) के खात्मे के साथ यह गोलीबारी समाप्त हुई और भारी मात्रा में हथियारों/गोलाबारूद की बरामदगी की गई, जिनमें 1 ए.के.-56 राइफल, 2 ए.के.-56 मैगजीन और 15 ए.के. राउंड शामिल हैं। इस संबंध में, पुलिस स्टेशन- कुलगाम में आरपीसी की धारा 307 और आयुध अधिनियम की धारा 7/27 के अंतर्गत मामला एफआईआर सं. 49/2016 दर्ज है।

यह उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं है कि मारा गया आतंकवादी कई मामलों में संलिप्त था अर्थात् वह सेवानिवृत्त पुलिस अधिकारी बशीर अहमद डार निवासी अशमूजी कुलगाम की हत्या के लिए पुलिस स्टेशन कुलगाम में आरपीसी की धारा 302 और आयुध अधिनियम की धारा 7/27 के तहत दर्ज एफआईआर सं. 137/2015 और अन्य एफआईआर में संलिप्त था। उक्त आतंकवादी के खात्मे से, हिजबुल मुजाहिदीन को जबरदस्त झटका लगा और एसएनजेवाई-2016 को नुकसान पहुंचाने के हिजबुल मुजाहिदीन के मंसूबे को विफल कर दिया गया।

इस ऑपरेशन में, सर्व/श्री मो. नवाज खांडे, उप पुलिस अधीक्षक, एजाज अहमद मीर, असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर और आशिक हुसैन यातू, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 06.03.2016 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/16/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 80-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	मो. माजिद मलिक	अपर पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	जीएच हसन शेख	उप पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक
03	जहूर अहमद गनी	इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक
04	जीएच रसूल	हेड कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
05	तौसीक अहमद डार	हेड कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 29/30.11.2017 की मध्यरात्रि के दौरान सीआईयू बडगाम को सूचना मिली कि गुलाम अहमद भट के दोनों बेटों असादुल्लाह भट और मो. एहसान भट के संयुक्त मकान में जैश-ए-मोहम्मद (अफजल गुरु गिरोह) के 3-4 फिदायीन आतंकवादी छिपे हुए हैं और वे कथित रूप से जिला बडगाम में सुरक्षा बल की स्थापना पर आत्मघाती हमला करने की योजना बना रहे हैं। तदनुसार, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक बडगाम श्री तेजेन्द्र सिंह, आईपीएस की अगुवाई में, अपर पुलिस अधीक्षक बडगाम तथा श्री मो. माजिद मलिक-जेकेपीएस, उप पुलिस

अधीक्षक, पीसी छद्मा, श्री गुलाम हसन शेख-जेकेपीएस और उप पुलिस अधीक्षक पीसी बडगाम श्री परूपकार सिंह- जेकेपीएस और सुरक्षा बलों के साथ पुलिस दल लक्षित स्थल की ओर चल पड़े। पुलिस और सुरक्षा बलों की संयुक्त टीम ने लक्षित क्षेत्र की घेराबंदी कर दी। आम नागरिकों के जीवन और संपत्ति को सुरक्षित रखने के लिए, लक्षित घर सहित आस-पास के सभी घरों के निवासियों को बिना किसी सम्पाश्विक क्षति के सफलतापूर्वक बाहर निकाल लिया गया। इसलिए आतंकवादियों का मुकाबला करने और उनका सफाया करने के लिए पुलिस और अन्य सुरक्षा बलों की चार संयुक्त टीमें गठित की गईं। पुलिस अधीक्षक बडगाम के नेतृत्व में इंस्पेक्टर जहूर अहमद गनई, सब इंस्पेक्टर रवीन्द्र सिंह प्रभारी क्यूआरटी पी सी बडगाम, हेड कांस्टेबल तौसीक अहमद डार और सीआरपीएफ की 181वीं बटालियन की क्यूआरटी के सहयोग से पहली टीम को लक्षित घर को पश्चिम की ओर से कवर करने का कार्य दिया गया। उप पुलिस अधीक्षक पीसी छद्मा के नेतृत्व में हेड कांस्टेबल जीएच रसूल और हेड कांस्टेबल नजीर अहमद प्रभारी क्यूआरटी पाखरपोरा के सहयोग से दूसरी टीम को लक्षित घर को पूरब की ओर से कवर करने की जिम्मेदारी दी गई। 10 गढ़वाल राइफल्स के मेजर आदित्य, 53 आर आर के मेजर पंकज और 10 गढ़वाल राइफल्स के कैप्टन शशांक के नेतृत्व में तीसरी टीम को लक्षित घर को पीछे की ओर से कवर करने की जिम्मेदारी दी गई। 53 आरआर के मेजर जरमाल संधू के नेतृत्व में सीआरपीएफ की 178वीं बटालियन की क्यूआरटी की चौथी टीम को लक्षित घर के दक्षिणी हिस्से को कवर करने की जिम्मेदारी सौंपी गई। जैसे ही गोलीबारी शुरू हुई, लक्षित घर में छिपे आतंकवादियों ने घर की पहली मंजिल पर अपनी रणनीतिक पोजीशन ले ली और चारों ओर से सुरक्षा बलों पर निशाना साधने लगे। किंतु सभी चारों टीमों ने पहले ही अपनी पोजीशन ले ली थी, अतः आतंकवादी उनमें से किसी को भी नुकसान पहुंचाने में विफल रहे। पत्थरबाजी करने वाली भीड़ ने घेराबंदी में तैनात किए गए सुरक्षा बलों को उनकी जगह से हिलाने के लिए भरसक प्रयास किया ताकि फंसे हुए आतंकवादियों को भाग निकलने का मौका मिल जाए। इसी बीच एक खूंखार आतंकवादी लक्षित घर से बाहर आया और उसने घेराबंदी से भाग निकलने के लिए श्री गुलाम हसन शेख-जेकेपीएस, उप पुलिस अधीक्षक ऑपरेशन छद्मा, हेड कांस्टेबल नजीर अहमद प्रभारी क्यूआरटी, पाखरपोरा और अन्य कार्मिकों वाली टीम पर ग्रेनेड से हमला किया। किंतु अपना संयम बनाए रखते हुए, टीम ने आतंकवादी पर एक साथ इस प्रकार गोलियों की बौछार की कि आतंकवादी के पास लक्षित घर में वापस जाने के सिवाय कोई चारा नहीं था। कुछ देर के पश्चात, छिपे हुए आतंकवादियों ने एक बार फिर ग्रेनेड फेंका और पुलिस/सुरक्षा बलों को क्षति पहुंचाने और घटना स्थल से भाग जाने का प्रयास किया। तथापि, टीम ने पूरी ताकत के साथ जवाबी कार्रवाई की और उसे तुरंत ढेर कर दिया, बाद में जिसकी शिनाख्त जैश-ए-मुहम्मद संगठन के एक फिदायीन आतंकवादी पाकिस्तान निवासी फौजी चाचा के रूप में की गई। दूसरा आतंकवादी लक्षित घर से बाहर आया और घेराबंदी से भागने की कोशिश में घर के पश्चिम की ओर तैनात सुरक्षा बलों पर अंधाधुंध गोली चलाता हुआ पश्चिम की ओर भागा। श्री मो. माजिद मलिक-जेकेपीएस की अगुवाई में एसआई रबीन्द्र सिंह प्रभारी क्यूआरटी पीसी बडगाम के सहयोग से उस ओर तैनात पार्टी ने अपनी सुरक्षा की परवाह किए बगैर बहादुरी से जवाबी कार्रवाई की और बिल्कुल निकट से उस आतंकवादी को ढेर कर दिया, बाद में जिसकी शिनाख्त पाकिस्तान निवासी अबू वकर के रूप में की गई। उन दोनों आतंकवादियों की तरह ही तीसरा आतंकवादी भी 53 आरआर के मेजर जरमाल संधू, 10 गढ़वाल राइफल्स के मेजर आदित्य, 53 आर आर के मेजर पंकज और 10 गढ़वाल राइफल्स के कैप्टन शशांक के बीच के क्षेत्र में ग्रेनेड फेंकते हुए और अंधाधुंध गोलीबारी करते हुए बाहर आया और इन लोगों ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बगैर जवाबी कार्रवाई करते हुए भाग रहे उस आतंकवादी पर साहसिक तरीके से एलएमजी से गोलियों की बौछार कर दी और उसे घटनास्थल पर ही ढेर कर दिया। बाद में, इस आतंकवादी की शिनाख्त शबीर अहमद डार उर्फ शबीर थोकेर, निवासी थोकेरपोरा राजपुरा, पुलवामा के रूप में की गई। तलाशी के दौरान तीन शव बरामद किये गए और बाद में तीनों की शिनाख्त अफजल गुरु गिरोह के फौजी उर्फ फौजी चाचा (फिदायीन ए++), अफजल गुरु गिरोह के अबू बकर (फिदायीन ए++) और शबीर अहमद डार उर्फ शबीर थोकेर (श्रेणी सी) के रूप में की गई। उनके कब्जे से मिले हथियारों/गोलाबारूद में बगैर क्लीनिंग रॉड के 01 एके 47 राइफल, जिस पर सं. 1968-एमके -4950 अंकित है (पिस्टल ग्रिप क्षतिग्रस्त), 05 एके 47 मैगजीन (02 मैगजीन क्षतिग्रस्त), एके47 के 66 जिंदा राउंड बगैर क्लीनिंग रॉड गैस ट्यूब के और आगे का हैंड गार्ड आधा जला हुआ (शेलिंग कैच टूटा हुआ), 02 एके56 मैगजीन, एके56 के 45 जिंदा राउंड, 01 छोटी एके-47 (आधी जली हुई), 03 पाउच (आधे जले हुए) और 01 आधार कार्ड सं. 364423671032 शामिल हैं। इस संबंध में, पुलिस स्टेशन चरार-ए-शरीफ में आरपीसी की धारा 307, आयुध अधिनियम की धारा 7/27 और पीएएसएसए की धारा 3 के अंतर्गत मामला एफआईआर सं. 107/2017 दर्ज है।

इस ऑपरेशन में, सर्व/श्री मो. माजिद मलिक, अपर पुलिस अधीक्षक, जीएच हसन शेख, उप पुलिस अधीक्षक, जहूर अहमद गनी, इंस्पेक्टर, जीएच रसूल, हेड कांस्टेबल और तौसीक अहमद डार, हेड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 30.11.2017 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/17/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 81-प्रेज./2020—राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	रवीन्द्र कुमार	सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	सैयद वसीम अकरम	सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक
03	अब्दुल वाहिद शेख	एसजी कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
04	तसादुक हुसैन भट	एसजी कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 26-09-2017 को बारामूला पुलिस को विश्वसनीय सूत्रों से मैदान घाटी उरी में आतंकवादियों की मौजूदगी के बारे में सूचना प्राप्त हुई। इस सूचना को 34 आरआर सेना के साथ साझा किया गया। तदनुसार, बारामूला पुलिस/34आरआर द्वारा मैदान घाटी में संयुक्त तलाशी अभियान चलाया गया। अपर पुलिस अधीक्षक, बारामूला श्री शफकत हुसैन तथा उप पुलिस अधीक्षक, एसडीपीओ, उरी श्री सैयद जावेद की कमान वाली सर्च पार्टी, जो संदिग्ध क्षेत्र के एक हिस्से में तलाशी कर रही थी, को यह आभास हुआ कि आतंकवादी एक गुप्त स्थान (हाइडआउट) में छिपे हुए हैं और उन्होंने तत्काल अपने दलों को यह आदेश दिया कि वे उनके छिपने के स्थान (हाइडआउट) के निकट न जाएं, ताकि किसी आम नागरिक/सुरक्षा बल को किसी भी प्रकार की कोई क्षति न पहुंचे। सब इंस्पेक्टर रवीन्द्र कुमार ईएक्सके-791328 के नेतृत्व में पुलिस कार्मिकों के बचाव दल का गठन किया गया, जिसमें सब इंस्पेक्टर सैयद वसीम अकरम एआरपी-115586, एसजी कांस्टेबल अब्दुल वाहिद ईएक्सके-108194 तथा एसजी कांस्टेबल तसादुक हुसैन सं. एआरपी-105669 शामिल थे और उन्होंने आगे रहकर इस दल का नेतृत्व किया।

श्री रवीन्द्र कुमार के नेतृत्व में पुलिस का बचाव दल लक्षित स्थल के समीप आम नागरिकों को बचाने में लग गया। बचाव अभियान के दौरान, आतंकवादियों द्वारा पुलिस दल पर गोलीबारी की गई, किंतु पुलिस की ओर से कोई जवाबी कार्रवाई नहीं की गई ताकि आम लोगों की जान बचाई जा सके। लोगों को वहां से सुरक्षित बाहर निकालने की प्रक्रिया पूरी होने के तुरंत बाद, सब इंस्पेक्टर रवीन्द्र कुमार के नेतृत्व में एक संयुक्त हमला दल बनाया गया, जिसमें सब इंस्पेक्टर सैयद वसीम अकरम, एसजी कांस्टेबल अब्दुल वाहिद तथा एसजी कांस्टेबल तसादुक हुसैन शामिल थे और उन्हें साइट इंटरवेंशन का काम सौंपा गया। छिपे हुए आतंकवादियों को चुनौती देते हुए उन्हें घर से बाहर निकल कर पुलिस दल के समक्ष आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया, किन्तु छिपे हुए आतंकवादियों ने पुलिस दल पर अंधाधुंध गोलीबारी करनी शुरू कर दी तथा उन्होंने घेराबंदी को तोड़ने का प्रयास किया। तथापि, गोलीबारी के प्रत्युत्तर में जवाबी कार्रवाई की गई तथा सब इंस्पेक्टर रवीन्द्र कुमार अपने जवानों के साथ डटे रहे और उन्होंने आतंकवादियों को उस स्थान से बाहर निकलकर घेराबंदी को तोड़ने नहीं दिया। हमला दल, जिसमें सब इंस्पेक्टर वसीम अकरम, एसजी कांस्टेबल अब्दुल वाहिद, एसजी कांस्टेबल तसादुक हुसैन तथा सब इंस्पेक्टर मोहम्मद मुर्तजा 7601/एनजीओ, हेड कांस्टेबल मुनीर अहमद 295/बीडी, एसजी कांस्टेबल मंजूर अहमद 444/बी, कांस्टेबल शिराज अहमद 1425/बी, कांस्टेबल मोहम्मद इसहाक 1070/बी, कांस्टेबल सैयद आरिफ हुसैन 1277/पीएल, कांस्टेबल आशिक हुसैन 602/बी, कांस्टेबल जीशान अली 1280/बी, कांस्टेबल हिलाल अहमद 490/बी, कांस्टेबल बशीर अहमद 437/आईआरपी 13वीं बटालियन (ओटीपी के लिए संस्तुत) और एसपीओ मुख्तार अहमद 485/एसपीओ, एसपीओ इरशाद अहमद 678/एसपीओ, एसपीओ शबीर अहमद 437/एसपीओ, एसपीओ मोहम्मद सादिक 487/एसपीओ, एसपीओ तनवीर अहमद 799/एसपीओ, एसपीओ जाविद अहमद 1125/एसपीओ, एसपीओ सायीन तनवीर 319/एसपीओ, एसपीओ शौकत अहमद 526/एसपीओ, एसपीओ अली मोहम्मद 798/एसपीओ, एसपीओ बशीर अहमद 1234/एसपीओ, एसपीओ जफर इकबाल मीर 904/एसपीओ (एसजीआर), एसपीओ अब्दुल राशिद 199/एसपीओ तथा मोहम्मद फरीद 24/एसपीओ शामिल थे, ने संयुक्त अभियान दलों के बाहरी सहयोग से घंटों तक आतंकवादियों से भयंकर मुठभेड़ की और इस दौरान इस दल में शामिल उन सभी व्यक्तियों, जिनका नाम पुरस्कार के लिए संस्तुत किया गया है, ने परस्पर अत्यधिक सहयोग का प्रदर्शन किया तथा आतंकवादियों पर अत्यंत कम दूरी से जवाबी गोलीबारी की। पुरस्कार के लिए संस्तुत कार्मिकों तथा अन्य जवानों ने तेज जवाबी कार्रवाई की और उस स्थल पर आगे बढ़ते हुए अपनी पकड़ बना ली, जहां आतंकवादी छिपे हुए थे। पुरस्कार के लिए संस्तुत कार्मिकों ने अपनी जान की परवाह किए बिना आतंकवादियों के छिपने के स्थान पर भयंकर गोलीबारी की। पुरस्कार के लिए संस्तुत सुरक्षा बल कार्मिकों तथा आतंकवादियों के बीच आधे घंटे से भी अधिक समय तक गोलीबारी चली, जिसके कारण हिजबुल मुजाहिदीन के दुर्दांत आतंकवादी का सफाया किया जा सका तथा बाद में इस आतंकवादी की अब्दुल कयूम नजर पुत्र अब्दुल राशिद निवासी मुमकाक मोहल्ला सोपोर, चीफ कमांडर, लश्कर-ए-इस्लाम संगठन (ए++ श्रेणी आतंकवादी) के रूप में पहचान की गई। इस संबंध में, पुलिस स्टेशन- उरी में आयुध अधिनियम की धारा 7/27 और आरपीसी की धारा 307 के अंतर्गत मामला एफआईआर संख्या 71/2017 दर्ज है। घटना स्थल से बरामद किए गए हथियारों/गोलाबारुद में 01 एके-47 राइफल, 04 एके-47 मैगजीन, 120 एके-47 राउंड, 01 पिस्तौल, 06 पिस्तौल मैगजीन तथा 68 पिस्तौल राउंड शामिल हैं।

इस ऑपरेशन में, सर्व/श्री रवीन्द्र कुमार सब इंस्पेक्टर, सैयद वसीम अकरम, सब इंस्पेक्टर, अब्दुल वाहिद शेख, एसजी कांस्टेबल और तसादुक हुसैन भट, एसजी कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 26.09.2017 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/18/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 82-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार/वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार/वीरता के लिए पुलिस पदक का चतुर्थ बार प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	हरमीत सिंह	वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक का चतुर्थ बार
02	गुलाम मोहम्मद शेख	असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार
03	फारूख अहमद मंटू	असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार

उस उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 30-11-2017 को पूर्वाह्न लगभग 09:45 बजे सागीपोरा क्षेत्र के कुमार मोहल्ला में लश्कर-ए-तैयबा के आतंकवादियों की आवाजाही/मौजूदगी के संबंध में विशिष्ट सूचना पर कार्रवाई करते हुए, सोपोर पुलिस ने सेना की 22-आरआर तथा केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की 179/177/92 बटालियन की सहायता से उस इलाके की घेराबंदी कर दी तथा तलाशी अभियान (सर्च ऑपरेशन) प्रारंभ किया। तलाशी अभियान के दौरान, सागीपोरा क्षेत्र के कुमार मोहल्ला में वाटर प्वाइंट के समीप एक नाले में छिपे हुए एक आतंकवादी से संपर्क स्थापित किया गया तथा उसे आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया, जिसके प्रत्युत्तर में उसने पुलिस/सुरक्षा बलों पर अपने अत्याधुनिक हथियारों के साथ भयंकर गोलीबारी शुरू कर दी। चूंकि उस घेराबंदी क्षेत्र में कुछ आम नागरिक भी मौजूद थे, अतः उनकी सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए पुलिस/सुरक्षा बल प्रभावी ढंग से जवाबी कार्रवाई नहीं कर सके तथा आम नागरिकों को वहां से सुरक्षित बाहर निकालने के कार्य को प्राथमिकता प्रदान की गई। तदनुसार, आम नागरिकों को सुरक्षित बाहर निकालने के लिए श्री हरमीत सिंह-केपीएस वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, सोपोर के नेतृत्व में एक संयुक्त दल का गठन किया गया, जिसमें श्री शौकत अहमद-उप पुलिस अधीक्षक (ऑप्स) सोपोर, असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर गुलाम मोहम्मद 281/एसपीआर, हेड कांस्टेबल मुजफ्फर अहमद 34/एसपीआर, एसजी कांस्टेबल मुश्ताक अहमद 247/एसपीआर, एसजी कांस्टेबल इरियन फारूख 389/एसपीआर, असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर फारूख अहमद 24/एसपीआर, एसजी कांस्टेबल जावीद अहमद 15/एसपीआर, कांस्टेबल मयस्सर अहमद 475/एसपीआर, कांस्टेबल यूनीस अहमद 721/एसपीआर, मो. अशरफ 418/एसपीओ, खुर्शीद अहमद 298/एसपीओ, सजाद अहमद 426/एसपीओ, जावेद अहमद 26/एसपीओ, मो. आरिफ 54/एसपीओ, बिलाल अहमद 343/एसपीओ, अब्दुल हामिद 315/एसपीओ, एजाज लतीफ 308/एसपीओ, आसिफ रसूल 198/एसपीओ, मो. अशरफ 180/एसपीओ तथा इश्फाक लतीफ 10/एसपीओ शामिल थे। संयुक्त दल ने नागरिकों को उस स्थान से सुरक्षित बाहर निकालने की प्रक्रिया प्रारंभ की और इस प्रक्रिया के दौरान वहां छिपे हुए आतंकवादियों ने संयुक्त दल पर गोलीबारी की, जिसमें सामने से दल का नेतृत्व कर रहे असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर गुलाम मोहम्मद 281/एसपीआर, असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर फारूख अहमद 24/एसपीआर तथा वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सोपोर बाल-बाल बचे तथा संयुक्त दल के अन्य सदस्यों उप पुलिस अधीक्षक (ऑप्स) सोपोर, हेड कांस्टेबल मुजफ्फर अहमद 34/एसपीआर, एसजी कांस्टेबल मुश्ताक अहमद 247/एसपीआर तथा एसजी कांस्टेबल इरफान फारूख 389/एसपीआर ने उन्हें कवर फायरिंग प्रदान की। किंतु दल ने अपना साहस नहीं छोड़ा तथा लोगों को वहां से सुरक्षित ढंग से निकालना तब तक जारी रखा, जब तक कि सभी लोगों को सुरक्षित स्थान पर नहीं पहुंचा दिया गया। सभी आम नागरिकों को वहां से सुरक्षित निकाल लिए जाने के पश्चात, घेराबंदी को और सख्त कर दिया गया तथा प्रवेश एवं निकास मार्गों को पुनः सील कर दिया गया ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि आतंकवादी उस क्षेत्र से बच कर न निकल पाएं। चूंकि आतंकवादी नाले में छिपा हुआ था तथा आसपास का इलाका काफी ऊंचा-नीचा था, इसलिए आतंकवादी के बच निकलने की संभावना थी। अतः, परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सोपोर तथा उनके दल ने आतंकवादियों पर निर्णायक और अंतिम हमला करने की सोची और तदनुसार उन्होंने रेंगते हुए आतंकवादियों की तरफ बढ़ना शुरू किया और इस दौरान आतंकवादी उन पर निरंतर गोलीबारी करते रहे और कई गोलियां वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, सोपोर और उनके दल के काफी करीब से होकर निकलीं, किंतु उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और वे निरंतर आतंकवादी की ओर बढ़ते

रहे। जैसे ही वे आतंकवादी के निकट पहुंचे, वे जानबूझकर उठ खड़े हुए और उन्होंने आतंकवादी पर ताबड़तोड़ गोलियां चलानी शुरू कर दीं, जिसके परिणामस्वरूप आतंकवादी मौके पर ही मारा गया, जिसकी बाद में दिनांक 15-11-2017 की वर्गीकरण सूची सं. पीएचक्यू ओपीएस/आरडब्ल्यूडी/क्राइटेरिया/2017/1229-60 की क्रम संख्या 182 के तहत लश्कर-ए-तैयबा के मुजम्मिल निवासी पाकिस्तान (ए++) के रूप में शिनाख्त हुई। मारे गए आतंकवादी के पास से बरामद किए गए हथियारों/गोलाबारूद में 01 एके-47 राइफल, 05 एके मैगजीन, 124 एके राउंड, 01 यूबीजीएल, 03 यूबीजीएल राउंड, 01 पाउच तथा 01 मैग्नेटिक कम्पास शामिल हैं। इस संबंध में, पुलिस स्टेशन- बोमाई में आरपीसी की धारा 307 और आयुध अधिनियम की धारा 7/27 के अंतर्गत मामला एफआईआर सं. 92/2017 दर्ज है।

इस ऑपरेशन में, सर्व/श्री हरमीत सिंह, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, गुलाम मोहम्मद शेख, असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर और फारूख अहमद मंटू, असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 30.11.2017 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/19/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 83-प्रेज/2020—राष्ट्रपति जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	रियाज अहमद	उप पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	जाविद अहमद लोन	सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 02.11.2017 को, नारिस्तान संबूरा गांव में विदेशी आतंकवादियों की मौजूदगी के संबंध में एक विश्वसनीय सूचना प्राप्त हुई। तदनुसार, उप पुलिस अधीक्षक (पीसी) पम्पोर, श्री रियाज अहमद एवं सब इंस्पेक्टर जाविद अहमद लोन सं. ईएक्सके-983086 के साथ वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक अवंतीपोरा, श्री मोहम्मद जायद की गहन देखरेख में अवंतीपोरा पुलिस, सेना 50-आरआर तथा केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की 130/180वीं बटालियन द्वारा संयुक्त रूप से घेराबंदी की गई। सर्च ऑपरेशन के दौरान हिलाल अहमद खांडे पुत्र मोहम्मद शबन खांडे निवासी नारिस्तान संबूरा के घर में संदिग्ध गतिविधि देखी गई। संयुक्त दल उक्त घर की ओर बढ़ा, जहां से आतंकवादियों द्वारा संयुक्त दल पर अंधाधुंध गोलीबारी की गई। तथापि, सर्च पार्टी द्वारा उस घर की घेराबंदी कर दी गई ताकि आतंकवादी वहां से बच कर भाग न पाएं। घर के मालिक तथा उनके परिवार के सदस्यों को उस घर से बाहर निकलने के लिए कहा गया। जैसे ही उस परिवार के सदस्य घर से निकलने ही वाले थे, तभी घर में छिपे आतंकवादियों ने संयुक्त सर्च पार्टी पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी, जिसकी वजह से आम नागरिक घर में ही फंस गए। आत्मरक्षा में जवाबी कार्रवाई की गई। छिपे हुए आतंकवादियों से आत्मसमर्पण करने तथा परिवार के सदस्यों को घर से बाहर आने की इजाजत देने के लिए कहा गया, जिसे आतंकवादियों ने अस्वीकार कर दिया। सर्वप्रथम घर में फंसे परिवार के सदस्यों को सुरक्षित बाहर निकालने की योजना बनाई गई। संयुक्त सर्च पार्टी, जिसमें श्री रियाज अहमद-जेकेपीएस, उप पुलिस अधीक्षक (पीसी) पम्पोर, सब इंस्पेक्टर जाविद अहमद लोन, असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर इरशाद अहमद 346/एडब्ल्यूटी, हेड कांस्टेबल करनैल सिंह 776/एपी 5वीं बटालियन, हेड कांस्टेबल अब्दुल राशिद खांडे 86/एडब्ल्यूटी, एसजी कांस्टेबल हक नवाज युसुफ 538/एडब्ल्यूटी, एसजी कांस्टेबल परवेज अहमद 166/एडब्ल्यूटी, कांस्टेबल साकिब रसूल 653/एडब्ल्यूटी, मोहम्मद रफीद 374/आईआरपी 18वीं बटालियन, कांस्टेबल मुहम्मद अहमद भट 727/एडब्ल्यूटी, एसपीओ शौकत अहमद 74/एसपीओ, एसपीओ कान अहमद 287/एसपीओ, एसपीओ शाह आरिफ 654/एसपीओ, एसपीओ इरशाद अहमद 228/एसपीओ, एसपीओ मुदाशिर अहमद 55/एसपीओ, एसपीओ वसीम राजा 189/एसपीओ, एसपीओ फारूख अहमद 347/एसपीओ, एसपीओ मुजफ्फर अहमद 292/एसपीओ, एसपीओ मोहम्मद अफजल मीर 11/एसपीओ तथा एसपीओ समीर अहमद डार 145/एसपीओ शामिल थे, ने घर के परिसर में प्रवेश किया, जहां से उन पर भारी गोलीबारी हुई। इसके बावजूद वे सावधानीपूर्वक उस घर की ओर बढ़ते रहे तथा उन्होंने उस कमरे का दरवाजा खोलने में सफलता पा ली, जिसमें परिवार के सदस्य फंसे हुए थे। परिवार के सभी सदस्य सर्च पार्टी की सुरक्षा में घर से बाहर भागे, जिसने एक ओर जहां आतंकवादियों को गोलीबारी में उलझाए रखा, वहीं दूसरी ओर परिवार के सदस्यों को सुरक्षित ढंग से गेट के बाहर पहुंचाया। यह देखकर कि सर्च पार्टी अपनी जान की परवाह किए बिना सावधानीपूर्वक उसकी ओर बढ़ रही है, घर में छिपे

आतंकवादी ने घर से बाहर कूदने का प्रयास करते हुए अपने बचाव में सर्व पार्टी पर अंधाधुंध गोलीबारी करनी शुरू कर दी। किंतु संयुक्त सर्व पार्टी ने त्वरित कार्रवाई करते हुए तथा अपनी जान की परवाह किए बिना आतंकवादी का सामना किया तथा उसे सटीक निशाना लगाकर मार गिराया, जिसकी बाद में जैश-ए-मोहम्मद संगठन (एफटी) के आतंकवादी बदर बाई के रूप में पहचान हुई। मारे गए आतंकवादी के पास से बरामद किए गए हथियारों/गोलाबारूद में 01 एके-47 (क्षतिग्रस्त), 04 एके मैगजीन (03 क्षतिग्रस्त), 88 एके राउंड, 01 यूबीजीएल ग्रेनेड (क्षतिग्रस्त), 03 चाइनीज ग्रेनेड, 01 यूबीजीएल, 01 सनग्लास कवर (क्षतिग्रस्त), 01 दवाई, 01 टूथ ब्रश, 02 छोटी बैटरियां, 01 टैक्टिकल पाउच, 01 लिप गार्ड तथा 01 कोलगेट शामिल थी। इस संबंध में पुलिस स्टेशन पम्पोर में आरपीसी की धारा 302, 307 तथा आयुध अधिनियम की धारा 7/27 के अंतर्गत एफआईआर सं. 192/2017 के तहत एक मामला दर्ज है।

इस ऑपरेशन में, सर्व/श्री रियाज अहमद, उप पुलिस अधीक्षक और जाविद अहमद लोन, सब इंस्पेक्टर ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 02.11.2017 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/21/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 84-प्रेज/2020—राष्ट्रपति जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	ताहिर अमीन शेख	उप पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	मो. इफ्तिखार लोन	एसजी कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
03	बिलाल अहमद मल्ल	एसजी कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 11.10.2017 को, बांदीपोरा पुलिस को विश्वसनीय स्रोतों से यह सूचना प्राप्त हुई कि ग्राम परिबल सलामाबाद हाजिन में आतंकवादी छिपे हुए हैं और ये आतंकवादी पास के सेना/पुलिस कैम्प को निशाना बनाने की योजना बना रहे हैं। तदनुसार, यह सूचना सेना 13 आरआर तथा सीआरपीएफ की 45वीं बटालियन के साथ साझा की गई। ऑपरेशन की योजना अत्यंत सावधानीपूर्वक तैयार की गई तथा दिनांक 11.10.2017 को प्रातः शेख जुल्फिकार आजाद -जेकेपीएस, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक बांदीपोरा की गहन देखरेख में बांदीपोरा पुलिस की एक संयुक्त टीम का गठन किया गया, जिसमें उनके साथ श्री ताहिर अमीन शेख -जेकेपीएस 125759 एसडीपीओ सुंबल, एसजी कांस्टेबल मोहम्मद इफ्तिखार लोन सं. 342/बीपीआर तथा कांस्टेबल बिलाल अहमद मल्ल सं. 952/बीपीआर भी शामिल थे। ऑपरेशनल पार्टी ने बिना अपनी पहचान उजागर किए उस घर तक पहुंचने के लिए अपने सामरिक कौशल का प्रयोग किया। प्रारंभ में संदिग्ध क्षेत्र की गहन एवं कड़ी घेराबंदी करने के लिए सेना/पुलिस के दो कम्पोजिट दस्ते गठित किए गए। श्री मुबाशिर रसूल- जे. के. पी. एस. 125772 उप पुलिस अधीक्षक पीसी हाजिन, एसजी कांस्टेबल मंजूर अहमद सं. 660/बीपीआर के नेतृत्व वाले एक ऑपरेशनल कम्पोनेंट तथा 13 आरआर के आर्मी कम्पोनेंट को उत्तर से दक्षिण तक की घेराबंदी करने का काम सौंपा गया, जबकि श्री गजेनफर सैयद सं. 3007/एनजीओ तथा कांस्टेबल मीर इश्फाक सं. 3859/पीडब्ल्यू की कमान वाले दूसरे कम्पोनेंट को लक्षित घर के दूसरी ओर से घेराबंदी करने का काम सौंपा गया। घेराबंदी के दौरान कम्पोजिट फोर्स कम्पोनेंट अर्थात् पुलिस एवं सेना ने अपने कम्युनिकेशन वायरलेस सेटों के पारस्परिक आदान-प्रदान के माध्यम से बेहतर समन्वय स्थापित किया तथा बड़े ही सामंजस्यपूर्ण एवं प्रोफेशनल ढंग से कार्य किया। सीआरपीएफ की 45वीं बटालियन वाली टीम तथा जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के अन्य दल को कानून एवं व्यवस्था की दृष्टि से बाहरी इलाके की घेराबंदी करने का काम सौंपा गया तथा उन्हें यह निर्देश दिए गए कि वे किसी भी आम नागरिक को लक्षित क्षेत्र की ओर जाने की अनुमति न दें ताकि लक्षित क्षेत्र में अनियंत्रित भीड़ की वजह से अशांति उत्पन्न न हो तथा ऑपरेशन के दौरान आम नागरिक इसमें किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न न कर सकें। जैसे ही घेराबंदी शुरू की गई, छिपे हुए आतंकवादियों ने ऑपरेशनल पार्टियों पर अंधाधुंध गोलीबारी करनी शुरू कर दी। पुलिस दल ने उसे आत्मसमर्पण करने के लिए कहा, किन्तु उसने जवाब में भयंकर गोलीबारी की और ग्रेनेड फेंके तथा आतंकवादियों द्वारा की गई शुरुआती गोलीबारी/ग्रेनेड हमले में सेना के 02 जवान शहीद हो गए।

फंसे हुए आम नागरिकों को सुरक्षित बाहर निकालना ऑपरेशनल दलों के लिए चुनौतीपूर्ण कार्य था। अतः, घेराबंदी किए गए क्षेत्र तथा आसपास के घरों से आम नागरिकों को सुरक्षित बाहर निकालने के लिए दो दलों का गठन किया गया।

यह उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं है कि स्वैच्छिक ऑपरेशनल टीमों ने गोलीबारी रोकने के लिए घेराबंदी वाली बाहरी टीम के साथ बेहतर समन्वय स्थापित करते हुए अपनी जान की परवाह किए बिना उस घर पर धावा बोल दिया तथा वहां पर हुई नजदीकी लड़ाई में 02 विदेशी/स्थानीय आतंकवादियों को मार गिराया गया, जिनकी बाद में पाकिस्तान निवासी माज "ए+" श्रेणी के रूप में पहचान हुई जिसका नाम दिनांक 24.07.2017 को पृष्ठांकन सं. ओपीएस/रिवार्ड/क्राइटेरिया/2017/915-30 के तहत जारी पीएचक्यू वर्गीकरण सूची में क्रम सं. 36 पर दिया गया है तथा दूसरे व्यक्ति की पहचान नसरुल्लाह मीर उर्फ अन्ना पुत्र नाजिर अहमद मीर निवासी मीर मोहल्ला हाजिन के रूप में हुई जिसके नाम को इस कार्यालय के दिनांक 09.06.2017 के पत्र सं. सीएस/सीएटी (एम)-19/2017/18916-18 के तहत वर्गीकरण सूची की "ए" श्रेणी के रूप में शामिल किए जाने की सिफारिश की गई थी। मारे गए आतंकवादी राज्य प्रशासन के लिए बड़ी चुनौती थे। मुठभेड़ स्थल से हथियार/गोलाबारूद बरामद किए गए। इस संबंध में पुलिस स्टेशन हाजिन में आरपीसी की धारा 302, 307 तथा आयुध अधिनियम की धारा 7/27 के अंतर्गत एफआईआर सं. 61/2017 के तहत एक मामला दर्ज है।

इस ऑपरेशन में, सर्व/श्री ताहिर अमीन शेख, उप पुलिस अधीक्षक, मो. इफ्तिखार लोन, एसजी कांस्टेबल और बिलाल अहमद मल्ल, एसजी कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 11.10.2017 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/22/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 85-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं :—

सर्व/श्री

01	जफर महदी	उप पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	एजाज अहमद मलिक	असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक
03	नसीर अहमद भट	हेड कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
04	शौकत अली	एसजी कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 14.01.2018 को, बारामूला पुलिस को विश्वसनीय सूत्रों से इस आशय की सूचना प्राप्त हुई कि भारी मात्रा में अत्याधुनिक हथियारों से लैस फिदायीन आतंकवादियों के समूह ने दुलंगा क्षेत्र में सेना/सुरक्षा बलों पर फिदायीन हमले को अंजाम देने के लिए भीम पोस्ट उरी की तरफ से हमारी ओर घुसपैठ की है। इस सूचना पर कार्रवाई करते हुए, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक बारामूला/पुलिस अधीक्षक (ऑप्स) बारामूला के पर्यवेक्षण में उप पुलिस अधीक्षक (ऑप्स) बारामूला श्री इरशाद अहमद अहंगर, जेकेपीएस-125832 के नेतृत्व वाला एसओजी बारामूला का पुलिस दल दुलंगा उरी की ओर बढ़ा और 04 मद्रास आर्मी तथा 53 बटालियन सीआरपीएफ की सहायता से संयुक्त अभियान शुरू किया गया। क्षेत्र की स्थलाकृति के संबंध में सेना के साथ संक्षिप्त विचार-विमर्श करने के पश्चात, घेराबंदी और तलाशी अभियान की प्रक्रिया शुरू की गई। 4 मद्रास आर्मी के सैनिकों और पुलिस कर्मियों के दो दलों का गठन किया गया और पहले दल को तलाशी करने का कार्य सौंपा गया, जबकि दूसरे दल को तलाशी दल को सुरक्षा कवर प्रदान करने का कार्य सौंपा गया। श्री जफर महदी, उप पुलिस अधीक्षक (ऑप्स.) पत्तन, हेड कांस्टेबल नासिर अहमद भट सं. 556बी, एसजी कांस्टेबल जाविद अहमद सं. 541/बी, श्री इरशाद अहमद उप पुलिस अधीक्षक (ऑप्स.) बारामूला, इंस्पेक्टर तबरेज अहमद एसएचओ उरी पुलिस स्टेशन, असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर एजाज अहमद मलिक सं. 79/बी, हेड कांस्टेबल मुनीर अहमद सं. 295/बीडी, हेड कांस्टेबल इंद्रजीत सिंह सं. 1897/बी, हेड कांस्टेबल किशोर कुमार सं. 367/बी, एसजी कांस्टेबल मो. यूनिस् सं. 1597/बी, एसजी कांस्टेबल फारूक अहमद सं. 1334/बी, एसजी कांस्टेबल अमरेज अहमद सं. 890/बी, एसजी कांस्टेबल मुश्ताक अहमद सं. 753/बी, एसजी कांस्टेबल गुलजार अहमद सं. 497/एपी 13वीं बटालियन, एसजी कांस्टेबल शौकत अली सं. 703/आईआरपी 13वीं बटालियन, एसजी कांस्टेबल तनवीर अहमद सं. 381/बी, एसजी कांस्टेबल मो. अमीन सं. 797/बी, एसजी कांस्टेबल मुजफ्फर अहमद

सं. 721/बी, एसजी कांस्टेबल गुल जमां सं. 951/बी, एसजी कांस्टेबल शबीर अहमद सं. 1026/बी, एसजी कांस्टेबल मंजूर अहमद सं. 375/बी, एसजी कांस्टेबल दिलीप कुमार सं. 334/बी, कांस्टेबल मंजूर अहमद सं. 1131/बी, कांस्टेबल तारिक अहमद सं. 858/बी, कांस्टेबल हिलाल अहमद सं. 1580/बी, फोल हकीक अहमद सं. 81/एफ, एसपीओ तारिक अहमद सं. 1200/एसपीओ, एसपीओ मो. इरफान सं. 1227/एसपीओ, एसपीओ शौकत अहमद सं. 1727/एसपीओ, एसपीओ शबीर अहमद सं. 595/एसपीओ, एसपीओ इफ्तिकार अहमद सं. 1075/एसपीओ, एसपीओ आशिक नबीर, 2579/एसपीओ, एसपीओ रफीब हुसैन सं. 1273/एसपीओ, एसपीओ मो. याकूब सं. 914/एसपीओ, एसपीओ अब्दुल रजाक सं. 1208/एसपीओ, एसपीओ नूर हुसैन सं. 491/एसपीओ, एसपीओ अख्तर हुसैन सं. 950/एसपीओ, एसपीओ राजा महबूब सं. 1629/एसपीओ, एसपीओ सैयद अल्ताफ सं. 167/एसपीओ, एसपीओ शबीर खान सं. 1220/एसपीओ, एसपीओ आशिक हुसैन सं. 1610/एसपीओ, एसपीओ गुरमुख सिंह सं. 409/एसपीओ, एसपीओ समीर हसन सं. 439/एसपीओ, एसपीओ आरिफ रमजान सं. 93/एसपीओ, एसपीओ बरकत शाह सं. 23/एसपीओ, एसपीओ रंजीत कुमार सं. 306/एसपीओ, एसपीओ गुलाम रसूल सं. 122/एसपीओ, एसपीओ बशीर अहमद सं. 1814/एसपीओ और एसपीओ मो. अमीन सं. 981/एसपीओ स्वेच्छा से तलाशी और कवरिंग दलों में शामिल हुए। मौके पर मौजूद ऑपरेशनल अधिकारियों के गहन पर्यवेक्षण में तलाशी अभियान शुरू किया गया। संदिग्ध क्षेत्र की तलाशी करते समय अचानक तलाशी दल घनी झाड़ियों में छिपे आतंकवादियों की भारी गोलीबारी के बीच फंस गया। तलाशी दल काफी सतर्क था और हमले के दौरान सुरक्षित रहा तथा ऑपरेशनल अधिकारियों द्वारा एक सूक्ष्म रणनीति बनाई गई और आतंकवादियों के ठिकानों को चिन्हित किया गया और उनकी पहचान की गई। इसके बाद, मौके पर ही एक योजना बनाई गई, जिसमें सेना और पुलिस के संयुक्त दलों को लक्ष्य स्थल के काफी निकट तैनात किया गया।

यह उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं है कि इसके बाद असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर एजाज अहमद मलिक, हेड कांस्टेबल नसीर अहमद भट और एसजी कांस्टेबल शौकत अहमद 13वीं बटालियन के साथ श्री जफर महदी, उप पुलिस अधीक्षक (ऑप्स) पत्तन ने एक बहुत ही साहसिक कदम उठाया तथा कांटेदार झाड़ियों से होकर रंगते हुए लक्ष्य स्थल पर पहुंचे और क्षेत्र की घनी झाड़ियों में छिपे आतंकवादियों पर निशाना साधा। टीम लीडर के निर्देशों पर आतंकवादियों पर गोलियों की बौछार की गई। आतंकवादियों ने हमला दल पर गोलियां चलाई, लेकिन हमला दल ने हार नहीं मानी और डटा रहा तथा आतंकवादियों और हमला दल के बीच करीबी बंदूक की लड़ाई में 04 खतरनाक फिदायीन आतंकवादियों के मारे जाने तक कार्रवाई जारी रही। इस कार्रवाई के दौरान आतंकवादी के शरीर पर बंधी विस्फोटक सामग्री में भी बड़े धमाके के साथ विस्फोट हुआ। उक्त क्षेत्र की व्यापक रूप से तलाशी ली गई तथा आतंकवादियों की कोई और गतिविधि/मौजूदगी नहीं पाई गई और अंततः अभियान समाप्त कर दिया गया। मारे गए आतंकवादियों के पास से जो हथियार/गोलाबारुद बरामद किए गए, उनमें 04 एके राइफलें (01 क्षतिग्रस्त), 19 एके मैगजीन (07 क्षतिग्रस्त), 480 ए.के. राउंड (20 क्षतिग्रस्त), 01 यूबीजीएल (क्षतिग्रस्त), 02 कलाई घड़ियां (क्षतिग्रस्त) और 01 लाइफ जैकेट शामिल हैं। इस संबंध में, उरी- पुलिस स्टेशन में आरपीसी की धारा 307 और आयुध अधिनियम की धारा 7/27 के अंतर्गत मामला एफआईआर सं. 03/2018 दर्ज है। इस ऑपरेशन में, सर्व/श्री जफर महदी, उप पुलिस अधीक्षक, एजाज अहमद मलिक, असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर, नासिर अहमद भट, हेड कांस्टेबल और शौकत अली, एसजी कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 14.01.2018 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/24/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन

विशेष कार्य अधिकारी

सं. 86-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार प्रदान करते हैं:-

सर्व/श्री

01	मोहम्मद जैद	वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार
02	अल्ताफ अहमद शाह	हेड कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 05-03-2018 को लगभग 16:30 बजे, गुलाम मोहि-उद-दीन डार पुत्र श्री गुलाम अहमद डार निवासी मोहल्ला सुम्बल हटिवारा के घर में विदेशी आतंकवादी के मौजूद होने के बारे में विश्वसनीय सूचना प्राप्त हुई। ऑपरेशन की योजना बनाई गई और 50-आर

आर, 130 और 110 बटालियन सीआरपीएफ की सहायता से घेराबंदी की गई। दो संयुक्त तलाशी दलों का गठन किया गया, जिसमें से एक दल का नेतृत्व श्री मोहम्मद जैद-जेकेपीएस ने किया और दूसरे दल का नेतृत्व श्री परवेज अहमद-जेकेपीएस, एसडीपीओ अवंतीपोरा ने किया। घर के मालिक और उनके परिवार के सदस्यों से लक्षित घर से बाहर निकलने के लिए कहा गया। परिवार के सदस्य घर से बाहर निकलने ही वाले थे कि घर के अंदर छिपे आतंकवादी ने अंधाधुंध गोलियां चला दीं जिसकी वजह से सिविलियन घर में ही फंस गए। आत्म सुरक्षा में गोली चलाई गई। सार्वजनिक संबोधन प्रणाली के माध्यम से आतंकवादी को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया, जिससे उसने इंकार कर दिया। यह योजना बनाई गई कि सबसे पहले घर के परिवार के सदस्यों को बाहर निकाला जाए। श्री मोहम्मद जैद, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, अवंतीपोरा के नेतृत्व में पहला संयुक्त तलाशी दल, जिसमें एसआई अली मोहम्मद राथर, सं. 76/ए, हेड कांस्टेबल अल्ताफ अहमद शाह सं. 535/एडब्ल्यूटी, एसपीओ अख्तर अली सं. 163/एसपीओ, एसपीओ रईस अहमद सं. 102/एसपीओ, एसपीओ मोहम्मद अशरफ सं. 48/एसपीओ और गणेश कुमार सं. 275/एसपीओ शामिल थे, अपनी जान की परवाह किए बिना सावधानीपूर्वक उक्त घर की ओर बढ़ा, लेकिन घर के परिसर में घुसते ही उनका सामना भारी गोलीबारी से हुआ। यह ऑपरेशन का अत्यंत कठिन दौर था। श्री परवेज अहमद-जेकेपीएस के नेतृत्व वाले दूसरे तलाशी दल, जिसमें हेड कांस्टेबल बिलाल अहमद सं. 263/एडब्ल्यूटी, कांस्टेबल आमिर रसूल सं. 734/एडब्ल्यूटी, कांस्टेबल कमर अली सं. 688/एडब्ल्यूटी, कांस्टेबल परवेज अहमद सं. 784/ एडब्ल्यूटी, एसपीओ गु. मोहि-उद-दीन सं. 159/एडब्ल्यूटी, एसपीओ मुस्तफा सं. 182/एसपीओ, एसपीओ गु. मोहि-उद-दीन सं. 337/एसपीओ और एसपीओ मोहम्मद इरफान सं. 2343/एसपीओ शामिल थे, ने पहले संयुक्त तलाशी दल के सफलतापूर्वक उस कमरे का दरवाजा खोलने तक, जिसमें परिवार के सदस्य फंसे हुए थे, आतंकवादियों को गोलीबारी में उलझाए रखा। परिवार के सभी सदस्य भाग कर घर के बाहर आ गए। यह देखते हुए कि पहले संयुक्त तलाशी दल ने घर में प्रवेश कर लिया है, छिपे हुए आतंकवादी ने सीढ़ियों के पीछे से अंधाधुंध गोलाबारी शुरू कर दी, तत्पश्चात बचकर भागने के लिए उन पर ग्रेनेड भी फेंका। तथापि, सौभाग्यवश बिना किसी क्षति के ग्रेनेड में विस्फोट हुआ। इसी बीच, पहले दल ने गौर किया कि आतंकवादी के पास गोलियां समाप्त हो गई हैं और वह अपनी मैगजीन बदलने में लगा हुआ है और एक ही क्षण में एसआई अली मोहम्मद राथर सं. 76/ए (ईएक्सके-872402) ने आतंकवादी पर गोली चला दी, जिससे आतंकवादी को गंभीर चोट आई। तत्पश्चात पहले संयुक्त तलाशी दल ने आतंकवादी की ओर ग्रेनेड फेंके और ग्रेनेड स्प्लिटर्स से खुद को बचाने के लिए आतंकवादी ने खिड़की से छलांग लगा दी ताकि वह बचकर निकल सके, लेकिन ऊपर उल्लिखित अधिकारियों सहित श्री परवेज अहमद-जेकेपीएस के नेतृत्व वाले दूसरे संयुक्त तलाशी दल ने, जिसने पहले से ही पोजीशन ले रखी थी, पल भर में ही आतंकवादी की गतिविधियों को देख लिया और तुरंत कार्रवाई करते हुए आतंकवादी को मार गिराया। बाद में, मारे गए आतंकवादी की पहचान जेईएम गुट के मुफ्ती वकास निवासी पाकिस्तान के रूप में की गई (इस कार्यालय के दिनांक 06.06.2018 के पत्र सं. सीएस/91/2018/5108-09 के तहत ए++ श्रेणी के लिए अनुशंसित)। मारे गए आतंकवादी के कब्जे से बरामद किए गए हथियारों/गोलाबारूद में 01 चाइनीज पिस्तौल, 01 पिस्तौल मैगजीन, 04 पिस्तौल राउंड, 01 चाकू, आइईडी के लिए 01 बैटरी (छोटी) और 02 फ्यूज शामिल हैं। इस संबंध में, पुलिस स्टेशन-अवंतीपोरा में आरपीसी की धारा 307, आयुध अधिनियम की धारा 7/27 और विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम की धारा 16, 18, 19, 20 एवं 38 के अंतर्गत मामला एफआईआर सं. 34/218 दर्ज है।

इस ऑपरेशन में, सर्व/श्री मोहम्मद जैद, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक और अल्ताफ अहमद शाह, हेड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 05.03.2018 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/26/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 87-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	श्रीराम दिनकर अंबरकर, आईपीएस	पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	आशिक हुसैन टाक	उप पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार
03	इम्तियाज अहमद मीर	उप पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दक्षिण/मध्य कश्मीर में एलईटी संगठन के कमांडर अबु दुजाना के मारे जाने के बाद, सीमा-पार से संचालन कर रहे आकाओं ने पुलिस को मारने, पुलिस स्थापनाओं तथा अन्य महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों आदि पर ग्रेनेड फेंकने सहित सनसनीखेज हमले करने के उद्देश्य से एलईटी संगठन के कमांडर अबु इस्माइल को अपना अड़्डा श्रीनगर में शिफ्ट करने का निदेश दिया था ताकि ग्रीष्मकालीन राजधानी श्रीनगर में शांतिप्रिय लोगों के बीच आतंक पैदा किया जा सके। विभिन्न सहायक एजेंसियों से प्राप्त खुफिया जानकारी से भी इसकी पुष्टि हुई। इस संबंध में जिले के क्षेत्रीय स्रोतों को उसकी मौजूदगी के बारे में सूचना एकत्र करने के लिए सचेत किया गया। इसके अतिरिक्त श्रीनगर पुलिस घटक को भी जिले में किसी भी प्रतिकूल घटना को नाकाम करने के लिए सावधानीपूर्वक सभी संबंधित सूचनाओं का विश्लेषण करने के लिए कहा गया। दिनांक 14.09.2017 को श्रीनगर पुलिस को विश्वसनीय सूत्रों से इस आशय की सूचना प्राप्त हुई कि कुछ आतंकवादी हथियार/गोलाबारूद लेकर अरिबाग, बाघात-ई-कनीपोरा, जिला-बडगाम (पुलिस स्टेशन नौगाम श्रीनगर) के क्षेत्र में घूम रहे हैं। अरिबाग, बाघात-ई-कनीपोरा बडगाम में आतंकवादियों की मौजूदगी की सूचना मिलने के तुरंत बाद, पुलिस अधीक्षक शोपियां और पुलिस अधीक्षक पुलिस घटक श्रीनगर के संयुक्त पर्यवेक्षण में श्रीनगर जिले/शोपियां जिले के पुलिस दलों का गठन किया गया तथा आतंकवादियों के ठिकानों/अड़्डों का पता लगाने और तत्पश्चात बिना किसी सम्पाश्विक क्षति के उन्हें ढेर करने का निदेश दिया गया। शोपियां पुलिस और श्रीनगर पुलिस की टीम उस ठिकाने (गु. अहमद वानी पुत्र मोहम्मद अकबर वानी, माये मोहल्ला, अरिबाग, बी.के. पोरा), जिसमें ये आतंकवादी छिपे हुए थे, का पता लगाने में सफल हुई। ऑपरेशन शुरू करने से पहले, सीआरपीएफ की 29वीं बटालियन, सीआरपीएफ की 44वीं बटालियन और 50 आरआर की सहायता लेने का निर्णय लिया गया, ताकि क्षेत्र में किसी भी सम्पाश्विक क्षति से बचा जा सके और ऑपरेशन को अच्छी तरह से अंजाम दिया जा सके। पूरी नफरी को दो दलों में बांटा गया। पुलिस अधीक्षक शोपियां के नेतृत्व में शोपियां पुलिस और 29वीं बटालियन सीआरपीएफ तथा 50 आरआर की छोटी क्यूआरटी वाले पहले दल को लक्ष्य क्षेत्र की उत्तर-पश्चिमी और दक्षिण-पश्चिमी दिशा में घेराबंदी करने के लिए कहा गया। पुलिस अधीक्षक पुलिस घटक श्रीनगर के नेतृत्व में श्रीनगर पुलिस की टीम वाले दूसरे दल को लक्षित घर, जिसमें आतंकवादी छिपे हुए थे, की उत्तर पूर्वी और दक्षिण-पूर्व दिशा में घेराबंदी करने के लिए कहा गया और यह भी कहा गया कि यदि आवश्यक हो, तो अन्य सुरक्षा बलों के साथ पूर्ण तालमेल स्थापित करके घर में संयुक्त रूप से प्रवेश करें।

सभी दलों ने तैयार की गई योजना के अनुसार अपनी पोजिशन ले ली। श्री श्रीराम अंबरकर, आईपीएस, पुलिस अधीक्षक शोपियां और श्री जावेद इकबाल, पुलिस अधीक्षक, पुलिस घटक (पीसी) श्रीनगर, जो घेराबंदी दलों के इंचार्ज थे, ने आसपास के घरों में कैद किए गए लोगों को निकालने के लिए श्री अजहर राशिद, उप पुलिस अधीक्षक, पीसी श्रीनगर और श्री आशिक हुसैन टाक, उप पुलिस अधीक्षक शोपियां की कमान में श्रीनगर पुलिस की छोटी टीम बनाई। इन दलों ने बड़ी ही चतुराई और बहादुरी से आसपास के घरों में से लोगों को बाहर निकाला और किसी भी सम्पाश्विक क्षति से बचने के लिए उन्हें आसपास की सुरक्षित जगह पर ले जाया गया। सर्वप्रथम, दो छिपे हुए आतंकवादियों से आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया, जिसे उन्होंने सिरे से इनकार कर दिया। आत्मसमर्पण करने के बजाय वे ऑपरेशन दल पर गोलियां चलाने लगे। तत्काल, घर में प्रवेश करने की योजना बनाई गई और दो छोटे दलों का गठन किया गया। पहले दल में श्री इम्तियाज अहमद मीर, उप पुलिस अधीक्षक, पीसी, श्रीनगर, श्री अजहर राशिद, उप पुलिस अधीक्षक, पीसी श्रीनगर, इंस्पेक्टर शेख मंजूर अहमद सं. 7559/एनजीओ (ईएक्सके-002160), एसआई मोहम्मद अशरफ सं. एआरपी-115646, एसआई मुश्ताक अहमद सं. 788/एस, हेड कांस्टेबल बाबू राम सं. 280/एपी 6ठीं बटालियन, एसजी कांस्टेबल अली मोहम्मद सं. 300/आईआरपी द्वितीय बटालियन, कांस्टेबल मुश्ताक अहमद सं. 2649/एस, कांस्टेबल मो. इकबाल सं. 4518/एस, एसपीओ इरशाद अहमद सं. 118/एसपीओ, एसपीओ जावेद रजाक सं. 88/एसपीओ, एसपीओ रफीक अहमद 324/एसपीओ, एसपीओ मो. अशरफ 108/एसपीओ, एसपीओ फारूक अहमद 841/एसपीओ, एसपीओ सैयद जावेद अहमद 471/एसपीओ और श्री जावेद इकबाल, पुलिस अधीक्षक, पीसी श्रीनगर की कमान में 44 बटालियन सीआरपीएफ/50 आर.आर. की छोटी क्यूआरटी सहित श्रीनगर पुलिस की पर्याप्त नफरी शामिल थे और शोपियां जिला पुलिस के दूसरे दल में 29वीं बटा. सीआरपीएफ/50 आरआर की छोटी क्यूआरटी सहित श्री श्रीराम अंबरकर, आईपीएस, पुलिस अधीक्षक, शोपियां जिला की कमान में श्री आशिक हुसैन टाक, उप पुलिस अधीक्षक, शोपियां, एसजी कांस्टेबल जावेद अहमद 434/आईआर 7वीं बटालियन, एसजी कांस्टेबल मो. अशरफ 1242/एस, एसजी कांस्टेबल राकेश टिक् 806/एपी 7वीं बटालियन, कांस्टेबल मो. अशरफ 464/एसपीएन, कांस्टेबल अब्दुल अहद 1276/एस, कांस्टेबल विक्रम हिंगलू 49111 आरपी 19वीं बटालियन, एआरपी-086047, कांस्टेबल इरशाद अहमद 763/एसपीएन, ईएक्सके-127329, एसपीओ फिरोज अहमद 95/एसपीओ, आरिफ अहमद 229/एसपीओ, एसपीओ बिलाल अहमद 42/एसपीओ, एसपीओ जहांगीर अहमद 213/एसपीओ और एसपीओ परवेज अहमद 829/एसपीओ शोपियां जिला शामिल थे। पहले दल ने दक्षिण-पूर्व दिशा से घर में घुसने का निर्णय लिया और दूसरे दल ने दक्षिण-पश्चिम दिशा से लक्षित घर में घुसने का निर्णय लिया, लेकिन छिपे हुए आतंकवादियों ने खिड़की से ग्रेनेड फेंके, परंतु कोई क्षति नहीं हुई क्योंकि समीप जाने वाला दल चतुराई से आगे बढ़ रहा था। उसी समय श्री जावेद इकबाल, पुलिस अधीक्षक, पुलिस घटक, श्रीनगर अपनी टीम के साथ दक्षिण-पूर्व दिशा से खिड़की के पास पहुंचे जहां से आतंकवादी ग्रेनेड फेंक रहे थे और गोलियां चला रहे थे। आतंकवादी ने घर का मुख्य दरवाजा खोल दिया और घेराबंदी को तोड़ने के उद्देश्य से अंधाधुंध गोलियां चलाने लगा। इसी समय श्री जावेद इकबाल, पुलिस अधीक्षक, पीसी श्रीनगर, अजहर राशिद, उप पुलिस अधीक्षक पीसी श्रीनगर, इंस्पेक्टर मंजूर अहमद, सब इंस्पेक्टर मो. अशरफ और अन्य सुरक्षा बल कर्मियों ने लक्षित घर के पास पहुंचने के पश्चात अपनी जान की परवाह किए बिना प्रभावी

रूप से जवाबी कार्रवाई करते हुए गोलियां चलाई और एक आतंकवादी को ढेर कर दिया तथा दूसरा आतंकवादी खुद को बचाने के लिए उक्त लक्षित घर के दूसरे हिस्से में जाकर छिप गया और घेराबंदी को तोड़ने के लिए दूसरे दल पर दक्षिण-पश्चिम दिशा की खिड़की से अंधाधुंध गोलियां चलानी शुरू कर दीं, लेकिन श्री श्रीराम अंबरकर, आईपीएस, पुलिस अधीक्षक शोपियां और श्री आशिक हुसैन टाक, उप पुलिस अधीक्षक, शोपियां, कांस्टेबल विक्रम हिंगलू सं. 491/आईआरपी, 19वीं बटा. (एआरपी-086047), कांस्टेबल इरशाद अहमद 763/एसपीएन (ईएक्सके-127329) और अन्य सुरक्षा बल कर्मियों अर्थात् 29वीं बटा. सीआरपीएफ/50 आरआर वाले दल, जिसने पहले से ही दक्षिण-पश्चिम दिशा से घर के पास पोजिशन ले रखी थी, ने बहादुरी से जवाबी गोलीबारी की और इस गोलीबारी में उक्त आतंकवादी को भी मार गिराया। ऑपरेशन पूरा होने के बाद मारे गए दोनों आतंकवादियों की पहचान एलईटी संगठन के अबु इस्माइल निवासी पाक अधिकृत कश्मीर और अबु कासिम उर्फ छोटा कासिम उर्फ अली निवासी पाक अधिकृत कश्मीर के रूप में की गई। दोनों आतंकवादियों का सफाया एलईटी नेटवर्क के लिए बहुत बड़ा झटका है।

यह उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं है कि मारा गया उपर्युक्त आतंकवादी पिछले 03 वर्ष से दक्षिण/मध्य कश्मीर के क्षेत्रों में सक्रिय था और इन क्षेत्रों में कई विनाशक गतिविधियां तथा पुलिस कर्मियों/अन्य सुरक्षा बल कर्मियों/राजनीतिक कार्यकर्ताओं की हत्या के लिए जिम्मेदार था, इसके अलावा वह शोपियां जिले में हथियार छीनने की घटनाओं में भी शामिल था। यहां पर यह भी उल्लेखनीय है कि अबु इस्माइल नामक उक्त आतंकवादी खनबल चौक के पास बतेंगो में श्री अमरनाथ जी की यात्रा के वाहन पर हमले का मास्टर प्लानर और उसे कार्यान्वित करने वाला व्यक्ति भी था। इस हमले में 07 तीर्थयात्री और 32 अन्य लोग घायल हुए थे। उक्त आतंकवादी सीआरपीएफ के काफिले पर हमले और डीपीएस अथवाजन पंथाचौक, श्रीनगर में फिदायीन हमले का भी मास्टर प्लानर था। उक्त घटना में 02 विदेशी आतंकवादी मारे गए थे। मुठभेड़ स्थल से जो हथियार/गोलाबारूद बरामद किए गए, उनमें 02 एके 47 राइफलें, 04 एके मैगजीन, 36 एके राउंड, 01 यूबीजीएल, 02 यूबीजीएल ग्रेनेड, 01 कॉम्बैट पाउच, 01 काले रंग की सिविल जैकेट, 01 सिविल पी-कैप, 02 टूथपेस्ट, 01 सिलाई का धागा, 05 सेफ्टी पिन, 04 शेविंग ब्लेड, 01 एक्स सिग्नेचर पाउडर और 01 शेविंग मशीन शामिल हैं। इस संबंध में नौगाम- पुलिस स्टेशन, श्रीनगर में आयुध अधिनियम की धारा 7/25 के अंतर्गत मामला एफआईआर सं. 109/2017 दर्ज है।

इस ऑपरेशन में, सर्व/श्री श्रीराम दिनकर अंबरकर, आईपीएस, पुलिस अधीक्षक, आशिक हुसैन टाक, उप पुलिस अधीक्षक और इम्तियाज अहमद मीर, उप पुलिस अधीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 14.09.2017 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/27/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 88-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं:—

श्री रऊफ अहमद जरगर	एस.जी. कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
--------------------	------------------	------------------------

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 08.01.2018 को, एसओजी बडगाम को छद्म पुलिस स्टेशन, जिला-बडगाम के क्षेत्राधिकार में आने वाले गांव पतरीगाम में एक आतंकवादी की मौजूदगी के संबंध में एक विश्वसनीय सूचना प्राप्त हुई। तत्पश्चात, एसओजी बडगाम का एक दल और बी-कंपनी 53 आरआर का दल उस छिपे हुए आतंकवादी की तलाश में स्थल की ओर बढ़ा जो उक्त क्षेत्र में कथित रूप से आतंकवादी गतिविधियों के अंजाम देने की योजना बना रहा था। दल के संबंधित क्षेत्र के पास पहुंचते ही वहाँ घेराबंदी कर दी गई। ज्यों ही छिपे हुए आतंकवादी ने सुरक्षा बलों को देखा, उसने वहाँ से बच निकलने के लिए उन पर गोलियां चलानी शुरू कर दीं, लेकिन सुरक्षा बलों/एसओजी ने तत्परता से जवाबी कार्रवाई की, जिसके परिणामस्वरूप आतंकवादी भागने में विफल रहा। उस घर, जिसकी बाद में मंजूर अहमद गनी पुत्र गु. रसूल गनी निवासी पतरीगाम छद्म के घर के रूप में पहचान हुई, पर ध्यान केंद्रित किया गया और इसलिए वहाँ पर गोलीबारी शुरू हो गई। तत्परता से कार्रवाई करते हुए लक्षित घर के चारों ओर रणनीतिक रूप से घेराबंदी कड़ी कर दी गई। दोनों ओर से भारी गोलाबारी शुरू हो गई। तदनुसार, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, बडगाम श्री तेजेंद्र सिंह, आईपीएस के नेतृत्व में एसपी, बडगाम श्री मो. माजिद- केपीएस, उप पुलिस अधीक्षक (ऑप्स) छद्म, श्री गु. हसन शेख (केपीएस), उप पुलिस अधीक्षक (ऑप्स) बडगाम, श्री परूपकार सिंह (केपीएस) और उनका रक्षक

दल, ले. कर्नल श्री संदीप राणा के नेतृत्व में 53 आर.आर. का दल तथा सीओ श्री अनिल कुमार वृक्ष के नेतृत्व में 178 बटालियन सीआरपीएफ का दल भी उक्त स्थल पर पहुंच गया। इसलिए जवाबी कार्रवाई करने और आतंकवादी को ढेर करने के लिए पुलिस तथा अन्य सुरक्षा बल के 05 संयुक्त दल बनाए गए।

एसपी बडगाम श्री मो. माजिद मलिक- केपीएस के नेतृत्व में पहला दल, जिसकी सहायता एसआई रणबीर सिंह आई/सी क्यूआरटी, पीसी बडगाम कर रहे थे, जिसमें हेड कांस्टेबल अजय कुमार 307/एपी 13वीं बटालियन, एसजी कांस्टेबल रऊफ अहमद जरगर 582/बीडी (ईएक्सके-098644), कांस्टेबल तवसीफ अहमद 799/बीडी, एसपीओ शौकत अहमद बाबा 488/एसपीओ, फारूक अहमद डार 405/एसपीओ और एसपीओ बिलाल अहमद डार शामिल थे, को लक्षित घर की उत्तरी दिशा को कवर करने की जिम्मेदारी दी गई। उप पुलिस अधीक्षक पीसी छदूरा श्री गु. हसन शेख- केपीएस और एसडीपीओ चरारे शरीफ, श्री फारूख अहमद सं. ईएक्सजे- 905842 के संयुक्त नेतृत्व में दूसरा दल, जिसकी सहायता इंस्पेक्टर मो. रफी शाह एआरपी 986461, एसआई सुरजीत सिंह 407/जीआरपी-जे, हेड कांस्टेबल फिरदौस अहमद 56/एपी 13वीं बटालियन, कांस्टेबल समीर अहमद 1163/पीआई, एसपीओ अब्दुल लतीफ डार 346/एसपीओ, मो. अशरफ भट 83/एसपीओ तथा एसपीओ मो. अशरफ 577/एसपीओ कर रहे थे, को लक्षित घर के पिछले हिस्से को कवर करने की जिम्मेदारी दी गई। 53 आरआर के ले. कर्नल श्री संदीप राणा के नेतृत्व वाले तीसरे दल को लक्षित घर को पूर्वी दिशा से कवर करने की जिम्मेदारी दी गई। कमाण्डेंट-178 बटालियन, सीआरपीएफ श्री अनिल कुमार वृक्ष के नेतृत्व में चौथे दल को लक्षित घर को दक्षिणी दिशा से कवर करने की जिम्मेदारी दी गई। जब गोलीबारी शुरू हुई, तब लक्षित घर में छिपे आतंकवादी ने सुरक्षा बलों पर निशाना साधना शुरू कर दिया। लेकिन सभी चारों दलों ने रणनीतिक रूप से अपनी पोजिशन ले ली थी, जिसकी वजह से आतंकवादी उनमें से किसी को भी निशाना नहीं बना सका। पत्थरबाजी करने वाली भीड़ तैनात सुरक्षा बलों को हटाने तथा फंसे हुए आतंकवादी को भगाने के लिए रास्ता बनाने का भरसक प्रयास कर रही थी। कुछ समय बाद, आतंकवादी लक्षित घर से बाहर निकला और उसने घेराबंदी से बचकर निकलने के लिए एसपी बडगाम के नेतृत्व वाले दल पर ग्रेनेड फेंका। लेकिन अपना धैर्य बनाए रखते हुए, दल ने तत्काल आतंकवादी पर गोलियों की बौछार करते हुए इस प्रकार हमला किया कि आतंकवादी के पास लक्षित घर में वापस जाने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा। इसी बीच, आतंकवादी लक्षित घर के पीछे की ओर से बाहर आया और घेराबंदी से बचकर निकलने के लिए उस दिशा में तैनात सुरक्षा बलों पर अंधाधुंध गोलियां चलानी शुरू कर दी। उस दिशा में तैनात दल, जिसका नेतृत्व उप पुलिस अधीक्षक, पीसी छदूरा, एसडीपीओ चरारे शरीफ कर रहे थे और जिसमें इंस्पेक्टर मो. रफी शाह, एसआई सुरजीत सिंह, कांस्टेबल समीर अहमद, एसपीओ अब्दुल लतीफ डार, मो. अशरफ भट, एसपीओ मो. अशरफ शामिल थे, ने अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना साहस के साथ जवाबी कार्रवाई की और बिल्कुल नजदीक से आतंकवादी को मार गिराया। मारे गए आतंकवादी की बाद में एलईटी संगठन के अबु रहमान उर्फ रहमान भाल निवासी पाकिस्तान के रूप में पहचान हुई। मारे गए आतंकवादी के कब्जे से बरामद किए गए हथियारों/गोलाबारूद में 01 एके 56 राइफल, 03 एके 56 मैगजीन (2 क्षतिग्रस्त), 32 एके 56 राउंड और 01 पाउच शामिल हैं। इस संबंध में, दिनांक 08.01.2018 को छदूरा- पुलिस स्टेशन में आरपीसी की धारा 307 और आयुध अधिनियम की धारा 7/27 के अंतर्गत मामला एफआईआर सं. 03/2018 दर्ज की गई है।

इस ऑपरेशन में, श्री रऊफ अहमद जरगर, एसजी कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किया जाता है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 08.01.2018 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/29/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 89-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	गौहर राशिद मल्ल	सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	मुहसिन हुसैन	हेड कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 03.08.2017 को विश्वसनीय सूत्रों से करलू, कनलवान, गांव बिजबेहेरा, जिला अनंतनाग में आतंकवादी की मौजूदगी के संबंध में विशिष्ट सूचना प्राप्त हुई। इस सूचना के आधार पर, एसओजी अनंतनाग द्वारा 3 आरआर तथा 90/40 बटालियन सीआरपीएफ के साथ एक ऑपरेशन शुरू किया गया। श्री अफरात हुसैन, उप पुलिस अधीक्षक ऑप्स, अनंतनाग तथा श्री गु. मोहम्मद भट, उप पुलिस अधीक्षक, पीसी श्रीगुफवाड़ा के नेतृत्व में सब इंस्पेक्टर गौहर राशिद मल्ल एआरपी-109410, हेड कांस्टेबल मुद्दसर हुसैन 608/आईआरपी, एसजी. कांस्टेबल तनवीर अहमद 1873/ए, एसजी कांस्टेबल मुर्तजा नजीर 1353/ए, एसजी कांस्टेबल जाविद अहमद 609/ए, कांस्टेबल हमीदुल्लाह 1092/ए, एसपीओ सरमंद राशिद 579/एसपीओ, एसपीओ ओवैस अहमद 415/एसपीओ और एसपीओ बिलाल अहमद 312/एसपीओ के साथ दो टीमों को तलाशी के लिए भेजा गया। इस तलाशी अभियान के दौरान गांव में छिपे हुए आतंकवादी ने घेराबंदी तोड़ने के लिए तलाशी दल पर अंधाधुंध फायरिंग की। पुलिस दल ने अपनी बहुमूल्य जान की परवाह किए बिना उनकी गोलीबारी का जवाब दिया, जिसमें एचएम संगठन का आतंकवादी यावर अहमद

वागे (शेरगुजरी) उर्फ अलगाजी पुत्र निसार अहमद वागे निवासी शिरपोरा अनंतनाग मारा गया। इस संबंध में, पुलिस स्टेशन-बिजबेहेरा, जिला- अनंतनाग में आरपीसी की धारा 307 और आयुध अधिनियम की धारा 7/2 के अंतर्गत मामला एफआईआर सं. 113/2017 दर्ज है।

इस ऑपरेशन में, सर्व/श्री गौहर राशिद मल्ल, सब इंस्पेक्टर और मुद्दसर हुसैन, हेड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 03.08.2017 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/30/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 90-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार/ पुलिस पदक का द्वितीय बार प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	सैयद जहीर अब्बास जाफरी	उप पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार
02	अमजद हुसैन मीर	सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 30.04.2018 को, लगभग 0700 बजे तत्कालीन वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक पुलवामा को गांव दुबगाम पुलवामा में आतंकवादियों की मौजूदगी के बारे में सूचना प्राप्त हुई, जिन्हें अपने आकाओं द्वारा पुलवामा जिले में सुरक्षा स्थापनाओं पर आतंकवादी हमलों को अंजाम देने का कार्य सौंपा गया था। तदनुसार, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक पुलवामा ने अपर पुलिस अधीक्षक पुलवामा तथा उप पुलिस अधीक्षक (पीसी) पुलवामा सैयद जहीर अब्बास जाफरी (जेकेपीस-116057) को सूचित किया। उप पुलिस अधीक्षक ऑप्स पुलवामा ने उक्त सूचना को पुष्टा किया गया और इसे 44 आरआर, 182/183वीं बटालियन सीआरपीएफ के साथ साझा किया तथा लक्षित स्थान की संयुक्त रूप से घेराबंदी करने का निर्णय लिया गया। इसके पश्चात, उप पुलिस अधीक्षक ऑप्स पुलवामा ने पुलिस घटक पुलवामा की एसओजी पार्टी के साथ, जिसका नेतृत्व सब इंस्पेक्टर अमजद हुसैन मीर ईएक्सके-109479 और सीआरपीएफ की 182/183वीं बटालियन द्वारा किया जा रहा था, लक्षित स्थान की घेराबंदी करने के लिए गांव दुबगाम पुलवामा की ओर प्रस्थान किया। लक्षित स्थान पर पहुंचने के पश्चात सेना और सीआरपीएफ के साथ उप पुलिस अधीक्षक ऑप्स पुलवामा की कमान में पुलवामा पुलिस द्वारा संयुक्त रूप से घेराबंदी की गई।

यहां यह उल्लेखनीय है कि लक्षित क्षेत्र की घेराबंदी करते समय 44 आरआर के मेजर तथा उनके सहकर्मी घायल हो गए, क्योंकि आतंकवादियों ने मेजर के नेतृत्व वाली पार्टी तथा उनके सुरक्षा कर्मियों पर गोलीबारी कर दी थी। मेजर को तुरंत चिकित्सा सहायता

प्रदान की गई तथा उन्हें 44 आरआर बटालियन मुख्यालय में पहुंचाया गया। मेजर के घायल होने के बाद, पार्टी नेतृत्वविहीन हो गयी, ऐसी स्थिति में उप पुलिस अधीक्षक ऑप्स पुलवामा ने पार्टी का नेतृत्व करके स्थिति को संभाला। उप पुलिस अधीक्षक ऑप्स पुलवामा ने उस क्षेत्र को कवर किया, जहां मेजर घायल हुए थे और उस स्थान से उन्होंने जवाबी कार्रवाई की। बचाव दल को जवाबी कार्रवाई करते हुए देखकर आतंकवादियों ने उस स्थान के आस-पास कुछ ग्रेनेड फेंके जिसमें उप पुलिस अधीक्षक ऑप्स पुलवामा सहित विभिन्न पुलिस अधिकारी घायल हो गए। घायल होने के बावजूद, उप पुलिस अधीक्षक ऑप्स पुलवामा ने लड़ाई जारी रखी और उन्होंने सब इंस्पेक्टर अमजद हुसैन मीर को लक्षित स्थान के पिछले हिस्से को कवर करने और जवाबी हमला करने का निर्देश दिया और इस प्रकार उन्होंने आतंकवादियों के लिए घेराबंदी से बच निकलने का कोई रास्ता नहीं छोड़ा। आतंकवादियों ने पीछे की ओर से निकलकर भागने की कोशिश की, परंतु सब इंस्पेक्टर अमजद हुसैन मीर की अंधाधुंध गोलीबारी के कारण उन्हें लक्षित मकान में रहने के लिए मजबूर होना पड़ा। घेराबंदी को और कड़ा कर दिया गया तथा आतंकवादियों को काबू में करने के लिए गोलीबारी जारी रही। कुछ समय के पश्चात, जब आतंकवादियों की ओर से गोलीबारी रुक गई, तब उप पुलिस अधीक्षक ऑप्स पुलवामा ने सब इंस्पेक्टर अमजद हुसैन मीर की सहायता से अपनी जान की परवाह किए बिना उन सभी आम नागरिकों को बाहर निकाला, जो लक्षित मकान तथा उसके आसपास के घरों में फंसे हुए थे।

इस तथ्य के बावजूद कि भीषण गोलीबारी के दौरान उन आतंकवादियों ने सेना के एक अधिकारी और उनके साथी को गंभीर रूप से घायल कर दिया था और उप पुलिस अधीक्षक ऑप्स पुलवामा को अनेक चोटें लगी थीं, आतंकवादियों को वहां मौजूद पुलिस/सुरक्षा बलों के समक्ष आत्मसमर्पण करने का एक मौका दिया गया। उन्हें पीए प्रणाली के माध्यम से पुलिस के सामने आत्मसमर्पण करने के लिए आगाह किया गया, परंतु उन्होंने इस पेशकश को ठुकरा दिया तथा वे सुरक्षा बलों पर अंधाधुंध गोलीबारी करते रहे। आतंकवादियों का सफाया करने के लिए उप पुलिस अधीक्षक ऑप्स पुलवामा द्वारा तैयार की गई प्रमुख रणनीति का अनुसरण किया गया। सुरक्षा बलों सहित एसओजी पार्टी की 4 टीमों तैयार की गई, ताकि दो विपरीत दिशाओं से जवाबी कार्रवाई की जा सके और मुठभेड़ शीघ्र समाप्त हो सके। एक टीम का नेतृत्व उप पुलिस अधीक्षक ऑप्स पुलवामा और दूसरी टीम का नेतृत्व सब इंस्पेक्टर अमजद हुसैन मीर कर रहे थे। इसके अतिरिक्त, एसआई विक्रम कुंडल एआरपी-115589 के नेतृत्व में दो अन्य पार्टियों का गठन भी किया गया, ताकि घेराबंदी को मजबूत किया जा सके और पहली दो पार्टियों को चारों तरफ से कवर फायर प्रदान किया जा सके। अधिकारी/कर्मचारी अनिश्चितता की स्थिति में अपनी सूझ-बूझ के कारण सजग और सतर्क रहे और उन्होंने बहादुरी से परिस्थिति का सामना किया। समीप आ रही पार्टियों द्वारा चारों तरफ से जवाबी गोलीबारी के परिणामस्वरूप उन 02 आतंकवादियों का सफाया कर दिया गया, जिनकी पहचान बाद में समीर अहमद भट उर्फ टाइगर पुत्र मोहम्मद मकबूल भट निवासी द्रुबगाम पुलवामा तथा आकिब मुश्ताक खान पुत्र मुश्ताक अहमद खान निवासी राजपोरा पुलवामा के रूप में की गई। इस संबंध में, राजपोरा- पुलिस स्टेशन में आयुध अधिनियम की धारा 307, 7/27 के अंतर्गत मामला एफआईआर सं. 35/2018 दर्ज है।

इस ऑपरेशन में, सर्व/श्री सैयद जहीर अब्बास जाफरी, उप पुलिस अधीक्षक और अमजद हुसैन मीर, सब इंस्पेक्टर ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 30.04.2018 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/31/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन

विशेष कार्य अधिकारी

सं. 91-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	नरेश सिंह	अपर पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	विवेक शेखर	उप पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक
03	मोहन लाल	उप पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक
04	सुरेंद्र पाल सिंह	इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक
05	अश्वनी कुमार	इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 12.09.2018 को, लगभग 0715 बजे, जम्मू की ओर से आ रहे जेके03एफ/1476 पंजीकरण संख्या वाले एक ट्रक, को सुकेतर के पास पुलिस नाके पर रुकने का संकेत दिया गया, जो पुलिस स्टेशन झज्जर कोटली के क्षेत्राधिकार में आता है। उक्त ट्रक वहां नहीं रुका तथा तेजी से उधमपुर की ओर चला गया। इस पर, पुलिस पार्टी ने वाहन का पीछा किया और उन्होंने पाया कि वह वाहन झज्जर कोटली ब्रिज के समीप साई कैफेरिया के पास रुका हुआ है।

जब पुलिस पार्टी ने वाहन को खोजना आरंभ किया, तो ट्रक के अंदर छिपे हुए आतंकवादियों ने पुलिस कार्मिकों पर गोलीबारी की और वे बचकर जंगल में भाग गए। वे वहां एक एके-56, 02 पिस्टल, 07 मैगजीन, 04 ग्रेनेड और अन्य वस्तुएं छोड़ गए। उन्होंने बचकर भागते हुए दो आम नागरिकों अर्थात् गणेश दास और ओम प्रकाश पर भी गोलियां चलाईं।

पुलिस ने ट्रक ड्राइवर अर्थात् रियाज अहमद पुत्र गुलाम अहमद नागरू निवासी हंजन बाला पुलवामा और उसके साथी अर्थात् मोहम्मद इकबाल राथर पुत्र अब्दुल कालिक निवासी बडगाम को हिरासत में ले लिया। पूछताछ करने पर उन्होंने बताया कि वे 03 पाकिस्तानी आतंकवादियों को जम्मू और श्रीनगर से लेकर आ रहे थे, जो अब भागकर जंगल में चले गए हैं। खतरे को भांपकर, रियासी और उधमपुर जिलों की पुलिस को भी सतर्क कर दिया गया तथा एक सघन तलाशी अभियान आरंभ किया गया। सीआरपीएफ और सेना से भी इस ऑपरेशन में शामिल होने का अनुरोध किया गया। इस संबंध में, झज्जर कोटली- पुलिस स्टेशन में आईपीसी की धारा 307/120-ख/121/122/123, आयुध अधिनियम की धारा 4/25/26/27 और विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम की धारा 16/18 के तहत एफआईआर सं. 89/2018 दर्ज की गई थी तथा जांच की कार्यवाही शुरू की गई।

अगले दिन दिनांक 13.09.2018 को पुलिस अधीक्षक कटरा तथा उनकी टीम के साथ वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक रियासी, एसएमवीडी विश्वविद्यालय के निकट स्थित क्षेत्र में तलाशी करने के लिए गए। इस बीच एसडीपीओ कटरा के तहत कार्य कर रही टीम ककरयाल के धीरती गांव के समीप झज्जर नाला के पास गई। विश्वविद्यालय क्षेत्र में तलाशी करते समय लगभग 11:00 बजे वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक रियासी को एसडीपीओ कटरा की टीम, जो धीरती गांव के पास झज्जर नाला क्षेत्र में तलाशी कर रही थी, से फोन आया कि उन्हें धीरती के एक गांव वाले का फोन आया है कि किसी राजकुमार, पुत्र श्री मूर्ति राम निवासी गांव धीरती, ककरयाल कटरा के घर में आतंकवादी मौजूद हैं। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक रियासी ने उन्हें तुरंत उस स्थान पर पहुंचने का निर्देश दिया तथा रियासी पुलिस ने इस घटनाक्रम के बारे में वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों को सूचित किया। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक रियासी, एसपी कटरा के साथ तुरंत सीओ सीआरपीएफ 6ठीं बटालियन तथा सीओ सीआरपीएफ 187वीं बटालियन एवं उनके सैन्य दस्ते के साथ वहां पहुंचे और यह पाया कि एसडीपीओ कटरा, एसएचओ कटरा, एसएचओ रियासी की पूरी टीम तथा सीआरपीएफ की टीम भी झज्जर नाले को पार करती हुई उस स्थान पर पहुंच चुकी है। उस स्थान के निकट पहुंचने पर यह पाया गया कि भीड़ एकत्र होने लगी है, अतः तत्काल लोगों को उस घर के आसपास से हटाकर सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया, ताकि किसी भी प्रकार की सम्पाश्विक क्षति से बचा जा सके। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक रियासी ने वहां मौजूद पुलिस अधिकारियों की दो टीमें बनाईं, अर्थात् पुलिस अधीक्षक कटरा और एसएचओ कटरा को एक टीम में तथा एसडीपीओ कटरा और एसएचओ रियासी को दूसरी टीम में शामिल किया गया तथा उन्हें सावधानीपूर्वक राजकुमार के घर तक पहुंचने और जमीनी स्थिति का आकलन करने के लिए कहा गया। ये टीमें घने मक्के के खेतों से होते हुए राजकुमार के घर की ओर गईं। यह घर एक एकल आयताकार कमरा था, जिसकी छत टिन की थी और मकान का ढांचा ईंटों से बना था। दोनों टीमों ने लक्षित घर को दोनों तरफ से घेर लिया क्योंकि वहां की स्थलाकृति और आसपास मक्के के खेत होने के कारण, घर को चारों तरफ से घेरना संभव नहीं था तथा क्रॉस फायर होने की भी संभावना थी, जिससे स्वयं को क्षति पहुंच सकती थी। घर की दीवार में एक छेद था और घर के अंदर आतंकवादियों की मौजूदगी को सुनिश्चित करने के लिए पुलिस की तलाशी पार्टी ने सावधानीपूर्वक उस छेद से अंदर झांका तथा यह सुनिश्चित किया कि घर के अंदर किसी को भी बंधक नहीं बनाया गया है। उन्होंने 03 आतंकवादियों को एहतियात के साथ कमरे के अंदर बैठे देखा, जो सतर्क हो गए तथा पुलिस की मौजूदगी को भांपकर उन्होंने उनके ऊपर अंधाधुंध गोलीबारी आरंभ कर दी। पुलिस पार्टी ने रणनीतिक पोजीशन संभाल ली और गोलीबारी का जवाब दिया। इस बीच, सीआरपीएफ की पार्टी ने भी लगभग 50/70 मीटर की दूरी से सामने से घर को घेर लिया था। आतंकवादियों तथा 02 पुलिस दलों और सीआरपीएफ की टीम के बीच कुछ समय तक गोलीबारी जारी रही। अचानक आतंकवादियों ने पुलिस और सीआरपीएफ की पार्टी पर यूबीजीएल ग्रेनेड से हमला शुरू कर दिया। इस यूबीजीएल फायरिंग में, असिस्टेंट कमांडेंट सीआरपीएफ 187वीं बटालियन अर्थात् श्री मनोज कुमार यादव, उप कमांडेंट सीआरपीएफ, 6ठीं बटालियन, श्री हर्षपाल सिंह, 187वीं सीआरपीएफ बटालियन के कांस्टेबल अभय सिंह, 6ठीं सीआरपीएफ बटालियन के पंचम सिंह तथा 06ठीं सीआरपीएफ बटालियन के कांस्टेबल जाकिर हुसैन सहित 05 सीआरपीएफ कार्मिक सीआरपीएफ की टीम में शामिल थे और वे इस गोलीबारी में घायल हो गए। इस सीआरपीएफ पार्टी को कुछ समय के लिए मुठभेड़ स्थल से पीछे हटना पड़ा ताकि वे अपने घायल अधिकारियों और जवानों को समय पर चिकित्सा उपचार उपलब्ध करा सकें।

इस बीच, राजकुमार के घर के आसपास, 02 पुलिस पार्टियों ने 03 छिपे हुए आतंकवादियों के साथ गोलीबारी जारी रखी, जो पुलिस पार्टियां इस समय गोलीबारी कर रही थीं, उन्हें इस बात का पूरा अंदेश था कि 03 छिपे हुए आतंकवादी गोलीबारी से बचकर भागने के लिए घने मक्के के खेतों तथा घनी वनस्पतियों/जंगल का फायदा उठा सकते हैं और तदनुसार 02 पुलिस टीमों ने 03 आतंकवादियों को

मुठभेड़ स्थल से बच कर भागने से रोकने के लिए रणनीतिक स्थानों का चयन किया। आतंकवादी मुठभेड़ स्थल को छोड़कर भागने के लिए उतावले थे तथा वे जंगल/मक्के के खेत में सुरक्षित पहुंचना चाहते थे, इसलिए उन्होंने भागने का एक आखिरी प्रयास किया। भागते हुए, उन्होंने लगभग 1135 बजे पुलिस पर गोलीबारी जारी रखी, उसी समय 02 पुलिस टीमों, जिसमें नरेश सिंह, पुलिस अधीक्षक कटरा के साथ इंस्पेक्टर सुरेंद्र पाल सिंह एसएचओ कटरा तथा उनकी टीम और विवेक शेखर एसडीपीओ कटरा के साथ इंस्पेक्टर अश्वनी शर्मा एसएचओ रियासी और उनकी टीम हमला दल के रूप में शामिल थीं, ने तुरंत प्रतिक्रिया की तथा मौके पर ही 02 आतंकवादियों को मार गिराया और तीसरे आतंकवादी को बुरी तरह से घायल कर दिया, जो घने मक्के के खेतों में भागने में सफल हो गया। इस गोलीबारी में, 02 पुलिस कार्मिक अर्थात् एसजी कांस्टेबल मोहम्मद इकबाल सं. 265/आरएसआई तथा कांस्टेबल यशपाल सिंह सं. 923/आरएसआई आतंकवादियों द्वारा की गई गोलीबारी और ग्रेनेड के स्प्लिन्टर्स से घायल हो गए। कांस्टेबल यशपाल सिंह (एसडीपीओ कटरा के पीएसओ) बुरी तरह से घायल हो गए तथा एसडीपीओ कटरा विवेक शेखर और एसएचओ रियासी अश्वनी शर्मा बहादुरी से गोलियों का सामना करते हुए सावधानीपूर्वक उनकी ओर बढ़े तथा अपने बीच में उन्हें सहारा देकर उन्हें वहां से बाहर निकाला। जब तीसरा घायल आतंकवादी भागने की कोशिश कर रहा था, तब उसे एसडीपीओ नगरोटा श्री मोहन शर्मा तथा उनकी टीम द्वारा डाले गए बाहरी घेरे का सामना करना पड़ा और उसने उन पर गोलीबारी की, जिसके परिणामस्वरूप एसडीपीओ नगरोटा घायल हो गए। इस पार्टी द्वारा किए गए जवाबी हमले के कारण आतंकवादी घेरे के अंदर वापस आने के लिए बाध्य हो गया। वह अपने छिपने की जगह से उसका पीछा कर रही टीम पर गोलीबारी करता रहा। इस गोलीबारी के दौरान, कांस्टेबल भानु प्रताप बुरी तरह से घायल हो गए और वे गोलीबारी के क्षेत्र में खून से लथपथ पड़े थे। स्थिति की गंभीरता को भांपते हुए, पुलिस अधीक्षक कटरा नरेश सिंह तथा एसएचओ कटरा सुरेंद्र पाल सिंह अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना बहादुरी से गोलियों का सामना करते हुए और रेंगते हुए उनके पास पहुंचे तथा उन्हें सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया। इन अधिकारियों द्वारा समय पर की गई कार्रवाई उनकी जान बचाने में सहायक साबित हुई।

इसके बाद, बचे हुए आतंकवादी ने अपनी रणनीति बदलते हुए गोलीबारी बंद कर दी। आसपास के मक्के के खेतों तथा घनी वनस्पतियों और क्षेत्र की ऊबड़-खाबड़ स्थलाकृति के कारण उसकी लोकेशन पर ध्यान केंद्रित करना मुश्किल हो गया। तीसरे घायल आतंकवादी को बाहर निकालने के लिए, पैरा 4/9 कमांडो (आर्मी) की टीम, सीआरपीएफ, एसओजी राजौरी, जिसका नेतृत्व इंस्पेक्टर मोहम्मद अमीन कर रहे थे तथा रियासी पुलिस पार्टी, जिसमें सब इंस्पेक्टर इरफान, सब इंस्पेक्टर सुमन मनहास तथा सब इंस्पेक्टर प्रदीप सिंह जवानों के साथ शामिल थे, ने मौजूदा बलों को स्थल पर एकजुट करके सुदृढ़ किया तथा घायल आतंकवादी की खोज शुरू कर दी। शाम को लगभग 4.00 बजे, जब तीसरे आतंकवादी ने पार्टियों को अपने छिपने की जगह तक पहुंचते हुए देखा, तब उसने उन पर गोलीबारी शुरू कर दी। इस गोलीबारी के दौरान, 01 अधिकारी तथा सेना के 02 जवान अर्थात् मेजर दीपक उपाध्याय तथा पैरा 4/9 कमांडो के सीटी राजेन्द्र सिंह और सुधीर सिंह घायल हो गए। अन्ततः तीनों आतंकवादियों को मार गिराया गया तथा मुठभेड़ स्थल से उनके शव बरामद किए गए और उनके कब्जे से हथियार और गोलाबारूद को भी अपनी अभिरक्षा में ले लिया गया।

यह स्पष्ट और लगातार खतरे के बीच उच्चकोटि की पेशेवरता और साहस का प्रदर्शन था, जिसमें पुलिस, सीआरपीएफ तथा सेना की संयुक्त टीमों एक दिन के लंबे ऑपरेशन में किसी सम्पाश्विक क्षति के बिना भारी मात्रा में हथियारों से लैस 03 पाकिस्तानी आतंकवादियों को मार गिराने में कामयाब हुई।

तदनुसार, इस संबंध में कटरा- पुलिस स्टेशन में आरपीसी की धारा 307/121/122/123/1208, आयुध अधिनियम की धारा 7/25/26/27 और विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम की धारा 16/18/38 के अंतर्गत मामला एफआईआर सं. 191/2018 दर्ज है।

इस पूरे ऑपरेशन को रत्ती भर सम्पाश्विक क्षति के बिना संचालित किया गया, क्योंकि इसमें ऑपरेशन टीम ने अभूतपूर्व कमान तथा नियंत्रण के साथ-साथ अति दुर्लभ बहादुरी और अत्यधिक कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया। पुलिस टीम के सदस्यों, श्री नरेश सिंह वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक कटरा, श्री विवेक शेखर एसडीपीओ कटरा, श्री मोहन लाल एसडीपीओ नगरोटा, इंस्पेक्टर सुरेंद्र पाल सिंह, एसएचओ पुलिस स्टेशन कटरा तथा इंस्पेक्टर अश्वनी कुमार एसएचओ पुलिस स्टेशन रियासी ने पवित्र शहर कटरा एवं श्री माता वैष्णो देवी जी श्राइन की आतंकवादी हमले के अत्यधिक खतरे से रक्षा की। इसके अतिरिक्त, श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय तथा नारायण सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल भी घटना स्थल के बहुत करीब थे और यदि आतंकवादी वहां पहुंच जाते, तो वे उसे तहस-नहस कर देते तथा वे वहां की आम जनता/स्टाफ/विद्यार्थियों को भी बंधक बनाकर अपनी बात मनवा सकते थे।

इस ऑपरेशन में, सर्वश्री नरेश सिंह, अपर पुलिस अधीक्षक, विवेक शेखर, उप पुलिस अधीक्षक, मोहन लाल, उप पुलिस अधीक्षक, सुरेंद्र पाल सिंह, इंस्पेक्टर और अश्वनी कुमार, इंस्पेक्टर ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 13.09.2018 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/32/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 92-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं:—

श्री मंजूर हुसैन पीर	हेड कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
----------------------	---------------	------------------------

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 24.03.2018 को, बडगाम/श्रीनगर पुलिस को बीरवाह पुलिस स्टेशन के क्षेत्राधिकार में चक-ई मार्ग अरिजल के निवासी किसी मकसूद अहमद खान उर्फ जुगनू पुत्र मोहम्मद मकबूल खान के घर में कुछ सशस्त्र आतंकवादियों की मौजूदगी के संबंध में विश्वसनीय सूत्रों से सूचना प्राप्त हुई। इस सूचना के आधार पर, बडगाम पुलिस, श्रीनगर पुलिस, 53 आरआर, 178 सीआरपीएफ और 0/43 सीआरपीएफ द्वारा संयुक्त ऑपरेशन शुरू किया गया। संयुक्त टीमों ने लगभग 2330 बजे इस क्षेत्र की घेराबंदी कर दी।

पहली टीम, जिसका नेतृत्व अपर पुलिस अधीक्षक बडगाम श्री मोहम्मद माजिद मलिक-केपीएस कर रहे थे और जिनकी मदद उप पुलिस अधीक्षक पीसी छदूरा श्री आकाश कोहली केपीएस -155781, सब इंस्पेक्टर, रबीन्द्र सिंह, आई/सी, क्यूआरटी पीसी बडगाम, हेड कांस्टेबल लखबीर सिंह सं. 1446/एस, एसजी कांस्टेबल नजीर अहमद सं. 502/बीडी, कांस्टेबल नवाज अहमद सं. 1274/बीडी, एसपीओ अल्ताफ हुसैन संख्या 99/एसपीओ, एसपीओ बशीर अहमद संख्या 537/एसपीओ और एसपीओ फारूक अहमद संख्या 507/एसपीओ कर रहे थे, को लक्षित घर के उत्तरी भाग को कवर करने की जिम्मेदारी दी गई थी। दूसरी टीम, जिसका नेतृत्व उप पुलिस अधीक्षक बडगाम श्री परूपकार सिंह कर रहे थे तथा जिनकी मदद सब इंस्पेक्टर राकेश पंडिता संख्या 252/पीएलईसी, मंजूर हुसैन संख्या 961/एस4ईएक्सके-003349, हेड कांस्टेबल शबीर अहमद संख्या 1506/एस, एसजी कांस्टेबल जावेद अहमद संख्या 220/एस, एसपीओ जावेद अहमद संख्या 63/एसपीओ और शौकत अहमद संख्या 901/एसपीओ कर रहे थे, को घर के प्रवेश द्वार के निकट उसके सामने के हिस्से को कवर करने की जिम्मेदारी दी गई थी। सेना के दल की तीसरी टीम, जिसका नेतृत्व मेजर अभिनव संख्या आईओ-77623 के कर रहे थे, को लक्षित घर के पूर्वी भाग को कवर करने की जिम्मेदारी दी गई थी। सीआरपीएफ की चौथी टीम, जिसका नेतृत्व 0/43 सीआरपीएफ के कार्मिकों के साथ सीआरपीएफ की 178वीं बटालियन के 2आई/सी श्री जेड.ए. खान कर रहे थे, को लक्षित घर के दक्षिणी भाग को कवर करने की जिम्मेदारी दी गई थी। इस ऑपरेशन का समन्वय वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक बडगाम श्री तेजिंदर सिंह (आईपीएस), सीओ 53 आरआर कर्नल अनूप नय्यर और अपर पुलिस अधीक्षक बडगाम श्री मोहम्मद माजिद मलिक (केपीएस) द्वारा किया गया। यह सुनिश्चित करने के बाद कि क्षेत्र की यथोचित रूप से घेराबंदी कर ली गई है, एक सर्च टीम का गठन किया गया। सर्च टीम में उप पुलिस अधीक्षक पीसी छदूरा श्री आकाश कोहली केपीएस-155781, 53 आरआर के मेजर अभिषेक तथा बडगाम/श्रीनगर पुलिस और 53 आरआर के सैन्य दस्ते शामिल थे। सर्च शुरू करने से पहले, यह सुनिश्चित किया गया कि लक्षित घर के सभी निवासियों को घर से सुरक्षित रूप से बाहर निकाल लिया जाए। जैसे ही सर्च टीम घर की तरफ आगे बढ़ी, अंदर छिपे हुए आतंकवादी बाहर आ गए और उन्होंने सभी दिशाओं में अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। सुरक्षा बलों ने वहीं पर कवर लेते हुए प्रभावशाली जवाबी कार्रवाई की और वहां पर हुई गोलीबारी के दौरान लश्कर-ए-तैयबा संगठन का आतंकवादी नामतः शफाकत हुसैन वानी पुत्र मोहम्मद अकबर वानी निवासी वागो, ओरा, तहसील पट्टन जिला-बारामूला (दिनांक 15.11.2017 के पृष्ठांकन सं. ओपीएस/आरडब्ल्यूडी/क्राइटेरिया/2017/1229-60 के अंतर्गत पीएचक्यू के आदेश के तहत जारी श्रेणी से संबंधित सूची में क्र. सं. 54 पर सूचीबद्ध ए श्रेणी का आतंकवादी) मारा गया। मारे गए आतंकवादियों के पास से बरामद किए गए हथियारों/गोलाबारूद में 01 राइफल, मैगजीन, एके राइफल के 102 राउंड, 01 पाउच, एंटीना के साथ 01 वायरलेस सेट, 01 टार्च, 01 पुल शू, 03 मोबाइल फोन, 01 मोबाइल बैटरी, 01 मोबाइल चार्जर, 01 आधार कार्ड, 01 तकिया कवर, 01 फिरिन और 31,570/- रु. की भारतीय करेंसी शामिल हैं। इस संबंध में, बीरवाह-पुलिस स्टेशन में आरपीसी की धारा 307 और आयुध अधिनियम की धारा 7/27 के अंतर्गत मामला एफआईआर सं. 37/18 दर्ज की गई है।

इस ऑपरेशन में, श्री मंजूर हुसैन पीर, हेड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किया जाता है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 24.03.2018 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/33/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 93-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	डॉ. रुहेल मिर्चा	उप पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	राजा माजिद बट	उप पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक
03	एजाज अहमद मलिक	असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक
04	इशाक अहमद मोगरे	एसजी कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 23 सितंबर 2017 को, बारामूला पुलिस को सलामाबाद उरी के कलगी क्षेत्र के आस-पास भारी सशस्त्र आतंकवादियों (फिदायीन समूह) की गतिविधियों के संबंध में विशेष सूचना प्राप्त हुई, जो उस क्षेत्र में सेना के संगठन पर हमला करने की योजना बना रहे थे। इस सूचना पर कार्रवाई करते हुए, 23 सितंबर, 2017 की रात्रि काल में उस क्षेत्र में पुलिस, सेना और सीआरपीएफ की 53वीं बटालियन द्वारा एक संयुक्त घेराबंदी और तलाशी अभियान शुरू किया गया। भोर में उप पुलिस अधीक्षक राजा माजीद, उप पुलिस अधीक्षक रुहेल मिर्चा और उप पुलिस अधीक्षक निसार अहमद के नेतृत्व में तीन अलग-अलग तलाशी दलों का गठन किया गया, जिनकी सहायता इंस्पेक्टर तबरेज अहमद, सब इंस्पेक्टर खालिद फैयाज 109446, असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर एजाज अहमद 79/बी, एसजी कांस्टेबल इशाक अहमद 427/बी, एसजी कांस्टेबल जावेद अहमद 541/बी, एसजी कांस्टेबल गणेश दास 725/आईआर, एसजी कांस्टेबल गु. मुस्तफा 66/एडब्ल्यूपी, एसजी कांस्टेबल मुमताज अहमद 30/एडब्ल्यूपी, फिरदौस अहमद 833/बी, एसजी कांस्टेबल मुख्तार अहमद 432/बी, एसजी कांस्टेबल अमरेज खान 890/बी, एसजी कांस्टेबल मोहम्मद यूनिस 1597/बी, एसजी कांस्टेबल फिरदौस अहमद 716/एडब्ल्यूपी, एसजी कांस्टेबल गु. हसन 865/एडब्ल्यूपी, कांस्टेबल शाहनवाज अहमद 1188/बी, कांस्टेबल मुजफ्फर अहमद 1283/बी, कांस्टेबल शबीर अहमद 456/बी, कांस्टेबल आशिक हुसैन 1431/बी, कांस्टेबल एजाज अहमद 1287/बी, कांस्टेबल फिरदौस अहमद 1105/बी, कांस्टेबल फैयाज अहमद 1021/बी, एसपीओ इरफात हुसैन 561/एसपीओ, एसपीओ फैयाज अहमद 1297/एसपीओ, एसपीओ अब्दुल खालिक 1101/एसपीओ, एसपीओ अयाज अहमद 189/एसपीओ, एसपीओ आमीर हुसैन 680/एसपीओ, एसपीओ परवेज अहमद 1121/एसपीओ, एसपीओ शबीर अहमद 990/एसपीओ, एसपीओ मोहम्मद अशरफ 185/एसपीओ, एसपीओ शफी अहमद 1492/एसपीओ, एसपीओ गुलाम रसूल 1314/एसपीओ, एसपीओ बिलाल अहमद 530/एसपीओ, एसपीओ तस्वीर हुसैन 166/एसपीओ, एसपीओ मोहम्मद अल्ताफ 215/एसपीओ, एसपीओ श्री शेर सिंह 261/एसपीओ, एसपीओ फैयाज अहमद 1080/एसपीओ, एसपीओ शबीर अहमद 340/एसपीओ (अवंतीपोरा), एसपीओ विपन कुमार 1445/एसपीओ, एसपीओ गु. नबी 111/एसपीओ, एसपीओ मोहम्मद शफी 1935/एसपीओ, एसपीओ तनवीर अहमद 516/एसपीओ, एसपीओ जाविद अहमद 42/एसपीओ (एसपीआर), एसपीओ सफीर अहमद 323/एसपीओ, एसपीओ अब. रहीम 1171/एसपीओ, एसपीओ अब्दुल राशिद 1799/एसपीओ, एसपीओ आसिफ अहमद 273/एसपीओ (एसपीआर) कर रहे थे और इन दलों का पर्यवेक्षण बारामूला के अपर पुलिस अधीक्षक श्री शफाकत हुसैन केपीएस-017356 कर रहे थे। तलाशी के दौरान, उप पुलिस अधीक्षक श्री राजा माजिद के नेतृत्व वाले ऑपरेशन दल को यह पता चला कि फिदायीन आतंकवादियों में से एक आतंकवादी ने एक घर में शरण ले रखी है और उनके परिवार के सदस्यों को बंधक बना लिया है। ऑपरेशन दल ने पेशेवर कौशल का प्रदर्शन करते हुए घर में प्रवेश किया और अपने बहुमूल्य जीवन की परवाह किए बिना बड़ी ही बहादुरी के साथ इस बंधक स्थिति को संभाला, जिसके परिणामस्वरूप किसी सम्पाश्विक क्षति के बिना आतंकवादी का सफाया कर दिया गया और साथ ही परिवार के सदस्यों को भी छुड़ा लिया गया। दिनांक 24.09.2017 को, जब तलाशी चल रही थी, तब श्री शफाकत हुसैन अपर पुलिस अधीक्षक बारामूला को पता चला कि एक आतंकवादी ने पास की मस्जिद में शरण ले रखी है। मस्जिद की पवित्रता और इससे जुड़ी कानून और व्यवस्था की संवेदनशीलता को ध्यान में रखते हुए, अपर पुलिस अधीक्षक बारामूला श्री शफाकत हुसैन के नेतृत्व में पुलिस/सीआरपीएफ की एक क्रैक टीम, जिसमें निसार अहमद उप पुलिस अधीक्षक, एसजी कांस्टेबल मुख्तार अहमद 432/बी और एसजी कांस्टेबल अमरेज खान 890/बी शामिल थे, रेंगते हुए आगे बढ़ी और मस्जिद में प्रवेश किया तथा मस्जिद को कोई नुकसान पहुँचाए बिना आतंकवादी को ढेर कर दिया।

मस्जिद से आतंकवादी को ढेर करने के बाद, तलाशी दल ने पास के घर में अन्य आतंकवादियों की मौजूदगी को भांप लिया, इसलिए अपर पुलिस अधीक्षक बारामूला शफाकत हुसैन अपने दल के साथ आगे बढ़े और गोलाबारी शुरू कर दी तथा 02 विदेशी फिदायीन आतंकवादियों का सफाया कर दिया और यह ऑपरेशन दिनांक 25.09.2017 को समाप्त हो गया। इस संबंध में, पुलिस स्टेशन- उरी में आईपीसी की धारा 307, आयुध अधिनियम की धारा 7/27 और विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम की धारा 15 एवं 18 के अंतर्गत वर्ष 2017 की मामला एफआईआर सं. 70 दर्ज है।

इस ऑपरेशन में, सर्व/श्री डॉ. रुहेल मिर्चा, उप पुलिस अधीक्षक, राजा माजिद बट, उप पुलिस अधीक्षक, एजाज अहमद मलिक, असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर और इशाक अहमद मोगरे, एसजी कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 23.09.2017 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/34/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 94-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	एजाज अहमद जरगर	पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार
02	सतिंदर सिंह	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 10/11.09.2017 को खुडवानी गांव में आतंकवादियों के समूह के बारे में विशेष सूचना के आधार पर कार्यवाई करते हुए, कुलगाम पुलिस ने वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक कुलगाम के नेतृत्व में 1 आरआर और सीआरपीएफ की 18वीं बटालियन के सैन्य दस्ते के साथ घेराबंदी की। तथापि, गांव में छिपे हुए आतंकवादियों ने भागने की कोशिश की और एक स्कूल में शरण ले ली। तदनुसार, घेरे के दायरे को बढ़ा दिया गया और उन्हें पकड़ने के लिए भागने के सभी रास्तों को बंद कर दिया गया। श्री एजाज अहमद जरगर अपर पुलिस अधीक्षक कुलगाम और श्री अमन कुमार उप पुलिस अधीक्षक पीसी-हातीपोरा के नेतृत्व में उनके दल के साथ ऑपरेशनल पार्टी ने उस लक्षित क्षेत्र की पहचान कर ली, जहां आतंकवादियों ने शरण ले रखी थी। तदनुसार, आतंकवादियों से आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया, लेकिन उन्होंने ऐसा करने से इंकार कर दिया, सिवाय एक पुराने ओजीडब्ल्यू आरिफ अहमद शाह के, जो आतंकवादियों के साथ था और उसने सुरक्षा बलों के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया और अन्य आतंकवादियों ने घटना स्थल से भागने का प्रयास किया तथा उन्होंने सुरक्षा बलों पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। भीड़भाड़ वाला क्षेत्र होने के कारण इसे अच्छी तरह से सील कर दिया गया और सर्वप्रथम आसपास के क्षेत्रों में रहने वाले सभी आम नागरिकों को निकाला गया। श्री एजाज अहमद जरगर अपर पुलिस अधीक्षक, कुलगाम ने अपने साथियों एसआई शाहनवाज अहमद पैडी 3656/एस, एसजी कांस्टेबल सतिंदर सिंह 532/केजीएम के साथ नेतृत्व किया और आतंकवादियों का मुकाबला किया तथा अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना उन्हें गोलीबारी में उलझा दिया। बहादुर अधिकारी और उनके साथियों ने पेशेवर तरीके से आतंक के खतरे के विरुद्ध लड़ाई में सृझ-बूझ, ऑपरेशनल कौशल तथा क्षमता का प्रदर्शन किया और हिजबुल मुजाहिदीन से जुड़े दोनों कट्टर आतंकवादियों को ढेर कर दिया। कानून और व्यवस्था तथा आतंकवाद के दृष्टिकोण से एक संवेदनशील क्षेत्र होने के नाते, इस क्षेत्र में इस तरह के कठिन और सर्जिकल ऑपरेशन को अंजाम देना काफी मुश्किल है। एसजी कांस्टेबल बिलाल अहमद 653/आईआर 11वीं बटालियन एआरपी-012623, एसजी कांस्टेबल मुश्ताक अहमद 263/आईआर तीसरी बटालियन एआरपी-036732, कांस्टेबल जहांगीर अहमद गनी 6681/केजीएम ईएक्सके-127655, कांस्टेबल अर्शद अहमद 1076/केजीएम ईएक्सके-155944, कांस्टेबल आदिल नबी मीर 1026/ए ईएक्सके-118621, एसपीओ रईस अहमद 399/आईके, एसपीओ नजीर अहमद 196/के, एसपीओ मोहम्मद रफीक 47/के और एसपीओ शबीर अहमद डार 247/एसपीओ (बीएलए) वाले ऑपरेशनल दल ने प्रभावशाली समन्वय स्थापित किया और अनुकरणीय भूमिका निभाई, जबकि आतंकवादियों के पास क्षेत्र में अच्छा जनसमर्थन और वृहद नेटवर्क है, जिसका वे सुरक्षा बलों के खिलाफ, विशेषकर घेराबंदी और तलाशी ऑपरेशन के दौरान, अच्छी तरह से उपयोग करते हैं। घेराबंदी इस तरह से की गई थी कि लोगों को पत्थरबाजी करने से रोका जा सके ताकि नागरिकों के जान-माल की किसी भी तरह की क्षति से बचा जा सके। दूसरी ओर, श्री अमन कुमार थोकर ने एसजी कांस्टेबल परविंदर सिंह 291/आईआर तीसरी बटालियन, एसजी कांस्टेबल मोहम्मद इकबाल 276/आईआर 11वीं बटालियन, अर्शद अहमद 10761/केजीएम ईएक्सके-155944, कांस्टेबल आदिल नबी मीर 1026/ए ईएक्सके-118621, एसपीओ शौकत अहमद 304/ए, एसपीओ फारूक अहमद 295/एसपीओ, एसपीओ मोहम्मद इकबाल 61/के, एसपीओ मोहम्मद अशरफ 237/के, एसपीओ एजाज अहमद डार 393/के, एसपीओ मोहम्मद याकूब 358/ के, एसपीओ मोहम्मद मकबूल 41/के के साथ घेरे के बाहरी भाग की स्थिति को पेशेवर तरीके से संभाला। क्षेत्र के कुछ युवाओं ने फंसे हुए आतंकवादी के लिए बचकर भागने का रास्ता देने के इरादे से लोगों को भड़काने की कोशिश की, लेकिन अन्ततः इन बहादुर तथा दिलेर अधिकारियों/कर्मियों ने ऑपरेशन को पेशेवर तरीके से अंजाम दिया और दो आतंकवादियों नामतः दाउद अहमद अल्लाजे पुत्र स्वर्गीय अब. हमीद अलाई 'ख' श्रेणी हिजबुल मुजाहिदीन संगठन तथा सैयार अहमद वानी पुत्र गु. मोहम्मद वानी निवासी वानपोरा क्वाइमोह कुलगाम, एचएम (ख) श्रेणी को मार गिराया। मारे गए

आतंकवादियों के कब्जे से बरामद किए गए हथियारों/गोला-बारूद में 01 एके-47 राइफल, 02 एके मैगजीन (01 क्षतिग्रस्त), 63 एके राउंड, 01 इंसास (क्षतिग्रस्त), 01 इंसास मैगजीन, 60 इंसास राउंड, 01 पिस्टल, 01 पिस्टल मैगजीन, 02 पिस्टल राउंड और 02 पाउच (क्षतिग्रस्त) शामिल हैं। इस संबंध में, कुलगाम-पुलिस स्टेशन में आरपीसी की धारा 302 और आयुध अधिनियम की धारा 7/27 के अंतर्गत मामला एफआईआर सं. 141/2017 दर्ज है।

यह उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं है कि इन खतरनाक आतंकवादियों का सफाया होना आतंकी संगठनों के लिए एक बड़ा झटका था। इन परिस्थितियों में प्रभावी घेराबंदी करने में प्रदर्शित कमान और नियंत्रण तथा पेशेवर कुशलता सराहनीय थी, जिसके परिणामस्वरूप आतंकवादियों का सफाया करने के लिए काफी लम्बी एवं सफल कोशिश के पश्चात यह मिशन पूरा हो सका। इस ऑपरेशन की एक और खास बात यह थी कि कुलगाम पुलिस ने इस मिशन को अपनी आसूचना के आधार पर पूरा किया। अधिकारियों द्वारा प्रदर्शित वीरता को स्वीकार करना आवश्यक है ताकि आतंकवाद के खिलाफ सतत लड़ाई में ऑपरेशनल पार्टी के अन्य पुलिस कर्मिकों को प्रेरित किया जा सके।

इस ऑपरेशन में, सर्व/श्री एजाज अहमद जरगर, पुलिस अधीक्षक और सतिंदर सिंह, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 10.09.2017 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/35/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन

विशेष कार्य अधिकारी

सं. 95-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, झारखंड पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस/ वीरता के लिए पुलिस पदक (मरणोपरांत) पदक प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	अवधेश कुमार झा	असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	स्वर्गीय ओम प्रकाश चौरसिया	हवलदार (मरणोपरांत)	वीरता के लिए पुलिस पदक (मरणोपरांत)
03	जय प्रकाश सिंह	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
04	सचिन्द्र कुमार	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
05	अनुज कुमार सिंह	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
06	मदन प्रसाद यादव	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 24/12/2014 को लगभग 19:10 बजे एक गश्ती टीम, जिसमें 1. एसआई, अवधेश कुमार झा, 2. हवलदार, ओम प्रकाश चौरसिया, 3. नंबर 294, जयप्रकाश सिंह, कांस्टेबल, 4. नंबर 1085, सचिन्द्र कुमार सिंह, कांस्टेबल 5. नंबर 1037 अनुज कुमार सिंह, कांस्टेबल शामिल थे, एक पुलिस रक्षक वाहन संख्या 13ए/7418 में भद्रकली मंदिर से इटखोरी पीएस आ रहे थे। रास्ते में साही तालाब के पास एमसीसी कैडरों के एक समूह ने सड़क पर लगाए गए आईईडी से विस्फोट कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप रक्षक पलट गया और उसका लिड अर्थात ढक्कन सड़क पर खुल गया। घात लगाकर बैठे एमसीसी कैडरों ने पुलिस कर्मिकों को निशाना बनाते हुए गश्ती वाहन पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। हवलदार ओम प्रकाश चौरसिया ने असाधारण वीरता दिखाई और अपने जीवन की परवाह किए बिना टूफ लिड को अपने काले तौलिये से कसकर बांध दिया और आत्मरक्षा में जवाबी गोलीबारी शुरू कर दी। इस मुठभेड़ में हवलदार ओम प्रकाश चौरसिया ने सर्वोच्च बलिदान दिया और उनके वीरतापूर्ण कार्य ने उनके साथियों की जान बचाई और हथियारों को भी लुटने से बचाया। इस बीच पूरी टीम ने एमसीसी कैडरों को आपसी भारी गोलीबारी में तब तक उलझाए रखा जब तक कि इटखोरी पुलिस स्टेशन से अतिरिक्त सैनिक सहायता नहीं पहुँच गई, जिससे उनके पास अंधेरे का फायदा उठाते हुए घात स्थल से भागने के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं रह गया। मुठभेड़ में हवलदार ओम प्रकाश चौरसिया शहीद हो गए और अनुज कुमार सिंह, कांस्टेबल, जय प्रकाश सिंह, कांस्टेबल और सचिन्द्र कुमार सिंह, कांस्टेबल गंभीर रूप से घायल हो गए तथा एसआई, अवधेश कुमार झा और नंबर 959, मदन प्रसाद यादव, ड्राइवर आंशिक रूप से घायल हो गए। अतः इस मुठभेड़ में शामिल टीम, जिसमें 1. शहीद हवलदार, ओम प्रकाश चौरसिया 2. एसआई, अवधेश कुमार झा 3. जय प्रकाश सिंह, कांस्टेबल, 4. सचिन्द्र कुमार सिंह, कांस्टेबल 5. अनुज कुमार सिंह, कांस्टेबल और 6. मदन प्रसाद यादव, ड्राइवर शामिल थे, ने अतुल्य वीरता और असाधारण साहस का प्रदर्शन किया

है। उनके असाधारण साहस, वीरता और साहसी मुठभेड़ को देखते हुए उन्हें वीरता के लिए पुलिस पदक दिए जाने की सिफारिश की जाती है।

इस ऑपरेशन में सर्व/श्री अवधेश कुमार झा, असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर, स्वर्गीय ओम प्रकाश चौरसिया, हवलदार, जय प्रकाश सिंह, कांस्टेबल, सचिन्द्र कुमार, कांस्टेबल, अनुज कुमार सिंह, कांस्टेबल और मदन प्रसाद यादव, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 24/12/2014 से दिया जाएगा।

(संख्या 11020/92/2018-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 96-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, झारखंड पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	अरुण कुमार सिंह	अपर पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	रणजीत कुमार	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
03	बलराम दास	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

वर्तमान सिफारिश दिनांक 08.02.2018 को पलामू जिले के अधिकार क्षेत्र के तहत नौडिहा बाजार पुलिस स्टेशन के अंतर्गत आने वाले एक दुर्गम पहाड़ी क्षेत्र में पुलिस टीम और खतरनाक सीपीआई (माओवादी) के भारी सशस्त्र कॉडरों के बीच घातक मुठभेड़ के दौरान नामितों द्वारा प्रदर्शित विशिष्ट वीरता, संघर्ष की दृढ़ भावना, कर्तव्यों के प्रति पूर्ण समर्पण और निष्ठा को सम्मान देने का प्रयास मात्र है।

सीपीआई (माओवादी) एक प्रतिबंधित उग्रवादी गैर-कानूनी समूह है, जो सटे हुए राज्यों के इलाकों में फैला हुआ है और यह अपने आतंकवाद के लिए जाना जाता है। इस संगठन की ताकत इसके कब्जे में नवीनतम हथियार होने और जुंजुलू पहाड़ी का ऊपरी बेस, जो घने जंगल और दुर्गम इलाके से घिरा हुआ है, में बड़ी कॉडर जनशक्ति के उपलब्ध होने के कारण और भी बढ़ जाती है। जुंजुलू के जंगल का सामान्य क्षेत्र पूरी तरह से कटा हुआ है, जहां किसी भी तरह से कोई कनेक्टिविटी नहीं है, जिससे यह क्षेत्र समय पर अतिरिक्त पुलिस बल और सहायता न पहुँच सकने के कारण पुलिस के लिए शत्रुतापूर्ण बन जाता है। इन परिस्थितियों में क्रमिक घटनाएं होने के कारण मुठभेड़ में शामिल पुलिस टीम को हथियारों/गोला बारूद के नुकसान के साथ-साथ, गंभीर और अधिक मौतों का नुकसान हो सकता था। लेकिन अपर पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन), पलामू, श्री अरुण कुमार सिंह की अत्याधुनिक कमान में पुलिस टीम सीआरपीएफ/134वीं बटालियन, आईआरबी-03 और डीएपी की टीम के साथ, न केवल सीपीआई (माओवादी) के खूंखार नक्सलियों में से एक को मार गिराने में, बल्कि एक घायल महिला सशस्त्र कॉडर को गिरफ्तार करने और भारी मात्रा में हथियारों, गोला-बारूद, उपकरणों, सामान और प्रचार सामग्री का बरामद करने में भी सफल रही। श्री अरुण कुमार सिंह, अपर पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन) के दृढ़ संकल्प, अचूक आयोजना और रणनीति के साथ इसका क्रियान्वयन तथा उनके उच्च कोटि के नेतृत्व और पेशेवरता के तहत टीम द्वारा प्रदर्शित साहस और वीरतापूर्ण कार्यवाई ने हमारे कर्मियों और हथियारों/गोला बारूद को किसी भी दुर्घटना/नुकसान से बचाया है। वीरता की इस घटना को आईपीसी की धारा 147, 148, 149, 353, 307, 504, 506, आयुध अधिनियम की धारा 25(1-ए), 25(1-बी)ए, 26, 27, 35 और यूएपी अधिनियम की धारा 10, 13, 16, 20, 23 और सीएलए अधिनियम की धारा 17 के तहत दिनांक 09.02.2018 को नौडिहा बाजार पुलिस स्टेशन में दर्ज मामला संख्या 05/2018 में पूरी तरह वर्णित किया गया है।

पुलिस अधीक्षक, पलामू को दिनांक 07.02.2018 को 14:00 बजे, प्रतिबंधित गैर-कानूनी सीपीआई (माओवादी) के खूंखार माओवादी, सब-जोनल कमांडर राकेश भुइयां और उनके साथ 20-25 सशस्त्र सदस्यों के जुंजुलू वन और आस-पास के ऊबड़-खाबड़ इलाके में किसी गुप्त मकसद के साथ आवाजाही होने की गुप्त सूचना मिली। संबंधित अधिकारियों के साथ विचार

विमर्श करने के पश्चात सत्यापन द्वारा खुफिया सूचना को पक्का करने और आगे आवश्यक कार्रवाई करने के लिए श्री अरुण कुमार सिंह, अपर पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन) पलामू के नेतृत्व में एक पुलिस टीम गठित की गई, जिसमें एसएचओ पाटन पुलिस स्टेशन, सब इंस्पेक्टर प्रमोद कुमार, एचएवाई शांतिराम महतो, कांस्टेबल 170 रणजीत कुमार, कांस्टेबल 904 बलराम दास, कांस्टेबल 1337 छोटेलाल कुमार, तथा सीआरपीएफ की 134वीं बटोलियन के अधिकारियों और कार्मिकों को शामिल किया गया। तदनुसार, अपर पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन), पलामू के नेतृत्व में दिनांक 07.02.2018 (अपराहन) को ऑपरेशन शुरू किया गया। इसके बाद, ऑपरेशन के दूसरे दिन अर्थात् दिनांक 08/02/18 को, पुलिस टीम सावधानीपूर्वक पश्चिमी ओर से आसपास के जुंजुलू जंगल की ओर आगे बढ़ी और चतुराईपूर्वक 15:00 बजे एक नाले तक पहुंच गई। इस स्थान में चारों ओर घनी वनस्पति, ऊबड़-खाबड़ जमीन और झाड़ियां थी। अचानक, पुलिस टीम ने काली वर्दी पहने तथा इंसास एवं पुलिस राइफल लिए हुए कुछ व्यक्तियों को देखा। कुछ ही समय के भीतर, ऑपरेशन पार्टी ने पोजीशन ले ली, सीपीआई (माओवादी) के हथियारबंद सदस्यों की पहचान की। जैसे ही वे करीब पहुंचे, तो पुलिस टीम ने जोर से चिल्लाकर पुलिस के रूप में अपनी पहचान देते हुए सशस्त्र संगठन को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा, लेकिन माओवादियों ने पुलिस टीम की हत्या करने की मंशा रखते हुए उन पर गोलियों की बौछार शुरू कर दी। मुठभेड़ होना निश्चित था, जो कि लगातार और अंधाधुंध गोलीबारी के साथ शुरू हो गई। समूह ने बन्दूक से गोलियों की आवाज के साथ "माओवाद जिंदाबाद" के नारे भी लगाए। पुलिस टीम ने अभी भी आत्मसंयम बनाए रखा और फिर से जोर की आवाज के साथ आत्मसमर्पण करने के लिए कहा, लेकिन फिर भी माओवादियों ने दक्षिण और पूर्व दिशाओं से गोलीबारी जारी रखी। अपनी सुरक्षा का कोई विकल्प न होने पर, अपर पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन) क्यूएटी कमांडर और पुलिस टीम के सदस्यों के साथ रेंगते हुए आगे बढ़ गए, सामरिक दृष्टि से पोजीशन ले ली तथा पूर्व और दक्षिण दिशा में जवाबी गोलीबारी शुरू कर दी। 17:30 बजे तक, सशस्त्र उग्रवादियों ने गोलीबारी कम कर दी। इसके बाद, अपर पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन) अपनी टीम और डिप्टी कमांडेंट, सीआरपीएफ 134वीं बटोलियन के नेतृत्व वाली टीम के साथ उन सशस्त्र माओवादियों को घेरने और आत्मसमर्पण कराने के लिए उन पर दबाव बनाने के इरादे से पूर्व दिशा में आगे बढ़े। उस स्थिति में, पुलिस टीम मौत के सामने खड़ी थी और उनकी जान जाने का भी खतरा था। हालाँकि, दुश्मन की गोलीबारी के दौरान आगे बढ़ना एक जोखिम भरा कदम था, लेकिन खुद को पुलिस पार्टी के शिकंजे में कसा हुआ पाकर, सशस्त्र माओवादियों ने एक बार फिर आगे बढ़ती पुलिस टीम पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। उन्होंने पुलिस पार्टी के साथ गाली-गलौज शुरू करके और "माओवाद जिन्दाबाद" के नारे लगाते हुए पुलिस पार्टी को हतोत्साहित करने का प्रयास किया।

अंततः वे पीछे हट गए और शाम का अंधेरा होने के कारण घने जंगल और पहाड़ी इलाकों में गायब हो गए।

टीम को आत्मरक्षा में नियंत्रित गोलीबारी जारी रखने का निर्देश देते हुए, अपर पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन) ने अपने सहयोगी कांस्टेबल 170 रणजीत कुमार, कांस्टेबल 904 बलराम दास और टीम के अन्य सक्रिय सदस्यों के साथ संघर्ष-क्षेत्र में तलाशी शुरू की। एक माओवादी का शव बरामद किया गया, जबकि एक महिला सशस्त्र माओवादी घायल अवस्था में मिली, जिसने पूछताछ के दौरान अन्य सोलह सशस्त्र माओवादियों के नामों और लगभग 10-12 अन्य अज्ञात सदस्यों का खुलासा किया। घायल महिला माओवादी को तुरंत प्राथमिक चिकित्सा प्रदान की गई और बाद में उसे इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया और इससे पहले इस मामले की विस्तृत जानकारी पुलिस अधीक्षक, पलामू को दी गई। विभिन्न हथियार, वस्तुएं और प्रचार सामग्री भी बरामद की गई। दिनांक 09/02/18 को एसडीओ छतरपुर तथा नौडिहा बाजार के बीडीओ और सीओ के जगुआर टीम के साथ पहुंचने के बाद, महेश भोक्ता उर्फ जीतन गंडू उर्फ गार्जियन दा के रूप में शिनाख्त किए इस मृत सशस्त्र माओवादी की जांच रिपोर्ट तैयार की गई और शव की तलाशी लेने पर एक 0.315 बोर राइफल और जीवित कारतूस के साथ एक मैगजीन तथा शव के पास से विभिन्न हथियार, गोला-बारूद और अन्य सामग्री बरामद की गई, जिनके विवरण जब्ती सूची में सूचीबद्ध किए गए हैं।

दिनांक 10/02/18 को भी इस ऑपरेशन को जारी रखते हुए, माओ राजेश यादव, एरिया कॉमरेड सीपीआई (माओवादी) को नौडिहा बाजार पुलिस स्टेशन के तहत ग्राम तेनुडिह (ग्राम जुंजुलू केसमीप) से गिरफ्तार किया गया और उसके अपराध स्वीकार ने पर मैगजीन सहित एक .303 पुलिस राइफल, जीवित गोला बारूद, विस्फोटक सामग्री और कई अन्य सामान मुठभेड़ स्थल से बरामद किए गए, जिसका विस्तृत उल्लेख नौडिहा बाजार पुलिस स्टेशन में दिनांक 10/02/18 के मामला संख्या 06/18 में किया गया है।

इसके अलावा और इसके परिणाम स्वरूप अपर पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन) श्री अरुण कुमार सिंह ने बाद में वीरतापूर्ण कृत्य और ठोस रणनीति के साथ सफल ऑपरेशन चलाया, जिसमें माओ दीपक गंडू, एसजेडसी (05 लाख रूपए का इनामी), माओ सेल्वम, माओ योगेंद्र भुइयां, माओ गीता और इनरमिला को गिरफ्तार कर लिया गया, जबकि माओ राजेंद्र भुइयां ने पुलिस के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। माओ राकेश भुइयां, एसजेडसी, माओ लल्लू यादव, माओ रूबी और माओ रंकी को पुलिस मुठभेड़ में मार गिराया गया। सभी ने दिनांक 08.02.2018 को जुंजुलू पहाड़ी के ऊपरी हिस्से से पुलिस टीम पर तोड़-फोड़ करने के कार्य में सक्रिय रूप से भाग लिया था, जिसके लिए नौडिहा बाजार पुलिस स्टेशन मामला संख्या-05/2018 और छतरपुर पुलिस स्टेशन

मामला संख्या 28/2018 दर्ज किया गया है, जिसके परिणामस्वरूप परिष्कृत, प्रतिबंधित और पुलिस से लूटी गई राइफल, अन्य हथियार और गोला-बारूद, विस्फोटक और अन्य सामग्री, जो आमतौर पर सीपीआई (माओवादी) के इस सशस्त्र दस्ते द्वारा सामान्यतः अपने पास रखी जाती है, बरामद हुई।

ऑपरेशन के दौरान, श्री अरुण कुमार सिंह, अपर पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन), ने एक घायल सशस्त्र महिला माओवादी को बचाने के लिए मानवता दिखाई और इससे पहले कि खूंखार माओवादी उनके किसी साथी पुलिसकर्मी को कोई नुकसान पहुंचा पाता, उन्होंने अपनी जान को जोखिम में डालकर उसका खात्मा करने में अनुकरणीय साहस के साथ असाधारण नेतृत्व गुणों का प्रदर्शन किया।

श्री अरुण कुमार सिंह, अपर पुलिस अधीक्षक ने किसी भी पुलिस बल की सर्वोच्च परंपराओं को बनाए रखने में, वफादारी, वीरता और नेतृत्व गुणों का ठोस उदाहरण प्रस्तुत किया। उपर्युक्त नामांकितों द्वारा शुरुआत से अंत तक प्रदर्शित अनुशासन, अत्यंत बहादुरी, सर्वोच्च दर्जे के नेतृत्व और अनुकरणीय साहस ने, पूरी पुलिस टीम में उच्च मनोबल स्थापित किया और अन्य के बीच भी आत्मविश्वास को जागृत किया, अतः ये उच्च स्तरीय सम्मान और प्रशंसा के हकदार हैं।

इस ऑपरेशन में सर्वश्री अरुण कुमार सिंह, अपर पुलिस अधीक्षक, रणजीत कुमार, कांस्टेबल और बलराम दास, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 08/02/2018 से दिया जाएगा।

(संख्या 11020/103/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 97-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, झारखंड पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं:—

सर्वश्री

01	रामेंद्र कुमार	डीएसपी	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	ओम प्रकाश तिवारी	डीएसपी	वीरता के लिए पुलिस पदक
03	आलोक कुमार दूबे	सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक
04	प्रमोद यादव	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
05	मनोज कुमार	हेड कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

यह सिफारिश नामांकित कार्मिकों द्वारा प्रदर्शित असाधारण वीरतापूर्ण कृत्यों, दृढ़ निश्चय, निःस्वार्थ सेवा, शानदार नेतृत्व और उच्च स्तरीय समन्वय के मद्देनजर की गई है। यह उन दो घातक और भयंकर मुठभेड़ के संदर्भ में है, जो दिनांक 01/02/2018 को जिला लातेहार, राज्य-झारखंड में पुलिस स्टेशन- गारु के तहत ग्राम-पंडरा के पहाड़ी और घने जंगल क्षेत्र में पुलिस टीम और सीपीआई (माओवादी) के खूंखार चरमपंथियों के बीच हुई थी, जिसमें सीपीआई (माओवादी) का एक सब-जोनल कमांडर मारा गया था। यहां यह उल्लेख करना महत्वपूर्ण है कि झारखंड का लातेहार जिला इसका सामरिक महत्व होने के कारण नक्सलियों के नक्शे पर एक प्रमुख स्थान रखता है, जहां से वे झारखंड, बिहार और छत्तीसगढ़ में अपनी पकड़ कायम रहती है और फिर रेड कॉरिडोर पर आगे बढ़कर वे उन क्षेत्रों में आसानी से पहुंच सकते हैं, जहां वे संचालन करना पसंद करते हैं।

दिनांक 31.01.2018 को गारु पुलिस स्टेशन के तहत, भितर पंडरा वन क्षेत्र में सीपीआई (माओवादी) के सशस्त्र समूह की आवाजाही होने के बारे में एक खुफिया सूचना मिली। इसके बाद, एजी-3 (जेजे) के श्री रामेंद्र डीएसपी की समग्र कमान में एक संयुक्त ऑपरेशन "बधुआटोली" की योजना बनाई गई। इसमें झारखंड जगुआर के एजी-3 और जिला पुलिस दल, जिसमें श्री ओम प्रकाश तिवारी, एसडीपीओ-महुआतनर, एसआई, आलोक कुमार दूबे, ओसी-नेतरहाट पीएस और 17 अन्य पुलिस कार्मिक सम्मिलित थे, को शामिल किया गया था।

दिनांक 01.02.2018 को लगभग 0300 बजे ऑपरेशन टीम बथुआटोली (नेतरहाट) से अपने निर्धारित क्षेत्र पंडरा के लिए रवाना हुई। 0430 बजे ऑपरेशन टीम ने घाघरी फॉल्स के पास एक अत्यंत खड़ी ढलान से होते हुए चतुराई से आगे बढ़ना शुरू कर दिया। श्री रामेंद्र कुमार स्काउट समूह में थे, जो कांस्टेबल प्रमोद यादव, कांस्टेबल अजीत और हेड कांस्टेबल मनोज वाले दल की अगुवाई कर रहे थे तथा श्री ओम प्रकाश, एसडीपीओ-महुआतनर और एसआई आलोक कुमार दूबे, ओसी-नेतरहाट क्रमशः मिड सेक्शन वाली पुलिस टीम और रियर पार्टी का नेतृत्व कर रहे थे। टीम दोनों तरफ ऊंची पहाड़ी श्रृंखलाओं के साथ खड़ी ढलान से होते हुये भितर पंडरा की ओर घने जंगल क्षेत्र में आगे बढ़ रही थी। कांस्टेबल प्रमोद और हेड कांस्टेबल मनोज ने बाईं ओर ऊपरी रिज पर कुछ संदिग्ध गतिविधि देखी। उन्होंने तुरंत टीम कमांडर, श्री रामेंद्र को सूचित किया, और उन्होंने आगे श्री ओम प्रकाश और एसआई आलोक कुमार दूबे को सतर्क रहने के लिए कहा। अचानक स्काउट दल पर भारी गोलीबारी शुरू हो गई, उन्होंने माओवादियों को चुनौती देते हुए कहा कि वे पुलिस हैं और वे आत्मसमर्पण करें, लेकिन इसके जवाब में उन्होंने गोलीबारी और अधिक बढ़ा दी। सुरक्षा बलों पर भारी खतरे को महसूस करते हुए श्री रामेंद्र कुमार, श्री ओम प्रकाश और एसआई, आलोक कुमार दूबे ने अपनी-अपनी टीम को आत्मरक्षा में नियंत्रित गोलीबारी के साथ जवाबी कार्रवाई करने का आदेश दिया। डीएसपी रामेंद्र ने स्काउट कांस्टेबल प्रमोद यादव, कांस्टेबल अजीत और हेड कांस्टेबल मनोज के साथ माओवादियों पर गोलीबारी शुरू कर दी और बहादुरी से जवाबी कार्रवाई की और उन्हें रोके रखा, तभी श्री ओम प्रकाश और एसआई आलोक कुमार दूबे ने एक छोटी टीम बनाकर बायीं किनारे से माओवादी की घेराबंदी शुरू कर दी और वे अपनी जान की परवाह किए बिना जमीन और जो कुछ भी कवर उपलब्ध था, उसका इस्तेमाल करते हुए गोलीबारी की दिशा में आगे बढ़ गए। पुलिस दल को हावी होते देख माओवादी घटनास्थल से भाग गए तथा घने जंगल और पहाड़ी इलाकों का लाभ उठाकर गायब हो गए, और भारी मात्रा में गोला-बारूद, विस्फोटक और नक्सल प्रचार साहित्य पीछे छोड़ गए। यह मुठभेड़ लगभग 1 घंटे तक चली। माओवादियों की ओर से गोलीबारी बंद होने के बाद, श्री ओम प्रकाश और श्री रामेंद्र ने अपने अपने सैन्य दस्ते को इलाके में तलाशी करने का आदेश दिया। तलाशी करने पर, माओवादियों का एक सब-जोनल कमांडर, बीरबल उरांव उर्फ लालदेव उरांव पुत्र कर्मा उरांव ग्राम: सलगी बुधियाटोली, पीएस-घाघरा, जिला- गुमला गंभीर रूप से घायल अवस्था में खून के पूल में पड़ा हुआ बगल में एक हथियार के साथ मिला, जो नक्सली वर्दी में था। पुलिस पार्टी द्वारा उसे तुरंत प्राथमिक उपचार दिया गया। अच्छी तरह से तलाशी करने का आदेश दिया गया, जिसमें बड़ी संख्या में डेटोनेटर, आईईडी गोला बारूद और नक्सल प्रचार साहित्य बरामद किया गया। घायल नक्सली के प्रति मानवीय दृष्टिकोण दिखाते हुए, श्री रामेंद्र कुमार, डीएसपी और श्री ओमप्रकाश ने उसे बाहर निकालने का फैसला लिया। जब पुलिस टीम ने समय पर इलाज के लिए घायल माओवादी को बाहर निकालने के लिए सामरिक रूप से आगे बढ़ना शुरू किया, तो भितर पंडरागांव के पास पहुंचने पर माओवादियों ने उन पर घात लगाकर हमला किया और नागरिकों का कवर लेकर अपने कमांडर, माओवादी बीरबल उरांव को छुड़ाने और बरामद हथियारों, गोला बारूद और विस्फोटक को ले जाने के इरादे से भारी गोलीबारी की। पुलिस टीम ने खुद को फिर से संगठित कर लिया। ओम प्रकाश तिवारी, डीएसपी अपनी टीम के साथ घायल नक्सल के साथ वहां रहे और उन्होंने नक्सलियों पर कड़ी जवाबी कार्रवाई की और उन्हें अपनी ओर आगे बढ़ने से रोका। इस बीच, एसआई आलोक कुमार दूबे अपनी टीम के साथ बाएं किनारे से और श्री रामेंद्र अपने सेक्शन नंबर-3 के साथ से दाहिने किनारे से नक्सलियों की ओर बढ़े और अपनी जान की परवाह किए बिना गोलीबारी की दिशा में आगे बढ़ गए। पुलिस बल से कड़ी जवाबी कार्रवाई को भांपते हुए, नक्सली एक बार फिर घने जंगल और पहाड़ी इलाकों का फायदा उठाते हुए भाग निकले।

श्री रामेंद्र डीएसपी, श्री ओम प्रकाश तिवारी डीएसपी और एसआई आलोक कुमार दूबे अपनी टीम के साथ वीरतापूर्वक लड़े और उन्होंने विपत्ति के समय समन्वय और सामंजस्य के अनुकरणीय स्तर का प्रदर्शन किया और सैनिकों में असाधारण वीरता का संचार किया। एचसी मनोज और कांस्टेबल प्रमोद ने अपने कमांडरों के साथ मिलकर दुस्साहसिक ढंग से लड़ाई लड़ी और नक्सलियों की भारी गोलीबारी के बीच अपनी जान की परवाह किए बिना निडर वीरता दिखाते हुए दुश्मन की आक्रामक कार्रवाई का माकूल जवाब दिया। टीम कमांडरों और उनकी टीम द्वारा संकट के समय अच्छी तरह से समन्वित योजना, त्रुटिहीन क्रियान्वयन और अनुकरणीय सामंजस्य, वीरता और जोशपूर्ण कृत्य के परिणामस्वरूप सीपीआई (माओवादी) कासब-जोनल कमांडर, बीरबल उरांव उर्फ लालदेव उरांव पुत्र कर्मा उरांव, ग्राम- सलगी बुधिया टोली, पीएस-घाघरा, जिला- गुमला मारा गया। आयुध अधिनियम की धारा 147/148/149/353/ 307 डब्ल्यूसी, 25 (1-बी)ए/25 (आई-ए)/26/27, 3/4 विस्फोटक अधिनियम, 10/13/16/20 यूएपी अधिनियम और 17 सीएलए अधिनियम के तहत गारू पुलिस स्टेशन में मामला संख्या 02/18 दिनांक 01.02.18 की एफआईआर में इस वीरतापूर्ण प्रकरण को विस्तार से बताया गया है। यहां यह उल्लेख करना उचित है कि विभिन्न पुलिस स्टेशनों में उसके खिलाफ कुल 12 मामले दर्ज थे और झारखंड सरकार ने उसे जीवित या मृत पकड़ने पर दो लाख रुपये का इनाम रूप घोषित किया था।

उल्लिखित मुठभेड़ में, श्री रामेंद्र कुमार, डीएसपी और एसआई आलोक कुमार दूबे, ओसी- नेतरहाट पीएस ने अपने पेशेवर कौशल, उत्तम नियोजक वीरता एवं विशिष्ट वीरतापूर्ण कार्रवाई और आक्रामक नेतृत्व का प्रदर्शन करते हुए तथा साथ ही हेड कांस्टेबल मनोज कुमार और कांस्टेबल प्रमोद यादव ने उच्च कोटि के साहस और टीम भावना का प्रदर्शन करते हुए, सेवा के उद्देश्य, समर्पित वीरता और निष्ठा के बहुत उच्च मानक स्थापित किए हैं, जो प्रत्येक बल कार्मिक के लिए एक आदर्श बने रहेंगे।

इस ऑपरेशन में सर्व/श्री रामेंद्र कुमार, डीएसपी, ओम प्रकाश तिवारी, डीएसपी, आलोक कुमार दूबे, सब इंस्पेक्टर, प्रमोद यादव, कांस्टेबल और मनोज कुमार, हेड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 01/02/2018 से दिया जाएगा।

(संख्या 11020/106/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन

विशेष कार्य अधिकारी

सं. 98-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, झारखंड पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	बृजेश कुमार यादव	डीएसपी	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	जॉन मुर्मू	सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक
03	बिहारी मरांडी	सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक
04	राधे श्याम प्रसाद	हेड कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
05	रितुल कुमार	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
06	रिंकू कुमार यादव	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
07	जीवन किस्पोट्टा	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
08	गन बहादुर थापा	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

यह सिफारिश नामांकित कर्मियों द्वारा प्रदर्शित वीरतापूर्ण कृत्यों, दृढ़ निश्चय, निःस्वार्थ सेवा, शानदार नेतृत्व और उच्च स्तरीय समन्वय के लिए की गई है। यह उस घातक और भयंकर मुठभेड़ के संदर्भ में है, जो दिनांक 24 सितंबर, 2017 को टोनिया कोलाटुपू टोली, गिरडा ओपी, पुलिस स्टेशन-बानो के सामान्य पहाड़ी और घने जंगल क्षेत्र में पुलिस टीम और पीएलएफआई के खूंखार उग्रवादियों के बीच हुई थी, जिसमें झारखंड सरकार का दो लाख रूपए का इनामी और एरिया कमांडर राधा नायक दो अन्य दस्ता सदस्यों (लालू लोहरा और मनीष सुरीन) के साथ मारा गया था। दिनांक 23 सितंबर, 2017 को आधी रात के आस-पास, एसपी, सिमडेगा को पंगुर, कामलाबेरा और टोनिया कोलाटुपू टोली के इलाके में प्रतिबंधित पीएलएफआई संगठन के कुछ अति खूंखार नेताओं और सदस्यों की मौजूदगी होने के बारे में खुफिया जानकारी मिली। इस सूचना के आधार पर 05 दलों का गठन किया गया, जिसमें 04 कट ऑफ और 01 मुख्य छापेमारी दल शामिल था, जिसका नेतृत्व डीसी बृजेश कुमार यादव, झारखंड जगुआर कर रहे थे। लगभग 11:00 बजे, जब हमला टीम टोनिया कोलाटुपू टोली, बानो के सामान्य जंगल इलाके के पास पहुंची, तो कुछ उग्रवादी अचानक से स्काउट पार्टी के सामने टकर गए और उन्होंने पेड़ों का कवर लेते हुए स्वचालित हथियार से स्काउट पार्टी पर गोलीबारी शुरू कर दी, जिसमें कांस्टेबल रिंकू कुमार, कांस्टेबल रितुल कुमार और डीसी बृजेश कुमार शामिल थे। तुरंत ही, श्री बृजेश कुमार, डीसी-सह-एजी कमांडर ने अपने सहयोगियों को नक्सलियों के खिलाफ पोजीशन लेने का आदेश दिया और उग्रवादियों को चुनौती दी, कि वे गोलीबारी बंद करें और आत्मसमर्पण करें। चेतावनी की परवाह किये बगैर, उग्रवादियों ने पुलिस पार्टी पर गोलीबारी जारी रखी। इस पर पुलिस पार्टी ने आत्मरक्षा में गोलीबारी शुरू कर दी। इस बीच श्री बृजेश कुमार यादव, डीसी, कांस्टेबल, रितुल कुमार और कांस्टेबल, रिंकू कुमार के साथ अपनी जान को खतरे में डालते हुए रेंगते हुए बाईं ओर बढ़ गए, जहां नक्सलियों ने पोजीशन ली हुई थी और उन पर गोलीबारी शुरू कर दी।

इस बीच, अपनी जान की परवाह किए बिना एसआई जॉन मुर्मू और एसआई बिहारी मरांडी दाहिनी ओर रेंगते हुए आगे बढ़े और उग्रवादियों पर गोलीबारी करने लगे। जैसे ही गोलीबारी शुरू हुई, उन्होंने अपनी ओर से उग्रवादियों को चुनौती दी। दूसरी तरफ से हमले को देखते हुए नक्सलियों ने उन पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। पूर्ण अनुकरणीय साहस और नेतृत्व के साथ एसआई जॉन मुर्मू ने अपने सहयोगियों एसआई बिहारी मरांडी, हेड कांस्टेबल राधे श्याम और कांस्टेबल, गन बहादुर थापा को पोजीशन लेने का आदेश दिया और वे अपनी जान को खतरे में डालते हुए दाहिनी ओर रेंगते हुए आगे बढ़ गए, जहाँ नक्सलियों ने पोजीशन ले रखी थी और उन पर गोलीबारी शुरू कर दी। एसआई जॉन मुर्मू, एसआई बिहारी मरांडी, हेड कांस्टेबल, राधे श्याम और कांस्टेबल, गन बहादुर थापा ने कांस्टेबल जीवन किस्पोट्टा के साथ उग्रवादियों को घेरने में अत्यंत साहस और अनुकरणीय नेतृत्व का प्रदर्शन किया और उन पर गोलियां चलाईं। एक-दूसरे पर गोलीबारी 20-25 मिनट तक जारी रही।

उसके बाद सामान्य क्षेत्र में एक तलाशी अभियान चलाया गया, जिसमें 03 शव, भारी मात्रा में हथियार एवं गोला-बारूद और लॉजिस्टिक सामान जब्ती जापन के अनुसार बरामद किया गया।

टीम कमांडर और उनकी टीम ने पीएलएफआई के एरिया कमांडर राधा नायक, जिस पर झारखंड सरकार ने 2 लाख रुपये इनाम की घोषणा की थी और जो क्षेत्र में कई बर्बर कृत्यों का मास्टरमाइंड था, को दो अन्य दस्ता सदस्यों लालू लोहरा और मनीष सुरीन के साथ मार गिराया।

इस ऑपरेशन में सर्व/श्री बृजेश कुमार यादव, डीएसपी, जॉन मुर्मू, सब-इंस्पेक्टर, बिहारी मरांडी, सब-इंस्पेक्टर, राधे श्याम प्रसाद, हेड कांस्टेबल, रितुल कुमार, कांस्टेबल रिकू कुमार यादव, कांस्टेबल, जीवन किस्पोट्टा, कांस्टेबल और गन बहादुर थापा, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्य परायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 24.09.2017 से दिया जाएगा।

(संख्या 11020/107/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 99-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, झारखंड पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	अरुण कुमार	सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	सनोज कुमार चौधरी	सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक
03	अभिषेक कुमार	असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक
04	मनीष रजवार	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
05	अनोज कुमार ओझा	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
06	नरेश तिग्गा	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
07	इंद्रजीत तिवारी	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
08	श्यामानंद प्रसाद गुप्ता	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
09	छोटू यादव	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
10	मनोज कुमार बावरी	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
11	मिथुन कुमार रवि	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

नामांकित कर्मियों द्वारा प्रदर्शित शौर्यवान कृत्यों, दुस्साहसिक कार्यों, असाधारण वीरता, दृढ़ निश्चय, उच्च पेशेवरता और नेतृत्व तथा साथ ही उच्च स्तर के सहयोग और समन्वय को सम्मान देने के लिए यह सिफारिश की गई है। यह उस घातक और भयंकर मुठभेड़ के संदर्भ में है, जो दिनांक 04.04.2018 को झारखंड राज्य के जिला लातेहार में हेरहंज-पुलिस स्टेशन के अंतर्गत भरगाँव-सिकिद वन क्षेत्र में "कौवाखोह नाला" में पुलिस टीम और सीपीआई (माओवादी) के खूंखार उग्रवादियों के बीच हुई थी, जिसमें सीपीआई (माओवादी) के 5 सब-जोनल कमांडर मारे गए थे। यहाँ यह उल्लेख करना उचित है कि झारखंड का लातेहार जिला, सीपीआई (माओवादी) के लिए झारखंड, बिहार और छत्तीसगढ़ में अपनी पकड़ बनाने के लिए रणनीतिक रूप से बहुत महत्वपूर्ण क्षेत्र है। उत्तर लातेहार एक वह क्षेत्र है, जो उन नक्सल नेताओं को बिहार की ओर जाने के लिए आवाजाही का गलियारा प्रदान करता है, जो सरकार और सुरक्षा बलों के खिलाफ अपनी भविष्य की रणनीतियों की योजना बनाने के लिए बैठकों के उद्देश्य से वहाँ आना-जाना करते हैं।

दिनांक 03.04.2018 को मनिका-हेरहंज-लातेहार पुलिस स्टेशन के सीमावर्ती वन क्षेत्र में सीपीआई (माओवादी) के सशस्त्र समूह की आवाजाही होने के बारे में मानव और तकनीकी स्रोतों से खुफिया सूचना प्राप्त हुई। इसके बाद ऑपरेशन "खिराखंड" शुरू किया गया, जिसके लिए सीआरपीएफ की 11वीं बटालियन की कोबरा 203 की 2 टीमें, झारखंड जगुआर के असॉल्ट ग्रुप नंबर 3 और 34

तथा विपुल पांडे, अपर पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन) लातेहार, सब इंस्पेक्टर सनोज चौधरी, ओसी-हेरहंज पीएस, 1 असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर और 4 कांस्टेबलों वाली पुलिस टीम शामिल की गई थी। सभी छः टीमों को नक्सलियों को खोजने और उनका खात्मा करने के लिए 6 अलग-अलग क्षेत्र सौंपे गए। श्री रामेंद्र उप पुलिस अधीक्षक की कमान में टीम-5, जिसमें झारखंड जगुआर के एजी-3 शामिल थे, तथा श्री विपुल पांडे, अपर पुलिस अधीक्षक, ऑपरेशन की समग्र कमान के तहत एसआई सनोज चौधरी, ओसी हेरहंज सहित 6 पुलिस कर्मियों की टीम को सिकिद पीएफ और भारगांव पीएफ के बीच नाला की तलाशी करने का कार्य सौंपा गया। ऑपरेशन टीम दिनांक 03.04.18 को 1900 बजे अपने निर्धारित क्षेत्र के लिए निकली और लगभग 2300 बजे सिकिद वन क्षेत्र में पहुंच गई तथा उसने वन क्षेत्र में ठिकाना बनाया और योजना के अनुसार अपने निर्धारित क्षेत्र की तलाशी और काम्बिंग के लिए दिनांक 04.04.2018 को लगभग 0600 बजे सामरिक तरीके से आगे बढ़ गई। कुछ दूरी तक आगे बढ़ने के बाद, सब इंस्पेक्टर सनोज ने टीम कमांडर श्री विपुल पांडे को बेहतर वर्चस्व और तलाशी के लिए टीम को दो भागों में विभाजित करने का सुझाव दिया। श्री विपुल पांडे ने एजी-3 कमांडर, श्री रामेन्द्र के साथ इस पर चर्चा की और एसआई अभिषेक कुमार की कमान के तहत एजी के सेक्शन नंबर 3 को जंगल के अंदर भेजने का और शेष टीम को नाले की तलाशी में लगाने को निर्णय लिया गया। चलते समय विपुल पांडे ने नाले में पानी एकत्र करने के लिए जमीन पर हाल ही में खोदे गये 2-3 जगह (चौनरी) को देखा। उन्होंने तुरंत सैनिकों को सचेत किया और उन्हें और अधिक सतर्क रहने का निर्देश दिया। टीम चतुराई के साथ आगे बढ़ती रही। कुछ ही मिनटों के बाद, विपुल पांडे ने फिर से रेडियो सेट में व्यवधान की आवाज सुनी, तो उन्होंने फिर से सैनिकों को सतर्क किया और एजी कमांडर श्री रामेन्द्र से जंगल के अंदर बढ़ रहे सैनिकों को सतर्क बने रहने के लिए कहने को कहा। लगभग 0700 बजे, जब टीम चतुराई से पूर्व दिशा में आगे बढ़ रही थी, तो अचानक से जंगल के अंदर जा रहे सेक्शन नं.-3 और साथ ही नाले की ओर चल रही टीम पर गोलियों की बौछार होने लगी। गोलीबारी अंधाधुंध तरीके से की जा रही थी और पुलिस बल को निशाना बनाया गया था। श्री विपुल पांडे, सब इंस्पेक्टर सनोज चौधरी और श्री रामेंद्र ने सशस्त्र माओवादियों को आत्मसमर्पण करने के लिए चुनौती दी, लेकिन उन्होंने इस बात का जवाब गोलियों की बौछार को और बढ़ाकर दिया। तत्पश्चात, पूरी पार्टी को दिशात्मक, लेकिन नियंत्रित रूप से जवाबी गोलीबारी करने का आदेश दिया गया। माओवादी सेक्शन-3 पर भारी गोलीबारी कर रहे थे, जो जंगल के अंदर चल रही थी, लेकिन असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर अभिषेक कुमार, कांस्टेबल मनोज कुमार बावरी और कांस्टेबल मिथुन कुमार रवि, जो स्काउट में थे, ने वीरता से जवाबी गोलीबारी की और उन्हें रोके रखा। श्री विपुल पांडे द्वारा यह भांपे जाने पर कि माओवादी सेक्शन-3 को घेरने की कोशिश कर रहे हैं, एक छोटी टीम बनाई गई, जिसमें एजी-3 कमांडर, श्री रामेन्द्र, सब इंस्पेक्टर सनोज चौधरी, कांस्टेबल अनोज ओझा, कांस्टेबल मनीष रजवार, कांस्टेबल नरेश तिग्गा, कांस्टेबल छोटू यादव शामिल थे, तुरंत सेक्शन नंबर-3 की ओर चली गई, जो कि नक्सलियों की भारी गोलीबारी में फंस गई थी। यह पार्टी गोलीबारी करते हुए, आगे बढ़ने की चालों को अपनाते हुए और जमीनी सतह का उत्तम इस्तेमाल करते हुए ऊंचाई की ओर आगे बढ़ी। उनके आगे बढ़ने के दौरान कुछ नक्सलियों, जिन्होंने नीचे की ओर जाते हुए सूखे नाला में रक्षात्मक पोजीशन ली हुई थी, ने उन पर भारी गोलीबारी की। लेकिन धैर्ययुक्त सामंजस्य और दृढ़ संकल्प के साथ तथा अपनी जान की परवाह किए बिना, यह टीम, जो भी कवर उपलब्ध था, उसका प्रयोग करते हुए भारी गोलीबारी झेल रहे सेक्शन नं.-3 की सहायता करने के लिए आगे बढ़ती रही। जल्द ही इस पार्टी ने माओवादियों को दायें किनारे से घेर लिया और उन्हें मुंहतोड़ जवाब देते हुए उनके साथ कड़ी जवाबी कार्रवाई की। सैनिकों की इस साहसी कार्रवाई ने माओवादियों को रक्षात्मक मोड़ पर ला दिया। इस बीच, नक्सलियों का एक समूह भारी गोलीबारी के साथ नाले की ओर आगे बढ़ा और उन्होंने उन सैनिकों में संध लगाने के इरादे से नाले में रक्षात्मक पोजीशन ले ली, जो ऊपर की ओर बढ़ते सैनिकों को सहायता दे रहे थे। लेकिन, सब इंस्पेक्टर अरुण कुमार, जो सजग और सतर्क थे, ने उनके इरादे को भांप लिया और उन्होंने कांस्टेबल इंद्रजीत तिवारी और कांस्टेबल श्यामानंद प्रसाद के साथ, सामरिक पोजीशन ली और खुद को नक्सलियों के खिलाफ जवाबी हमला शुरू करने के लिए फिर से अच्छी तरह संगठित कर लिया, ये नक्सली भारी गोलीबारी कर रहे थे और उनकी ओर आगे बढ़ रहे थे, लेकिन सब इंस्पेक्टर अरुण की इस साहसी और दृढ़ टीम ने अपनी जान की परवाह को दरकिनार करते हुए, उन्हें जोरदार जवाब दिया और कम लाभप्रद स्थिति अर्थात् अपेक्षाकृत कम ऊंचाई पर होने के बावजूद नक्सलियों को आगे बढ़ने से रोका और उन्हें वापस जाने के लिए मजबूर कर दिया। चूंकि, माओवादी बैक फुट पर आ चुके थे, इसलिए जवाबी हमला करने का यह सबसे अच्छा समय था। श्री विपुल पांडे, श्री रामेंद्र, सब इंस्पेक्टर सनोज चौधरी ने सैनिकों को फिर से संगठित किया तथा भयभीत करने वाली गोलीबारी के सामने निर्भीक साहस प्रदर्शित करते हुए और अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना, भागते हुए माओवादियों का जोरदार तरीके से पीछा किया। उन्होंने भारी गोलीबारी की तथा वे गोलीबारी और आगे बढ़ने की चालों को इस्तेमाल करते हुए जंगल में आगे बढ़ गए। अंततः सैनिकों की अत्यधिक आक्रामकता और जवाबी कार्रवाई को भांपते हुए माओवादी घने जंगल का कवर लेते हुए भाग गए और अपने पीछे भारी मात्रा में विस्फोटक हथियार और गोला-बारूद छोड़ गए। यह मुठभेड़ लगभग 03 घंटे तक चली। श्री विपुल पांडे, श्री रामेन्द्र, सब इंस्पेक्टर अरुण कुमार, सब इंस्पेक्टर सनोज चौधरी और असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर अभिषेक वीरतापूर्वक लड़े और उन्होंने विपत्ति के समय समन्वय और सामंजस्य के अनुकरणीय स्तर का प्रदर्शन किया तथा सैनिकों में असाधारण वीरता का संचार किया। कांस्टेबल अनोज ओझा, कांस्टेबल मनीष रजवार, कांस्टेबल नरेश तिग्गा, कांस्टेबल इंद्रजीत तिवारी, कांस्टेबल छोटू यादव, कांस्टेबल श्यामानंद प्रसाद, कांस्टेबल मनोज कुमार बावरी और कांस्टेबल मिथुन कुमार रवि ने अपने कमांडरों के साथ मिलकर दुस्साहसिक ढंग से लड़ाई लड़ी और नक्सलियों की भारी गोलीबारी के बीच अपनी जान की परवाह किए बिना निर्भीक बहादुरी दिखाई तथा उनके

आक्रामक कार्यवाई का माकूल जवाब दिया। टीम के कमांडरों और उनकी टीम की अच्छी तरह से समन्वित योजना, संकट के समय उसका क्रियान्वयन और अनुकरणीय सामंजस्य, बहादुरी और जोशपूर्ण कार्यवाई के परिणामस्वरूप सीपीआई (माओवादी) के कोयल शंख जोन के खूंखार सब-जोनल कमांडर मारे गए, जिनके नाम निम्नानुसार हैं:—

(क) श्रवण यादव उर्फ योगेंद्र यादव	उसके खिलाफ कुल 41 मामले दर्ज थे
(ख) मदन यादव उर्फ मजनु	उसके खिलाफ कुल 24 मामले दर्ज थे
(ग) शिवलाल यादव	उसके खिलाफ कुल 30 मामले दर्ज थे
(घ) आशीष यादव उर्फ राजेश यादव	उसके खिलाफ कुल 02 मामले दर्ज थे
(ङ.) नरसिंह यादव	उसके खिलाफ कुल 02 मामले दर्ज थे

उपर्युक्त के अलावा, एके 47, इंसास राइफल जैसे अत्याधुनिक हथियार और भारी मात्रा में गोला-बारूद भी बरामद किया गया। इन खूंखार उग्रवादियों ने आतंक का माहौल बना रखा था और उत्तर लातेहार क्षेत्र में इसकी मजबूत पकड़ थी। उनकी मौत से उत्तर लातेहार में अमन और चैन स्थापित हुआ है तथा उस क्षेत्र में माओवादियों का जनाधार लगभग समाप्त हो गया है। इस प्रकार नेतृत्व के अभाव ने माओवादी कमांडरों को उत्तर लातेहार सबजोन (कोयल शंख क्षेत्र के) का विलय सीपीआई (माओवादी) की मध्य जोन कमेटी के साथ करने पर मजबूर कर दिया, जैसाकि कोयल शंख जोन समिति की चौथी बैठक से संबंधित जब्त किये गए नक्सली साहित्य से स्पष्ट होता है। बाद में, उस मुठभेड़ में घायल हुए एक और सब-जोनल कमांडर बीरेंद्र शंकर ने भी आत्मसमर्पण कर दिया। आईपीसी की धारा 147/148/149/342/353/307, आयुध अधिनियम की धारा 25 (1-ए) (1-बी) ए/26/27/35, यूएपी एक्ट की धारा 10/13/18/20 और सीएलए अधिनियम की धारा 7(i)(ii) के अंतर्गत हेरहंज पुलिस स्टेशन में मामला संख्या 14/18 दिनांक 04.04.18 की एफआईआर में इस वीरतापूर्ण प्रकरण को विस्तार से बताया गया है। यहां यह उल्लेख करना उचित है कि भयंकर मुठभेड़ में मारे गए पांच खूंखार उग्रवादियों में से तीन उग्रवादियों पर, झारखंड सरकार ने जीवित गिरफ्तार करने या मारने पर पांच लाख रुपये के इनाम (प्रत्येक पर) की घोषणा की थी।

सब इंस्पेक्टर अरुण (झारखंड जगुआर के एजी-3), सब इंस्पेक्टर सनोज चौधरी, ओसी हेराहंज पुलिस स्टेशन, असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर अभिषेक (झारखंड जगुआर के एजी-3), कांस्टेबल मनीष रजवार, कांस्टेबल अनोज कुमार ओझा, कांस्टेबल नरेश तिग्गा, कांस्टेबल इंद्रजीत तिवारी, कांस्टेबल श्यामानंद प्रसाद गुप्ता, कांस्टेबल छोटू यादव, कांस्टेबल मिथुन कुमार रवि और कांस्टेबल मनोज कुमार बाउरी ने उपर्युक्त मुठभेड़ में अपने वीरतापूर्ण कृत्य, आक्रामक नेतृत्व और टीम भावना के फलस्वरूप सेवा के उद्देश्य और नेतृत्व का बहुत उच्च स्तर निर्धारित किया, जो प्रत्येक बल कार्मिक के लिए एक आदर्श बने रहेंगे।

इस ऑपरेशन में सर्व/श्री अरुण कुमार, सब इंस्पेक्टर, सनोज कुमार चौधरी, सब इंस्पेक्टर, अभिषेक कुमार, असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर, मनीष रजवार, कांस्टेबल, अनोज कुमार ओझा, कांस्टेबल, नरेश तिग्गा, कांस्टेबल, इंद्रजीत तिवारी, कांस्टेबल, श्यामानंद प्रसाद गुप्ता, कांस्टेबल, छोटू यादव, कांस्टेबल, मनोज कुमार बावरी कांस्टेबल और मिथुन कुमार रवि, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 04/04/2018 से दिया जाएगा।

(संख्या 11020/108/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 100-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, महाराष्ट्र पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	मिटू नामदेव जगदले	सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	सुरपत बावाजी वड्डे	नायक	वीरता के लिए पुलिस पदक
03	आशीष मारोती हलामी	पीसी	वीरता के लिए पुलिस पदक

04	विनोद चैतराम राउत	पीसी	वीरता के लिए पुलिस पदक
05	नंदकुमार उत्तरेश्वर अगरे	पीसी	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

पीएसआई मिटू नामदेव जगदले, एनपीसी/2628 सुरपत वड्डे, पीसी/5954 आशीष मारोती हलामी, ये सभी स्पेशल ऑपरेशन स्क्वाड (सी-60) गढ़चिरोली में तैनात थे और पीसी/4190 विनोद चैतराम राउत और पीसी/4216 नंदकुमार अगरे क्यूआरटी पेंडारी में तैनात थे।

दिनांक 24.07.2016 को पीएसआई मिटू नामदेव जगदले, पार्टी कमांडर सुरपत वड्डे और 19 पुलिस कर्मियों के साथ गढ़चिरोली से निकले और एंटी-नक्सल ऑपरेशन चलाने के लिए एओपी करवाफा पहुंचे। उपरोक्त पुलिस पार्टी के साथ एक अन्य पुलिस पार्टी अर्थात् क्यूटीआर पेंडारी और करवाफा शामिल हो गई और फिर दोनों दल दिनांक 27.07.2016 को एओपी गढ़ा (फू) पहुंच गए।

भाकपा (माओवादी) समूहों के नक्सलियों ने जिले में 28 जुलाई से 3 अगस्त के दौरान बंद का आह्वान किया था। नक्सली हर साल इस अवधि के दौरान, कानून और व्यवस्था को बिगाड़ने के लिए और अपनी हिंसक गतिविधि शुरू करने के लिए बंद का आह्वान करते हैं।

पीएसआई जगदले द्वारा प्राप्त विश्वसनीय सूचनाओं के आधार पर, पुलिस दल दिनांक 28.07.2016 को गढ़ा (फू) से भीमपुर के जंगल में एंटी-नक्सल ऑपरेशन चलाने के लिए निकल पड़े। भीमपुर के जंगल में पहुंचने के बाद, 3 समूह बनाए गए थे। 9 कार्मिकों वाले एक समूह का नेतृत्व पार्टी कमांडर एनपीसी/2628 सुरपत वड्डे कर रहे थे, जबकि एक अन्य समूह जिसमें पीसी/5954 आशीष हलामी सहित 11 पुलिसकर्मी शामिल थे, का नेतृत्व पीएसआई मिटू जगदले कर रहे थे। तीसरा समूह जिसमें पीसी/4190 विनोद राउत, पीसी/4216 नंदकुमार अगरे सहित 17 पुलिसकर्मी शामिल थे, का नेतृत्व क्यूआरटी पेंडारी के पार्टी कमांडर एचसी/161 कृष्णा शेंडे कर रहे थे। फिर इन 3 समूहों ने भीमपुर के जंगल में 3 अलग-अलग दिशाओं में एंटी-नक्सल अभियान शुरू किया।

करीब 10.30 बजे पार्टी कमांडर सुरपत वड्डे की अगुवाई वाले पुलिस दल पर सशस्त्र नक्सलियों ने अचानक गोलीबारी शुरू करके हमला कर दिया। पुलिस पार्टी ने तुरंत ही जंगल में पोजीशन ले ली और देखा कि ऑलिव ग्रीन वर्दी में 30 से 40 नक्सली उन पर गोलीबारी कर रहे हैं। पुलिस पार्टी ने सुनिश्चित किया कि हमलावर सीपीआई (माओवादी) समूह से संबंध रखते हैं। इसलिए, अब पीएसआई मिटू जगदले ने आत्मसमर्पण करने की अपील की, लेकिन नक्सलियों ने पुलिस द्वारा की गई अपील को नजरअंदाज कर दिया और पुलिस पार्टी पर गोलीबारी करना जारी रखा। नक्सलियों को आपस में जोर से कहते सुना गया "इंदिरा, रमेश, नीलेश, पुलिसकर्मियों को मत जाने दो, उन्हें मार डालो और उनके हथियार और गोला-बारूद छीन लो। महेश ज्योति, आरती, तुम सब पुलिस पार्टी को बाईं ओर से कवर करो और सुनिश्चित करो कि वे मारे जाएं"। इस बीच, नक्सलियों ने तेजी से गोलीबारी शुरू करके पीएसआई जगदले और उनके स्टॉफ पर हमला कर दिया। इसके अतिरिक्त, पार्टी कमांडर सुरपत वड्डे की पार्टी के 3 से 4 सदस्यों को भी नक्सलियों द्वारा निशाना बनाया जा रहा था। इसलिए, इन पुलिसकर्मियों को सुरक्षा प्रदान करने के लिए, पीएसआई जगदले ने अपनी पार्टी के कुछ सदस्यों के साथ अपनी जान को जोखिम में डाल दिया और साथ ही साथ हमला कर रहे नक्सलियों की दिशा में नियंत्रित गोलीबारी शुरू कर दी। ऐसी भयावह स्थिति में पुलिसकर्मी अपनी जान की बाजी लगाकर नक्सलियों को मुंहतोड़ जवाब दे रहे थे, चूंकि सभी 3 पुलिस पार्टियों द्वारा जवाबी कार्रवाई बढ़ती जा रही थी, इसलिए नक्सलियों के पास जंगल में अंदर भागने के अलावा कोई दूसरा विकल्प नहीं था। नक्सलियों और पुलिस पार्टी के बीच गोलीबारी आधे घंटे तक चली।

इसके बाद, पीएसआई मिटू जगदले ने सभी पुलिस कार्मिक पार्टियों को सावधानी से एक जगह पर इकट्ठा होने के लिए सूचित किया। फिर उन्होंने मुठभेड़ में शामिल पुलिस कार्मिकों की स्थिति का आकलन किया। यह पता चला कि पीसी/5488, कैलाश गेडाम, पीसी/4219, नंदकुमार अगरे और पीएसआई जगदले को गोलीबारी के दौरान पोजीशन लेते हुए चोटें आईं और बाकी कार्मिक सुरक्षित थे और उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुंचा था।

तत्पश्चात, पुलिस कार्मिकों ने तलाशी अभियान के दौरान एसओपी का पालन करते हुए घटनास्थल की तलाशी ली। तलाशी अभियान के दौरान, ऑलिव ग्रीन वर्दी में एक महिला नक्सली जमीन पर बेहोश पड़ी मिली, जिसके समीप 12 बोर बंदूक, 12 बोर बंदूक के 20 खाली कारतूस, डेटोनेटर के 3 पीस, 12 बोर बंदूक के 2 खाली केस आदि पड़े हुए थे।

पुलिस पार्टी ने निम्नलिखित गोलाबारूद यथा एकेएम राइफल के 356 राउंड, एसएलआर के 65 राउंड, यूबीजीएल के 2 सेल एकत्र किए, इसके अलावा क्यूआरटी, पेंडारी ने एकेएम राइफल के 229 राउंड और एसएलआर के 140 राउंड एकत्र किए। घटना स्थल से जब्त की गई सामग्री के साथ पुलिस पार्टी लगभग 07.00 बजे एओपी गढ़ा (फू) पहुंची। महिला नक्सली को तुरंत गढ़ा (फू) के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया। लेकिन, चूंकि चिकित्सा अधिकारी उपलब्ध नहीं था, इसलिए महिला नक्सली को इलाज के लिए जनरल हॉस्पिटल, गढ़चिरोली में स्थानांतरित कर दिया गया।

बाद में महिला नक्सली के शव की पहचान करेम, तालुका एतापल्ली, जिला गढ़चिरोली में इंदिरा उर्फ मेस्सी सन्नू कोरामी, प्लाटून नंबर 3 की दलम सदस्या, उम्र 21 वर्ष के रूप में की गई।

भीमपुर के एक जंगल में उपरोक्त एंटी-नक्सल ऑपरेशन को नक्सल शहीद सप्ताह के दौरान शुरू किया गया था, जिसमें पुलिस कार्मिकों ने अपनी जान को भारी जोखिम में डालकर उत्कृष्ट साहस और अपने कर्तव्यों के प्रति समर्पण भावना का प्रदर्शन किया और मिशन को सफलतापूर्वक पूरा किया। पीएसआई मिठू नामदेव जगदले द्वारा सुरपत वड़डे, आशीष हलामी, विनोद राउत और नंदकुमार अगरे के साथ मिलकर दिखाए गए असाधारण साहस के फलस्वरूप नक्सलियों का सफाया हुआ तथा हथियार और गोला-बारूद जब्त किया गया।

इस ऑपरेशन में सर्व/श्री मिठू नामदेव जगदले, सब इंस्पेक्टर, सुरपत बावाजी वड़डे, नायक, आशीष मारोती हलामी, पीसी, विनोद चैतराम राउत, पीसी और नंदकुमार उत्तरेश्वर अगरे, पीसी ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 28.07.2016 से दिया जाएगा।

(संख्या 11020/100/2017-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 101 -प्रेज/2020—राष्ट्रपति, महाराष्ट्र पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	डॉ. एमसीवी महेश्वर रेड्डी, आईपीएस	अपर पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	समरसिंह द्वारकोजीराव साल्वे	उप पुलिस अधीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक
03	अविनाश अशोक कांबले	एनपीसी	वीरता के लिए पुलिस पदक
04	वसंत बुछ्या अत्रम	पीसी	वीरता के लिए पुलिस पदक
05	हामित विनोद डॉंगरे	पीसी	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

डॉ. एमसीवी महेश्वर रेड्डी, अपर पुलिस अधीक्षक, ऑपरेशन को विश्वसनीय जानकारी मिली थी, कि भारी मात्रा में स्वचालित हथियारों से लैस लगभग 100-120 नक्सलियों के एक समूह ने दिनांक 31.10.2017 की रात को मारकनार गांव से होते हुए फुलनार गांव में प्रवेश किया है। आत्मसमर्पण करने वाले नक्सलियों से पूछताछ के आधार पर, उनकी मौजूदगी के संभावित इलाकों का अनुमान लगाया गया और तदनुसार, ऑपरेशन शुरू किया गया। ऑपरेशन का संभावित क्षेत्र कोपरशी जंगल क्षेत्र था; जो अबूज माद का हिस्सा है और नारायणपुर-जिला, छत्तीसगढ़ का सीमावर्ती क्षेत्र है। इस क्षेत्र को नक्सलियों की बहुल्यता और स्वतंत्रता वाला क्षेत्र माना जाता है, क्योंकि गढ़चिरोली नक्सलियों के सभी शीर्ष नेतृत्व इस क्षेत्र में ठहरते हैं। इसके अलावा, इस क्षेत्र में पिछले ऑपरेशनों में से अधिकांश में पुलिस कार्मिकों को नुकसान हुआ है। 22 मार्च 2015 को, कई वर्षों के बाद पुलिस पार्टी ने इस क्षेत्र में प्रवेश करने का साहस उठाया, लेकिन नक्सलियों द्वारा घात लगाकर हमला किया गया और इस घटना में 2 पुलिस कर्मियों ने शहादत प्राप्त की। एक बार फिर, 3 मई, 2017 को एक और प्रयास किया गया, लेकिन फिर से पुलिस पार्टी पर घात लगाकर हमला किया गया और 3 पुलिसकर्मियों को गंभीर चोटें आईं। अतिरिक्त बल के रूप में माइन प्रोटेक्टेड व्हीकल (एमपीवी) द्वारा भेजी गई एक अन्य पार्टी भी आईईडी हमले की चपेट में आ गई और 1 पुलिसकर्मी शहीद हो गया तथा 21 पुलिसकर्मी बुरी तरह घायल हो गए। इसलिए, बल का मनोबल बढ़ाने के लिए इस क्षेत्र में ऑपरेशन की सफलता हासिल करना जरूरी हो गया था। इसलिए, सावधानीपूर्वक योजना बनाने और सही अवसर की प्रतीक्षा करने के बाद, डॉ. अभिनव देशमुख आईपीएस, एसपी गढ़चिरोली द्वारा इस ऑपरेशन का आदेश दिया गया, जिसका नेतृत्व डॉ. एमसीवी महेश्वर रेड्डी, आईपीएस, अपर पुलिस अधीक्षक(ऑपरेशंस) द्वारा व्यक्तिगत रूप से स्वयं किया गया।

दिनांक 1.11.2017 की रात को डॉ. एमसीवी महेश्वर रेड्डी, अपर पुलिस अधीक्षक के नेतृत्व में यह ऑपरेशन शुरू किया गया था। इसमें उप पुलिस अधीक्षक, श्री समरसिंह साल्वे, एपीआई राजेश खांडवे, पीएसआई अजीत पाटिल, पीएसआई रणखंब, मोतीराम मदावी पार्टी, राकेश हिचामी पार्टी, नागेश टेकम पार्टी, संजय वाचामी पार्टी और क्यूआरटी भमरागढ़ शामिल थे। सभी समूह भामरगढ़ उप-मंडल के तहत

एओपी कोठी के अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत पोयार कोठी, फुलनार और कोपरशी गाँवों के आसपास के वन क्षेत्र में एंटी-नक्सल ऑपरेशन चलाने के लिए निजी वाहनों में सवार होकर निकल पड़े। वे रात में लगभग 11 बजे अरेवाड़ा के जंगल में पहुंच गए और फिर उन्होंने वाहनों को छोड़ दिया। ऑपरेशन टीमें पूरी रात चलीं और सुबह करीब 5 बजे गुंडरवाही बस क्षेत्र में पहुंचीं। इसके बाद, उन्होंने डॉ. एमसीवी महेश्वर रेड्डी, उप पुलिस अधीक्षक, श्री समीरसिंह साल्वे और असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर, मोतीराम मदावी के नेतृत्व में 3 टीमों का गठन किया और वन क्षेत्र की तलाशी शुरू कर दी गई। यह निर्णय लिया गया कि सभी 3 टीमों वायरलेस वीएचएफ संचार के माध्यम से संपर्क में रहेंगी और जरूरत के समय में एक-दूसरे की मदद करेंगी और स्वतः कटऑफ पार्टी के रूप में कार्य करेंगी। 2 नवंबर की रात को सभी 3 टीमों ने अपने क्षेत्र की तलाशी का कार्य पूरा किया और एक पूर्व निर्धारित स्थान पर एक साथ आ गए और वहां आराम किया। 3 नवंबर 2017 को सुबह के शुरुआती घंटों में फिर से ऑपरेशन शुरू किया गया। इलाके की तलाशी के लिए फिर से तीन टीमें बनाई गईं।

डॉ. महेश्वर रेड्डी के नेतृत्व वाली टीम सेंटर में, समीर साल्वे के नेतृत्व वाली टीम दाईं तरफ और एसआई मोतीराम मदावी के नेतृत्व वाली टीम बाईं ओर थी। प्रातः लगभग 11.30 बजे बाईं तरफ वाली टीम नक्सलियों के संपर्क में आई और फायरिंग शुरू हो गई। एनपीसी/2187 अविनाश कांबले, पीसी/5231 वसंत अत्रम और पीसी/5575 हामित डोंगरे पार्टी में सबसे आगे थे और उन्होंने असाधारण साहस दिखाया और नक्सलियों पर नियंत्रित गोलीबारी शुरू कर दी। अविनाश, डोंगरे ने अपने यूबीजीएल का बहुत प्रभावी ढंग से उपयोग किया और यूबीजीएल शैलों से उनकी सटीक गोलीबारी के कारण, नक्सली उस स्थान से दूर चले गए और नक्सलियों पर उनके संयुक्त हमले के कारण पार्टी सुरक्षित रह गई। जब मोतीराम मदावी टीम द्वारा गोलीबारी की जा रही थी, तभी डॉ. एमसीवी महेश्वर रेड्डी, अपर पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन) के निर्देश पर, शेष 2 टीमें अलग-अलग दिशाओं से गोलीबारी वाले स्थान की ओर बढ़ने लगीं। डॉ. एमसीवी महेश्वर रेड्डी और समरसिंह साल्वे की अगुवाई वाले समूहों की नक्सलियों से मुठभेड़ हो गई और नक्सलियों ने उन पर गोलीबारी कर शुरू कर दी। तदनुसार, पुलिस दल ने भी आत्मरक्षा में जवाबी कार्रवाई की, और नक्सलियों की दिशा में गोलाबारी की। नक्सलियों के साथ जबाबी गोलीबारी के समय, समरसिंह साल्वे को गोलीबारी की जगह तक पहुंचने और मोतीराम पार्टी को मजबूत करने के लिए कहा गया। डॉ. एमसीवी महेश्वर रेड्डी की टीम पुलिस टीमों के लौटने वाले मार्ग की सुरक्षा के लिए वहाँ पहुंच गई। स्थानीय ग्रामीणों के माध्यम से नक्सलियों तक सूचना पहुंच गई कि पुलिस ने लौटने वाले मार्ग को सुरक्षित कर लिया है और इसलिए नक्सली लौटने वाली पुलिस टीमों पर घात नहीं लगा सके, जो उन्होंने पिछले मौकों पर किया था। इस बीच, मौके पर 2 टीमों ने क्षेत्र की तलाशी शुरू कर दी थी और एक पुरुष नक्सली का शव, एसएलआर राइफल, 1 कार्बाइन राइफल, 1 एयर राइफल और भारी मात्रा में नक्सल सामग्री और साहित्य बरामद किया गया। दोनों टीमों को सभी जब्त सामग्री को समेटने और बिना समय बर्बाद किए लौटने का आदेश दिया गया। पुलिस द्वारा किसी भी प्रकार की देरी करने पर, नक्सलियों को योजना बनाने और घात लगाने के लिए समय मिल सकता था और फिर दोनों टीमों मौके से लौटने लगीं। चूंकि, लौटने वाली पार्टियों पर गोलीबारी करने के लिए उच्च प्लेटफॉर्म वाले अम्बुश क्षेत्र को डॉ. महेश्वर रेड्डी टीम द्वारा कवर कर लिया गया था, इसलिए नक्सली एक ऐसे क्षेत्र में आ गए, जो घात के लिए उपयुक्त नहीं था। उन्होंने लौटने वाली पार्टियों पर गोलियां चलाईं, जिसमें गोली के छर्रे कमांडो पीसी/3117 साईनाथ मुकुटे के दाहिने पैर में लग गए। अब मौके से जल्दी हटना जरूरी था। समरसिंह साल्वे की टीम और मोतीराम की टीम ने नक्सलियों को मुंहतोड़ जवाब देने के लिए शीघ्र ही गोलाबारी शुरू कर दी। इस बीच, एसआई/1331 मोतीराम मदावी भी मौके पर घायल हो गए।

डॉ. एमसीवी महेश्वर रेड्डी ने व्यक्तिगत रूप से नक्सलियों के खिलाफ लड़ाई में सक्रिय भूमिका निभाई और यह सुनिश्चित किया कि पार्टी में कोई भी हमले को शिकार न हो पाए। उन्होंने सभी कमांडरों को एकत्र किया और उन्हें मौके से सुरक्षित रूप से निकलने की अगली योजना के बारे में निर्देश दिए। उन्होंने सक्रिय रूप से आगे से नेतृत्व किया और पार्टियों को सुरक्षित क्षेत्र में ले गए। 3 नवंबर 2017 की रात को, सभी टीमों ने कोपरशी जंगल में आराम किया। लगभग 24 घंटे तक कोई भोजन नहीं करने के बावजूद, सभी दल 10 किलोमीटर तक नक्सली के शव को लेकर सुरक्षित क्षेत्र में पहुंचने तक चलते रहे। अगले दिन सुबह, सभी टीमों ने परालकोटा नदी को पार किया और कोठी एओपी पहुंचे, जहाँ से नक्सली के शव, जब्त सामग्री और घायल व्यक्तियों को हवाई मार्ग से गढ़चिरौली मुख्यालय ले जाया गया।

पुलिस दलों ने मौके से निम्नलिखित सामग्री जब्त की :—

1. एसएलआर राइफल-1, 2. कार्बाइन राइफल-1, 3. एयरगन-1, 4. एसएलआर राइफल मैगजीन-1, 5. एसएलआर राइफल लाइव राउंड-08, 6. डब्ल्यूटीएस-3, 7. सोलरप्लेट-5, 8. नक्सल डंगरी-2, 9. नक्सल पिटोस-3, 10. रेडियो-1, 11. डब्ल्यूटी चार्जर-2, 12. रेड कलर हॉर्स-1 और मेडिसिन बॉक्स के साथ-साथ अन्य साहित्य आदि। इनके अलावा, उन्हें एक शव भी मिला। खुफिया विभाग (एसआईडी) ने सूचना दी कि मुठभेड़ में घायल हुए एक और नाज़ल की 1 दिन बाद मौत हो गई।

कोपरशी मुठभेड़ में हासिल सफलता, सावधानीपूर्वक आयोजना करने और साथ ही अपर पुलिस अधीक्षक डॉ. एमसीवी महेश्वर रेड्डी, उप पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन) श्री समरसिंह साल्वे, एनपीसी/2187 अविनाश कांबले, पीसी/5231 वसंत अत्रम और पीसी/5575 हामित डोंगरे द्वारा एक दूसरे की रक्षा के लिए प्रदर्शित असाधारण साहस का परिणाम थी। पूरे ऑपरेशन में सभी 5 पुलिसकर्मियों ने अपने सामरिक कौशल का प्रदर्शन करते हुए पुलिस बल की तरफ न्यूनतम नुकसान सुनिश्चित किया। इस सफल ऑपरेशन के बाद, यह क्षेत्र, जिसे कि नक्सलियों की स्वतंत्रता वाले क्षेत्र के रूप में जाना जाता था, अब पुलिस और प्रशासन के लिए एक प्रतिबंधित क्षेत्र नहीं बना रहेगा। इस

क्षेत्र के लोग क्षेत्र में नक्सली स्वतन्त्रता के मिथक को तोड़ने के लिए इस ऐतिहासिक मुठभेड़ को हमेशा याद करेंगे। यह नोट करना उपयुक्त होगा कि पुलिस ने तब तक तलाश नहीं की, जब तक वे नक्सलियों के संपर्क में नहीं आए। सटीक खुपिया सूचना के बिना, नक्सलियों के पदचिन्हों पर नज़र रखने जैसी रणनीति को अपना कर नक्सलियों के स्थान तक पहुंचा गया। यह मुठभेड़ सही मायने में नक्सलियों पर पुलिस की एक सजिकल स्ट्राइक है।

इस ऑपरेशन में, सर्व/श्री डॉ. एमसीवी महेश्वर रेड्डी, आईपीएस, अपर पुलिस अधीक्षक, समरसिंह द्वारकोजीराव साल्वे, उप पुलिस अधीक्षक, अविनाश अशोक कांबले, एनपीसी, वसंत बुछ्या अत्रम, पीसी और हामित विनोद डोंगरे, पीसी ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 02/11/2017 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/44/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 102-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, मणिपुर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक/ वीरता के लिए पुलिस पदक का चौथा बार प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	बी लुंथांग वाईफेई	इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक का चौथा बार
02	मो. समादुर रहमान	हवलदार	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

कूकी नेशनल आर्मी (इंडिया), संक्षिप्त नाम केएनए(आई), नेकजंग हाओकिप नाम के एक व्यक्ति के नेतृत्व वाला एक पहाड़ी आधारित आतंकवादी संगठन है और इसकी सहायता फोड़पी गांव के एक हेमिनिथांग हाओकिप और अन्य कर रहे थे, तथा यह संगठन लीमातक क्षेत्र के ग्रामीणों, सरकारी ठेकेदारों, एनएचपीसी के अधिकारियों तथा मणिपुर के बिष्णुपुर और चुराचंदपुर जिले में लोकतक परियोजना क्षेत्र में व्यापारियों को आतंकित कर रहा था। संगठन वसूली, फिरौती के लिए अपहरण जैसी नुकसान पहुंचाने वाली गतिविधियों में लिप्त था। हाल के दिनों में, उन्होंने दो व्यक्तियों नामतः एनएचपीसी के ठेकेदार राजेश सिंह और उनके ड्राइवर डैनियल पमेई का अपहरण किया और उनके परिवारों से बड़ी रकम की मांग की।

अपहृत व्यक्तियों को छुड़ाने तथा साथ ही नेकजंग और हेमिनिथांग हाओकिप के नेतृत्व वाले केएनए(आई) की गतिविधियों पर अंकुश लगाने और बंद करने के लिए, बिष्णुपुर जिले के पुलिस अधीक्षक द्वारा कमांडो की एक विशेष टीम को यह कार्य सौंपा गया। इस टीम की कमान इंस्पेक्टर लुंथांग वाईफेई को सौंपी गई तथा इसमें सहायता (i) ए.एस.आई. पीएच, सुनील सिंह, (ii) हवलदार, नं.1207765, मो. समादुर रहमान (iii) हवलदार, नं. 1299017, सैमुअल कामेई (iv) हवलदार, नं. 1299078, एस. हेमंतसिंह कर रहे थे, जो कि सीडीओ-बीपीआर से थे। बहुत जल्द, कमांडो टीम ने उनके कार्य करने के तरीके, गतिविधि और संगठन के छिपने के संभावित ठिकानों और उनके कब्जे में परिष्कृत हथियारों के बारे में पर्याप्त जानकारी एकत्र कर ली थी।

सूचना मिलने पर, विशेष टीम ने कार्रवाई शुरू की और विशेष ऑपरेशन के लिए एक बड़े ऑपरेशनल ग्रुप को बुलाया गया, जिसमें बिष्णुपुर से 06 टीमों और इंफाल पश्चिम जिले से 02 अन्य टीमों शामिल थीं। इम्फाल पश्चिम जिले की टीमों को क्षेत्र की घेराबंदी के लिए चुना गया और तदनुसार, उन्हें तुरंत वहाँ तैनात किया गया। इंस्पेक्टर लुंथांग वाईफेई के नेतृत्व वाली विशेष टीम और बिष्णुपुर की टीमों ने अलग-अलग तरफ से खोज अभियान शुरू किया।

जब इंस्पेक्टर लुंथांग वाईफेई के नेतृत्व वाली विशेष टीम लोईलामकोट गाँव के जंक्शन पर थी, एक डीआई-टाटा जिसका रजिस्ट्रेशन एमएन04-ए1655 था, चुड़ाचंदपुर की ओर से नालोन गाँव की तरफ आई। पुलिस को देखते ही, दो युवक वाहन से बाहर कूद गए और उन्होंने पुलिस पर गोलियां चला दी तथा जंगल की ओर भागने की कोशिश की। पुलिस कार्मिक तुरंत जमीन पर लेट गए और कुछ देर तक पेट के बल लेटे रहे, लेकिन उन्होंने दोनों युवकों की गतिविधि पर पैनी नजर रखे रहे। अपने आपको संभालने के बाद, उन्होंने तुरंत युवकों का तेजी से पीछा किया और वे उन्हें डराने के लिए रुक-रुक कर हवा में फायरिंग करते रहे। घने जंगल में लगभग 300 मीटर तक उनका पीछा करने

के बाद, एक युवक को एक बड़ी चट्टान के पास घेर लिया गया और हवलदार मो. समादुर रहमान ने उसे आत्मसमर्पण के लिये कहा, लेकिन इसके बावजूद उसने उनकी ओर कुछ राउंड फायर किए। कोई विकल्प न देखकर, इंस्पेक्टर लुंथांग वाईफेई ने समादुर रहमान से कहा कि वे उसे आत्मसमर्पण करने के लिए बातों में उलझाए रखे और वे खुद अपनी जान जोखिम में डालकर, उन दोनों के बीच केवल बड़ी चट्टान को कवर बनाकर पीछे से रेंगते हुए चले गए। चट्टान पर पहुंचने पर, उन्होंने अचानक उसकी राइफल को पकड़कर और उसे जमीन पर दबाकर उस पर पीछे से काबू पा लिया। हवलदार समादुर रहमान भी तेजी से उसके पीछे दौड़े और उसकी राइफल छीन ली। दूसरा युवक जंगल में भाग निकला।

मौके पर वेरीफिकेशन करने पर, उसने अपनी पहचान फोड़पी गाँव के हेमिंथांग हाओकिप हेमिन, आयु 28 वर्ष पुत्र मंगलाल हाओकिप के रूप में दी, जो कूकी नेशनल आर्मी (इंडिया), संक्षिप्त नाम केएनए(आई) का एक सक्रिय कौंडर है। हथियार की जाँच की गई और यह पाया गया कि वह एक एके-56 राइफल थी, जिसमें पांच लाइव राउंड के साथ भरी हुई मैगजीन लगी हुई थी।

पूरे इलाके की तलाशी लेने पर, 'एनेल्लो' के निशान वाला एक सफेद बैग मिला, जिसमें 5 (पांच) जिलेटिन की छड़ें, 24 (चौबीस) डेटोनेटर, एक मीटर लंबा 1 (एक) सेफ्टी फ्यूज तार और एक एमआई-5ए मोबाइल हैंडसेट, जिसमें उसके द्वारा बताया गए अनुसार एअरटेल का सिम कार्ड था और जिसका मोबाइल नंबर 7085376965 था, रखे हुए थे और इसके अतिरिक्त, बैग के पास से ए.के. गोला-बारूद के 3 (तीन) खाली केस भी पाए गए। औपचारिक जब्ती ज़ापन बनाकर उन्हें जब्त कर लिया गया।

यह लोकतक पुलिस स्टेशन में आईपीसी की धारा 400, आयुध अधिनियम 25(1-सी) और 5 विस्फोटक अधिनियम के तहत मामला एफआईआर संख्या 25(10)2018 के संदर्भ में है।

इस ऑपरेशन में, सभी अधिकारियों और कर्मियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, तथापि, बिष्णुपुर कमांडो की विशेष टीम के निम्नलिखित अधिकारी और कर्मियों ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अत्यंत साहस, समर्पण भावना, दृढ़ संकल्प और व्यावसायिक कौशल का प्रदर्शन किया। यदि बिष्णुपुर कमांडो के पुलिस अधिकारी ने दृढ़ संकल्प और अत्यंत साहस के साथ कार्य नहीं किया होता, तो खूंखार केएनए (आई) कौंडर को घने जंगल में गिरफ्तार नहीं किया जा सका होता, बल्कि वह हमारे अधिकारी और कर्मियों को भी मार सकता था। बिष्णुपुर कमांडो के अधिकारी और कर्मियों ने केवल असाधारण साहस का प्रदर्शन किया, बल्कि उन्होंने पुलिस विभाग के लिए प्रशंसा भी बटोरी। इसलिए, उनके उत्कृष्ट साहस, कर्तव्य के प्रति अत्यंत समर्पण भावना और वीरता के विशिष्ट कार्य के मद्देनजर, निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक दिए जाने की सिफारिश की जाती है, जिसके लिए वे हकदार हैं।

इस ऑपरेशन में सर्व/श्री बी. लुंथांग वाईफेई, इंस्पेक्टर और मो. समादुर रहमान, हवलदार ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 26.10.2018 से दिया जाएगा।

(संख्या 11020/96/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 103-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, ओडिशा पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	गगन बिहारी नायक	सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	कृष्णलोक बेहरा	हवलदार	वीरता के लिए पुलिस पदक
03	मुरली मनोहर दास	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
04	महेश्वर धाकड़	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
05	मनोहर भूमिया	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
06	सिबा प्रसाद नायक	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

07	भाबनी शंकर पटली	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
08	अर्जुन चन्द्र कुर्मी	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
09	बिनय कुमार मिश्रा	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
10	राजेश कुमार दीवान	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 04.11.2018 को दोपहर में पुलिस अधीक्षक, मलकानगिरि को विश्वसनीय स्रोत से एक सूचना मिली, कि कालीमेला दलम के प्रतिबंधित सीपीआई (माओवादी) कॉडर का एक समूह कालीमेला-पुलिस स्टेशन सीमा में पॉपुलर जोपी के तहत पॉपुलर वन क्षेत्र में घूम रहा है। यह (माओवादी) समूह पॉपुलर वन क्षेत्र और उसके आसपास शिविरों और बैठकों का आयोजन कर रहा था और स्थानीय आदिवासियों के बीच विध्वंसक भावना का प्रसार कर रहा था और इस तरह राज्य के खिलाफ युद्ध छेड़ने की कोशिश कर रहा था। सूचना मिलने पर, श्री जगमोहन मीणा, आईपीएस, एसपी, मलकानगिरि ने एसआई (ए) लक्ष्मीकांत नायक और एसआई (ए) गगन बिहारी नायक के नेतृत्व में एसओजी की दो टीमों का एक ऑपरेशन शुरू किया और ये दोनों टीमों उस क्षेत्र में तलाशी अभियान के लिए पॉपुलर वन क्षेत्र की ओर रवाना हो गईं।

ऑपरेशन पार्टी रात्रि में लगभग 2 बजे पॉपुलर वन क्षेत्र में पहुंच गई। जब क्षेत्र में कांबिंग ऑपरेशन चल रहा था, तब दिनांक 05.11.2018 को प्रातः लगभग 6 बजे, पार्टी ने सुबह रोशनी होने पर देखा कि कुछ महिला सदस्यों सहित 12 से 15 लोगों का एक सशस्त्र समूह, जिसमें से कुछ ने ऑलिव ग्रीन रंग की पोशाक पहनी हुई थी और उनके पास हथियार थे, ने जंगल में एक हेमलेट के पास डेरा डाल रखा है। पुलिस पार्टी ने इस बात की पुष्टि कर ली थी कि वे प्रतिबंधित सीपीआई (माओवादी) समूह के सदस्य हैं। फिर तुरंत पूरी पार्टी को 4 समूहों में बांटा गया नामशः (1) लेफ्ट कॉर्डन, (2) राइट कॉर्डन, (3) मुख्य फायरिंग ग्रुप, (4) असॉल्ट एंड कैरी ग्रुप। मुख्य फायरिंग समूह का नेतृत्व एसआई (ए) गगन बिहारी नायक कर रहे थे तथा असॉल्ट एंड कैरी ग्रुप का नेतृत्व हवलदार कृष्ण आलोक बेहरा कर रहे थे। तत्पश्चात, संदिग्ध नक्सलियों को ऊंची आवाज में आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया, लेकिन यह सब व्यर्थ रहा। एक बार फिर से, उन्हें आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया था, लेकिन इस बार नक्सलियों ने पुलिस पार्टी पर निशाना साधते हुए अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। उन्होंने हत्या करने के इरादे से ग्रेनेड भी फेंके और पुलिस टीम को बुरी तरह से हताहत करने के लिए आईईडी से विस्फोट भी किया। उनके द्वारा अचानक हमले करने, ग्रेनेड फेंके जाने और आईईडी विस्फोट करने की वजह से, कुछ पुलिस कार्मिकों को उनके शरीर पर स्प्लिंटर चोटें आईं। अपनी जान बचाने के लिए कोई दूसरा विकल्प न देखकर, पुलिस पार्टी ने रणनीतिक पोजीशन ले ली। रणनीति और योजना के अनुसार, सभी समूहों ने तुरंत रेंगना शुरू कर दिया और वे माओवादी समूहों द्वारा पुलिस पार्टी पर अंधाधुंध गोलीबारी के बावजूद माओवादियों के खिलाफ जवाबी कार्रवाई के लिए रणनीतिक स्थानों की ओर आगे बढ़ गए। माओवादियों को भागने से रोकने के लिए लेफ्ट कॉर्डन और राइट कॉर्डन पार्टी दोनों ने अपनी पोजीशन ले ली तथा उसके बाद, मुख्य फायरिंग ग्रुप और असॉल्ट एंड कैरी ग्रुप ने माओवादी समूह पर गोलीबारी शुरू कर दी और आत्मरक्षा में नियंत्रित गोलीबारी करते रहे। प्रतिबंधित सीपीआई (माओवादी) के सशस्त्र कॉडर और पुलिस पार्टी के बीच एक-दूसरे पर गोलीबारी लगभग एक घंटे तक जारी रही। जब गोलीबारी चल रही थी, उसी दौरान सैटेलाइट फोन पर पुलिस अधीक्षक, मलकानगिरि से उस इलाके की तलाशी लेने और किसी भी जवाबी हमले का जवाब देने के लिए अतिरिक्त सहायता बल भेजने का अनुरोध किया गया। इसके बाद, जब सीपीआई (माओवादी) कॉडरों की ओर से गोलीबारी रुक गई, तो पुलिस ने एक घंटे तक इंतजार किया और उसके बाद तलाशी अभियान चलाया गया। इलाके की तलाशी के दौरान पुलिस पार्टी को पांच शव जमीन पर पड़े हुए मिले। पुलिस पार्टी जमीन पर पड़े हुए व्यक्तियों की तरफ सावधानीपूर्वक गई और पाया कि ये शव 02 महिला कॉडर माओवादियों और 03 पुरुष कॉडर माओवादियों के हैं, जिन्हें बंदूक की गोली की चोटें आई हैं और उनके पास से एसएलआर राइफल-02, इन्सास राइफल-01, .303 राइफल-01, एसएलआर मैगज़ीन-06, इन्सास मैगज़ीन-02, टूटी इन्सास मैगज़ीन-01, एसएलआर बॉल गोला-बारूद-111 राउंड, इन्सास बॉल गोला-बारूद-33 राउंड, .303 बॉल गोला-बारूद-35 राउंड, एचई हेंड ग्रेनेड-03, डेटोनेटर-12 (तारों से जुड़े), डेटोनेटर-01 (बिना तार के), 01 टिफिन बम/क्लेमोर माइन, बिजली के तार, माओवादी साहित्य, दैनिक इस्तेमाल की वस्तुएं मिलीं। शवों के बराबर में किट बैग भी पड़े हुए थे। पुलिस ने मौके से माओवादी साहित्य जैसी कुछ अन्य सामग्री भी बरामद की। तलाशी अभियान पूरा होने के बाद पुलिस पार्टी रणनीतिक तरीके से मौके से वापस लौट गई।

सभी चार सदस्य स्वेच्छा से कॉर्डन समूहों का हिस्सा बने, हालांकि वे जानते थे कि इसके लिए उनका जीवन दांव पर लग सकता है। पुलिस की ओर से गोलीबारी शुरू होने से पूर्व ही कॉर्डन पार्टियां हावी पोजीशन हासिल करने के लिए सबसे पहले आगे बढ़ चुकी थी। माओवादियों की तरफ से हो रही गोलीबारी के बीच अन्य समूहों के साथ रेंग कर आगे बढ़ते हुए, वे खुले में होने के कारण शहीद हो सकते थे। ऑपरेशन को आगे अंजाम देने में, उन्हें स्प्लिंटर चोटें आईं, लेकिन फिर भी उन्होंने आदेशों का पूरा पालन किया। उन्होंने अवसर के अनुसार प्रदर्शन किया और इस कार्य के लिए उन्होंने खुले में आकर अपने जीवन को खतरे में डाला। यह वास्तव में एक वीरतापूर्ण कार्य था, क्योंकि माओवादियों द्वारा दागी गई गोलियों उन्हें निशाना बना सकती थीं, लेकिन उन्होंने अपने जीवन को जोखिम में डाला और हमारी पार्टी को सफलता मिली।

इस ऑपरेशन में सर्व/श्री गगन बिहारी नायक, सब इंस्पेक्टर, कृष्णलोक बेहरा, हवलदार, मुरली मनोहर दास, कांस्टेबल, महेश्वर धाकड़, कांस्टेबल, मनोहर भूमिया, कांस्टेबल, सिबा प्रसाद नायक, कांस्टेबल, भाबनी शंकर पटली, कांस्टेबल, अर्जुन चन्द्र कुर्मी, कांस्टेबल, बिनय कुमार मिश्रा, कांस्टेबल और राजेश कुमार दीवान, कांस्टेबल, ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 05.11.2018 से दिया जाएगा।

(संख्या 11020/195/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन

विशेष कार्य अधिकारी

सं. 104- प्रेज/2020—राष्ट्रपति, ओडिशा पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	राजेन्द्र चौधरी	सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	सुखीराम राणा	हवलदार	वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार
03	गणेश धारुआ	कमांडो	वीरता के लिए पुलिस पदक
04	रबिन्द्र कुमार परमानिक	कमांडो	वीरता के लिए पुलिस पदक
05	पदमानव रे	कमांडो	वीरता के लिए पुलिस पदक
06	मदन मोहन प्रधान	कमांडो	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 11.03.2019 को, कंधमाल जिले के तुमुदिबंदा पुलिस स्टेशन के अंतर्गत नाकुदिपारा, लेंगरामाहा, दैदारपट्टा, जनागढ़ा, रामपदार, बालीमुस्ती और दपाकिया के घने रिजर्व वन क्षेत्र में सीपीआई (माओवादी) की गतिविधियों के बारे में विश्वसनीय आसूचना संबंधी जानकारी पर कार्रवाई करते हुए, एक गहन काम्बिंग ऑपरेशन शुरू किया गया, जिसमें सं. 13, 32 पर एसओजी और डीवीएफ कंधमाल की तीन हमलावर टीमें शामिल थीं। जब पुलिस की तलाशी टीम वन क्षेत्र की तलाशी कर रही थी, तो दिनांक 13.03.2019 को लगभग सुबह 08.00 बजे छिपे हुए विद्रोहियों ने पहाड़ी क्षेत्र और घने जंगल का लाभ उठाते हुए स्वचालित हथियारों से अचानक बेवजह भारी गोलीबारी शुरू कर दी और दो मोर्चा से पुलिस टीम को शत्रु की गोलीबारी के प्रति अति संवेदनशील बनाते हुए पार्श्विक हमला करने का प्रयास किया। पुलिस टीम के छह सदस्यों को गंभीर चोटें आईं। सब इंस्पेक्टर (ए) राजेन्द्र चौधरी के नेतृत्व में पुलिस टीम ने संख्या में कम होने और दुर्गम क्षेत्र की सीमाओं के बावजूद बहादुरी से जवाबी हमला किया। श्री चौधरी ने दो कमांडो नामतः सी/2066 गणेश धारुआ और सी/379 पदमानव रे के साथ भारी गोलाबारी का सामना करते हुए अत्यधिक जोखिमपूर्ण सामने के हमले में शत्रु पर धावा बोल दिया और विद्रोहियों को पीछे हटने पर विवश कर दिया। हवलदार सुखीराम राणा ने दो कमांडो नामतः सी/582 रबिन्द्र कुमार परमानिक और सी/313 मदन मोहन प्रधान की दूसरी छोटी यूनिट का नेतृत्व किया और मुख्य पुलिस टीम से अलग-थलग हो जाने के गंभीर खतरे के बावजूद एक रणनीतिक आक्रमण करते हुए पार्श्विक हमले का सामना किया। हमलावर टीम के साहस के कारण माओवादी टिक नहीं सके और उन्होंने अपनी टीम के सदस्यों द्वारा की गई बचावकारी गोलीबारी का सहारा लेते हुए उस स्थान से बचकर भागना शुरू कर दिया। लीडर और टीम के सदस्य उस समय डटकर खड़े रहे, जब इसकी अत्यधिक आवश्यकता थी और इस प्रकार से वीरतापूर्वक कार्रवाई की, जिससे न केवल संख्या में अधिक और रणनीतिक रूप से बेहतर स्थिति वाले शत्रु को पीछे हटना पड़ा, अपितु पुलिस टीम ने न्यूनतम सम्पाश्विक क्षति के साथ उनको भारी नुकसान पहुंचाया। सफल ऑपरेशन की वजह से बीजीएन डिवीजन के लोकेकाबासी नाम के एक माओवादी काडर की मौत हुई, जिसके ऊपर ओडिशा सरकार ने 1,00,000/-रु. (एक लाख रु.) के इनाम की घोषणा कर रखी थी।

लीडर के साथ-साथ उपर्युक्त कमांडो ने शत्रु का सामना करते हुए उच्च कोटि के साहस और दृढ़निश्चय का प्रदर्शन किया और उन्होंने कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ते हुए, अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह भी नहीं की। इस प्रक्रिया के दौरान वे कई बार शत्रु की गोलीबारी के सामने आ गए, उनमें से कुछ लोगों को चोटें भी आईं, फिर भी यह उन्हें अपने कर्तव्य का निर्वहन करने से विचलित नहीं कर सका।

उनकी निडरतापूर्ण कार्यवाही ने न केवल शत्रु के अचानक हमले से पुलिस टीम की सुरक्षा सुनिश्चित की, अपितु इस ऑपरेशन की सफलता भी सुनिश्चित की।

इस ऑपरेशन में सर्व/श्री राजेन्द्र चौधरी, सब इंस्पेक्टर, सुखीराम राणा, हवलदार, गणेश धारुआ, कमांडो, रबिन्द्र कुमार परमानिक, कमांडो, पदमानव रे, कमांडो और मदन मोहन प्रधान, कमांडो ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किये जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 13.03.2019 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/207/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 105-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, पंजाब पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक / वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	गुरमीत सिंह चौहान, आईपीएस	अपर महानिरीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	बिक्रमजीत सिंह बरार	इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार
03	बलविन्दर सिंह	सब-इंस्पेक्टर (एलआर)	वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार
04	किरपाल सिंह	असिस्टेंट सब-इंस्पेक्टर (एलआर)	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

एक गुप्त सूचना प्राप्त हुई कि हरजिन्दर सिंह उर्फ विक्की गोंडर, प्रेम सिंह उर्फ प्रेमा लाहोरिया अपने साथियों के साथ राजस्थान-पंजाब की सीमा पर जिला फाजिल्का, अबोहर के क्षेत्र में छिपे हुए हैं। यहां पर यह उल्लेख करना प्रासंगिक है कि विक्की गोंडर और प्रेमा लाहोरिया कुख्यात गैंगस्टर थे और पंजाब तथा राजस्थान की मोस्ट वांटेड सूची में शामिल थे और उनके सिर पर इनाम था। वे वर्ष 2016 में अत्यधिक सुरक्षा वाली जेल, नाभा जिला पटियाला की संवेदनशील जेल को तोड़ने में संलिप्त थे, जिसमें मास्टर माइंड प्रेमा लाहोरिया ने अपने भारी हथियारबंद अन्य 14 कुख्यात अपराधियों के साथ दिन-दहाड़े अत्यधिक सुरक्षा वाली जेल पर हमला किया था और वे विक्की गोंडर सहित 06 आतंकवादियों/गैंगस्टरों को भगाने में सफल हो गए थे। जेल से भागने के बाद, विक्की गोंडर और प्रेमा लाहोरिया ने अपने गैंग के सदस्यों के साथ पंजाब, राजस्थान और हरियाणा राज्यों में आतंक पैदा कर दिया था, क्योंकि उन्होंने गाड़ी चुराने, जबरन धन वसूली, अपहरण और हत्या आदि जैसी अपनी धृष्ट आपराधिक गतिविधियां शुरू कर दी थीं। अप्रैल, 2017 में, विक्की गोंडर ने गुरदासपुर में अपने प्रतिद्वंद्वी गैंग के तीन सदस्यों को मार दिया था। इन गैंगस्टरों ने कानून के डर के बिना सोशल मीडिया पर सरकारी पुलिस अधिकारियों को खुलेआम धमकियां दीं। विक्की गोंडर और प्रेमा लाहोरिया दर्जन से भी ज्यादा आपराधिक मामलों में संलिप्त थे, जिसमें पंजाब, राजस्थान और हरियाणा में हत्या, हत्या का प्रयास, जबरन धन वसूली, डकैती आदि शामिल हैं। इस सूचना पर कार्यवाही करते हुए, संगठित अपराध नियंत्रण यूनिट (ओसीसीयू), पंजाब की पुलिस टीम के साथ इंस्पेक्टर बिक्रमजीत सिंह (अब उप पुलिस अधीक्षक) अबोहर पहुंचे और उपर्युक्त गैंगस्टरों का पता लगाने और उन्हें गिरफ्तार करने के लिए एक ऑपरेशन शुरू किया। तकनीकी और क्षेत्रीय सूचनाओं की संपुष्टि से भी यही संकेत मिला कि विक्की गोंडर अपने साथियों के साथ लखविन्दर सिंह उर्फ लक्खा के फार्म हाउस में छिपा हुआ है, जो गंग नहर (राजस्थान) के पास गांव पक्की में स्थित है। यह सूचना श्री गुरमीत सिंह चौहान, आईपीएस, अपर महानिरीक्षक, ओसीसीयू और श्री संदीप गोयल, पीपीएस, अपर महानिरीक्षक, आसूचना, पंजाब के साथ साझा की गई। उक्त लखविन्दर सिंह उर्फ लक्खा के फार्म हाउस की घेराबंदी की गई और श्री गुरमीत सिंह चौहान, आईपीएस, अपर महानिरीक्षक, ओसीसीयू के पर्यवेक्षण और नेतृत्व वाली टीमों द्वारा रेड डाली गई। उन्होंने इंस्पेक्टर बिक्रमजीत सिंह (अब उप पुलिस अधीक्षक) के साथ अपनी जान की परवाह किए बिना फार्म हाउस में प्रवेश किया और हरजिन्दर सिंह उर्फ विक्की गोंडर और उसके साथियों से आत्मसमर्पण करने की अपील की। इसी बीच, विक्की गोंडर ने अपने दो साथियों के साथ पुलिस दल को चुनौती दी और फार्म हाउस के एक कमरे से बाहर आ गया तथा पुलिस अधिकारियों को मारने के इरादे से उन पर गोलीबारी की। कई बार चेतावनी दिए जाने के बावजूद, इन अपराधियों ने आत्मसमर्पण नहीं किया और पुलिस दल पर अंधाधुंध गोलीबारी करते रहे। इन अपराधियों द्वारा चलाई गई गोलियां उन दो पुलिस कर्मियों नामतः सब-इंस्पेक्टर/एलआर बलविन्दर सिंह सं. 362/पीटीए (अब सब-इंस्पेक्टर) और असिस्टेंट सब-इंस्पेक्टर किरपाल सिंह सं. 1250/पीटीएल (अब सब-इंस्पेक्टर/एलआर) को लग गई, जिन्होंने रेड डालने वाले दोनों के साथ अपनी जान की परवाह किए बिना फार्म हाउस में प्रवेश किया था। यहां पर यह उल्लेख करना प्रासंगिक है कि अपराधियों को आत्मसमर्पण हेतु राजी करने के लिए पुलिस दल ने उन्हें चेतावनी देने के लिए हवा में गोलियां चलाई, परंतु सफलता नहीं मिली। इसके

बावजूद, अपराधी पुलिस दल पर गोलीबारी करते रहे। श्री गुरमीत सिंह चौहान, आईपीएस, अपर महानिरीक्षक, ओसीसीयू और इंस्पेक्टर बिक्रमजीत सिंह (अब उप पुलिस अधीक्षक), जो पुलिस दलों का नेतृत्व कर रहे थे, ने अपनी रेड डालने वाली टीमों के साथ फार्म हाउस में प्रवेश किया, जबकि पुलिस कर्मियों पर गोलियां चलाई जा रही थीं। दोनों अधिकारी अपनी जान को गंभीर खतरे में डालते हुए बहादुरी और चतुराई से रेंगकर अपराधियों की ओर आगे बढ़े तथा अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना आत्मरक्षा में अपने हथियारों से जवाबी गोलीबारी की। इसके परिणामस्वरूप, विक्की गौंडर और उसका एक सहयोगी सविन्दर सिंह घायल हो गए और जमीन पर गिर गए। पुलिस दलों द्वारा उन दोनों को काबू में कर लिया गया। तथापि, विक्की गौंडर की घटना स्थल पर ही मृत्यु हो गई और दूसरा साथी घायल हो गया। इसी बीच, एक अपराधी फार्म हाउस की दीवार पर चढ़ने और बाहर कूदने में सफल हो गया तथा उसने श्री संदीप गोयल, पीपीएस, अपर महानिरीक्षक, आसूचना के पर्यवेक्षण में फार्म हाउस के बाहर तैनात कवर करने वाले दल पर गोलीबारी की, जिन्होंने आत्मरक्षा में गोली चलाई। उक्त अपराधी नीचे गिर गया और घटना स्थल पर ही उसकी मृत्यु हो गई। इस अपराधी की बाद में एक कुख्यात गैंगस्टर प्रेमा लाहोरिया के रूप में पहचान की गई, जो कई जघन्य आपराधिक मामलों में वांछित था। इस पुलिस कार्रवाई में, अपराधी हरजिन्दर सिंह उर्फ विक्की गौंडर पुत्र महल सिंह, जाति जाट सिख, निवासी सारावन बोडला, पुलिस स्टेशन कबरवाल जिला श्री मुक्तसर साहिब और उसका साथी प्रेमा लाहोरिया, दोनों पंजाब के 'ए' श्रेणी के गैंगस्टर, मारे गए। घायल अपराधी और घायल पुलिस ओसीसीयू को शीघ्र सिविल अस्पताल, अबोहर ले जाया गया, जहां तीसरे गैंगस्टर की भी घायल होने के कारण मौत हो गई। घटना स्थल की तलाशी के दौरान, अपराध को अंजाम देने में प्रयुक्त हथियारों के साथ-साथ भारी मात्रा में जिंदा और खाली कारतूस बरामद हुए। इनके ब्यौरे का उल्लेख जब्ती मेमो में पृथक रूप से किया गया है।

उपर्युक्त पुलिस कार्रवाई में, श्री गुरमीत सिंह चौहान, आईपीएस, अपर महानिरीक्षक, ओसीसीयू, इंस्पेक्टर बिक्रमजीत सिंह (अब उप पुलिस अधीक्षक), सब-इंस्पेक्टर/एलआर बलविन्दर सिंह (अब सब-इंस्पेक्टर) और असिस्टेंट सब-इंस्पेक्टर किरपाल सिंह (अब सब इंस्पेक्टर/एलआर) ने अपनी स्वयं की जान की परवाह किए बिना अपने कर्तव्य का निर्वहन करते हुए अनुकरणीय साहस, हिम्मत, सूझ-बूझ और बहादुरी का प्रदर्शन किया था, जिसके लिए उनकी भारतीय दंड संहिता की धारा 307, 332, 353, 186, 216, 225, 120-ख और आयुध अधिनियम की धारा 3, 25, 27 के अंतर्गत पुलिस स्टेशन हिंदूमलकोट, जिला गंगानगर (राजस्थान) की दिनांक 27.01.2018 की एफआईआर संख्या 26 से संबंधित मामले में वीरता के लिए राष्ट्रपति के पुलिस पदक हेतु संस्तुति की जाती है।

इस ऑपरेशन में सर्व/श्री गुरमीत सिंह चौहान, आईपीएस, अपर महानिरीक्षक, बिक्रमजीत सिंह बरार, इंस्पेक्टर, बलविन्दर सिंह, सब-इंस्पेक्टर (एलआर) और किरपाल सिंह, असिस्टेंट सब-इंस्पेक्टर (एलआर) ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किये जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 26.01.2018 से दिया जाएगा।

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

स. 106-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	संतोष कुमार	हेड कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	चन्द्रप्पा लामणी	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 20/21 फरवरी, 2017 की मध्यवर्ती रात्रि में, सं. 97254325 कांस्टेबल (अब हेड कांस्टेबल) संतोष कुमार और सं. 98009265 कांस्टेबल चन्द्रप्पा लामणी को 163 बटालियन बीएसएफ की एफडीएल 507 (एआईओएस) के गश्त बेस (पीबी) सं. 02 और 03 पर रात की संतरी ड्यूटी हेतु तैनात किया गया था। लगभग 2100 बजे, पीबी सं. 03 पर तैनात कांस्टेबल चन्द्रप्पा लामणी ने पीठ पर रकसैक के साथ 01 अज्ञात व्यक्ति की संदिग्ध गतिविधि देखी। स्थिति की गंभीरता को भांपते हुए, कांस्टेबल चन्द्रप्पा लामणी ने तत्काल पीबी सं. 02 के संतरी कांस्टेबल (अब हेड कांस्टेबल) संतोष कुमार को सतर्क किया। साथ ही साथ, कांस्टेबल चन्द्रप्पा लामणी ने उस घुसपैठिए को चुनौती भी दी। चुनौती दिए जाने पर, घुसपैठिए ने तुरंत पोजीशन ले ली और पीबी सं. 03 पर हमारे सैन्य दस्ते की ओर गोलीबारी करनी शुरू कर दी। बीएसएफ के सैन्य दस्ते ने भी जवाबी गोलीबारी की। कांस्टेबल चन्द्रप्पा लामणी ने उच्च स्तर के युद्ध कौशल एवं पेशेवरता का प्रदर्शन किया और तत्काल अपने निजी हथियार से घुसपैठिए/आतंकवादी पर प्रभावशाली गोलीबारी की। इसी बीच, पीबी सं.

03 पर तैनात अन्य सैनिकों ने भी उक्त आतंकवादी पर गोलीबारी शुरू कर दी। सैन्य दस्तों द्वारा की गई सटीक जवाबी गोलीबारी के कारण, उक्त आतंकवादी ने अपने पोजीशन बदल ली और एआईओएस के निकट पथरीली चट्टानों के पीछे पोजीशन लेने के लिए पीछे की ओर चला गया तथा पीबी सं. 03 की ओर लगातार गोलीबारी करने लगा। इसी बीच, पाक अधिकृत कश्मीर की तरफ की आगे की ढलान से एक और आतंकवादी आया और उसने हमारे सैन्य दस्ते पर गोलीबारी शुरू कर दी। लगभग इसी समय, 3/4 अन्य आतंकवादियों, जिन्होंने संभवतः पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर की ओर एआईओएस से लगभग 30-40 मीटर दूर पोजीशन ले रखी थी, ने भी उन दो उग्रवादियों, जिनके साथ गोलीबारी चल रही थी, को बच निकलने में सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से कवर फायर देने के स्पष्ट इरादे के साथ स्वचालित हथियारों से गोलीबारी शुरू कर दी। आतंकवादी एके 47 राइफल्स और यूबीजीएल/हैंड ग्रेनेड सहित स्वचालित हथियारों का प्रयोग करते हुए हमारे सैन्य दस्ते की ओर लगातार भारी गोलीबारी करते रहे। जवाबी कार्रवाई में दोनों कांस्टेबल (अब हेड कांस्टेबल) संतोष कुमार (पीबी सं. 02 पर) और चन्द्रप्पा लामणी (पीबी सं. 03 पर) ने उग्रवादियों को लगातार उलझाए रखकर और उन्हें भागने का अवसर न देकर अनुकरणीय साहस और युद्ध कौशल का प्रदर्शन किया।

दोनों कांस्टेबल चन्द्रप्पा लामणी और कांस्टेबल (अब हेड कांस्टेबल) संतोष कुमार द्वारा प्रभावशाली जवाबी कार्रवाई के परिणामस्वरूप उनमें से एक आतंकवादी मारा गया और 2-3 अन्य आतंकवादियों को गंभीर चोटें आईं। सुबह उस क्षेत्र की तलाशी के दौरान, 2-3 घायल उग्रवादियों के रक्तचरित कदमों के निशान घटना स्थल से नियंत्रण रेखा की ओर जाते हुए देखे गए। दिनांक 21 फरवरी, 2017 को भोर के तुरंत बाद, उक्त क्षेत्र में वरिष्ठ कमांडरों के गहन पर्यवेक्षण में तलाशी और शेष आतंकवादियों के सफाए का ऑपरेशन शुरू किया गया। मारे गए आतंकवादी का शव एके 47 के साथ एआईओएस में फंसा हुआ मिला तथा उक्त क्षेत्र की आगे और तलाशी के दौरान मात्रा में युद्ध सामग्रियां बरामद हुईं। तदनंतर, मारे गए आतंकवादी के शरीर पर लिपटी हुई एक आईडी भी प्राप्त हुई।

संपूर्ण ऑपरेशन के दौरान, कांस्टेबल चन्द्रप्पा लामणी और कांस्टेबल (अब हेड कांस्टेबल) संतोष कुमार 163 बटालियन ने आतंकवादी की सीधी और भारी गोलीबारी के समक्ष जबरजस्त साहस और युद्ध कौशल का प्रदर्शन किया, जिसके परिणामस्वरूप लश्कर ए तैयबा तंजिम का 01 फिदायीन आतंकवादी मारा गया और 2-3 अन्य आतंकवादी गंभीर रूप से घायल हो गए।

इस ऑपरेशन में सर्वश्री संतोष कुमार, हेड कांस्टेबल और चन्द्रप्पा लामणी, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किये जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 21.02.2017 से दिया जाएगा।

(संख्या 11020/82/2018-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 107-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के निम्नलिखित अधिकारी को वीरता के लिए पुलिस पदक (मरणोपरांत) प्रदान करते हैं :—

स्व. श्री तपन मंडल	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक (मरणोपरांत)
--------------------	-----------	------------------------------------

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 02 नवम्बर, 2017 को लगभग 0800 बजे, सं. 120805206 कांस्टेबल तपन मंडल (गश्त दल के सदस्य के रूप में) सहित बीओपी मंगूचक, 173 बटालियन बीएसएफ (भारत-पाकिस्तान अन्तरराष्ट्रीय सीमा पर तैनात) के 01 अधिकारी, 03 अधीनस्थ अधिकारियों और 11 अन्य रैंकों वाला जीरो लाइन गश्त/क्षेत्र अनुरक्षण दल बीपी सं. 135 से 136 के संगत क्षेत्र में जीरो लाइन गश्त और क्षेत्र के अनुरक्षण के लिए सीमा बाड़ से आगे गया, जो फारवर्ड इयूटी प्वाइंट सं. एन जे 941 के सामने पड़ता है। कांस्टेबल तपन मंडल को जीरो लाइन गश्त/क्षेत्र अनुरक्षण दल की स्काउट इयूटी/गार्ड के कार्य हेतु तैनात किया गया था। लगभग 0930 बजे, जब उक्त दल क्षेत्र का अनुरक्षण कर रहा था, तब पाकिस्तान की चौकी पीर बंकर की ओर से हमारे दल पर यूएमजी के दो फायर किए गए। इसके परिणामस्वरूप, कांस्टेबल तपन मंडल, जो अन्तरराष्ट्रीय सीमा के निकट फॉरवर्ड लाइन पर तैनात थे, दाएं कंधे में गोली लगने से घायल हो गए। गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद अपनी निजी सुरक्षा की जरा सी भी परवाह किए बिना कांस्टेबल तपन मंडल ने इस मुश्किल परिस्थिति में युद्ध की निपुणता और अनुकरणीय साहस का प्रदर्शन किया तथा अपने साथियों/दल के सदस्यों को तत्काल कवर लेने और सुरक्षित स्थान पर चले जाने के लिए शीघ्र सतर्क कर दिया। इसी बीच, आवश्यक सुरक्षा संबंधी सावधानियां बरतने के पश्चात, घायल कांस्टेबल तपन मंडल सहित समस्त दल सीमा बाड़ के अपने छोर की ओर रणनीतिक ढंग से आगे बढ़ा और घायल कांस्टेबल को आवश्यक प्राथमिक चिकित्सा

प्रदान करने के उपरांत 166 सेना अस्पताल, सतवारी, जम्मू ले जाया गया, जहां ऑन इयूटी डॉक्टर ने उनकी जांच की और लगभग 1100 बजे उन्हें मृत घोषित कर दिया। घायल कांस्टेबल की सुरक्षित निकासी के पश्चात, शत्रु के ठिकानों पर भारी जवाबी गोलीबारी की गई।

कांस्टेबल तपन मंडल ने अत्यधिक प्रतिकूल परिस्थिति में भी मैत्रीभाव की जबरजस्त भावना और इयूटी के प्रति प्रतिबद्धता का प्रदर्शन किया तथा गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद अपने साथियों को कवर लेने और अपने दिल को अतिरिक्त क्षति से बचाने के लिए उन्हें सुरक्षित स्थान पर चले जाने हेतु सतर्क किया। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय सीमा पर इयूटी करते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया।

इस ऑपरेशन में स्व. श्री तपन मंडल, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किया जाता है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 02.11.2017 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/123/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 108-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के निम्नलिखित अधिकारी को वीरता के लिए पुलिस पदक (मरणोपरांत) प्रदान करते हैं :—

स्व. श्री देवेन्द्र सिंह	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक (मरणोपरांत)
--------------------------	-----------	------------------------------------

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 14 मई, 2018 को, सं. 112546919 कांस्टेबल देवेन्द्र सिंह को सं. 881613933 हेड कांस्टेबल सकाई देव पंडित और सं. 110411415 कांस्टेबल अजीत सिंह के साथ भारत-पाक अंतरराष्ट्रीय सीमा पर स्थित 173 बटालियन बीएसएफ की सीमा चौकी (बीओपी) मंगूचक के एओआर में फॉरवर्ड इयूटी प्वाइंट सं. 938 पर नाका इयूटी के लिए तैनात किया गया था। लगभग 1423 बजे, सतर्क नाका दल ने इयूटी प्वाइंट पर स्थापित एचएचटीआई पर 3-4 व्यक्तियों की संदिग्ध गतिविधि देखी। उपर्युक्त गतिविधि बीपी सं. 138 के आस-पास अंतरराष्ट्रीय सीमा के निकट डेड ग्राउण्ड एरिया में देखी गई। संदिग्ध गतिविधि का और आगे अधिक पता लगाते हेतु, उक्त क्षेत्र में रोशनी करने के लिए उस दिशा में 51 एमएम मोर्टार का 01 पैरा बम फेंका गया, ताकि गतिविधि का ठीक तरह से पता लगाया जा सके और संभावित लक्ष्य को भी प्रभावशाली ढंग से उलझाया जा सके। उसी समय कांस्टेबल देवेन्द्र सिंह ने भी, अपनी निजी सुरक्षा की जरा सी भी परवाह किए बिना, संदिग्ध गतिविधि की दिशा में 7.62 एमएम एलएमजी से 3-4 गोलियां चलाईं। इसके प्रत्युत्तर में, उस स्थान से, जहां पर संदिग्ध गतिविधि देखी गई थी, फारवर्ड इयूटी प्वाइंट सं. 938 पर फ्लैट ट्रेजेक्ट्री हथियार से एक बड़ा विस्फोट किया गया, जिसका पुनः कांस्टेबल देवेन्द्र सिंह द्वारा तत्काल जवाब दिया गया।

तदनंतर, लगभग 1500 बजे, पाकिस्तान की ओर अंतरराष्ट्रीय सीमा के निकट पाकिस्तानी फॉरवर्ड बंध के आस-पास उपर्युक्त गतिविधि दोबारा देखी गई (एचएचटीआई के माध्यम से); जिस पर कांस्टेबल देवेन्द्र सिंह ने संदिग्ध आतंकवादियों की दिशा में भारी गोलीबारी की। इस गोलीबारी का पाकिस्तान की ओर से जोरदार जवाब दिया गया और कुछ समय तक रूक-रूक कर गोलीबारी होती रही। इस बीच, एचएचटीआई पर संदिग्ध आतंकवादियों की गतिविधि पर लगातार नजर रखी गई। आपसी गोलीबारी के दौरान, फॉरवर्ड इयूटी प्वाइंट सं. 938 के लूपहोल से कांस्टेबल देवेन्द्र सिंह की सधी हुई और सटीक गोलीबारी ने एक निश्चित जबरन घुसपैठ के प्रयास को सफलतापूर्वक रोक दिया। इस बीच, लगभग 1501 बजे, लगातार रूक-रूक कर होने वाली गोलीबारी के दौरान, यूएमजी की एक बड़ी गोली फॉरवर्ड इयूटी प्वाइंट सं. 938 के लूपहोल में से भीतर घुस गई और कांस्टेबल देवेन्द्र सिंह की बायीं आंख में लगी। तथापि, गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद, कांस्टेबल देवेन्द्र सिंह अपनी एलएमजी से आतंकवादियों की ओर गोलीबारी करते रहे और अपने साथियों को भी सतर्क कर दिया। जब गोलीबारी थम गई, तो उन्हें आवश्यक प्राथमिक चिकित्सा प्रदान करने के पश्चात तत्काल 166 सैन्य अस्पताल (एमएच) सतवारी, जम्मू ले जाया गया, जहां ऑन इयूटी डॉक्टर ने उनकी जांच की और लगभग 0504 बजे उन्हें मृत लाया हुआ घोषित कर दिया।

कांस्टेबल देवेन्द्र सिंह ने आतंकवादियों पर प्रभावशाली गोलीबारी करते हुए अनुकरणीय साहस तथा उच्च कोटि के युद्ध कौशल का प्रदर्शन किया और पाकिस्तान स्थित आतंकवादियों द्वारा किए गए एक निश्चित जबरन घुसपैठ के प्रयास को सफलतापूर्वक विफल कर दिया। तथापि, इस प्रक्रिया में कांस्टेबल देवेन्द्र सिंह ने राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए अंतरराष्ट्रीय सीमा पर शत्रु के साथ लड़ते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया।

इस ऑपरेशन में स्व. श्री देवेन्द्र सिंह, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किया जाता है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 14.05.2018 से दिया जाएगा।

(संख्या 11020/125/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन

विशेष कार्य अधिकारी

सं. 109 प्रेज/2020—राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के निम्नलिखित अधिकारी को वीरता के लिए पुलिस पदक (मरणोपरांत) प्रदान करते हैं:—

स्व. श्री बृजेन्द्र बहादुर सिंह	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक (मरणोपरांत)
---------------------------------	-----------	------------------------------------

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 14/15 सितंबर, 2017 की मध्यवर्ती रात्रि को, सं. 052542888 कांस्टेबल बृजेन्द्र बहादुर सिंह को सं. 901099031 कांस्टेबल ए. निजाम (पार्टी कमांडर) और सं. 102541492 कांस्टेबल विपिन कुमार के साथ 192 बटालियन बीएसएफ की सीमा चौकी (बीओपी) चिनाज के एओआर में 1418 बजे से 1506 बजे तक रात की नाका ड्यूटी के लिए फॉरवर्ड ड्यूटी प्वाइंट सं. एनजे 575 पर तैनात किया गया था। अंतरराष्ट्रीय सीमा के अत्यधिक निकट स्थित होने के साथ-साथ लगभग तीन तरफ से पाकिस्तानी फारवर्ड बंध द्वारा घिरा होने के कारण, उक्त ड्यूटी प्वाइंट को अत्यधिक संवेदनशील और सुभेद्य ड्यूटी प्वाइंट माना जाता है। लगभग 1520 बजे, पाकिस्तानी बीओपी खानूर के फॉरवर्ड मोर्चे ने अचानक ड्यूटी प्वाइंट सं. एनजे 575 सहित सीमा चौकी (बीओपी) चिनाज के फॉरवर्ड ड्यूटी प्वाइंट को लक्ष्य बनाकर फ्लैट ट्रेजेक्ट्री हथियारों का प्रयोग करते हुए अकारण गोलीबारी शुरू कर दी। शत्रु के नापाक इरादों का अनुमान लगाते हुए, कांस्टेबल बृजेन्द्र बहादुर सिंह ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना, तत्काल अपने साथियों अर्थात् कांस्टेबल ए. निजाम और कांस्टेबल विपिन कुमार को शत्रु की गोलीबारी का जवाब देने के लिए प्रोत्साहित किया। तदनुसार, कांस्टेबल ए. निजाम और कांस्टेबल विपिन कुमार ने अपनी निजी सुरक्षा की परवाह किए बिना तत्काल शत्रु की गोलीबारी का जवाब दिया और इस प्रक्रिया में शत्रु के अग्रिम मोर्चे को ध्वस्त कर दिया। तथापि, प्रभावशाली गोलीबारी को देखते हुए शत्रु ने कुछ समय के बाद ड्यूटी प्वाइंट सं. एनजे 575 को लक्ष्य बनाकर भारी मात्रा में गोलीबारी शुरू कर दी। इस भारी गोलीबारी की प्रक्रिया में, कुछ गोलियां उक्त ड्यूटी प्वाइंट के लूपहोल में से भीतर घुस गईं और कांस्टेबल बृजेन्द्र सिंह की बीपी जैकेट की अगली एवं पिछली बीपी प्लेटों के बीच की खाली जगह में से बायीं ओर उनके पेट में लग गईं। इसके परिणामस्वरूप, वे जमीन पर गिर गए। तथापि, गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद, अदम्य जोश वाले उस बहादुर सीमा रक्षक को भयभीत अथवा पराजित नहीं किया जा सका और इससे उसके साथी शत्रु की गोलीबारी का जोरदार ढंग से जवाब देने के लिए प्रोत्साहित हुए। तदनुसार, उक्त ड्यूटी प्वाइंट पर तैनात उनके साथियों ने समुचित रूप से शत्रु की गोलीबारी का जवाब दिया। साथ ही साथ, कंपनी मुख्यालय को भी सूचित किया गया और कांस्टेबल बृजेन्द्र बहादुर सिंह को तत्काल सीमा चौकी (बीओपी) चिनाज ले जाया गया और वहां आवश्यक प्राथमिक चिकित्सा प्रदान करने के बाद उन्हें आगे जीएमसीएच, जम्मू ले जाया गया, जहां ड्यूटी पर तैनात डॉक्टर ने लगभग 1502 बजे उन्हें मृत लाया हुआ घोषित कर दिया।

कांस्टेबल बृजेन्द्र बहादुर सिंह ने पूर्ण एवं अदम्य भावना से लड़ने की अपनी इच्छा के साथ शत्रु की भयंकर गोलाबारी के बीच अत्यधिक साहस और युद्ध के प्रति दृढ़ता का प्रदर्शन किया और इस प्रक्रिया में शत्रु के ठिकानों के बिल्कुल नजदीक सक्रिय ड्यूटी के दौरान एक अत्यधिक संवेदनशील ड्यूटी प्वाइंट पर तैनात रहते हुए मातृभूमि के लिए अपनी जान न्यौछावर कर दी।

इस ऑपरेशन में स्व. श्री बृजेन्द्र बहादुर सिंह, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किया जाता है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 15.09.2017 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/126/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन

विशेष कार्य अधिकारी

सं. 110-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक (मरणोपरांत) प्रदान करते हैं :—

सर्व/श्री

01	स्व. सत नारायण यादव	असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक (मरणोपरांत)
02	स्व. विजय कुमार पांडे,	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक (मरणोपरांत)
03	विजय करन सिंह	हेड कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 03 जून, 2018 को, 92 बटालियन बीएसएफ के सं. 872545472 असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर सत नारायण यादव को 33 बटालियन बीएसएफ के सं. 890011580 हेड कांस्टेबल विजय करन सिंह और सं. 124529890 कांस्टेबल विजय कुमार पांडे के साथ भारत-पाकिस्तान अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर स्थित सीमा चौकी (बीओपी) चकफगवारी 33 बटालियन बीएसएफ, जिला-जम्मू (जम्मू एवं कश्मीर) के फॉरवर्ड इयूटी प्वाइंट सं. एनजे 30 पर नाका इयूटी के लिए तैनात किया गया था। इयूटी के आवंटन के अनुसार, कांस्टेबल विजय कुमार पांडे 030001 बजे से 0303 बजे तक संतरी इयूटी पर थे। लगभग 01:15 बजे, 33 बटालियन बीएसएफ की सीमा-चौकी (बीओपी) चकफगवारी के फॉरवर्ड इयूटी प्वाइंट सं. 30 और 32 पर पाकिस्तान की ओर से अचानक 02 सिंगल (स्नाइपर) शॉट फायर किए गए, जिसमें से एक गोली लूप होल में से होते हुए कांस्टेबल विजय कुमार पांडे के सिर में लगी, जिसके परिणामस्वरूप वे अचेत अवस्था में भूमि पर गिर पड़े। गोलीबारी की आवाज़ सुनकर, असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर सत नारायण यादव (नाका कमांडर) ने संपूर्ण स्थिति का जायजा लिया और तत्काल अपने साथी हेड कांस्टेबल विजय करन सिंह को सतर्क किया तथा शत्रु की गोलीबारी का जवाब देने का निदेश दिया और स्वयं घायल कांस्टेबल विजय कुमार पांडे को बचाने के लिए अत्यधिक धैर्य एवं साहस का प्रदर्शन करते हुए तुरंत उनकी ओर दौड़ पड़े। इसी बीच, पाकिस्तान की ओर से स्वचालित हथियार से पुनः एक गोली चलाई गई और यह लूप होल में से होते हुए असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर सत नारायण यादव के सीने में दायीं ओर लग गई। इसके परिणामस्वरूप, वे भी अचेत अवस्था में भूमि पर गिर गए। उस समय, हेड कांस्टेबल विजय करन सिंह, जो उक्त इयूटी प्वाइंट के भीतर थे, ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना 7.62 एम एम की एल एम जी से 20 राउण्ड गोलियां चलाते हुए तत्काल शत्रु की गोलीबारी का जवाब दिया, ताकि बीएसएफ कार्मिकों को किसी अन्य क्षति से बचा जा सके और इसके साथ-साथ भारतीय क्षेत्र में किसी संभावित घुसपैठ को रोका जा सके। साथ-ही-साथ, उन्होंने चौकी कमांडर और आगे कंपनी कमांडर को भी इस मामले से अवगत कराया। इसी बीच, पाकिस्तान की तरफ से एचएमजी, यूएमजी, 60 एमएम और 82 एमएम मोर्टार सहित फ्लैट एवं हाई ट्रेजेक्ट्री हथियारों का प्रयोग करते हुए लगातार भारी गोलीबारी की गई एवं गोले बरसाए गए तथा 33 बटालियन के एओआर में सभी इयूटी प्वाइंट/सीमा चौकियाँ (बीओपी) और निकट के सीमावर्ती गांवों को निशाना बनाया गया। इसके प्रत्युत्तर में, हमारे सैन्य दस्तों ने भी 7.62 एमएम वाली एमएमजी, एजीएल और 51 एमएम मोर्टार का प्रयोग करते हुए समुचित ढंग से शत्रु की गोलीबारी का जवाब दिया। इसी बीच, जब गोलीबारी की तीव्रता कम हो गई, तो घायल असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर सत नारायण यादव और कांस्टेबल विजय कुमार पांडे को प्राथमिक चिकित्सा प्रदान करने के पश्चात पीएचसी पर्ववाल ले जाया गया, जहां ऑन इयूटी डॉक्टर ने उन दोनों की जांच की और लगभग 03:30 बजे उन्हें मृत लाया हुआ घोषित कर दिया।

92 बटालियन के स्व. असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर सत नारायण यादव और 33 बटालियन के सं. 124529890 स्व. कांस्टेबल विजय कुमार पांडे एक अत्यधिक संवेदनशील क्षेत्र में और शत्रु की गोलीबारी के प्रत्यक्ष खतरे के समक्ष अन्तर्राष्ट्रीय सीमा के निकट सीमा सुरक्षा गिड के सबसे अग्रिम मोर्चे पर इयूटी कर रहे थे। इन दोनों ने इयूटी के प्रति उच्चतम स्तर की प्रतिबद्धता का प्रदर्शन किया और मातृभूमि की रक्षा करते हुए अपने प्राण न्योछावर कर दिए।

33 बटालियन के हेड कांस्टेबल विजय करन सिंह, जो उसी इयूटी प्वाइंट पर ही तैनात थे, ने शत्रु की लगातार गोलीबारी के समक्ष अत्यधिक युद्ध कौशल और सामरिक साहस का प्रदर्शन किया। स्थिति पर तत्काल नियंत्रण स्थापित करते हुए, उन्होंने शत्रु की गोलीबारी का प्रभावशाली ढंग से जवाब दिया ताकि और अधिक नुकसान/क्षति को रोकने के साथ-साथ भारतीय क्षेत्र में किसी भी संभावित घुसपैठ को भी रोका जा सके।

इस ऑपरेशन में सर्व/श्री स्व. सत नारायण यादव, असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर, स्व. विजय कुमार पांडे, कांस्टेबल और विजय करन सिंह, हेड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किए जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 03.06.2018 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/127/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 111-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के निम्नलिखित अधिकारी को वीरता के लिए पुलिस पदक (मरणोपरांत) प्रदान करते हैं:—

स्व. श्री दीपक कुमार मंडल,	2-आई/सी	वीरता के लिए पुलिस पदक (मरणोपरांत)
----------------------------	---------	------------------------------------

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 16.10.2017 को, लगभग 0140 बजे, श्री दीपक कुमार मंडल, 2-आई सी/स्थानापन्न कमांडेंट, 145 बटालियन बीएसएफ को सोनामुरा के निकट बीएसएफ के एक वाहन की दुर्घटना के बारे में सूचित किया गया। अतः, ये अधिकारी कांस्टेबल/डाइवर प्रेम सिंह और कांस्टेबल बी. चन्द्रकांत के साथ घटनास्थल की ओर चल पड़े। रास्ते में, उन्होंने 25-30 तस्करों/राष्ट्र विरोधी तत्वों को 15-20 पशुओं को बांग्लादेश की ओर हांक कर तस्करी का प्रयास करते हुए देखा। यह देख कर, उक्त अधिकारी ने तुरंत अपना वाहन रोक दिया। वे वाहन से नीचे उतरे और उन्होंने तस्करों/राष्ट्र विरोधी तत्वों को चुनौती दी। इसके बदले में, तस्करों/राष्ट्र विरोधी तत्वों ने पशुओं को बांग्लादेश की ओर हांकना शुरू कर दिया। उक्त अधिकारी ने समय स्थिति का आकलन किया और बिना समय गंवाए कांस्टेबल/डाइवर प्रेम सिंह और कांस्टेबल बी. चन्द्रकांत को आसपास के पशुओं को पकड़ने का निदेश दिया। तस्करों/राष्ट्र विरोधी तत्वों के पास पत्थर/ईंटें/छुरे/धारदार हथियार थे और उन्होंने श्री दीपक कुमार मंडल को घेर लिया। तस्करों/राष्ट्र विरोधी तत्वों ने दो वाहनों में अपने साथियों को भी बुला लिया और बीएसएफ के दल पर पत्थर फेंकना शुरू कर दिया। श्री दीपक कुमार मंडल अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की जरा सी भी परवाह किए बिना मजबूती से उनके सामने खड़े हो गए और नजदीकी सीमा चौकी (बीओपी) बेलारेदप्पा से अतिरिक्त सैन्य दस्ते के आने तक उन्हें उलझाए रखने का प्रयास किया।

श्री दीपक कुमार मंडल ने अनुकरणीय साहस का प्रदर्शन करते हुए तस्करों/राष्ट्र विरोधी तत्वों का वीरतापूर्वक सामना किया और अपनी जान की परवाह किए बिना उन्हें अपने घृणित इरादे को त्यागने पर विवश कर दिया। तस्करों/राष्ट्र विरोधी तत्वों ने अपनी कमजोरी को भांपते हुए अपने वाहन 'बोलेरो पिकअप' से श्री दीपक कुमार मंडल, 2-आईसी/स्थानापन्न कमांडेंट, 145 बटालियन बीएसएफ को कुचलने के इरादे से उन्हें बार-बार टक्कर मारकर अपने अमानवीय कृत्य के माध्यम जवाबी हमला किया। खतरे को भांपने के बावजूद, उक्त अधिकारी ने अपनी जान को लगातार खतरा होते हुए भी हार नहीं मानी और उस तस्करी के प्रयास को विफल करने के उद्देश्य से स्थिति का निडरता से सामना किया। तत्पश्चात, तस्करों/राष्ट्र विरोधी तत्वों ने षड्यंत्र रचा और श्री दीपक कुमार मंडल को मारने के इरादे से दूसरी 'बोलेरो पिकअप' से उन्हें बहुत तेज गति से टक्कर मारी। इसके परिणामस्वरूप, श्री दीपक कुमार मंडल सड़क पर गिर गए और उनके सिर/शरीर पर अनेक गंभीर चोटें आईं। कांस्टेबल चन्द्रकांत ने भी सुरक्षा में अपने निजी हथियार से 04 गोलियां चलाईं। इसी बीच, निरीक्षक जोयराज कोचर, स्थानापन्न कंपनी कमांडर के अधीन अतिरिक्त सैन्य दस्ता घटनास्थल पर पहुंच गया और स्थिति को नियंत्रित किया।

दिनांक 20.10.2017 को लगभग 1135 बजे, श्री दीपक कुमार मंडल, 2-आईसी/स्थानापन्न कमांडेंट ने शहादत प्राप्त की और बीएसएफ ने एक ऐसा बहादुर अधिकारी गवां दिया, जो अनुकरणीय व्यावसायिकता और अपनी मातृभूमि के प्रति वफादारी के साथ अपने राष्ट्र की सेवा करते हुए तस्करों/राष्ट्र विरोधी तत्वों के साथ असाधारण साहस और पूरी बहादुरी से लड़ा तथा उच्चकोटि के नेतृत्व के साथ-साथ अतुलनीय शौर्यपूर्ण कार्यवाही की मिसाल कायम की। इससे न केवल बटालियन का अपितु सीमा सुरक्षा बल का भी नाम रोशन हुआ।

इस ऑपरेशन में स्व. श्री दीपक कुमार मंडल, 2/आईसी ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किया जाता है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 16.10.2017 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/128/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 112--प्रेज/2020—राष्ट्रपति, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारी को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं:—

श्री अतुल करवाल, आईपीएस	महानिरीक्षक	वीरता के लिए पुलिस पदक
-------------------------	-------------	------------------------

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

कश्मीर घाटी में राष्ट्रीय महत्व के दिवस मनाना सुरक्षा बलों के लिए नई चुनौतियां उत्पन्न करता है क्योंकि राष्ट्र विरोधी ताकतें समारोह में व्यवधान पहुंचाने के सभी प्रयास करती हैं। सुरक्षा बलों द्वारा एक "हिजबुल मुजाहिदीन" कमांडर के मारे जाने के पश्चात घाटी

में कानून और व्यवस्था की स्थिति अत्यधिक अस्थिर और संवेदनशील होने के कारण स्वतंत्रता दिवस 2016 का समारोह अत्यधिक चुनौतीपूर्ण हो गया था। अवरोधों को दूर करने और आतंकवादियों के घृणित इरादों को विफल करने के लिए, श्रीनगर शहर को कड़ी निगरानी में रखा गया था।

दिनांक 15.08.2016 को, लगभग 0800 बजे, नवहट्टा चौक, श्रीनगर के निकट एक बिल्डिंग में छिपे हुए आतंकवादियों ने वहां पर तैनात 28 बटालियन के सैन्य दस्ते पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी और एक भीषण मुठभेड़ शुरू हो गई। सूचना प्राप्त होने पर, नजदीकी सीआरपीएफ संगठनों के सैन्य दस्ते तत्काल घटना स्थल की ओर रवाना हो गए और उन्होंने उक्त क्षेत्र की घेराबंदी कर दी। कमांडरों ने जमीनी स्तर पर स्थिति का विश्लेषण किया और वे जवाबी हमले की योजना के साथ उस क्षेत्र की ओर आगे बढ़े, जहां आतंकवादी छिपे हुए थे। श्री अतुल करवाल, आईपीएस, महानिरीक्षक, श्रीनगर (अब अपर महानिदेशक) को सूचना प्राप्त होते ही उन्होंने श्री नरेश कुमार, सहायक कमांडेंट के नेतृत्व में सीआरपीएफ की वैली क्यूएटी को घटना स्थल पर पहुंचने और जवाबी हमले में तेजी लाने का निदेश दिया। शीघ्र ही, वे भी सैन्य दस्ते में शामिल हो गए और उन्होंने ऑपरेशन की कमान संभाल ली।

वहां पर शुरू हुई बंदूक की लड़ाई के दौरान, दो जवानों को गोली लग गई और उन्हें तत्काल बचाकर निकालना आवश्यकता था। इस पर शीघ्र कार्रवाई करते हुए, जारी लड़ाई में शामिल सैन्य दस्तों को परेशान किए बिना श्री अतुल करवाल तीव्र गति से घायल कार्मिक की ओर आगे बढ़े और भारी गोलीबारी के बीच अपने अनुरक्षक की सहायता से घायल सैनिकों को मारक क्षेत्र से बाहर निकाला। घायलों को बचाकर निकालने के पश्चात, उन्होंने आतंकवादियों की पोजीशन का पता लगाया, स्थिति का विश्लेषण किया और खतरे को दूर करने की एक योजना तैयार की।

उन्होंने श्री राजीव कुमार, कमांडेंट 28वीं बटालियन और श्री प्रमोद कुमार, कमांडेंट 49वीं बटालियन को किनारे की ओर से लक्षित भवन को कवर करने का निर्देश दिया, जबकि उन्होंने वैली क्यूएटी के साथ लक्षित घर के सामने एक भवन में पोजीशन लेने का निर्णय लिया। इस भवन से आतंकवादियों की पोजीशन दिखाई देती थी, परंतु यह भवन एक खुले क्षेत्र में स्थित था। यद्यपि वे अपने बख्तरबंद वाहन की सुरक्षित सीमाओं से उक्त अभियान का समन्वय करने का चयन कर सकते थे, परंतु उन्होंने हमलावर टीम का नेतृत्व स्वयं करने का निर्णय लिया। श्री करवाल अपनी बीपी जिप्सी से बाहर आ गए और वैली क्यूएटी टीम के साथ इस भवन की ओर रणनीतिक ढंग से आगे बढ़ने के लिए गोलियों की बौछार का सामना किया। आतंकवादियों ने इस गतिविधि को देखा और उन पर भीषण गोलीबारी शुरू कर दी, परन्तु खड़े हुए वाहनों और अन्य बीपी वाहनों की आड़ लेते हुए, वे सही-सलामत उस भवन तक पहुंचने में सफल हो गए।

जब उन्होंने भवन में प्रवेश किया, तो उन्होंने देखा कि उस घर में नागरिक फंसे हुए हैं। किसी भी सम्पाश्विक क्षति से बचने के लिए श्री अतुल करवाल ने अपने सैन्य दस्ते को सर्वप्रथम नागरिकों को बचाकर निकालने का निदेश दिया। तथापि, परस्पर गोलीबारी के दौरान एक गोली श्री प्रमोद कुमार, कमांडेंट को लग गई और वे शहीद हो गए; यह सैन्य दस्तों के लिए एक बड़ा आघात था। अपनी इस भारी क्षति से उबरते हुए, सैन्य दस्ते आतंकवादियों के विरुद्ध लड़ते रहे।

इसी बीच, नागरिकों को बचाकर निकालने के पश्चात, श्री अतुल करवाल ने वैली क्यूएटी के साथ लक्षित घर के सामने वाले भवन में पोजीशन ले ली। तथापि, इससे पहले कि वे आतंकवादियों को निशाना बना पाते, आतंकवादियों ने उनकी मौजूदगी को देख लिया और उनकी तरफ गोलियों की बौछार शुरू कर दी। परंतु श्री करवाल और सैन्य दस्तों ने खिड़कियों के पास रणनीतिक पोजीशन ले रखी थी और वे अब आतंकवादियों का सामना करने के लिए तैयार थे। अपना धैर्य बनाए रखते हुए, उन्होंने आतंकवादियों की ओर गोलियों की बौछार करके हमले का जवाब दिया। श्री करवाल के नेतृत्व में वैली क्यूएटी के सैन्य दस्तों और आतंकवादियों के बीच एक भीषण मुठभेड़ शुरू हो गई। लक्षित भवन की मजबूती के कारण फ्लैट ट्रेजेक्ट्री हथियारों से गोलीबारी करना प्रभावशाली साबित नहीं हो रहा था और इसलिए बंदूक की लड़ाई ज्यादा लंबी होती जा रही थी। यह महसूस करते हुए कि आतंकवादी घटनास्थल से बचकर निकल सकते हैं, श्री अतुल करवाल ने वैली क्यूएटी के सैन्य दस्तों को आतंकवादियों की पोजीशन की ओर यूबीजीएल से गोलीबारी करने का निदेश दिया। अपनी उत्कृष्ट व्यावसायिक दक्षता का प्रदर्शन करते हुए, वैली क्यूएटी के सैन्य दस्तों ने अपने कमांडर के मार्गदर्शन में लक्षित घर पर उन खिड़कियों में से यूबीजीएल राउंड से गोलीबारी की, जहां से गोलीबारी हो रही थी। यह रणनीति काम आई क्योंकि कुछ समय के बाद आतंकवादियों की गोलीबारी रुक गई।

तत्पश्चात, श्री अतुल करवाल और एसओजी/जेकेपी के कमांडरों ने स्थिति का आकलन किया और कमरे में प्रवेश करके अंतिम हमला करने का निर्णय लिया। तदनुसार, इस उद्देश्य के लिए वैली क्यूएटी और एसओजी जम्मू और कश्मीर पुलिस की एक संयुक्त तलाशी टीम गठित की गई। संयुक्त टीम ने अपनी जान के प्रति आसन्न खतरे की परवाह न करते हुए रणनीतिक ढंग से उक्त भवन में प्रवेश किया और वे बिना किसी सम्पाश्विक क्षति के दो विदेशी आतंकवादियों के शवों के साथ बाहर निकले।

इस ऑपरेशन के दौरान, श्री अतुल करवाल, आईपीएस, महानिरीक्षक, श्रीनगर के नेतृत्व में सैन्य दस्तों ने प्रतिकूल परिस्थितियों में, सौंपे गए कार्य के प्रति पूर्ण निष्ठा और समर्पण के साथ अतुलनीय साहस का प्रदर्शन किया। उन्होंने शीघ्र, दक्षतापूर्वक और प्रभावशाली ढंग से उस कार्य को पूरा किया। नेतृत्व के विशिष्ट गुणों का प्रदर्शन करते हुए श्री अतुल करवाल ने उस खतरे का उसी प्रकार सामना करने का

चयन किया जैसा कि उनके सैन्य दस्ते से अपेक्षा की गई थी और पूर्ण व्यावसायिकता तथा लक्ष्य की प्राप्ति को सुनिश्चित करते हुए अत्यधिक चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में आगे रहकर उनका नेतृत्व किया। इस नाजुक स्थिति में उनके दृढ़ संकल्प, समर्पण और साहस के प्रदर्शन के फलस्वरूप सीआरपीएफ की भूरि-भूरि प्रशंसा हुई।

इस ऑपरेशन में श्री अतुल करवाल, आईपीएस, महानिरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किया जाता है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 15.08.2016 से दिया जाएगा।

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन

विशेष कार्य अधिकारी

सं. 113-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	राजेन्द्र सिंह	असिस्टेंट कमांडेंट	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	प्रवीण कुमार,	हेड कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
03	संजीव रंजन सिंह	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
04	संजय कुमार सिंह	हेड कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
05	एस. बालाचन्द्रा रेड्डी	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
06	उमेश यादव	हेड कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
07	ललित कुमार	असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

पुलिस स्टेशन छतरपुर, जिला-पलामू (झारखंड) के अंतर्गत बिसईपुर, तारुडग और मलंग पहाड़ के सामान्य क्षेत्र में राकेश भुइयां ('मध्य जोन' बीजेएसएसी का सब जोनल कमांडर और 05 लाख का इनामधारक) के नेतृत्व में सीपीआई (माओवादी) के एक सशस्त्र गुट की गतिविधि के बारे में प्राप्त एक सूचना के आधार पर, श्री राजेन्द्र सिंह (असिस्टेंट कमांडेंट) की कमान में विशेष ऑपरेशन की योजना बनाई गई। दिनांक 26.02.2018 को एफ/134 बटालियन की एक टीम विशेष ऑपरेशन के लिए निकली। ग्राम-बिसईपुर के नजदीक वाहन से उतरने के बाद, टीम जंगल और पहाड़ी क्षेत्र से होते हुए रणनीतिक ढंग से पैदल आगे बढ़ी। स्काउट ने 0810 बजे मलंग पहाड़ के निकट उत्तर दिशा में कुछ शोर/संदिग्ध गतिविधि देखी। आगे संभावित गंभीर खतरे को भांपकर, कमांडर ने तुरंत टीम को सतर्क किया और संदिग्ध गतिविधि की जांच करने के लिए अपने सहयोगी के साथ रणनीतिक ढंग से आगे बढ़े। जब टीम आगे बढ़ रही थी, तो टीम के ऊपर स्वचालित हथियारों से आगे बायीं ओर से अचानक भारी गोलीबारी हुई। टीम को तत्काल यह समझ आ गया कि उन पर सशस्त्र माओवादियों द्वारा हमला किया गया है। उसी क्षण, कमांडर ने सेक्शन 2 एवं 3 को रणनीतिक ढंग से पूर्व और उत्तर-पूर्व की दिशा में जाकर दोनों किनारों को कवर करने का आदेश दिया।

अग्रणी सेक्शन ने सीपीआई (माओवादी) को अपने शस्त्रों के साथ आत्मसमर्पण करने की चुनौती दी, परन्तु इसका माओवादियों की ओर से आने वाली गोलीबारी की बौछार पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। सशस्त्र माओवादियों ने कुछ खतरा महसूस किया और उन्होंने आगे बढ़ रहे दोनों सहयोगियों पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। सामने सन्निकट खतरे के बावजूद और यह देखकर कि अपनी टीम और उनके हथियारों की सुरक्षा के लिए कोई रास्ता नहीं है, कमांडर ने समान जवाबी हमला करने का निर्णय लिया और अपनी टीम को आत्मरक्षा में जवाबी हमला करने तथा सशस्त्र माओवादियों को समुचित उत्तर देने का निदेश दिया। दोनों तरफ से गोलीबारी शुरू हो गई और समाप्त होने के किसी भी संकेत के बिना चलती रही। उन्होंने दोनों अग्रणी सहयोगियों को अपनी पोजीशन से तत्काल कवर फायर करने का निदेश दिया और कमांडर अपने सहयोगी के साथ रेंगकर पास में एक छोटे पेड़ की ओर गए, वहां पर पोजीशन ले ली तथा बिल्कुल नजदीक से माओवादी को निशाना बनाया। बाद में, खूंखार माओवादी राकेश भुइयां का शव उस स्थान से बरामद हुआ। भारी गोलीबारी की परवाह न

करते हुए अपने सहयोगी हेड कांस्टेबल (जीडी) प्रवीण कुमार और कांस्टेबल (जीडी) संजीव रंजन सिंह के साथ कमांडर आगे की ओर बढ़ते रहे तथा उपलब्ध अपर्याप्त कवर के बावजूद, प्रभावशाली जवाबी गोलीबारी करने के लिए अलग-अलग पोजीशनों से गोलीबारी की।

सेक्शन नं. 2 के कमांडर ने दायीं ओर से टीम की सहायता की अनिवार्यता को महसूस करते हुए, कांस्टेबल (जीडी) एस. बालाचन्द्रा रेड्डी और हेड कांस्टेबल (जीडी) उमेश यादव के साथ-साथ अपने सहयोगी की सहायता से दायीं ओर से हमला शुरू किया। आगे बढ़ने और आगामी गोलीबारी के दौरान, दो अन्य सशस्त्र माओवादियों को मार गिराया गया। श्री राजेन्द्र सिंह (असिस्टेंट कमांडेंट) की कमान में टीम द्वारा दर्शाई गई अतुलनीय वीरता, अत्यधिक रणनीतिक कौशल और ऑपरेशनल दक्षता के कारण नक्सलियों ने छोटे गुटों में पीछे हटना शुरू कर दिया और निकटवर्ती जंगल, घनी झाड़ियाँ तथा ऊबड़-खाबड़ क्षेत्र का लाभ उठाकर भाग गए। मुठभेड़ के पश्चात, गहन तलाशी की गई और सीपीआई (माओवादी) के 04 (चार) शव (एसजेडसी राकेश भुइयाँ, एरिया कमांडर लल्लू यादव और दो अन्य सशस्त्र माओवादियों सहित) तथा उनके पास से हथियारों, गोलाबारूद और अन्य सामग्रियों का बड़ा जखीरा बरामद हुआ।

इस पूरे ऑपरेशन में, श्री राजेन्द्र सिंह असिस्टेंट कमांडेंट के नेतृत्व में छोटी टीम और उनके सहयोगी सं. 971280627 एचसी/जीडी प्रवीण कुमार ने असाधारण साहस, रणनीतिक दक्षता और शौर्यपूर्ण कार्यवाई का प्रदर्शन किया और शत्रु की गहन प्रतिरोधी गोलीबारी के बीच विलक्षण रणनीतिक दक्षता, निर्णायक सोच और शौर्यपूर्ण कार्यवाई का प्रदर्शन किया। उपर्युक्त अधिकारी और उनकी टीम ने गुणवत्तापूर्ण बहादुरी का प्रदर्शन करते हुए अत्यधिक जोखिम उठाया और अपनी जान की परवाह किए बिना, वे भारी गोलीबारी के बीच माओवादियों की ओर बढ़ते रहे और उनके साहस के परिणामस्वरूप झारखंड के इतिहास में बड़े नाम वाले चार खूंखार माओवादियों (जोनल कमांडर सहित) को मार गिराया गया।

इस ऑपरेशन में सर्व/श्री राजेन्द्र सिंह, असिस्टेंट कमांडेंट, प्रवीण कुमार, हेड कांस्टेबल, संजीव रंजन सिंह, कांस्टेबल, संजय कुमार सिंह, हेड कांस्टेबल, एस. बालाचन्द्रा रेड्डी, कांस्टेबल, उमेश यादव, हेड कांस्टेबल और ललित कुमार, असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किये जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 26.02.2018 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/104/2018-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 114-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	संजय मोहंती	डिप्टी कमांडेंट	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	अनुज कुमार त्यागी	सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक
03	प्रमोद कुमार दुबे	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
04	मनोज कुमार	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 07.02.2018 को, पुलिस स्टेशन नवजयपुर, जिला-पलामू (झारखंड) के अन्तर्गत पंचखेरिया गांव के वन क्षेत्र में माओवादी नेता राकेश भुइयाँ की अपनी टीम के साथ मौजूदगी के बारे में एक सूचना प्राप्त हुई। विभिन्न सहयोगी एजेंसियों से इस सूचना की आगे और पुष्टि की गई। सूचना की पुष्टि हो जाने पर, माओवादियों को पकड़ने के लिए लक्षित क्षेत्र में श्री अरुण कुमार सिंह, अपर पुलिस अधीक्षक (ऑप्स) की कमान में झारखंड पुलिस के सैन्य दस्ते के साथ श्री संजय मोहंती, डिप्टी कमांडेंट (डीसी) के नेतृत्व में त्वरित कार्यवाई दल (क्यूएटी) और 134 बटालियन सीआरपीएफ की एक यंग प्लाटून द्वारा एक विशेष ऑपरेशन की योजना बनाई गई और इसे शुरू किया गया।

योजना के अनुसार, सैन्य दस्ते ने पूरी रात माओवादियों के संभावित मार्गों पर कई घातें लगाई, परंतु कोई सफलता नहीं मिली। चूंकि माओवादियों की गतिविधियों से संबंधित सूचना की पुष्टि और सत्यापन किया गया था, इसलिए इन टीमों ने आगामी अपडेट तक उस क्षेत्र में अपनी पकड़ बनाए रखने का निर्णय लिया। टीम कमांडरों ने माओवादियों के बारे में ताजा जानकारी के लिए अपने स्रोतों से संपर्क स्थापित किया, जिन्होंने इस बात की पुष्टि की कि माओवादी अभी भी आस-पास के क्षेत्रों में ही हैं। इस अभिपुष्टि से सैन्य दस्ता आगे

बढ़ने और अपने लक्ष्य का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित हुआ। यथोचित सावधानियां बरतते हुए, सैन्य दस्ते ने दिनांक 08.02.2018 के तड़के चेतमा और जुनजुलु पहाड़ की ओर बढ़ना शुरू किया। गोलियों की बौछार का सामना करने की अत्यधिक संभावना वाली स्थिति की गंभीरता को महसूस करते हुए, श्री संजय मोहंती, डिप्टी कमांडेंट अपने सैन्य दस्ते में प्रेरणा और साहस उत्पन्न करते हुए आगे से क्यूएटी का नेतृत्व कर रहे थे। सांकेतिक लक्ष्य अर्थात् जुनजुलु पहाड़ के नजदीक पहुंचने पर, दल कमांडर श्री संजय मोहंती, डिप्टी कमांडेंट ने 134 बटालियन की यंग प्लाटून और झारखंड पुलिस को पहाड़ के आसपास के पॉकेट में कट-ऑफ लगाने और कोई आवश्यकता पड़ने पर परस्पर सहायता प्रदान करने का निर्देश दिया, जबकि वे अपनी क्यूएटी के कार्मिकों के साथ पहाड़ी पर चढ़ने लगे।

निर्देशानुसार क्यूएटी/134 के सैन्य दस्ते क्षेत्र की गहन तलाशी करते हुए सावधानीपूर्वक दो अलग-अलग दिशाओं से आगे बढ़े। दिनांक 08.02.2018 को लगभग 1345 बजे, आगे बढ़ रही क्यूएटी के जवान कांस्टेबल/जीडी प्रमोद कुमार ने आगे की ओर कुछ संदिग्ध गतिविधियां देखीं। एक बार पुष्टि हो जाने पर, उन्होंने कुछ दूरी पर सशस्त्र माओवादियों की मौजूदगी के बारे में तत्काल अपने कमांडर को सूचित किया। श्री संजय मोहंती ने तुरंत पूरे सैन्य दस्ते को सतर्क किया और उन्हें इन गतिविधियों के बारे में अवगत कराया। चूंकि क्यूएटी के जवान माओवादियों के घृणित और बुरे इरादों से परिचित थे, इसलिए प्रत्येक कदम सावधानीपूर्वक और रणनीतिक ढंग से उठाया जा रहा था। रणनीतिक पोजीशन लेने के बाद, सैन्य दस्ते ने माओवादियों को ललकारा और उन्हें आत्मसमर्पण करने के लिए कहा। सैन्य दलों की अचानक चेतावनी ने माओवादियों को स्तब्ध कर दिया; शायद उन्हें यह विश्वास ही नहीं हुआ कि सुरक्षा बल उनके इतने नजदीक हैं। तथापि, वे यथा शीघ्र संभल गए और उन्होंने सैन्य दस्ते पर अलग-अलग दिशाओं से अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी।

गोलियों की आवाज सुनने पर, श्री संजय मोहंती, डिप्टी कमांडेंट ने समय नहीं गंवाया और अपने सैन्य दस्ते को माओवादियों के विरुद्ध जवाबी हमला करने का निर्देश दिया। सामने से जवाबी हमले का नेतृत्व करते हुए, उन्होंने क्यूएटी 134 बटालियन के सब इंस्पेक्टर/जीडी अनुज कुमार त्यागी, कांस्टेबल/जीडी प्रमोद कुमार और कांस्टेबल/जीडी मनोज कुमार के साथ माओवादियों पर धावा बोल दिया। माओवादी अत्याधुनिक हथियारों से लैस थे और वे रणनीतिक दृष्टि से लाभप्रद स्थिति में थे। वे सुरक्षा बलों से कड़ा मुकाबला कर रहे थे और दोनों के बीच एक लंबी और सतत मुठभेड़ होने की संभावना थी। तथापि, सैन्य दस्ते ने यह दृढ़ निश्चय कर लिया था और ठान लिया था कि वे उन्हें अपने काबू में करके रहेंगे और खाली हाथ नहीं लौटेंगे।

यद्यपि, हमारे सैन्य दस्ते बहादुरी से जवाबी हमला कर रहे थे, फिर भी यह प्रभावशाली साबित नहीं हो रहा था क्योंकि माओवादी रणनीतिक ढंग से लाभप्रद स्थिति में थे। हमारे सैन्य दस्ते को हताहत होने से बचाने के लिए माओवादियों पर हमला करने हेतु भी एक निर्भीक और साहसिक चाल की नितांत आवश्यकता थी। इस प्रकार की अत्यावश्यकता की परिस्थिति में, श्री संजय मोहंती, डिप्टी कमांडेंट ने जिम्मेदारी संभालते हुए स्थिति का डटकर सामना किया। बरसती हुई गोलियों का सामना करते हुए, वे सब इंस्पेक्टर/जीडी अनुज कुमार त्यागी, कांस्टेबल/जीडी प्रमोद कुमार दुबे और कांस्टेबल/जीडी मनोज कुमार के साथ प्रभावशाली जवाबी हमला करने के लिए एक रणनीतिक स्थल तक पहुंचने के लिए रेंगकर आगे बढ़े। क्यूएटी के शेष सैनिकों को कवर फायर प्रदान करने का आदेश दिया गया और उन्होंने वैसा ही किया।

रणनीतिक पोजीशन में पहुंचने पर, उपर्युक्त चार शेर दिल जवानों ने यूबीजीएल का प्रयोग करते हुए माओवादियों पर कहर बरपा दिया। मुड़ी भर सैनिकों के भयंकर जवाबी हमले ने माओवादियों के खेमे में तबाही और अव्यवस्था पैदा कर दी। इसका लाभ उठाकर, उपर्युक्त चारों जवान माओवादियों के और नजदीक आ गए तथा उन पर गोलियों की बौछार कर दी; माओवादी आश्रय/बचाव की तलाश में इधर उधर भागने लगे। माओवादियों ने आगे बढ़ रहे सैन्य दस्ते पर गोलीबारी करते हुए उबड़-खाबड़ भूमि का उपयोग करके भागना शुरू कर दिया। इसी बीच, सब इंस्पेक्टर/जीडी अनुज कुमार त्यागी ने मोर्टार से एच.ई. बम चलाया, जो पूर्णता के साथ माओवादियों की पोजीशन के नजदीक गिरा, जिससे माओवादी घायल हो गए और उनका मनोबल गिर गया।

सैन्य दस्ता यहीं पर ही नहीं रुका और उन्होंने अपना जवाबी हमला जारी रखा। माओवादी मात खा गए और सुरक्षा बलों के आक्रोश को और नहीं झेल सके। उन्होंने घने जंगल और पहाड़ी क्षेत्र का कवर लेकर भागना शुरू कर दिया और बच निकले। जब गोलाबारी रुकी, तो सैन्य दस्ते ने उक्त क्षेत्र की पूरी तलाशी ली, जिसमें उन्होंने एक माओवादी का शव, हथियार और विभिन्न प्रकार की आपराधिक सामग्रियां बरामद कीं। सैन्य दस्ते ने घटना स्थल से एक घायल महिला माओवादी कांडर को भी गिरफ्तार किया।

बाद में, दिनांक 10.02.2018 को, ए/134 बटालियन के सैन्य दस्ते ने एक अलग घटना में एक और माओवादी को गिरफ्तार किया जो कथित तौर पर एरिया कमांडर राजेश यादव था, जिसने पूछताछ के दौरान यह खुलासा किया कि दिनांक 08.02.2018 को ऑपरेशन के दौरान बंदूक की लड़ाई में कई माओवादी गोलियों से घायल हुए हैं और वे एकांत स्थानों पर उपचार करवा रहे हैं। घायलों में से एक व्यक्ति की बाद में मृत्यु हो गई और उसका किसी गुप्त स्थान पर दाह संस्कार कर दिया गया। इसकी पुष्टि पुलिस स्टेशन- नौडिहा बाजार एसडीई सं. 07/2018 के अंतर्गत पुलिस रिकॉर्ड से भी होती है।

ऑपरेशन के दौरान, श्री संजय मोहंती, डिप्टी कमांडेंट, सब इंस्पेक्टर/जीडी अनुज कुमार त्यागी, कांस्टेबल/जीडी प्रमोद कुमार दुबे और कांस्टेबल/जीडी मनोज कुमार अपनी जान की परवाह किए बिना माओवादियों के विरुद्ध बहादुरी से लड़े। दिनांक 07 एवं 08.02.2018 की मध्यवर्ती रात्रि में पूरी रात घात लगाने के दौरान थके होने के बावजूद, उन्होंने अपनी इयूटी करते हुए उत्कृष्ट रणनीतिक दक्षता, साहस

और जिम्मेदारी का प्रदर्शन किया। प्रतिकूल परिस्थितियों में क्यूएटी/134 के सैन्य दस्ते द्वारा प्रदर्शित अतुलनीय वीरता और शौर्यपूर्ण कार्यवाही सर्वोच्च सम्मान की हकदार है।

इस ऑपरेशन में सर्व/श्री संजय मोहंती, डिप्टी कमांडेंट, अनुज कुमार त्यागी, सब इंस्पेक्टर, प्रमोद कुमार दुबे, कांस्टेबल और मनोज कुमार, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किये जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 08.02.2018 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/03/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 115-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	दैहरी नेनिओ	असिस्टेंट कमांडेंट	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	प्रहलाद सिंह	असिस्टेंट कमांडेंट	वीरता के लिए पुलिस पदक
03	अनिल शर्मा	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
04	विवेक कुमार	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दक्षिण कश्मीर में आतंकवाद के परिप्रेक्ष्य से जम्मू और कश्मीर में राष्ट्रीय राजमार्ग-44 एक अति संवेदनशील सड़क मार्ग रहा है। इसका मुख्य कारण यह है कि सैन्य दस्तों को भारी नुकसान पहुंचाने के लिए जम्मू से श्रीनगर और श्रीनगर से जम्मू की ओर सुरक्षा बलों के काफिले की आवाजाही के दौरान उनके ऊपर आतंकवादी हमले की अत्यधिक संभावना रहती है। विशेषकर जवाहर सुरंग से लेकर श्रीनगर तक का भाग आतंकवादियों द्वारा ऐसे हमलों के लिए परम्परागत रूप से कुख्यात रहा है।

यद्यपि सीआरपीएफ द्वारा सेना के सपोर्टिंग कॉरिडोर संरक्षण में सुरक्षा बलों के प्रस्थान से पहले रोड ओपनिंग पार्टियां तैनात करने की एक सुनियोजित प्रणाली है, फिर भी इस काम के लिए उपलब्ध सैन्य दस्तों की नफरी सीमित होने के कारण तैनाती में महत्वपूर्ण अंतराल रह जाते हैं, जिसका आतंकवादियों द्वारा राजमार्ग पर चलने वाले लोगों और ऊबड़-खाबड़ भूमि पर निर्माणाधीन और निर्जन भवनों का फायदा उठाकर बार-बार अनुचित रूप से लाभ उठाया जाता है।

दिनांक 04 दिसम्बर, 2017 को, राष्ट्रीय राजमार्ग 44 पर माइलस्टोन 227-231 तक रोड ओपनिंग पार्टी की ड्यूटी के लिए श्री प्रहलाद सिंह, असिस्टेंट कमांडेंट के पर्यवेक्षण में बी/163 सीआरपीएफ को तैनात किया गया था। लगभग 1240 बजे, जब सेना (भाग 4) का अप काफिला श्रीनगर की ओर जा रहा था, तब पुलिस स्टेशन काजीगुंड, जिला कुलगाम के अंतर्गत गांव भद्रागुंड में 228 माइलस्टोन पर हाईवे के दायीं ओर से इसके ऊपर आतंकवादियों द्वारा गोलीबारी की गई। हाईवे के बायीं ओर रोड ओपनिंग पार्टी के पिकेट पर तीन अन्य कार्मिकों के साथ कांस्टेबल अनिल शर्मा को तैनात किया गया था, जिन्हें उस क्षेत्र को कवर करने के लिए एक-दूसरे से कुछ दूरी पर रखा गया था। स्थिति की संवेदनशीलता को ध्यान में रखते हुए, अनिल शर्मा अपनी जान की परवाह किए बिना तत्काल अपनी पोजीशन से अकेले ही आगे बढ़े और खुली सड़क पर बाहर निकल आए और बहादुरी से आतंकवादियों पर गोलीबारी की। अनिल शर्मा द्वारा की गई तत्काल कार्यवाही से आतंकवादी हतोत्साहित हो गए और स्पष्ट रूप से खीज का प्रदर्शन करते हुए, उन्होंने अपने हथियारों का निशाना अनिल शर्मा की ओर कर दिया। तथापि, बड़ी तत्परता, सूझ-बूझ और दृढ़ साहस का प्रदर्शन करते हुए, अनिल शर्मा ने बिना किसी कवर के समय गंवाए बगैर तुरंत सड़क पर लेट कर पोजीशन ले ली और आतंकवादियों पर लगातार गोलीबारी की तथा आतंकवादियों को सड़क पर पीछे हटने और एक बड़े भवन के पीछे शरण लेने के लिए विवश कर दिया।

श्री प्रहलाद सिंह, असिस्टेंट कमांडेंट, जो बोनीगाम में माइलस्टोन 228.3 पर तैनात थे, हमले के बारे में सूचना प्राप्त होने पर तत्काल घटना स्थल की ओर चल पड़े और साथ ही साथ, उन्होंने श्री दलजीत सिंह, कमांडेंट 163 बटालियन को भी सूचित कर दिया। जैसे ही वे घटना स्थल पर पहुंचे, तो आतंकवादियों ने उनके बुलेट प्रूफ (बीपी) वाहन पर गोलियों की बौछार करनी शुरू कर दी। प्रहलाद सिंह ने

पूरी निडरता से वाहन के लूपहोल में से गोलीबारी करके जवाबी हमला किया। साथ ही साथ, वे अपने बीपी वाहन को सड़क से दूर ले गए, इसकी आड़ में जल्दी से नीचे उतरे, ऊबड़-खाबड़ भूमि पर पोजीशन ले ली और गोलीबारी शुरू कर दी। आतंकवादी दोबारा भवन के पीछे छिप गए। प्रहलाद सिंह के साथ केवल तीन सुरक्षा कर्मी थे और उन्हें घटना स्थल पर मौजूद आतंकवादियों की संख्या के बारे में जानकारी नहीं थी। तथापि, उस भवन के पीछे की दिशा, जो खुली थी और काफी जंगल का कवर प्रदान करती थी, से उन्हें बचकर निकल जाने से रोकने के लिए उस क्षेत्र की घेराबंदी करने की तत्काल आवश्यकता को महसूस करते हुए, प्रहलाद सिंह ने बिना समय गंवाए अपने सुरक्षा कर्मियों को भवन को सभी दिशाओं से कवर करने का निर्देश दिया। वे स्वयं दौड़कर भवन के पीछे गए और अपेक्षा के अनुरूप आतंकवादियों को दूसरी ओर से पीछे की तरफ जाते हुए देखा। कुछ दूरी से उनको देखने पर, आतंकवादियों ने दोबारा उन पर गोलीबारी शुरू कर दी, परंतु प्रहलाद सिंह ने तुरंत भवन के पीछे एक नाले में पोजीशन ले ली और आतंकवादियों को निशाना बनाया। उनके इस शीघ्र मूल्यांकन और निर्भीक कार्रवाई के कारण, आतंकवादी पीछे की ओर से बच निकलने की अपनी योजना में सफल नहीं हो पाए और भवन के अगले हिस्से की ओर वापस आने पर मजबूर हो गए।

श्री मोहसिन शाहिदी, उप महानिरीक्षक (ऑपरेशन) सीआरपीएफ, जो ऑपरेशनल डेमो देखने के लिए पास में स्थित ट्रांजिट कैंप, काजीगुंड के दौरे पर थे, सूचना प्राप्त होने पर कमांडेंट 163 बटालियन एवं 90 बटालियन और रेंज क्यूएटी अनंतनाग तथा यूनिट क्यूएटी 163 बटालियन के साथ तत्काल घटना स्थल की ओर रवाना हो गए। घटना स्थल पर पहुंचने और प्रहलाद सिंह, उप महानिरीक्षक (ऑपरेशन) अनंतनाग से बातचीत करने के बाद, उन्होंने संदिग्ध भवन के चारों ओर घेराबंदी मजबूत करने का आदेश दिया। तत्पश्चात, उन्होंने श्री दैहरी नेनिओ की कमान में रेंज क्यूएटी को आगे की ओर से भवन को पार करने और आतंकवादियों की मौजूदगी की पुष्टि करने हेतु किसी भी संदिग्ध गतिविधि का पता लगाने के लिए एचआईटी के साथ तैयार पोजीशन में खड़े बीपी बंकर में रणनीतिक ढंग से आगे बढ़ने का काम सौंपा। जब रेंज क्यूएटी उसके पार गई और भवन के अग्र भाग के सामने पहुंची, तो आतंकवादियों द्वारा भवन की सीढ़ियों से गोलीबारी की गई। श्री दैहरी नेनिओ के नेतृत्व में रेंज क्यूएटी के सदस्यों ने जवाबी गोलीबारी की और आतंकवादियों को दोबारा भवन के अंदर जाने के लिए विवश कर दिया।

एक बार भवन में आतंकवादियों की मौजूदगी की पुष्टि हो जाने पर, रेंज क्यूएटी और यूनिट क्यूएटी 163 बटालियन को तत्काल भवन के क्रमशः आगे और बाएं वाले हिस्से को अपने अधिकार में लेने का काम सौंपा गया। अपने सहयोगी कांस्टेबल विवेक कुमार के साथ दैहरी नेनिओ ने लक्षित घर के नजदीक आगे वाले हिस्से में पोजीशन ले ली। यह एक जोखिमपूर्ण पोजीशन थी क्योंकि यह वास्तव में खुले स्थान में थी, जहां गोलीबारी अथवा किसी ग्रेनेड हमले के प्रति कोई प्रभावशाली कवर नहीं था। तथापि, चूंकि यही वह एकमात्र पोजीशन थी, जहां से भवन के अंदर आतंकवादियों की गतिविधि थोड़ा-बहुत दिखाई देती थी और जहां से वे दोनों लक्ष्य पर प्रभावशाली गोलीबारी कर सकते थे, इसलिए प्रत्यक्ष गंभीर खतरे के बावजूद, उन्होंने बिना समय गंवाए पोजीशन ले ली, चूंकि आतंकवादी भवन में एक खिड़की के पीछे से लगातार गोलीबारी कर रहे थे, इसलिए दैहरी नेनिओ ने अधिकतम क्षति पहुंचाने के लिए यूबीजीएल चलाने का निर्णय लिया। यह एक मुश्किल और अत्यधिक खतरनाक काम था क्योंकि नेनिओ को असमतल एवं खुले क्षेत्र में पोजीशन लेनी पड़ी और प्रभावशाली गोलीबारी करने के लिए सामने आना पड़ा। बेहतर तालमेलपूर्ण कार्रवाई करते हुए कांस्टेबल विवेक कुमार भी खुले में आ गए और जब नेनिओ ने आतंकवादियों पर एक के बाद एक यूबीजीएल फेंके, तो उन्होंने कवर प्रदान करने वाली गोलीबारी की। इन दोनों बहादुर कर्मियों द्वारा की गई इस साहसिक कार्रवाई के परिणामस्वरूप अन्य सुरक्षा बलों और अतिरिक्त सैन्य दस्ते पहुंचने तक आतंकवादियों को वहां पर रोक के रखा गया।

इस अवसर पर, सेना और सिविल पुलिस के घटक इस ऑपरेशन में शामिल हो गए तथा लक्षित घर के चारों ओर घेराबंदी और मजबूत कर दी। इसी बीच, विवेक कुमार के साथ नेनिओ ने आतंकवादियों के ठिकाने पर अपनी एके-47 से लगातार सधी हुई गोलीबारी की। सुरक्षा बलों और निर्माणाधीन भवन में छिपे आतंकवादियों के बीच लगातार भारी गोलीबारी होती रही। यह निर्णय लिया गया कि आरआर, सड़क के पार वाली पोजीशन से उस घर पर सीजीआरएल से गोलीबारी करेगी और नेनिओ तथा विवेक कुमार के नेतृत्व में सीआरपीएफ समन्वित रूप से कवर प्रदान करने वाली गोलीबारी करेगी। एक संगठित प्रयास के बाद, इस दल ने उस भवन में सफलतापूर्वक एक छेद कर दिया। भवन में विस्फोट करने के लिए आईईडी लगाई गई, जिसमें श्री नेनिओ और विवेक कुमार दोनों ने इस कार्य की पूर्णता हेतु कवर प्रदान करने वाली गोलीबारी की। आईईडी लगाने की प्रक्रिया के दौरान, आतंकवादियों ने सेना के जवानों को घर के नजदीक आते हुए देखा और एक ग्रेनेड फेंका, जिसमें सेना का एक जवान घायल हो गया। आतंकवादियों को और क्षति पहुंचाने से रोकने के लिए अपने सहयोगी विवेक कुमार के साथ श्री नेनिओ अपनी जान की परवाह किए बिना उनके छिपने के स्थान की ओर अंधाधुंध गोलीबारी करते हुए तत्काल आगे बढ़े और तब तक लगातार ऐसा करते रहे जब तक कि जवान को उस स्थान से सुरक्षित बाहर नहीं निकाल लिया गया। तदनन्तर, लक्षित घर को विस्फोट करके उड़ा दिया गया। मलबे से आतंकवादियों के शव और हथियार बरामद करने के लिए संयुक्त तलाशी दल गठित किए गए। श्री नेनिओ और विवेक कुमार का एक ऐसा ही दल गठित हुआ। जब तलाशी चल रही थी, तब एक आतंकवादी ने मलबे में से गोलीबारी की, परंतु सतर्क बहादुर कर्मियों श्री नेनिओ और विवेक कुमार ने उसे तत्काल ढेर कर दिया और सैन्य दस्तों को किसी भी प्रकार की क्षति/घायल होने से बचा लिया। मलबे की कठिन तलाशी के बाद, 02 एके-47 राइफलें, 01 एके-48 राइफल, 04 मैगजीनों और 54 जिंदा

राउण्ड के साथ तीन आतंकवादियों के शव बरामद हुए। यह ऑपरेशन किसी नागरिक के हताहत हुए बिना दिनांक 5 दिसंबर, 2017 को 0135 बजे सफलतापूर्वक पूरा हुआ और सैन्य दस्ते सुरक्षित रूप से अपने-अपने स्थानों पर पहुंच गए।

मारे गए आतंकवादियों की पहचान यावर बशीर वानी (श्रेणी क+), अबु फुरखान (एफटी/श्रेणी क++) डिवीजनल कमांडर दक्षिणी कश्मीर और अबु माविया (एफटी/श्रेणी क+) के रूप में की गई। ये तीनों आतंकवादी दिनांक 16 जून, 2017 को थाजीवाडा, अनंतनाग में एसएचओ अचबल और उनके दल पर घात लगाकर हमले, दिनांक 10 जुलाई, 2017 को बाटिंगो में श्री अमरनाथ जी यात्री बस पर हमले और दिनांक 2 नवम्बर, 2017 को लाजीबल, अनंतनाग में सीआरपीएफ के ट्रांजिट काफिले पर हमले सहित सिविलियनों, पुलिस और सुरक्षा बलों पर हुए हमलों में शामिल थे।

भद्रागुंड का ऑपरेशन शायद पहला ऐसा उदाहरण था, जिसमें सुरक्षा बल के काफिले पर हमला करने वाले आतंकवादी बच कर भाग नहीं सके, अपितु उन्हें घेर लिया गया और अंततः मार गिराया गया। यह सीआरपीएफ के सैन्य दस्तों द्वारा की गई त्वरित कार्रवाई और जवाबी हमले के कारण संभव हुआ, जिन्होंने अनुकरणीय साहस और पेशेवरता के साथ भयानक स्थिति का सामना किया तथा अधिक महत्वपूर्ण यह था कि उन्होंने ऑपरेशन के प्रारंभिक चरण को अकेले ही प्रभावशाली ढंग से संभाला। इस सफल ऑपरेशन को अंजाम देने वाले श्री दैहरी नेनिओ, असिस्टेंट कमांडेंट, श्री प्रहलाद सिंह, असिस्टेंट कमांडेंट, कांस्टेबल विवेक कुमार और अनिल शर्मा थे, जिन्होंने इस ऑपरेशन में अत्यधिक धैर्य और अनुकरणीय साहस का प्रदर्शन किया।

इस ऑपरेशन में, सर्व/श्री दैहरी नेनिओ, असिस्टेंट कमांडेंट, प्रहलाद सिंह, असिस्टेंट कमांडेंट, अनिल शर्मा, कांस्टेबल और विवेक कुमार, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किये जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 04.12.2017 से दिया जाएगा।

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 116-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	राजेन्द्र हरिजन,	असिस्टेंट कमांडेंट	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	अमरजीत कुमार दास	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
03	अनूप डे,	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
04	जयंत बोरो,	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
05	रंगजालू बारो	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
06	राहुल कुमार पाठक	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
07	धीमन बरुआ,	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 28.05.2018 को, पुलिस स्टेशन छतरपुर, जिला-पलामू (झारखंड) के अंतर्गत टिरडीह, दुंदूर के सामान्य क्षेत्र में सब-जोनल कमांडर निशांतजी के साथ गिरदर गंजू (जोनल कमांडर) के नेतृत्व में टीपीसी माओवादियों के एक सशस्त्र गुट की मौजूदगी के बारे में अपने स्रोत से एक आसूचना संबंधी जानकारी प्राप्त हुई। सूचना की पुष्टि करने के बाद, लक्ष्य की प्राप्ति के लिए पुलिस उप महानिरीक्षक (ऑपरेशन) पलामू, कमांडेंट 134 बटालियन, पुलिस अधीक्षक पलामू और श्री राजेन्द्र हरिजन, असिस्टेंट कमांडेंट द्वारा एक ऑपरेशन की योजना बनाई गयी। योजना के अनुसार, श्री राजेन्द्र हरिजन, असिस्टेंट कमांडेंट (ओसी-ए/134) की कमान में ए/134 बटालियन की दो प्लाटून सिविल पुलिस के साथ दिनांक 28.05.2018 को उन्हें खोजने और मारने के ऑपरेशन के लिए रवाना हुई। चूंकि समय कम था और आसूचना अत्यधिक विश्वसनीय थी, इसलिए सैन्य दस्ते ने दुंदूर गांव तक सिविल पैटर्न वाले वाहनों का प्रयोग किया, जहां से वे नजर में आए बिना और गोपनीयता/आश्चर्य बरकरार रखते हुए ऑपरेशन वाले क्षेत्र में प्रवेश कर सकते थे।

जब ए/134 का सैन्य दस्ता लगभग 1130 बजे पूरी सावधानी बरतते हुए दुंदूर गांव के वन क्षेत्र की ओर रणनीतिक ढंग से आगे बढ़ रहा था, तब अग्रणी टीम के स्काउट ने वन क्षेत्र में एक संदिग्ध गतिविधि देखी। स्काउट ने ध्यानपूर्वक गतिविधि का अवलोकन किया और तत्काल अपने कमांडर श्री राजेन्द्र हरिजन, असिस्टेंट कमांडेंट को सूचित किया, जिन्होंने दूरबीन का प्रयोग करके इसकी पुष्टि की। कमांडर ने तुरंत क्षेत्रीय संकेतों का प्रयोग करते हुए अपने सैन्य दस्ते को सतर्क किया और उन्हें वर्तमान स्थिति के बारे में अवगत कराया। कमांडर और सैन्य दस्ता माओवादियों की मौजूदगी के बारे में आश्वस्त थे, परंतु वे उनकी ताकत और जमीनी विशिष्टताओं के बारे में निश्चित नहीं थे। उनकी ताकत और ठिकानों के बारे में सुनिश्चित किए बिना आगे बढ़ना घातक सिद्ध होता, इसलिए कमांडर ने पहले उपर्युक्त ब्यौरे को सुनिश्चित करने का निर्णय लिया और इस प्रयोजन के लिए टोह लेने वाला एक छोटा दल बनाया। स्थिति की गंभीरता और आगे संभावित खतरे को भांपते हुए, टीम कमांडर श्री राजेन्द्र हरिजन, असिस्टेंट कमांडेंट ने टोह लेने वाले दल का नेतृत्व स्वयं करने का निर्णय लिया, जिसमें कांस्टेबल राहुल कुमार पाठक और कांस्टेबल (जोड़ी) धीमन बरुआ शामिल थे। टोह लेने वाले दल ने चुपके से माओवादियों के ठिकाने की ओर आगे बढ़ना शुरू किया।

जब सैन्य दस्ता माओवादियों के नजदीक पहुंच रहा था, तब स्वचालित हथियारों की गोलियों की बौछार ने उनका स्वागत किया। माओवादियों ने घेराबंदी को भांपते हुए, सुरक्षा बलों को मारने और उनके हथियार, गोलाबारूद एवं संचार सेट छीनने के इरादे से उनके ऊपर गोलीबारी शुरू कर दी। तथापि, सैन्य दस्ता इस प्रकार की स्थिति के लिए तैयार था। इस नाजुक स्थिति में अपना धैर्य बनाए रखते हुए, श्री राजेन्द्र हरिजन, असिस्टेंट कमांडेंट ने अपने दोनों शेर दिल जवानों के साथ गोलीबारी का जवाब दिया और कवर के लिए तेजी से आगे बढ़े। ऐसा करते हुए उन्होंने शेष सैनिकों को रणनीतिक ढंग से माओवादियों को दोनों ओर/किनारे से कवर करने का आदेश दिया। उन्होंने तेज आवाज में माओवादियों को आत्मसमर्पण करने की चुनौती भी दी, परंतु इसके उत्तर में पुनः गोलियों की बौछार की गई। माओवादियों को कानून के शिकंजे में लाने के दृढ़ निश्चय से श्री राजेन्द्र हरिजन, असिस्टेंट कमांडेंट ने कांस्टेबल राहुल कुमार पाठक और कांस्टेबल धीमन बरुआ के साथ एक-दूसरे को परस्पर गोलीबारी का सहारा देते हुए और अपने फायदे के लिए जमीनी कवर का प्रयोग करते हुए माओवादियों की ओर आगे बढ़ना जारी रखा।

सैन्य दस्ते की चेतावनी से विमुख होकर और उन्हें अपने ठिकाने के नजदीक पाकर, माओवादियों ने आगे बढ़ रहे सैन्य दस्ते पर कई दिशाओं से अपनी गोलियों की सारी ताकत झोंक दी। माओवादी आत्मसमर्पण करने के मूढ़ में नहीं दिखाई दे रहे थे और जवाबी हमला करने के सिवाय कोई विकल्प न बचने पर, कमांडर ने अपने सैन्य दस्ते को माओवादियों के विरुद्ध जवाबी-हमला करने का निदेश दिया। रणनीति के अनुसार, कांस्टेबल अमरजीत कुमार दास, कांस्टेबल रंगजालू बारो, कांस्टेबल अनूप डे और कांस्टेबल जयंत बोरो वाले सैन्य दस्ते के दूसरे भाग, जो टोह लेने वाले दल के पीछे था, ने माओवादियों को घेरना शुरू कर दिया। दोनों तरफ से भारी गोलीबारी शुरू हो गई। इस अवसर पर, श्री राजेन्द्र हरिजन, असिस्टेंट कमांडेंट, कांस्टेबल राहुल कुमार पाठक और कांस्टेबल धीमन बरुआ ने अपने से थोड़ी दूरी पर माओवादियों के ठिकाने को देखा। कमांडर श्री राजेन्द्र हरिजन, असिस्टेंट कमांडेंट ने दूसरे दल (कांस्टेबल अमरजीत कुमार दास, कांस्टेबल रंगजालू बारो, कांस्टेबल अनूप डे और कांस्टेबल जयंत बोरो), जो माओवादियों को घेर रहा था, को माओवादियों पर भारी गोलीबारी शुरू करने का निदेश दिया। माओवादियों ने भी इस दल पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी, जो उन्हें परास्त करने की कोशिश कर रहा था। कमांडर के निर्देशानुसार चारों जवानों ने भारी गोलीबारी के हमले का वीरतापूर्वक सामना किया और उनके ऊपर लगातार गोलाबारी की। इस गोलीबारी के कवर के भीतर ही कांस्टेबल राहुल पाठक और कांस्टेबल धीमन बरुआ की यथोचित सहायता से श्री राजेन्द्र हरिजन, असिस्टेंट कमांडेंट के नेतृत्व में टोह लेने वाले दल ने अपनी जान की परवाह किए बिना सटीक और प्रभावशाली गोलीबारी करते हुए माओवादियों पर धावा बोल दिया जिसमें कुछ माओवादियों को चोटें आईं।

उपर्युक्त शेरदिल जवानों द्वारा सामने और किनारे से किए गए भयंकर जवाबी हमले ने माओवादियों की सुरक्षा को ध्वस्त कर दिया और उन्हें पहाड़ी की ओर भागने पर विवश कर दिया। माओवादी भागते हुए भी किनारे वाले सैन्य दस्ते पर भारी गोलीबारी कर रहे थे। किनारे वाले सैनिकों नामतः कांस्टेबल अमरजीत कुमार दास, कांस्टेबल रंगजालू बारो, कांस्टेबल अनूप डे और कांस्टेबल जयंत बोरो ने अपनी जान की परवाह किए बिना न केवल माओवादियों की गोलीबारी का पूरी ताकत से जवाब दिया बल्कि भाग रहे माओवादियों का पीछा भी किया और अपनी सटीक गोलीबारी से उनमें से कुछ को चोट भी पहुंचाई, जबकि कुछ माओवादी झाड़ियों और ऊबड़-खाबड़ जमीन का फायदा उठाकर भागने में सफल हो गए।

मुठभेड़ के बाद की गई तलाशी में मुठभेड़ स्थल से तीन माओवादियों के शव बरामद हुए जिनकी बाद में अमरजीत उर्फ राजेश माझी (टीपीसी एरिया कमांडर), पवनजी (टीपीसी एरिया कमांडर) और चंदन जी (टीपीसी एरिया कमांडर) के रूप में पहचान की गई। उनके पास से एक एकेएम राइफल, दो एसएलआर, दो 303 राइफल, एक 315 बोर राइफल, भारी मात्रा में गोलाबारूद और विभिन्न प्रकार की आपराधिक सामग्रियां बरामद हुईं। इसके अतिरिक्त, सैन्य दस्ते ने मुठभेड़ स्थल से तीन माओवादियों नामतः विकास पासवान, टीपीसी दस्ता सदस्य, सोनू कुमार यादव, टीपीसी दस्ता सदस्य और लल्लू सिंह, टीपी दस्ता सदस्य को भी गिरफ्तार किया। एक गिरफ्तार माओवादी के दार्यों जांच में गोली से चोट लगी हुई थी और उसे बाद में उपचार के लिए जिला अस्पताल डाल्टनगंज, पलामू में भर्ती कराया गया।

इस ऑपरेशन में सर्व/श्री राजेन्द्र हरिजन, असिस्टेंट कमांडेंट, अमरजीत कुमार दास, कांस्टेबल, अनूप डे, कांस्टेबल, जयंत बोरो, कांस्टेबल, रंजालू बारो, कांस्टेबल, राहुल कुमार पाठक, कांस्टेबल और धीमन बरुआ, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किये जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 28.05.2018 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/54/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 117-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	विनय कुमार तिवारी	कमांडेंट	वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार
02	मुकेश कुमार	सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक
03	मो. युसुफ इतू	असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक
04	नीरज कुमार	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
05	सईद हुसैन	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 22-23 जनवरी, 2019 की मध्यवर्ती रात्रि को, बारामुला पुलिस को तहसील बारामुला के बिन्नार नाला के सामान्य क्षेत्र में एक आतंकवादी गुट की मौजूदगी के संबंध में एक विश्वसनीय सूचना प्राप्त हुई। तदनुसार, श्री अतुल कुमार गोयल, उप महानिरीक्षक, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस, उत्तरी कश्मीर के गहन पर्यवेक्षण में श्री विनय कुमार तिवारी, कमांडेंट 53 बटालियन सीआरपीएफ, श्री मो. युसुफ, अपर पुलिस अधीक्षक बारामुला और 46 राष्ट्रीय राइफल्स (आरआर) के कमांडिंग ऑफिसर (सीओ) द्वारा एक संयुक्त ऑपरेशन की योजना बनाई गई। इस ऑपरेशन की योजना अत्यंत सावधानीपूर्वक बनाई गई, जिसमें मौसम के हालात और आतंकवादियों को भागने का अवसर प्रदान करने के लिए ऑपरेशन में बाधा पहुंचाने की कोशिश करने वाले पत्थरबाजों की बढ़ती हुई प्रवृत्ति सहित अन्य मुद्दों को भी ध्यान में रखा गया। बेहतर ऑपरेशनल समन्वय और प्रभावशाली संचार के लिए, संयुक्त ऑपरेशनल घटकों के अलावा, अलग-अलग ऑपरेशनल घटकों ने एक-दूसरे से अपने वायरलेस उपकरण और गाइड बदल लिये।

बारामुला जम्मू और कश्मीर राज्य का सबसे उत्तरी जिला होने के नाते, वहां विदेशी आतंकवादी अधिक संख्या में मौजूद रहते हैं, जो निष्क्रियता की अवस्था में रहते हैं और अपने छिपने के स्थानों में बने रहने के इरादे से बिरले ही कोई जघन्य कृत्य करते हैं, संभारतंत्र संग्रह करते हैं और तत्पश्चात यथोचित योजना के बाद दक्षिणी कश्मीर में काडर भेजते हैं। इसलिए, उत्तरी कश्मीर में अधिकतर ऑपरेशन विश्वसनीय कार्रवाई योग्य सूचना प्राप्त होने पर ही चलाए जाते हैं।

इस प्रकार योजना के अनुसार, दिनांक 23 जनवरी, 2019 की भोर में उनके छिपने के संदिग्ध स्थानों की घेराबंदी की गई। जब तक कमांडेंट विनय कुमार तिवारी के नेतृत्व में 53 बटालियन, सीओ 46 आरआर के नेतृत्व में 46 आरआर और मो. युसुफ, अपर पुलिस अधीक्षक बारामुला के नेतृत्व में स्थानीय पुलिस के संयुक्त दल अत्यधिक आश्चर्य बनाए रखते हुए, गैर परंपरागत छद्म मार्गों से होते हुए संदिग्ध नाले (छोटा नाला जहां आतंकवादियों के छिपे होने का संदेह था) तक पहुंचे, तब तक एक कड़ी घेराबंदी कर ली गई। बचकर निकलने की प्रत्येक संभावना को रोकने के लिए बचाव के सभी संभावित मार्गों को रणनीतिक ढंग से अवरुद्ध कर दिया गया। जनवरी में अप्रत्याशित भारी बर्फबारी से अत्यधिक ठंड के हालात हो गए और इसके साथ-साथ घनी झाड़ियां तथा पहाड़ी क्षेत्र सैन्य दस्ते की मोबिलिटी में बाधा पहुंचा रहे थे। जोखिमपूर्ण क्षेत्र और भयंकर ठंड के हालातों से बेफिक्र सैन्य दस्ता आगे बढ़ता रहा और रणनीतिक दृष्टि से एक अभेद्य घेराबंदी करने में सफल हो गया। तथापि, भारी कोहरे के कारण कम दृश्यता की वजह से, तलाशी ऑपरेशन 1000 बजे तक टाल दिया गया। जब दृश्यता में सुधार हुआ, तो पहले से तैयार की गई योजना के अनुसार गठित संयुक्त तलाशी दलों ने संदिग्ध नाले की तलाशी शुरू कर दी, जिसमें क्वाड्रॉप्टरों ने सतत हवाई निगरानी करके इस कार्य में सहायता प्रदान की। 4 पैरा (एसएफ), विशेष ऑपरेशन समूह (एसओजी)

बारामुला और 53 बटालियन सीआरपीएफ की सहायता से 46 आरआर की संयुक्त तलाशी टीमों ने उक्त नाले की तीन बार संपूर्ण तलाशी की, परन्तु उनके छिपने के स्थान का पता लगाने में सफल नहीं हुए।

लगभग 1300 बजे, हार मानने को अनिच्छुक, श्री विनय कुमार तिवारी, कमांडेंट 53 बटालियन और मो. युसुफ, अपर पुलिस अधीक्षक बारामुला अपनी छोटी टीमों के साथ एक बार फिर संदिग्ध गुप्त क्षेत्र की ओर आगे बढ़े क्योंकि वे आतंकवादियों की मौजूदगी के बारे में आश्वस्त थे। इस बार, इन दलों ने बर्फ में जूतों के निशान देखे। उन्होंने संकेत-चिह्नों का पीछा किया, जो उन्हें उनके छिपने के संदिग्ध स्थान तक लेकर गए। उनके छिपने का स्थान बिल्कुल अनुमान लगाने योग्य नहीं था और उसका पता लगाना कठिन था। हड़्डियां कंपा देने वाली ठंड और दुर्गम क्षेत्र में विनय तिवारी के विवेकपूर्ण और शक्तिशाली नेतृत्व में सैन्य दस्ते का अटल, दृढ़निश्चयी और कभी उम्मीद न छोड़ने वाला दृष्टिकोण ही वह कारण था, जिससे वे उसका पता लगाने में सफल हुए। जैसे ही उनके छिपने के स्थान का पता लगा, विनय कुमार तिवारी के नेतृत्व वाले ऑपरेशनल सैन्य दस्ते के एक संयुक्त घटक को उनके छिपने के स्थान के भीतरी पूर्वी किनारे को मजबूत करने के लिए पूर्वी दिशा में तैनात किया गया, सं. 135115561 सब इंस्पेक्टर मुकेश कुमार के नेतृत्व वाले ऑपरेशनल दल के दूसरे संयुक्त घटक को पूर्वोत्तर किनारे पर तैनात किया गया, जबकि मो. युसुफ के नेतृत्व वाले तीसरे ऑपरेशनल घटक ने सेना/सीआरपीएफ के दलों के साथ इसके पश्चिमी किनारे पर उक्त छिपने के स्थान के आस-पास भीतर की ओर घेराबंदी की। तत्पश्चात, आतंकवादियों को आत्मसमर्पण करने का पूरा अवसर दिया गया, परन्तु वे अड़े रहे। यह समझते हुए कि उनका पता चल गया है, आतंकवादियों ने घेराबंदी में संध लगाकर बच निकलने के प्रयास में तलाशी दल पर अंधाधुंध गोलीबारी की ओर हैंड ग्रेनेड फेंके। आतंकवादियों की चाल का अनुमान लगाते हुए सेना, पुलिस और सीआरपीएफ के संयुक्त दलों ने उनके बच निकलने के प्रयास को यथोचित रूप से रोकते हुए प्रभावशाली जवाबी हमला किया। विभिन्न ऑपरेशनल दलों के साथ बड़े तालमेल का प्रदर्शन करते हुए, सं. 135115561 सब इंस्पेक्टर मुकेश कुमार, सं. 903061982 असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर मो. युसुफ इतू, सं. 105261444 कांस्टेबल नीरज कुमार, सं. 115143631 कांस्टेबल सईद और श्री केपिंग गिल, सेकेंड-इन-कमांड वाली अपनी टीम के साथ श्री विनय कुमार तिवारी के संयुक्त हमला दल ने रणनीतिक ढंग से अपनी पोजीशन में बदलाव किया। इसी बीच, निकटवर्ती सेब के बगीचों में काम करने वाले कुछ सामान्य नागरिक घेराबंदी में फंस गए और उन्हें बचाकर निकालना पड़ा। केपिंग गिल ने अपने सैन्य दस्ते के साथ उनको मुठभेड़ स्थल से बिना किसी क्षति के सुरक्षित बाहर निकालना सुनिश्चित किया। वह स्थान बर्फ और झाड़ियों से ढका हुआ एक गुफानुमा ढांचा था। स्वयं को पूरी तरह से घिरा हुआ पाकर आतंकवादियों ने अंधाधुंध गोलीबारी करते हुए और सभी दिशाओं में ग्रेनेड फेंकते हुए अपने छिपने के स्थान से बाहर निकलकर भागने का एक अंतिम प्रयास किया। विनय तिवारी के नेतृत्व वाली टीम इस हमले के लिए तैयार थी और उन्होंने बर्फ और झाड़ियों द्वारा प्रदत्त प्राकृतिक कवर लेते हुए उक्त छिपने के स्थान के मुहाने के सामने पोजीशन ले ली थी। जैसे ही तीन आतंकवादी उस छिपने के स्थान से बाहर आए, बिल्कुल नजदीक से उनका सामना करते हुए, जीवन और मृत्यु की लड़ाई में श्री विनय तिवारी ने मुकेश कुमार, मो. युसुफ इतू, नीरज कुमार और सईद हुसैन की पूर्ण सहायता से आतंकवादियों पर लक्ष्य साध कर गोलीबारी शुरू कर दी और उन तीनों को मार गिराया।

मारे गए तीनों आतंकवादियों की पहचान सुहैब अखून उर्फ हुर्राह निवासी खानपोरा, बारामुला (ख-श्रेणी), मोहसिन मुश्ताक भट, निवासी काजीहमाम बारामुला (ख-श्रेणी) और नसीर अहमद दरजी उर्फ हमजा, निवासी संग्रामपोरा, भाटपोरा, जामिया कदीम, बारामुला (ख-श्रेणी) के रूप में की गई और वे लश्कर-ए-तैयबा (एलईटी) आतंकवादी गुट से जुड़े हुए थे। बरामदगियों में तीन एके राइफलें, मैगजीन, गोलाबारूद के 132 राउण्ड, 02 हैंड ग्रेनेड और अन्य आपराधिक सामग्रियां शामिल हैं।

सुहैब अखून उर्फ हुर्राह पाक अधिकृत कश्मीर (पीओके) प्रशिक्षित आतंकवादी और उत्तरी कश्मीर के लिए एलईटी का स्वयंभू ऑपरेशनल चीफ था। सभी तीनों आतंकवादियों की हत्या ने नागरिकों पर अत्याचारों और निर्दोष युवकों की भर्ती का अंत करते हुए उत्तरी कश्मीर में एलईटी की कमर तोड़ दी।

इस ऑपरेशन में, श्री विनय कुमार तिवारी, कमांडेंट, 53 बटालियन सीआरपीएफ ने आगे रहकर नेतृत्व किया और उस समय पीछे न मुड़ने का चयन करके चतुराईपूर्ण निर्णय लेने के कौशल और सूझ-बूझ का प्रदर्शन किया, जब अन्य लोगों ने आतंकवादियों का पीछा करने और उन्हें पकड़ने की आशा छोड़ दी थी। उनके अटल दृढ़ निश्चय और विश्वास से परिपूर्ण हिम्मत के कारण अंततः आतंकवादी के छिपने के स्थान का पता चला और तीन आतंकवादियों का सफाया हुआ। सब इंस्पेक्टर मुकेश कुमार, असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर मो. युसुफ इतू और कांस्टेबल नीरज कुमार तथा सईद हुसैन ने अत्यधिक कठिन परिस्थितियों में अनुकरणीय वीरता, अडिग दृढ़ निश्चय और विलक्षण साहस का प्रदर्शन किया तथा लक्ष्य की प्राप्ति होने तक अपने लीडर का अनुसरण किया।

बल की सर्वोच्च परंपराओं को बरकरार रखते हुए अत्यंत प्रतिकूल परिस्थिति में उनके विलक्षण शौर्यपूर्ण कृत्य, अदम्य साहस और कर्तव्य के प्रति अटल प्रतिबद्धता के सम्मान में वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करने हेतु मैं एतद्वारा 53 बटालियन सीआरपीएफ के श्री विनय कुमार तिवारी, कमांडेंट (आईआरएलए-4732), सं. 135115561 सब इंस्पेक्टर मुकेश कुमार, सं. 903061982 असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर मो. युसुफ इतू, सं. 105261444 कांस्टेबल नीरज कुमार और सं. 115143631 कांस्टेबल सईद हुसैन के नाम की अनुशंसा करता हूं।

इस अभियान में सर्वश्री विनय कुमार तिवारी, कमांडेंट, मुकेश कुमार, सब इंस्पेक्टर, मो. युसुफ इतू, असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर, नीरज कुमार, कांस्टेबल और सईद हुसैन, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाले नियमों के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए प्रदान किये जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 22-23.01.2019 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/64/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन

विशेष कार्य अधिकारी

सं. 118-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारी को वीरता के लिए पुलिस पदक (मरणोपरांत) प्रदान करते हैं:—

स्वर्गीय श्री मनदीप कुमार,	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक (मरणोपरांत)
----------------------------	-----------	------------------------------------

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

12 मई 2018 को, लगभग 0005 बजे, जम्मू कश्मीर के जिला एवं पुलिस स्टेशन-पुलवामा के अंतर्गत ग्राम-चिनार बाग के क्षेत्र में 03 आतंकवादियों की मौजूदगी होने के बारे में सिविल पुलिस से विश्वसनीय खुफिया सूचना मिलने पर, एक संयुक्त कॉर्डन एवं सर्व ऑपरेशन की योजना बनाई गई, जिसमें सीआरपीएफ की 183वीं बटालियन, 55 राष्ट्रीय राइफल्स (आरआर) और विशेष ऑपरेशन ग्रुप (एसओजी), पुलवामा को शामिल किया गया था। चिनार बाग एक घनी आबादी वाला गाँव है, जहाँ मकान एक-दूसरे के निकट स्थित हैं। यह गाँव पुलवामा-श्रीनगर मार्ग पर स्थित है। बुरहान वानी के मारे जाने के बाद अशांति फैलने से सामान्य तौर पर दक्षिण कश्मीर और विशेष रूप से पुलवामा का क्षेत्र तनावग्रस्त हो गया तथा आतंकवाद में शामिल होने के लिए स्थानीय लोगों की नए सिरे से भर्ती की जाने लगी और जब भी कोई ऑपरेशन चलाया जाता, तो कानून-व्यवस्था की स्थिति को बिगाड़ने में स्थानीय लोग अधिक संख्या में शिरकत करते थे। यहाँ पर सुरक्षा बलों के प्रति स्थानीय लोगों की दुश्मनी, ऑपरेशन को और भी चुनौतीपूर्ण बना देती थी।

शुरुआती ब्रीफिंग के बाद, श्री के. के. यादव, असिस्टेंट कमांडेंट की कमान में एसओजी -182वीं बटालियन और नंबर 880977143, असिस्टेंट सब-इंस्पेक्टर, जे. सी. बोरा की कमान में एसओजी-183 तथा उनके साथ एसओजी-जेकेपी, पुलवामा और 55 आरआर ग्राम चिनार बाग में लगभग 0020 बजे पहुंच गए। इस बीच, 55 आरआर के सैनिकों द्वारा लगभग 14-15 संदिग्ध घरों की एक छोटी घेराबंदी पहले से ही कर दी गई थी। बाद में, एसओजी -182 एवं एसओजी -183 और एसओजी, पुलवामा भी आंतरिक कॉर्डन में शामिल हो गए। इसके बाद एसओजी पुलवामा, एसओजी 182, 183 और 55 आरआर की संयुक्त टुकड़ियों द्वारा संदिग्ध घरों की तलाशी करने का कार्य शुरू किया गया। लगभग 10 संदिग्ध घरों की तलाशी का कार्य पूरा हो गया और जब सैन्य दल अगले संदिग्ध घर की ओर बढ़ रहा था, तो घर के पूर्वी हिस्से में लकड़ी के ढेर के पीछे छिपे हुए आतंकवादियों ने भागने की कोशिश में संयुक्त तलाशी दल पर गोलियों की बौछार कर दी। तुरंत ही, नंबर 115160302, कांस्टेबल, मनदीप कुमार और नंबर 155060164, सब-इंस्पेक्टर शिवम प्रताप सिंह, जो आंतरिक कॉर्डन में तैनात थे, ने जवाबी कार्रवाई की, लेकिन अंधेरे के कारण आतंकवादियों की सही पोजीशन का पता नहीं लगाया जा सका। उसी समय, इन दोनों की जोड़ी द्वारा की गई प्रभावी गोलीबारी ने आतंकवादियों को एक विशेष क्षेत्र में घेर कर रखने में मदद की। इस बीच, मनदीप कुमार को उनके हाथ और पैर में गंभीर चोटें आ गईं। आतंकवादी द्वारा की गई इस अचानक गोलीबारी ने सैनिकों को आश्चर्यचकित कर दिया और सभी को शांत होना पड़ा अथवा सभी ने उपलब्ध कवर के पीछे शरण ले ली। कांस्टेबल, मनदीप कुमार, जो सबसे आगे थे, चोटों के कारण अपनी जगह से हिल नहीं पा रहे थे, लेकिन वे घबराए नहीं और उन्होंने लक्ष्य घर के ठीक पीछे पोजीशन ले ली और वे यह सुनिश्चित करने तक गोलीबारी करते रहे, जब तक कि आतंकवादी शांत नहीं हो जाते और भागने में असमर्थ रहते। मनदीप कुमार के इस साहसपूर्ण प्रयास से खुद के सैनिकों को किसी भी तरह के नुकसान से बचा लिया गया। इस बीच, उन्होंने यह भी देखा कि एक अन्य आतंकवादी, जो लक्ष्य घर में छिपा हुआ था, अपने सहयोगी की कवर फायरिंग की मदद से घर के पीछे की तरफ से भागने का प्रयास कर रहा है। बिना समय गंवाए और अपनी चोटों एवं खुद की सुरक्षा से बेखबर, कांस्टेबल मनदीप कुमार अपने कवर से बाहर आ गए। उन्होंने आतंकवादी की ओर आगे बढ़कर, उसके भागने के रास्ते बंद कर दिये और उस पर गोलीबारी कर दी। साथ ही, आतंकवादी ने भी पहले से घायल हो चुके मनदीप कुमार पर जवाबी गोलीबारी की। आतंकवादियों ने उनके शरीर के महत्वपूर्ण हिस्सों पर फायर किया और वे नीचे गिर गये।

चूंकि, लक्ष्य घरों में चारदीवारी की गई थी, जिससे न केवल देखने में बाधा उत्पन्न हो रही थी, बल्कि सैनिकों को आगे बढ़ने और घायल कांस्टेबल को निकालने के लिए कोई प्राकृतिक कवर भी उपलब्ध नहीं हो पा रहा था। यूबीजीएल और राइफल्स से लक्ष्य घर पर

गोलीबारी की गई और फिर इस कार्रवाई में लगभग 0300 बजे लक्ष्य घर में आग लग गई। आग बुझाने के लिए फायर टैंडर को काम पर लगाया गया। आग बुझाने के बाद लगभग 0615 बजे, सीआरपीएफ, 55 आरआर और एसओजी, पुलवामा पुलिस के संयुक्त तलाशी टीमों ने लक्ष्य क्षेत्र की तलाशी ली। गहन तलाशी के बाद, फोर्स नंबर 115160302, कांस्टेबल, मनदीप कुमार, जो पहले ही अंतिम सांस ले चुके थे, का शव प्राप्त किया गया। खून के कुछ धब्बे कुछ दूरी तक पाए गए, जिससे पता चला कि कम से कम एक आतंकवादी को मनदीप कुमार के साथ आपसी गोलीबारी में चोट लगी थी। हालांकि, दोनों आतंकवादी स्थानीय जनता के सहयोग से घेराबंदी से बाहर निकलने में सफल रहे। चूंकि, भीड़ बढ़ रही थी, इसलिए सभी अधिकारियों ने ऑपरेशन को 0700 बजे के लगभग बंद करने का फैसला किया।

इस ऑपरेशन में स्वर्गीय श्री मनदीप कुमार, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किये जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 12/05/2018 से दिया जाएगा।

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

(जगन्नाथ श्रीनिवासन)

विशेष कार्य अधिकारी

सं. 119-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	आर डी अशेमवल अनल	सब-इंस्पेक्टर	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	निलमोनी डेका	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
03	बिस्वजीत दास	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
04	राकेश भगत	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

31 मार्च, 2018 को लगभग 2200 बजे, को शोपियां जिले के दो गांवों नामश: कचडोरा और द्रगद में आतंकवादियों की मौजूदगी होने के बारे में एसएसपी शोपियां से एक विश्वसनीय खुफिया सूचना प्राप्त होने पर, कचडोरा गाँव में 34 राष्ट्रीय राइफल्स (आरआर) के साथ और गाँव द्रगद में 44 आरआर के साथ एक संयुक्त कॉर्डन एंड सर्च ऑपरेशन (सीएसओ) शुरू किया गया था। लगभग 2310 बजे श्री अब्दुल कैपो असिस्टेंट कमांडेंट की कमान में 14वीं बटालियन की ए-कम्पनी की काउंटर टेरेरिज्म टीम (सीटीटी) और स्पेशल ऑपरेशंस ग्रुप (एसओजी), जम्मू और कश्मीर पुलिस (जेकेपी), शोपियां और 34 आरआर से एक पार्टी कचडोरा की ओर रवाना हो गई। लगभग 2330 बजे, कचडोरा में लक्ष्य क्षेत्र में पहुंचने के बाद, जब सैनिकों ने लगभग 8-9 घरों की घेराबंदी करना शुरू किया, तो आतंकियों ने दहशत में आ कर घेराबंदी तोड़ने की कोशिश में सीटीटी पार्टी पर भारी गोलाबारी की। सैनिकों ने तुरंत सुरक्षित जगह पर पोजीशन ले ली और प्रभावी ढंग से जवाबी कार्रवाई की। इस बीच, नंबर 130140032, सब-इंस्पेक्टर, आर डी अशेमवल अनल और उनके साथी नंबर 115137418 सीटीटी/जीडी निलमोनी डेका दो अन्य कर्मियों के साथ आगे बढ़े और घेराबंदी का कार्य पूरा किया जिससे आतंकवादियों के भागने के रास्ते बंद हो गए। अतिरिक्त सैन्य बल बुलाया गया था, इसलिए 14वीं बटालियन, सीआरपीएफ के कमांडेंट शोपियां के एसएसपी के साथ अतिरिक्त सैनिकों को लेकर रवाना हो गए। अंधेरा होने के कारण दुश्मन की सटीक पोजीशन का पता नहीं लगाया जा सका। यह भी मालूम हुआ कि कुछ नागरिक घेराबंदी में फंस गए थे, जिससे सैनिकों के सामने गोलीबारी करने में रुकावट हो रही थी। इसलिए ऑपरेशन को सुबह उजाला होने तक रोक दिया गया और घेराबंदी को और अधिक मजबूत किया गया। जैसे ही दिन निकला, नागरिकों को वहाँ से बाहर निकाल लिया गया था। इस बीच, आतंकवादी तीन मंजिला कंक्रीट की इमारतों में से एक इमारत से लगातार गोलीबारी करते रहे। दुश्मनों के सुरक्षित स्थान पर छिपे होने के कारण जवाबी गोलीबारी का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। इमारत में यूबीजीएल के कई राउंड भी दागे गए, लेकिन यूबीजीएल की फायर से उन्हें दहशत में भी नहीं डाला जा सका। स्थानीय मस्जिद से सार्वजनिक संबोधन प्रणाली पर नियमित घोषणाएँ की गईं की गईं, कि जनता मुठभेड़ स्थल से हट जाय, लेकिन इससे जनता भड़क गई और भीड़ लक्ष्य घर के पीछे बागान क्षेत्र, जहाँ सीटीटी पार्टी को आंतरिक घेराबंदी में तैनात किया गया था, में एकत्र होने लगी। कानून-व्यवस्था की स्थिति गंभीर होती जा रही थी और सैनिकों को कानून और व्यवस्था की स्थिति को संभालना मुश्किल हो रहा था। जिस समय सीटीटी पार्टी को घेराबंदी के अन्दर आतंकवादियों को गोलीबारी में उलझाये रखना पड़ रहा था, तो उसी समय सीटीटी को पत्थरबाजों का भी सामना करना पड़ रहा था, जिसके परिणामस्वरूप

सीटीटी कमांडर अब्दुल कैपो के नाक पर मामूली चोट आ गई थी। चूंकि सीटीटीपार्टी को लक्ष्य घर के अपेक्षाकृत बहुत करीब में पोजीशन किया गया और आतंकवादी हावी होने वाली स्थिति में थे, इसलिए सीटीटी पार्टी आतंकवादियों की भारी गोलीबारी की चपेट में आ गई। सब-इंस्पेक्टर अशेमवल अनल और उनके साथी ने प्रभावी ढंग से गोलीबारी का जबाब दिया और आतंकवादियों की गोलीबारी को काबू में रखने में कामयाब रहे। श्री अब्दुल कैपो ने चोट लगने के बावजूद, सीटीटी पार्टी के कुछ कर्मियों के साथ, तेजी से बढ़ती जा रही भीड़ को एक किनारे स्थित रखा, क्योंकि वे अत्यधिक पथराव कर रहे थे और घेराबंदी तोड़ने के लिए खतरा बन रहे थे। श्री एरिक गिल्बर्ट जोस, कमांडेंट, 14वीं बटालियन तुरंत अपनी सुरक्षा पार्टी के साथ सीटीटी पार्टी को मजबूत करने के लिए आगे बढ़े, लेकिन रास्ते में एक लक्ष्य घर के शीर्ष मंजिल से होने वाली भारी गोलीबारी में फंस गए। आने वाली गोलीबारी और साथ ही साथ उग्र भीड़ की उपस्थिति से सीटीटी पार्टी के समक्ष आगे बढ़ने में बाधाएं आईं। एरिक गिल्बर्ट जोस ने इस स्थिति से बेपरवाह हो कर संयम बनाए रखा और अपने सामरिक कौशल की मदद से आतंकवादियों की पोजीशन का पता लगाने में सफल रहे। इसके साथ ही, उन्होंने पत्थर बांजों का सामना करते हुए, संदिग्ध आतंकवादी की पोजीशन पर भारी गोलीबारी की और फायर कवर प्रदान करने के लिए उन्होंने आगे बढ़ना जारी रखा, ताकि उनकी सुरक्षा पार्टी सीटीटी पार्टी को सहयोग देने के लिए वहाँ तक पहुंच सके। कमांडेंट की ओर से आक्रामक कार्रवाई से सीटीटी पार्टी में जनशक्ति की कमी को दूर करने में सहायता मिली और पत्थरबाजों द्वारा घेराबंदी को तोड़े जाने से रोका जा सका। हालांकि, तीन मंजिला यह लक्ष्य इमारत एक ठोस संरचना का बना होने के कारण, किसी भी तरह की गोलीबारी से अप्रभावित रहा और इससे आतंकवादियों की सुरक्षा हो रही थी और साथ ही उन्हें एक विशिष्ट सामरिक फायदा हो रहा था, जिससे कि वे स्पष्ट से देख पा रहे थे और दूसरी ओर सुरक्षा बल इमारत के करीब नहीं पहुंच पा रहे थे। लगभग 1300 बजे आईईडी की मदद से इमारत को गिराने का निर्णय लिया गया। शक्तिशाली आईईडी की मदद से चौथे प्रयास में तीन मंजिला इस मुख्य लक्ष्य इमारत को गिराया जा सका। जब आरआर का सैन्य दस्ता आईईडी लगाने के लिए दूसरी इमारत के पास पहुंचे, तो आपसी गोलीबारी में आरआर के दो जवान घायल हो गए। घायल जवानों को बाहर निकालना अब एक चुनौती थी, क्योंकि दुश्मन लगातार भारी गोलीबारी कर रहे थे। अशेमवल अनल और उनका साथी कांस्टेबल निलामोनी डेका, जो घायल जवान के करीब तैनात थे, अपनी जान जोखिम में डालकर आपसी गोलीबारी के बीच रेंगकर चतुराईपूर्वक आगे बढ़े और घायल जवान को बाहर निकाल लिया। भारी मात्रा में आपसी गोलीबारी लगभग आधे घंटे तक जारी रही, लेकिन तब तक दूसरी इमारत भी आग की लपटों से आंशिक रूप से जल चुकी थी। जब लंबे समय तक दुश्मन की ओर से गोलीबारी नहीं की गई, तो मलबे में तलाशी करने के लिए संयुक्त तलाशी दलों का गठन किया गया था। जैसे ही तलाशी दल मलबे के पास पहुंचा, तो उनमें से एक आतंकवादी, जो अभी भी जीवित था, ने अचानक ही गोतियों की बौछार कर दी, जिसने आरआर के एक और जवान को गंभीर रूप से घायल कर दिया। तलाशी दलों ने पोजीशन ले ली और गोलीबारी का जबाब दिया। घायल जवान अचेत अवस्था में आतंकवादी के पास लेट गया, जिससे उसको बाहर निकालना एक और अधिक कठिन काम हो गया। नंबर 115137445, कांस्टेबल, बिस्वजीत दास और नंबर 145311886, कांस्टेबल, राकेश भगत आरआर और एसओजी में अपने काउंटरपार्ट के साथ मिलकर गोलीबारी करते हुए और चतुराई पूर्वक, जो भी थोड़ा-बहुत प्राकृतिक कवर उपलब्ध था, उसका फायदा उठाते हुए भारी गोलीबारी के बीच घायल जवान के करीब तक पहुंच गए। आतंकवादी निकट आ रहे सैनिकों को देख रहा था और उसने उनकी पोजीशन पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। बिस्वजीत दास और राकेश भगत ने पलक झपकते ही मौका पाने के साथ अपने घायल सहयोगी को बचाने का दृढ़ निश्चय कर लिया और प्रशिक्षित सैनिकों के विश्वास के साथ अपने कवर से बाहर आ गए तथा शेष जीवित आतंकवादी को मार दिया। तत्पश्चात, तलाशी दलों ने मलबे में तलाशी की, जिसके परिणामस्वरूप मारे गए एक आतंकवादी के शव की बरामदगी हुई। निकटवर्ती इमारत के मलबे से दो और आंशिक रूप से जले हुए शव बरामद किए गए। जेसीबी की उपलब्धता न होने के कारण, मलबे के कुछ हिस्से में तलाशी हो सकी। चूंकि, कानून और व्यवस्था की स्थिति लगातार बिगड़ती जा रही थी, इसलिए ऑपरेशन को समाप्त करने का निर्णय लिया गया। सिविल पुलिस ने वापस लौटने के लिए, अतिरिक्त सीआरपीएफ जवानों की मांग की, क्योंकि पुलिस को जानकारी मिली कि बड़ी संख्या में पत्थरबाजों को आसपास के कई गांवों से वाहनों द्वारा लाया जा रहा है और वे रास्ते में सैनिकों की प्रतीक्षा कर रहे हैं। हालांकि, कमांडेंट 14वीं बटालियन, सीआरपीएफ ने अतिरिक्त बल की प्रतीक्षा करने के बजाय, स्थिति का आकलन करने के बाद समय की बर्बादी के बिना मुठभेड़ स्थल से चतुराईपूर्वक निकलने का फैसला कर लिया।

इसके बाद, जब मलबे को अंततः पूर्ण रूप से साफ किया गया, तो मारे गए आतंकवादियों के कुछ और शव बरामद किए गए, जिनकी पहचान हिजबुल मुजाहिदीन गुट के ए+श्रेणी के इश्फाक अहमद ठोकर, निवासी-पट्टरपोरा, शोपियां; लश्कर-ए-तयैबा के सी-श्रेणी के अतीमाद हुसैन मलिक, निवासी-अम्शिपोरा अस्थान मोहल्ला, शोपियां; हिजबुल मुजाहिदीन गुट के सी-श्रेणी के समीर अहमद लोन, निवासी-हिल्लो, गुंड मुरीद, शोपियां; हिजबुल मुजाहिदीन गुट के बी-श्रेणी के गयास यूआई-इस्लाम ठोकर, निवासी-पट्टरपोरा, शोपियां और हिजबुल मुजाहिदीन गुट के सी-श्रेणी के आकिब इकबाल मलिक उर्फ ताहिर भाई, निवासी- रंगध, कुलगाम के रूप में की गई है। बरामदगी में दो एके-56 राइफल, एक 5.56 इंसास राइफल, मैगजीन, 5.56 एम.एम. के 109 राउंड्स, 7.62 एम.एम. के 106 राउंड्स और 9 एम.एम. के 16 राउंड्स शामिल थे।

इस ऑपरेशन में, सब इंस्पेक्टर, आर डी अशेमवल अनल, कांस्टेबल, निलामोनी डेका; कांस्टेबल बिस्वजीत दास और कांस्टेबल राकेश भगत ने अपने घायल साथियों को बचाने के लिए अपनी जान की बाजी लगा करके और आतंकवादियों का सफाया करने में निर्भीकता और धैर्य के साथ जबाबी कार्रवाई करके अति चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में भी असाधारण पराक्रम और साहस का प्रदर्शन किया।

इसलिए, वीरता के इस दुर्लभ कृत्य, अनुकरणीय पराक्रम, खतरे के सम्मुख कर्तव्यों के प्रति उच्च कोटि की वचनबद्धता और समर्पण भावना के मद्देनजर, मैं 14वीं बटालियन, सीआरपीएफ के नंबर 130140032, सब-इंस्पेक्टर, आरडी अशेमवल अनल, नंबर 115137418, कांस्टेबल, निलामोनी डेका; नंबर 115137445, कांस्टेबल, बिस्वजीत दास और नंबर 145311886, कांस्टेबल राकेश भगत, को वीरता के लिए पुलिस पदक (पीएमजी) का पुरस्कार प्रदान किये जाने की एतद्वारा सिफारिश करता हूँ।

इस ऑपरेशन में सर्वश्री आर डी अशेमवल अनल, सब-इंस्पेक्टर, निलामोनी डेका, कांस्टेबल, बिस्वजीत दास, कांस्टेबल और राकेश भगत, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किये जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 31.03.2018 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/68/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 120-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारी को वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक (मरणोपरांत) प्रदान करते हैं:—

स्व. श्री उत्पल राभा	कांस्टेबल	वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक (मरणोपरांत)
----------------------	-----------	--

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

पश्चिमी सिंहभूम, खूंटी, सरायकेला-खरसावां के सामान्य वन क्षेत्र में सशस्त्र कैडर के साथ शीर्ष माओवादी नेताओं की मौजूदगी होने के बारे में विशिष्ट सूचना मिलने पर, 209 कोबरा के सैनिकों द्वारा सीआरपीएफ की यूनिटों और राज्य पुलिस के साथ मिलकर एक संयुक्त ऑपरेशन शुरू किया गया था।

योजना के अनुसार, सैनिक दस्ता दिनांक 07.06.2018 को लगभग 0650 बजे लक्ष्य क्षेत्र की ओर रवाना हो गया। जब सैन्य दस्ता घने जंगल और पहाड़ी इलाके से गुजर रहा था, तभी 209 कोबरा की टीम संख्या 06 के सतर्क स्काउट, सीटी/जीडी उत्पल राभा ने लगभग 80 मीटर की दूरी पर आगे पहाड़ी/ऊँचाई पर 3-4 पुरुषों की संदिग्ध गतिविधियों को देखा। उन्होंने तुरंत अपनी टीम के कमांडर और पास में अन्य टीम के सदस्यों को सतर्क कर दिया। कुछ ही समय में, टीम के कमांडर श्री हनुमान राम, असिस्टेंट कमांडेंट और स्काउट, नंबर 115135344 सीटी/जीडी उत्पल राभा ने स्थिति को भांप लिया और ऊँचाई (करी और कसरोली गांवों के बीच) पर सशस्त्र माओवादी कैडरों की उपस्थिति का पता लगा लिया। उन्होंने तुरंत सभी के लिए वीएचएफ सेट पर स्थिति का प्रसारण किया। इसके साथ ही सशस्त्र माओवादी कैडरों को घेरने और उन्हें पकड़ने के लिए टीम आगे बढ़ गई।

यह लक्ष्य लगभग 20 मीटर की ऊँचाई पर था, जिसमें खड़ी ढाल पर और दुबली-पतली एवं बिखरी हुई वनस्पति के साथ उबड़-खाबड़ इलाका था। टीम नंबर 6 सबसे आगे थी और वह चतुराई पूर्वक लक्ष्य की ओर बढ़ रही थी। इस बीच, सुरक्षा बलों की मौजूदगी को भांपते हुए, सीपीआई सशस्त्र माओवादी अपने सुरक्षित स्थानों (मोर्चा) में चले गए और उन्होंने वहाँ से टीम-06 पर आगे से अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। अब सैनिक माओवादियों की मारक क्षेत्र में आ चुके थे। उन्होंने तुरंत उपलब्ध कवर के पीछे अपनी पोजीशन ले ली और हमले का मुकाबला करने के लिए उन्होंने माओवादियों की पोजीशन का पता लगाने की कोशिश की। इस भारी गोलीबारी के दौरान, टीम नंबर 06 के स्काउट, सीटी/जीडी उत्पल राभा ने ऑपरेटिंग टीमों/सैनिकों के सामने दो पहाड़ियों के बीच माओवादियों की सटीक पोजीशन को देख लिया और इस बात से अपनी टीम के सेनापति को भी सूचित किया। ग्राउंड कवर की अनुपस्थिति टीम के कमांडर श्री हनुमान राम, असिस्टेंट कमांडेंट के लिए कोई बाधा साबित नहीं हुई और उन्होंने अपनी टीम को माओवादियों पर भारी दमनात्मक गोलीबारी करके उनको उलझाए रखने के लिए कहा।

सैन्य दल को आगे बढ़ने से रोकने के लिए, माओवादियों ने उन पर गोलीबारी के साथ पूरी शक्ति लगा दी। भारी गोलीबारी से निडर होकर, टीम नंबर 06 के स्काउट यानि सीटी/जीडी उत्पल राभा ने सीटी/जीडी अजय कुमार और सीटी/जीडी दिलीप उरांव के साथ दाईं ओर से माओवादियों को घेरना शुरू कर दिया। सीटी/जीडी उत्पल राभा ने माओवादियों के अति सुरक्षित मोर्चे पर यूबीजीएल ग्रेनेड दागे और उनकी पोजीशन के करीब पहुंच गए। उन्होंने अपने साथी सैनिकों के साथ गोलीबारी और रणनीतिक चालों का उपयोग करते हुए दाहिने किनारे से आक्रमण जारी रखा। माओवादी ऊपर से रुक-रुक कर गोलीबारी कर रहे थे, जिसका एकमात्र उद्देश्य उन्हें आगे बढ़ने से रोकना था। जब वे माओवादी की पोजीशन बहुत करीब पहुंच गये, तो एक गोली सीटी/जीडी उत्पल राभा के बाएं कंधे

के ऊपरी हिस्से में लग गई। गोली लगने के बावजूद, उन्होंने कवर लिया और अपनी सटीक गोलीबारी से माओवादियों के ठिकानों को निशाना बनाना शुरू कर दिया। चोट लगने के बावजूद अपने जीवन की परवाह किए बिना, वे आगे बढ़ते रहे और माओवादियों की पोजीशन के 40 मीटर के करीब पहुंच गये। वह एक सहूलियत और रणनीतिक जगह पर पहुंचने के लिए रेंगते हुए आगे बढ़े, ताकि वहाँ से वे माओवादियों के अति सुरक्षित मोर्चे पर प्रभावी जवाबी हमला कर सकें। उन्होंने माओवादियों को उनके इस मोर्चे से हटाने के उद्देश्य से मोर्चे को ध्वस्त करने के लिए एक ग्रेनेड (यूबीजीएल) फेंका। जब वे यूबीजीएल से फायर करने के लिए उठे, तो एक और गोली उनके चेहरे पर लग गई, जो बाद में घातक साबित हुई। वे वहीं पर गिर पड़े। उन्हें बाहर निकालने के दौरान, सीटी/जीडी उत्पल राभा ने चोटों के कारण दम तोड़ दिया और उन्होंने शहादत प्राप्त की।

कांस्टेबल उत्पल राभा द्वारा प्रदर्शित की गई निर्भीकता और अदम्य साहस ने न केवल उनकी टीम के सदस्यों की सुरक्षा को सुनिश्चित किया, बल्कि ऊर्जा के साथ उनकी असाधारण वीरता ने दूसरों को भी अंत तक युद्ध क्षेत्र में डटे रहने के लिए प्रेरित किया। कांस्टेबल उत्पल राभा ने राष्ट्र और कर्तव्य के कारण अपना सर्वोच्च बलिदान दिया।

इस ऑपरेशन में स्व. श्री उत्पल राभा, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किया जाता है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 07.06.2018 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/69/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 121-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	मोहम्मद यूनिस् खान	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	रामू लोहार	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

12 सितंबर 2018 को लगभग 2200 बजे, पुलिस स्टेशन- सोपोर, जिला- बारामूला (जम्मू एवं कश्मीर), के अंतर्गत अरामपोरा के ग्राम-तेलियान मोहल्ला में दो खूंखार आतंकवादियों, जिनके विदेशी होने की आशंका जताई गई है, की मौजूदगी होने के बारे में एक विश्वसनीय सूचना मिलने पर, सीआरपीएफ की 179, 177 और 92वीं बटालियन का संयुक्त दस्ता, 22 राष्ट्रीय राइफल्स (आरआर) का दस्ता और स्पेशल ऑपरेशंस ग्रुप (एसओजी) अपने अपने संबंधित कमांडरों के अधीन अरामपोरा गांव के तेलियान मोहल्ला में पहुंच गए। हालांकि, एक स्थानीय सूत्र ने तेलियान मोहल्ले में दो आतंकवादियों की मौजूदगी होने की पुष्टि की, लेकिन वह सटीक स्थान या लक्ष्य घर का पता बताने में असमर्थ था। इसलिए, एक प्रभावी ऑपरेशन की योजना बनाई गई। लक्ष्य क्षेत्र में 08-10 घर शामिल थे। इंस्पेक्टर सुरेंद्र सिंह की कमान में ई/179वीं बटालियन के सैन्य दस्ते और श्री करतार सिंह, सेकंड इन कमांड की कमान में 179वीं बटालियन की क्यूएटी को दक्षिणी तरफ संदिग्ध घरों की घेराबंदी करने का कार्य सौंपा गया, कल्याण सिंह, सेकंड-इन-कमांड की कमान में 177वीं बटालियन की क्यूएटी ने दक्षिण की ओर लक्ष्य क्षेत्र की घेराबंदी की, जो दक्षिण से पूर्व तक फैलाई गई थी, श्री मनीष कुमार की कमान में रेंज बारामूला की क्यूएटी ने दक्षिण-पूर्व में घेराबंदी की और एसओजी सोपोर ने पूर्वी दिशा पर घेराबंदी की तथा शेष हिस्से पर 22 आरआर द्वारा घेराबंदी पूरी की गई। 92वीं बटालियन के शेष सैनिकों ने बाहरी घेराबंदी की, ताकि पत्थर बाजों को ऑपरेशन में बाधा डालने से रोका जा सके।

एक बार घेराबंदी कसने के बाद, सीआरपीएफ की 177 और 179वीं बटालियन के कमांडेंटों की कमान के अंतर्गत लक्ष्य घरों की डोर-टू-डोर तलाशी करने के लिए संयुक्त टीम बनाई गई। जब तलाशी चल रही थी, तभी लगभग 0155 बजे, एक घर के मालिक ने अपने पड़ोसी के घर में दो आतंकवादियों की मौजूदगी होने की जानकारी दी। तुरंत ही संदिग्ध लक्ष्य घर के आसपास घेराबंदी को और अधिक मजबूत कर लिया गया और सार्वजनिक संबोधन प्रणाली पर एक घोषणा करके आतंकवादियों को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया। हालांकि, दुश्मन की ओर से इस चेतावनी का कोई जवाब नहीं दिया गया। लक्ष्य घर के साथ-साथ आस-पास के घरों में नागरिक फंसे हुए थे, जिन्हें कोई भी कार्रवाई शुरू करने से पहले वहाँ से बाहर निकाला जाना था। हालांकि, संयुक्त सैन्य दस्ते द्वारा खुद को जोखिम में डालते हुए, आंतरिक घेराबंदी से कवर गोलीबारी की सहायता लेकर नागरिकों को सुरक्षित बाहर निकाला गया। आतंकवादियों को एक बार

फिर से आत्मसमर्पण करने का अवसर प्रदान किया गया, जिसे उन्होंने अनदेखा कर दिया। लगभग 0350 बजे आतंकी घेराबंदी तोड़कर भागने के प्रयास में अंधाधुंध गोलीबारी करते हुए लक्ष्य घर से बाहर निकल गए। सैनिकों की प्रभावी जवाबी कार्रवाई ने आतंकियों को पीछे हटने के लिए मजबूर कर दिया। थोड़ी देर शांति के बाद एक बार फिर आपसी गोलीबारी हुई और अंधेरे का फायदा उठाते हुए एक आतंकवादी घर से बाहर भागने में कामयाब हो गया और उसने पास के बाग में पोजीशन ले ली। चूंकि, अंधेरा होने से ऑपरेशन में बाधा पड़ सकती थी, इसलिए सैनिकों ने घेराबंदी को और अधिक मजबूत कर दिया और हैलोजन लाइटों का उपयोग करके लक्ष्य घर/बागान में उजाला कर दिया गया, जो आतंकवादी लक्ष्य घर से निकलकर बाग में छिप गया था, उसने एक बार फिर सैनिकों को आपसी गोलीबारी में उलझा दिया। चूंकि, अंधेरा हो गया था, इसलिए ऑपरेशन को सुबह होने तक अस्थायी रूप से रोक दिया गया था, लेकिन घेराबंदी को बरकरार रखा गया। चूंकि, सेब का बाग काफी घना था और अंधाधुंध गोलीबारी से भी कोई नतीजा नहीं निकलता, इसलिए बाग में पूरी तरह से तलाशी करने का निर्णय लिया गया था। तदनुसार, दो छोटी टीमों का गठन 177वीं और 179वीं बटालियन के कमांडेंट्स की कमान में किया गया था, जबकि शेष सैनिक को आंतरिक घेराबंदी में ही तैनात रखा गया, ताकि आतंकवादी बच निकलने का कोई भी प्रयास न कर सके। खोज बहुत ही चतुराई पूर्वक शुरू की गई थी। जैसे ही तलाशी दल आगे बढ़ा, आतंकवादी ने आगे बढ़ते सैनिकों की गतिविधि को भापतें हुए तलाशी दल पर भारी गोलाबारी की, जिससे उस आतंकवादी की पोजीशन का खुलासा हो गया। 179वीं बटालियन के नंबर 061775607 कांस्टेबल रामू लोहार और 177वीं बटालियन के नंबर 085341945 कांस्टेबल मोहम्मद यूनिस खान ने आतंकवादी को पकड़ने का फैसला किया। कड़े संकल्प और एक दृढ़ निश्चय का प्रदर्शन करते हुए, दोनों ने सावधानियों की परवाह किये बगैर, दो अलग-अलग किनारों से आतंकवादी की ओर आगे बढ़े, ताकि उसे अचानक घेरा जा सके। वे धीरे-धीरे, लेकिन चुपके से छोटे-छोटे आसन अपनाकर रेंगते हुए छिपे आतंकवादी के निकट पहुँच गए। आतंकवादी ने खुद को कांस्टेबल राम लोहार के आमने-सामने पाया। इस बात से बेखबर कि कांस्टेबल मोहम्मद यूनिस भी उसके करीब पहुँच चुका है, आतंकवादी पीछे मुड़ा और भारी गोलीबारी करते हुए भागने लगा। दोनों कांस्टेबल राम लोहार और मोहम्मद यूनिस खान ने भागते हुए आतंकवादी पर टूट पड़े और उस पर गोलियों की बौछार कर दी, जिससे यह आतंकवादी मौके पर ही मारा गया। इस बीच, दूसरे आतंकवादी ने भी लक्ष्य घर के उत्तर-पश्चिम से भागने का प्रयास किया, जहां 22 आरआर के सैनिक पोजीशन में थे। वह उनसे भिड़ गया और इस कार्रवाई में मारा गया। लंबे समय तक शान्ति छा जाने के बाद, तलाशी दलों द्वारा लक्ष्य घरों और सेब के बागानों की पूरी तरह से तलाशी ली गई, जिसके परिणामस्वरूप मारे गए आतंकवादियों के शव एवं उनकी दो पिस्तौल, यूबीजीएल थ्रोअर, छः मैगजीन और अन्य अपराधिक सामग्री के अतिरिक्त जिन्दा गोला-बारूद की बरामदगी हुई। मारे गए आतंकवादियों की पहचान अली उर्फ अतहर उर्फ सैफुल्लाह और उमर उर्फ जिया-उर-रहमान के रूप में हुई। ये दोनों जैश-ए-मोहम्मद (जेएम) के पाक मूल के ए ++ श्रेणी के आतंकवादी थे।

इस ऑपरेशन में 179वीं बटालियन के नंबर 061775607, कांस्टेबल रामू लोहार और 177वीं बटालियन के नंबर 085341845, कांस्टेबल मोहम्मद यूनिस खान ने विपरीत परिस्थितियों में भी असाधारण पहल, अनुकरणीय वीरता, सामरिक कौशल और कर्तव्यों के प्रति समर्पण भावना एवं निष्ठा का प्रदर्शन किया तथा आवश्यकता के अनुसार संयम बनाए रखा, जिससे वे आतंकवादी को मार गिराने में सफल रहे।

इसलिए, बल के उच्चतम परंपराओं को बनाए रखने में विपरीत परिस्थितियों में भी वीरता के दुर्लभ कृत्य, असाधारण साहस और कर्तव्यों के लिए प्रतिबद्धता के मद्देनजर, मैं सीआरपीएफ की 179वीं बटालियन के नंबर, 061775607, कांस्टेबल, रामू लोहार और 177वीं बटालियन के नंबर, 085341845, कांस्टेबल, मोहम्मद यूनिस खान को वीरता के लिए पुलिस पदक (पीएमजी) का पुरस्कार प्रदान किये जाने की सिफारिश करता हूँ।

इस ऑपरेशन में सर्वश्री मोहम्मद यूनिस खान, कांस्टेबल और रामू लोहार, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किये जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 12/09/2018 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/77/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 122-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार प्रदान करते हैं:—

सर्वश्री

01	गोपाल राम	असिस्टेंट कमांडेंट	वीरता के लिए पुलिस पदक
----	-----------	--------------------	------------------------

02	लतीफ अहमद भट	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
03	श्रीनिवासुलु पी.	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

अक्टूबर 2018 के दौरान, जैश-ए-मोहम्मद (जेईएम) के विदेशी आतंकवादियों, जिनमें प्रशिक्षित स्नाइपर शामिल थे, ने दक्षिण कश्मीर के सब-डिवीजन त्राल में घुसपैठ की। आतंकवादियों द्वारा एक सप्ताह के भीतर पांच बार 180वीं बटालियन सीआरपीएफ और 42/आरआर के शिविरों पर स्नाइपर हमले किए गए, जिससे 03 जवान शहीद हो गए और कई जवान घायल हो गए तथा सुरक्षा बलों के बीच असुरक्षा और भय का माहौल बन गया था।

29 अक्टूबर 2018 को, एक विश्वसनीय सूचना प्राप्त हुई कि उसी रात जेईएम के आतंकवादी फिर से पुलिस स्टेशन- त्राल के अंतर्गत ए/42 राष्ट्रीय राइफल्स, मंडूरा, जी/180वीं बटालियन और सी/180वीं बटालियन सीआरपीएफ पर हमला कर सकते हैं। तदनुसार, 42 आरआर ने मंडूरा में ए/42 आरआर के शिविर के पास एक अम्बुश लगा दिया था। श्री राजेश कुमार बरनाला, असिस्टेंट कमांडेंट की कमान में क्यूएटी/180, सीआरपीएफ ने गाँव शेरबाद के निकट नाका लगाया और श्री गोपाल राम, असिस्टेंट कमांडेंट की कमान में सी/180 सीआरपीएफ ने स्पेशल ऑपरेशंस ग्रुप (एसओजी) के साथ मिलकर पिंगलिश क्रॉसिंग पर नाका लगाया। लगभग 2220 बजे, जैश-ए-मोहम्मद की स्नाइपर टीम ने मंडूरा में ए/42 आरआर शिविर के एलएमजी संतरी मोर्चा पर गोलीबारी की और गोलीबारी के बाद वे फरार हो गए। जब वे भाग रहे थे, तो वे 42 आरआर की अम्बुश पार्टी के दायरे में आ गए, लेकिन वे अंधेरे की आड़ में और ऊँचे-नीचे इलाके का फायदा उठाकर भागने में सफल रहे। इस जानकारी के प्राप्त होने पर, श्री राजेश कुमार, कमांडेंट-80वीं बटालियन, सीआरपीएफ ने उनके भागने के हर प्रयास को विफल करने के लिए गाँव मंडूरा, छन-की-तार और आस पास के सेब के बागानों को कवर करते हुए भागने के मार्गों पर अपने सैनिकों को तैनात किया। सैनिक पूरी रात तैनात रहे और सुबह होते ही संदिग्ध क्षेत्र की तलाशी ली गई। तथापि, कुछ न मिलने पर सैनिकों ने मंडूरा शिविर बंद कर दिया।

अगले दिन अर्थात् 30 अक्टूबर, 2018 को लगभग 1150 बजे गाँव-छन-की-तार में जैश-ए-मोहम्मद के आतंकवादियों की मौजूदगी होने के बारे में एक सूचना प्राप्त हुई, जो ग्राम मंडूरा से लगभग 02 किलोमीटर दूर है। बिना समय गवाएं, श्री राजेश कुमार बरनाला की कमान में क्यूएटी/180 एसडीपीओ त्राल और सिविल पुलिस के अन्य सदस्यों के साथ और 42 आरआर का सैन्य दस्ता चतुराई के साथ अलग-अलग मार्गों से रवाना हुआ, ताकि गाँव छन-की-तार में घेराबंदी की जा सके। इस बीच, ब्रिगेडियर बलबीर सिंह, कमांडर, प्रथम आरआर, कमांडिंग ऑफिसर (सीओ) 42आरआर, एसएसपी, अवन्तीपोरा, कमांडेंट-80वीं बटालियन, सीआरपीएफ, श्री गोपाल राम, असिस्टेंट कमांडेंट की कमान में सी/180, सीआरपीएफ और एसओजी त्राल भी उक्त गाँव में पहुंचे। सैनिकों ने तेजी से और रणनीतिक तरीके से गाँव छन-की-तार में घेराबंदी कर दी। सी/180 ने गाँव छन-की-तार के दक्षिण में घेराबंदी का कार्य शुरू किया। जब सैन्य दस्ता घेराबंदी कर रहा था, तो आतंकियों ने गाँव छन-की-तार के वानी मोहल्ला के नजदीक कॉर्डन पार्टी पर गोलीबारी की। आतंकवादियों ने यह गोलीबारी मस्जिद के पास एक डबल स्टोरी हाउस से की थी, जिसमें आरआर के एक अधिकारी चमत्कारिक ढंग से बाल बाल बच गए। 42/आरआर, क्यूएटी/180, सी/180 सीआरपीएफ के सैन्य दस्तों और पुलिस ने भी जवाबी कार्रवाई की। श्री गोपाल राम और उनके साथी नंबर 065341084, कांस्टेबल लतीफ अहमद भट, नंबर 135279797, कांस्टेबल, श्रीनिवासुलु पी और नंबर 125340677, कांस्टेबल, रुमई कुमार, जो शुरुआती गोलीबारी के समय दो मंजिला लक्ष्य घर के ठीक पीछे बाथरूम ब्लॉक के पास थे, ने पोजीशन ले ली और जवाबी कार्रवाई की। इस बात को समझते हुए है कि आतंकवादी घेराबंदी को तोड़ेंगे, अधिकारी ने तुरंत निर्णय लेकर अपनी पार्टी को लक्ष्य घर के दक्षिण दिशा में एक निर्माणाधीन घर में भेज दिया, ताकि उस दिशा से लक्ष्य घर को कवर किया जा सके। गोपाल राम और उनके साथी कांस्टेबल लतीफ अहमद भट और कांस्टेबल श्रीनिवासुलु पी ने लक्ष्य घर के सामने निर्माणाधीन घर के एक छोटे से खंभे के पीछे पोजीशन ले ली और उन्हें लक्ष्य घर की मुख्य गलियारे को कवर करने का काम सौंपा गया। उनके साथी कांस्टेबल रुमई कुमार ने पश्चिम दिशा में लक्ष्य घर से सटी एक गौशाला में कवर ले लिया। उनकी टीम के अन्य सदस्यों और सैन्य दस्ते को चतुराई पूर्वक सहूलियत वाली पोजीशन पर तैनात किया गया था। राजेश कुमार बरनाला की कमान में क्यूएटी/180 ने पश्चिम की ओर एक अन्य पड़ोस के घर में पोजीशन ली और लक्ष्य घर के अन्य दो दिशाओं को 42 आरआर के सैनिकों द्वारा कवर किया गया।

तत्पश्चात, सार्वजनिक संबोधन प्रणाली पर घोषणा करके आतंकवादियों को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया, लेकिन जवाब में आतंकवादियों ने घर के उत्तर की ओर से गोलियों की बौछार कर दी। करीब घेरा बंदी में तैनात सैनिकों ने भीषण गोलाबारी करते जवाबी कार्रवाई की। लंबे समय तक आपसी गोलीबारी के बाद भी, कोई भी पार्टी प्रभावी रूप से उन कट्टर आतंकवादियों को दबोचने में सक्षम नहीं थी, क्योंकि उन्होंने घर के अंदर सुरक्षित स्थानों में पोजीशन ले ली हुई थी और वे लक्ष्य इमारत के ओर बढ़ने की कोशिश कर रही पार्टियों पर गोलीबारी कर रहे थे। आतंकवादी गोपाल राम और उनके साथी और दो अन्य जवानों, जिन्होंने लक्ष्य घर से लगभग 40 मीटर की दूरी पर निर्माणाधीन मकान की कमर तक ऊँची दीवारों के पीछे पोजीशन ले ली हुई थी, पर यूबीजीएल राउंड और ग्रेनेड भी दाग रहे थे, ताकि उनके द्वारा की गई घेराबंदी को तोड़ा जा सके। हालांकि, गोपाल राम, लतीफ अहमद भट और श्रीनिवासुलु पी महान संकल्प और धैर्य का प्रदर्शन करते हुए आतंकवादियों द्वारा सैनिकों को उनके स्थान से हटाने के हर प्रयास को विफल करने के लिए अपनी-अपनी पोजीशन पर टिके रहे।

लगभग 1730 बजे, आतंकवादियों ने फिर से घर की खिड़कियों से सामने की ओर एक के बाद एक 02 ग्रेनेड दागे, जो फट गए और इससे पूरा क्षेत्र धूल और धुएं से आच्छादित हो गया। उसी समय, एक आतंकवादी मकान के मुख्य गलियारे में चला गया और उसने कांस्टेबल श्रीनिवासुलु पी की ओर अंधाधुंध फायरिंग करके बच निकलने की कोशिश की। श्रीनिवासुलु पी ने अपनी निजी सुरक्षा की परवाह किये बगैर, शीघ्र ही जवाबी कार्रवाई की और सटीक गोलीबारी करके उन्होंने भारी हथियारों से लैस आतंकवादी को गलियारे में ही मार गिराया, जिसे बाद में उस्मान हैदर निवासी पाकिस्तान के रूप में पहचाना गया। इस बीच, दूसरी ओर दूसरे आतंकवादी ने लक्ष्य घर की बाईं ओर की खिड़की से अंधाधुंध गोलीबारी की और भागने की कोशिश की, लेकिन गोपाल राम और उनके साथी लतीफ अहमद भट, जो, मुश्किल से कमर तक की ऊँची दीवार के पीछे पोजीशन लिए हुए थे, गोलीबारी से बचने में कामयाब रहे, लेकिन हमले के बाद खुद संभालते हुए, उन्होंने उसी ताकत से जवाबी कार्रवाई करके उस आतंकवादी को मार दिया। मारे गए आतंकवादी की पहचान बाद में शौकत अहमद खान, निवासी हंडूरा, पुलिस स्टेशन- त्राल के रूप में हुई। इस समय तक लक्ष्य घर पूरी तरह से आग की लपटों की चपेट में आ गया था, जिससे लक्ष्य घर की छत नीचे गिर गई। आग बुझाने के लिए फायर ब्रिगेड को बुलाया गया। बाद में, लक्ष्य घर की तलाशी में 02 आतंकवादियों के शवों के साथ एक अमेरिकी निर्मित एम्-4 स्नाइपर राइफल, एक एके-47 राइफल, मैगजीन, मिलता-जुलता गोला-बारूद और अन्य अपराधिक सामग्री की बरामदगी हुई। उस्मान हैदर खूंखार जेईएम कमांडर (ए ++ कैटेगरी) था और जैश-ए-मोहम्मद की अत्यधिक प्रेरित स्नाइपर टीम का मुखिया था और इसके अतिरिक्त पाकिस्तान स्थित जैश-ए-मोहम्मद के प्रमुख मौलाना मसूद अजहर का भतीजा था।

यह सबसे चुनौतीपूर्ण ऑपरेशन था क्योंकि सुरक्षा बल दो प्रशिक्षित और भारी हथियारों से लैस विदेशी आतंकवादियों के लड़ रहे थे, जिन्होंने इस क्षेत्र में कहर मचा रखा था। खतरे को समाप्त करने का एकमात्र तरीका खतरे से निपटना था। श्री गोपाल राम, असिस्टेंट कमांडेंट ने असाधारण नेतृत्व गुणों और सामरिक कौशल का प्रदर्शन करते हुए अपने अधीन सैनिकों को निर्देशित किया और इस दुर्लभ सफलता को हासिल करने में कामयाब रहे। उन्होंने परीक्षा की घड़ी में संयम और धैर्य को बनाए रखा और विजय हासिल की। कांस्टेबल लतीफ अहमद भट और श्रीनिवासुलु पी ने लगातार हमले के दौरान अदम्य साहस, धैर्य और अनुकरणीय साहस का प्रदर्शन किया और उन्होंने आतंकवादियों का सफाया करने में सफलता पाने तक हार नहीं मानी, जिससे सुरक्षा बलों पर स्नाइपर हमलों का खतरा पूरी तरह से मिट गया।

सुरक्षा बल की उच्चतम परंपराओं को बनाए रखने में जान को जोखिम में डालते हुए वीरता के इस दुर्लभ कृत्य, असाधारण साहस और कर्तव्यों के प्रति दृढ़ संकल्प, उच्चतर प्रतिबद्धता एवं समर्पण भावना के लिए, मैं श्री गोपाल राम, असिस्टेंट कमांडेंट (आईआरएलए - 8567), नंबर 065341084, कांस्टेबल, लतीफ अहमद भट और नंबर 135279797, कांस्टेबल, श्रीनिवासुलु पी को वीरता के लिए पुलिस पदक (वीरता के लिए पुलिस पदक) का पुरस्कार प्रदान किये जाने की सिफारिश करता हूँ।

इस ऑपरेशन में सर्व/श्री गोपाल राम, असिस्टेंट कमांडेंट, लतीफ अहमद भट, कांस्टेबल और श्रीनिवासुलु पी, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किये जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 29/10/2018 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/78/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 123-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	तिलक राज	असिस्टेंट कमांडेंट	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	रतन सिंह	हेड कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
03	बीरेंद्र सिंह	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

श्री अमरनाथजी यात्रा 2017 के दौरान दक्षिण कश्मीर के अनंतनाग के बटिंगो में यंत्रियों पर हमले के मद्देनजर, वर्ष 2018 में यात्रा के दौरान संवेदनशीलता बहुत अधिक बढ़ गई थी। उग्रवादियों द्वारा इस तरह के किसी भी प्रयास को रोकने के लिए, 24X7 लेटरल राष्ट्रीय राजमार्ग पर रखे गए थे। यंत्रियों की आवाजाही के लिए समय में कटौती की व्यवस्था को सख्ती से लागू किया गया था। आरएफआईडी के माध्यम से वाहन पर नज़र रखने की एक नई व्यवस्था को शुरू किया गया था, ताकि प्रत्येक यात्री/पर्यटक वाहन के आवागमन पर नजदीक से नज़र रखी जा सके। हालांकि, कई उपायों के बावजूद, खतरा बहुत अधिक था। इसके अलावा, यात्री काफिले को अनंतनाग शहर से भेजना सुरक्षा बलों के लिए एक बड़ी चुनौती बन गई थी, क्योंकि न्यू खन्नाबल-पहलगाम (एनकेपी) मार्ग पर आबादी और बाजारों के व्यस्त होने का दबाव अधिक था।

इस स्थिति का लाभ उठाते हुए, उग्रवादियों ने मौका मिलते ही यात्रा पर हमले करने के इरादे से यात्रा मार्ग के करीब से जाने की योजना बनाई। तथापि, खुफिया एजेंसियां करीब से नज़र रख रही थीं। भीड़भाड़ वाले और व्यस्त अनंतनाग शहर के लाल चौक इलाके में दो आतंकवादियों की आवाजाही के बारे में 24 जुलाई 2018 की रात को सूचना प्राप्त हुई थी। इस सूचना को पुष्टा किया गया और मेहमान मोहल्ला में एक आम नागरिक के घर में उनके पड़ाव डालने के स्थान को सुनिश्चित किया गया। तदनुसार, 1 आरआर, एसओजी जेकेपी और सीआरपीएफ की 40वीं बटालियन के साथ एक संयुक्त सीएएसओ की योजना बनाई गई थी। सूचना मिलने के तुरंत बाद, 40वीं बटालियन के कमांडेंट ने श्री तिलक राज, असिस्टेंट कमांडेंट की कमान में 40वीं बटालियन की 'ए' कंपनी, काउंटर इनसर्जेंसी (सीआई(ऑपरेशन)) कंपनी को इस कार्य के लिए तैनात किया और ब्रीफिंग के बाद उन्हें उस स्थान के लिए रवाना होने का निर्देश दिया। कानून-व्यवस्था की बड़ी समस्या का अनुमान लगाते हुए, 40वीं बटालियन के कमांडेंट ने नोडल अधिकारी होने के नाते, लक्ष्य घर के आसपास के क्षेत्र में पांच कम्पनियां तैनात कर दी, ताकि पत्थरबाजों को अलग किया जा सके और उन्हें सैनिकों को अस्त-व्यस्त करने और उग्रवादियों की मदद के लिए संदिग्ध घर के करीब पहुंचने से रोका जा सके।

निर्धारित स्थान पर पहुंचने के बाद, श्री तिलक राज, असिस्टेंट कमांडेंट अपने सैनिकों को धीरे-धीरे संदिग्ध घर के करीब ले गए। यह बहुत भीड़भाड़ और घनी आबादी वाले इलाके में स्थित था और इसलिए ऑपरेशन की दृष्टि से बेहद असुविधाजनक था। सामान्तर हानि होने की अधिक संभावना थी। संकीर्ण गलियों और छोटी-छोटी गलियों की विधमानता के कारण एक बड़ी टीम की तैनाती नहीं की जा सकी। इसलिए, श्री तिलक राज ने सबसे सुविधाजनक स्थानों में सैनिकों की सामरिक तैनाती करने पर ध्यान केंद्रित किया और इस उद्देश्य के लिए उन्होंने अपनी कमान के तहत इस तैनाती के लिए सिर्फ दो व्यक्तियों को चुना, भले ही अन्य जवानों को भी ऑपरेशन टीम का हिस्सा बनाया गया। उन्होंने फोर्स नंबर 911324756, हेड कांस्टेबल, रतन सिंह और फोर्स नंबर 065112414, कांस्टेबल, बीरेंद्र सिंह को आंतरिक घेराबंदी में बाएँ ओर लक्ष्य घर के आगे वाले हिस्से में तैनात किया। घरों के कोने पर नालियों के गड्ढे और मोड़ वाली जगह को छोड़कर शायद ही कोई उचित कवर उपलब्ध था। इस क्षेत्र में आतंकवादियों की ओर से गोलीबारी की अधिक संभावना थी। फिर भी, इस क्षेत्र को काट देना महत्वपूर्ण था, क्योंकि इस क्षेत्र से सुरक्षित भागने के लिए आतंकवादियों द्वारा सैनिकों पर गोलीबारी करने की अत्यधिक संभावना थी। इस प्रकार, पार्टी ने आतंकवादियों की ओर से खतरे को कम करने के लिए सामरिक तरीके से किनारें वाली जगहों पर पोजीशन ले ली और कार्रवाई के लिए खुद को तैयार कर लिया।

सबसे पहले आत्मसमर्पण कराने के लिए सार्वजनिक संबोधन प्रणाली पर घोषणा की गई थी। हालांकि, आतंकवादियों ने इसका जबाब तैनात सैनिकों की दिशा में भारी गोलीबारी

करके दिया। श्री तिलक राज, असिस्टेंट कमांडेंट और उनकी टीम को भारी गोलीबारी का सामना करना पड़ा, लेकिन उन्होंने समय रहते खुद को बचा लिया। हालांकि, आतंकवादी की गोलीबारी से निडर हो कर उन्होंने अपने साथी रतन सिंह और बीरेंद्र सिंह को चिल्लाकर आतंकवादियों पर जबाबी गोलीबारी करने को कहा और स्वयं भी सैनिकों का सामने से नेतृत्व करके तत्काल जवाबी गोलीबारी की। श्री तिलक राज, असिस्टेंट कमांडेंट, हेड कांस्टेबल रतन सिंह और कांस्टेबल बीरेंद्र सिंह की त्वरित कार्रवाई ने सैनिकों को बड़ी हानि होने से बचाया और आतंकवादियों को भी खुद को बचाने के लिए इमारत के अंदर वापस जाने के लिए मजबूर कर दिया। तथापि, अचानक ही आतंकवादियों ने स्वयं को प्रकट करके फिर से आश्चर्यचकित किया और गलियों में ग्रेनेड दागे, जहां सैनिकों को तैनात किया गया था। सैनिकों ने तत्काल कवर लिया और किसी तरह स्वयं को हताहत होने से बचा लिया। अब यह स्पष्ट हो गया था कि छोटे हथियारों की गोलीबारी से आतंकवादियों के समक्ष कोई समस्या पैदा नहीं होगी। कुछ विचार-विमर्श के बाद, यह देखते हुए कि जगह की कमी के कारण सीआरजीएल/एमजीएल फायरिंग की कोई गुंजाइश नहीं है, यूबीजीएल से फायर करने का निर्णय लिया गया। यह एक जोखिम भरा कार्य था, क्योंकि फायर करने वाले और कवर सपोर्ट देने वाले सैनिकों को अपने सुरक्षित स्थान से बाहर आना पड़ता। श्री तिलक राज, असिस्टेंट कमांडेंट ने इस चुनौती को लिया। यूबीजीएल से फायर आरआर के सैनिकों द्वारा किया गया, जिसमें आरआर सैनिकों के जीवन के लिए गंभीर जोखिम पैदा करने वाले इस कार्य के सम्पादन के समय सीआरपीएफ पार्टी से श्री तिलक राज, रतन सिंह और बीरेंद्र सिंह ने महत्वपूर्ण कवर फायर प्रदान किया। लक्षित घर पर भारी मात्रा में गोलीबारी करने के बाद, आतंकवादियों की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। यह उम्मीद की जा रही

थी, कि इमारत की पहली मंजिल पर स्थित दो कमरे काफी क्षतिग्रस्त हो गए होंगे और आतंकवादियों के जिंदा बचने की संभावना दूर-दूर तक नहीं है।

स्थिति का जायजा लेने के बाद, संयुक्त तलाशी टीमों का गठन करके इमारत की तलाशी करने का निर्णय लिया गया। तदनुसार, श्री तिलक राज, असिस्टेंट कमांडेंट, हेड कांस्टेबल रतन सिंह और कांस्टेबल बीरेंद्र सिंह ने भी आरआर और एसओजी, जेकेपी की अन्य टीमों के साथ-साथ स्वयं की एक सर्च टीम बनाई। टीमों भवन के अंदर चतुराईपूर्वक पहुँच गई। तलाशी के दौरान, जैसे ही टीम नजदीक आई, अचानक ही आतंकवादियों ने सैनिकों पर गोलीबारी कर दी, लेकिन श्री तिलक राज की सतर्क टीम ने तुरंत जबाबी प्रतिक्रिया दी और उनमें से एक को मार गिराया। इसके बाद, दूसरे आतंकी को भी दूसरी तलाशी टीम ने मार गिराया।

मलबे की थकान भरी तलाश के बाद, 01 एके-47, 01 इंसास राइफल, 04 मैगजीन, मोबाइल फोन और कैमरा आदि के साथ दो आतंकवादियों के शव बरामद किए गए। बिना किसी आम नागरिक के मारे जाने के साथ, ऑपरेशन को मध्याह्न के लगभग सफलतापूर्वक संपन्न किया गया और सैन्य दल अपने-अपने स्थानों पर सुरक्षित पहुंच गए। पूरे ऑपरेशन के दौरान, एक उग्र भीड़ मुठभेड़ स्थल के आसपास के इलाकों में पत्थर फेंकती रही, लेकिन कानून- व्यवस्था के सैनिकों ने उन्हें दूर रखा और चातुर्य से किसी प्रकार की समानांतर हानि होने से बचा लिया।

मारे गए आतंकवादियों की पहचान लश्कर-ए-तैयबा गुट के बिन यामीन डार (कैट-बी), निवासी- गांव बोनपोरा, खुडवानी (कुलगाम) और आबिद हुसैन भट (कैट-सी) निवासी- गांव सजन, जिला डोडा (जम्मू) के रूप में की गई। ये आतंकवादी अत्यधिक प्रेरित थे तथा आम नागरिकों, पुलिस और सुरक्षा बलों पर हमलों की मेजबानी से जुड़े थे।

लाल चौक का यह ऑपरेशन एक चुनौतीपूर्ण ऑपरेशन था और तत्कालीन श्री अमरनाथजी यात्रा के मद्देनजर बेहद संवेदनशील था। हालांकि, आतंकवादियों को अच्छी तरह समन्वित और सहक्रियात्मक इस ऑपरेशन में मार दिया गया। यह सीआरपीएफ सैनिकों की सक्रिय भागीदारी के कारण संभव हो पाया, जिन्होंने अनुकरणीय साहस और पेशेवरता के साथ चुनौतीपूर्ण स्थिति का सामना किया। ऑपरेशन के लिए 40वीं बटालियन, सीआरपीएफ के यूएवी का उपयोग करना अति महत्वपूर्ण था, क्योंकि इससे सुरक्षा बल इमारत में आतंकवादियों की गतिविधि का पता लगा पाए और अंततः उन्हें मार पाए। दैनिक तैनाती होने के फलस्वरूप, अनेकों संकरी गलियों और अन्य छोटी-छोटी गलियों समेत इस क्षेत्र से सीआरपीएफ टीम की परिचितता, आंतरिक घेराबंदी करने के प्रारंभिक चरणों में महत्वपूर्ण सामरिक निर्णय लेने में काफी फायदेबंद साबित हुई। सफल ऑपरेशन के आर्किटेक्ट श्री तिलक राज, असिस्टेंट कमांडेंट, हेड कांस्टेबल रतन सिंह और कांस्टेबल बीरेंद्र सिंह थे, जिन्होंने अपने जीवन के प्रति खतरे होने के बावजूद अपने एके-47 राइफल से क्रमशः 22 राउंड, 15 राउंड और 16 राउंड की प्रभावी गोलीबारी करके इस ऑपरेशन में जबरदस्त धैर्य और अनुकरणीय वीरता का प्रदर्शन किया।

इस ऑपरेशन में सर्वश्री तिलक राज, असिस्टेंट कमांडेंट, रतन सिंह, हेड कांस्टेबल और बीरेंद्र सिंह, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किये जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 25.07.2018 से दिया जाएगा।

(11020/79/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 124-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं :—

सर्वश्री

01	प्रवत कुमार बेहरा	एसी	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	जी विजय कुमार	हेड कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
03	शौकत अहमद राथर	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
04	नासिर अहमद	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
05	नरसपुरे राकेश प्रभाकर	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

श्री अमरनाथजी यात्रा 2018 के दौरान कश्मीर घाटी में सुरक्षा बनाए रखने पर सुरक्षा बलों द्वारा दिए गए जबरदस्त जोर ने दो महीने तक चलने वाले इस कार्यक्रम के दौरान उग्रवादियों को सुरक्षा बलों/यंत्रियों को निशाना बनाने का कोई मौका नहीं दिया। इससे उग्रवादियों के उपर बहुत अधिक दबाव बन गया और वे राष्ट्रीय राजमार्ग के करीब जाकर अपने नापाक मंसूबों को अमल में लाने के लिए आगामी शहरी स्थानीय निकाय (यूएलबी) और पंचायत चुनावों को एक अवसर के रूप में इस्तेमाल करना चाहते थे।

14 सितंबर 2018 को, शाम ढलने के बाद, 18वीं बटालियन, सीआरपीएफ के कमांडेंट को स्वयं के स्रोतों से खुफिया सूचना मिली कि राष्ट्रीय राजमार्ग के साथ साथ कुछ उग्रवादियों की आवाजाही के दौरान उन पर एक भालू ने हमला कर दिया, जिसमें एक आतंकवादी घायल हो गया। आगे यह भी पता चला कि आतंकवादी घायलों के लिए आश्रय और सहायता की तलाश कर रहे हैं। खुफिया सूचना के मद्देनजर और साथ ही आतंकवादियों के स्थान की पुष्टि होने की स्थिति में उनके साथ मुठभेड़ की सम्भावना को भांपते हुए, 18वीं बटालियन, सीआरपीएफ के कमांडेंट ने अपने सैन्य दस्ते को शॉर्ट नोटिस पर कार्रवाई के लिए सतर्क किया।

15 सितंबर को लगभग 0015 बजे, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, कुलगाम ने 18वीं बटालियन, सीआरपीएफ के कमांडेंट को कुलगाम में पुलिस स्टेशन- काजीगुंड के अंतर्गत चौगाम गांव में 3-5 आतंकवादियों की आवाजाही के बारे में सूचित किया और कासो का संचालन करने के लिए उनसे ऑपरेशनल दस्ते का अनुरोध किया। यह सूचना 18वीं बटालियन के कमांडेंट के पास पहले से उपलब्ध नवीन जानकारी के साथ मेल खाती थी। तदनुसार, श्री हेनज़ैंग, कमांडेंट ने यूनिट क्यूएटी और सीटीटी को जानकारी दी तथा उन्हें तुरंत उस स्थान के लिए रवाना कर दिया। यह सैन्य दल लगभग 0040 बजे, ग्राम चौगाम पहुंच गया और 9 आरआर एवं एसओजी, जेकेपी के सैन्य दस्ते में शामिल हो गया। संवेदनशील ऑपरेशन को ध्यान में रखते हुए, डीआईजी (ऑप्स), सीआरपीएफ अनंतनाग ने भी रैंज क्यूएटी के एक एचआईटी को निर्देश दिया कि वह श्री प्रवत कुमार बेहरा, असिस्टेंट कमांडेंट की कमान के तहत ऑपरेशन में शामिल हों। रैंज क्यूएटी को दक्षिण-पश्चिम दिशा में आंतरिक घेराबंदी में और यूनिट क्यूएटी, 18वीं बटालियन को दक्षिण-पूर्व में रखा गया था। शेष हिस्से को 9 आरआर ने एसओजी के साथ कब्जे में ले लिया। उस समय उस स्थान पर नियमित एलओ सैन्य दस्ते की अनुपस्थिति में कानून-व्यवस्था की स्थिति को पहले से ही बनाए रखने के लिए लक्ष्य घर के समीप बाहरी घेराबंदी में 18वीं बटालियन के सेकंड-इन-कमांड की कमान के तहत सीटीटी को तैनात किया गया था। इसके बाद, डीआईजी (ऑप्स), सीआरपीएफ, अनंतनाग भी उस स्थान पर पहुंचे और उन्होंने जमीनी स्थिति का विश्लेषण करने के बाद संभावित परिदृश्य और वांछित कार्रवाई के लिए सैनिकों को जानकारी दी।

लगभग 0100 बजे, लक्ष्य घर की पहचान और पुष्टि हो जाने पर, जब तलाशी दल प्रारंभिक घेराबंदी डालने के बाद करीब गया, तो अचानक ही अन्दर छिपे हुए आतंकवादियों ने सैनिकों पर गोलियां चला दीं। इस कार्रवाई में 9 आरआर के दो जवान घायल हो गए। घायल जवानों को बचाने के लिए, यह बेहद महत्वपूर्ण था कि उन्हें समय की हानि के बिना तुरंत वहाँ से बाहर निकाला जाय। उग्रवादियों की अचानक प्रतिक्रिया से सैनिक दस्ता अस्त-व्यस्त हो गया। तथापि, संकट की इस घड़ी में, रैंज क्यूएटी कमांडर, श्री पी. के. बेहरा, असिस्टेंट कमांडेंट, बिना किसी देरी के और अपनी निजी सुरक्षा की परवाह किए बिना अपनी पोजीशन से बाहर आ गए और अपने साथियों सं. 005030243, हेड कांस्टेबल, जी विजय कुमार और सं. 125075344, कांस्टेबल शौकत अहमद राथर के साथ उन्होंने उस लक्ष्य घर पर गोलीबारी की बौछार कर दी, जहां से आतंकवादियों ने सैनिकों को निशाना बनाया हुआ था। इसका उन पर उपयुक्त प्रभाव पड़ा, क्योंकि आतंकवादियों के पास गोलीबारी रोकने और लक्ष्य घर के अंदर वापस जाने के सिवाय अन्य कोई विकल्प नहीं था।

इसके साथ ही, पी के बेहरा ने 18वीं बटालियन, सीआरपीएफ की यूनिट क्यूएटी के कर्मियों, जो आंतरिक घेराबंदी के भीतर तैनात थे, को चिल्लाकर घायल जवानों को बाहर निकालने में मदद के लिए कहा। उनके आह्वान पर, 18वीं बटालियन के सं. 055070997, कांस्टेबल, नासिर अहमद और सं. 135252763 कांस्टेबल, नरसपुरे राकेश प्रभाकर ने तुरंत कार्रवाई की और वे अपनी निजी सुरक्षा की परवाह किए बिना लक्ष्य घर के अहाते के भीतर घायल कर्मियों तक पहुंचने के लिए घर की चार दीवारी के पार कूद गए। उसी समय, टीम के अन्य सदस्य ने एक साथ कार्रवाई करते हुए कांस्टेबल, नासिर अहमद और कांस्टेबल, नरसपुरे राकेश प्रभाकर को प्रभावी फायर कवर प्रदान किया ताकि वे आरआर के घायल कर्मियों को सुरक्षित बाहर निकाल सकें। यह एक जोखिम भरा और चुनौतीपूर्ण कार्य था, लेकिन रैंज क्यूएटी और यूनिट क्यूएटी, 18वीं बटालियन द्वारा इस कार्य को समन्वित तरीके से सफलतापूर्वक कर लिया गया था।

संदिग्ध घर में आतंकवादियों की मौजूदगी की पुष्टि होने पर, आंतरिक घेराबंदी को और मजबूत किया गया। पी. के. बेहरा, असिस्टेंट कमांडेंट ने हेड कांस्टेबल, जी विजय कुमार और शौकत अहमद राथर, जो दक्षिण-पश्चिम दिशा में आंतरिक घेराबंदी में थे, के पास कोई उपयुक्त कवर उपलब्ध नहीं था, क्योंकि घर की चार दीवारी केवल दक्षिण-पूर्व से उत्तर दिशा तक ही थी। तथापि, यह बेहद जरूरी था कि खतरे के बावजूद पोजीशन को बनाए रखा जाय, ताकि आतंकवादियों को भागने की जगह न मिल सके। यह पहलू महत्वपूर्ण और चुनौतीपूर्ण था और साथ ही लगातार बारिश हो रही थी। पी के बेहरा अपनी टीम के साथ विपरीत परिस्थिति में भी डटे रहे और वे अपने स्थान एवं पोजीशन से नहीं हटे।

बाद में पता चला कि आतंकवादियों ने घर के अंदर 4 पुरुषों और 2 महिलाओं को बंधक बना लिया है। मौके पर मौजूद वरिष्ठ अधिकारियों के बीच कुछ विचार-विमर्श के बाद, आतंकवादियों से मोबाइल के माध्यम से संपर्क किया गया और उनसे नागरिकों को छोड़ देने की अपील की गई। शुरू में, आतंकवादी इसके लिए अनिच्छुक लग रहे थे, लेकिन बहुत समझाने के बाद में उन्होंने अंततः नागरिकों को छोड़ दिया।

जैसे ही, बंधक लक्ष्य घर से बाहर आये, तभी आतंकवादियों ने लक्ष्य घर के चारों तरफ से सैनिकों पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी थी। गोलीबारी से, अब यह स्पष्ट हो गया था कि इमारत में कम से कम 4-5 आतंकवादी छिपे हुए हैं। रेंज क्यूएटी और यूनिट क्यूएटी के कर्मियों ने जोरदार तरीके से जवाबी कार्रवाई की और आतंकवादियों को हताश होने के लिए मजबूर कर दिया, जिससे उनके भागने की कोई संभावना नहीं थी। इसके बाद, लगभग तीन घंटे तक दोनों ओर से रुक-रुक कर गोलीबारी जारी रही। लक्ष्य घर को आईईडी बिछाकर विस्फोट करने का निर्णय लिया गया। फिर से, रेंज और यूनिट दोनों क्यूएटी के कर्मियों ने कवर फायर प्रदान करने पर आवश्यक जोर दिया। इस कार्रवाई में घर का एक हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया। इसके बाद, आतंकियों की तरफ से फायरिंग बंद हो गई। हालांकि, लगातार बारिश होने और कम दिखाई पड़ने के कारण लक्ष्य घर की तलाशी शुरू करने के लिए सुबह तक इंतजार करने का निर्णय लिया गया।

सुबह होते ही, आतंकवादियों ने फिर से अलग-अलग दिशाओं से गोलीबारी शुरू कर दी। इस कार्रवाई में, पी. के. बेहरा, असिस्टेंट कमांडेंट और उनके साथियों पर गोलियों की बौछार हो गई। हालांकि, वे बाल बाल बच गए और उन्होंने तुरंत अपनी पोजीशन बदल दी। पी. के. बेहरा को लक्ष्य घर की एक खिड़की पर उनमें से एक आतंकवादी द्वारा पोजीशन लिए जाने का पता चल गया। उन्होंने तुरंत ही अपने साथियों की मदद से मल्टी-ग्रेनेड लांचर (एमजीएल) से आतंकवादी को निशाना बनाने की योजना बना ली। यह एक आसान काम नहीं था, क्योंकि एमजीएल से फायर करने के लिए एक जवान को खुले में बाहर आना पड़ता, जिसके लिए उसे गोलीबारी का सपोर्ट कवर देने की जरूरत पड़ती। श्री पी. के. बेहरा ने सर्वप्रथम अपनी पोजीशन को दाईं तरफ बदल लिया। जी. विजय कुमार, जो एमजीएल में अच्छी तरह से प्रशिक्षित थे, स्वेच्छा से इस कार्य के लिए आगे आये। रेंज क्यूएटी के कमांडेंट से निर्देश मिलने पर, उन्होंने अपने एमजीएल से दो ग्रेनेड एक के बाद एक दाग दिए। इस कार्रवाई में पी. के. बेहरा और कांस्टेबल शौकत अहमद राथर ने खुले में बाहर निकलकर कवर फायर प्रदान करके मदद की, जबकि उन्होंने इस कार्रवाई में आतंकवादियों की ओर से हो रही गोलीबारी के परिणामस्वरूप खुद को होने वाले जोखिम को भी उठाया। इस कार्रवाई में, एक ग्रेनेड खिड़की पर जा गिरा, वहां तैनात आतंकवादी मारा गया। टीम द्वारा वीरतापूर्ण की गई इस कार्रवाई से बल को बड़ी उपलब्धि हासिल हुई।

लक्ष्य घर के शेष हिस्से को ध्वस्त करने के लिए रेंज और यूनिट क्यूएटी से कवर फायर की आढ़ लेकर एक और आईईडी ब्लास्ट किया गया। इसके परिणाम स्वरूप, पूरा घर ढह गया। मलबे को हटाने के लिए संयुक्त तलाशी दल का गठन किया गया था। फिर ऐसा हुआ कि जब तलाश जारी थी, तभी दो आतंकवादी, जो अभी भी जीवित थे, ने मलबे के भीतर से ही गोलीबारी कर दी। हालांकि, यूनिट क्यूएटी 18वीं बटालियन के कांस्टेबल नासिर अहमद और राकेश नरसपुरे की जोड़ी, जो आतंकवादियों के सबसे अधिक करीब थी, ने इससे पहले कि वे तलाशी दलों को नुकसान पहुंचाते, तुरंत जवाबी कार्रवाई करके आतंकवादियों को मौके पर मार दिया।

मारे गए आतंकवादियों की पहचान गुलजार अहमद पट्टर, निवासी- गांव टाकी गोपालपोरा, कुलगाम; फैसल राशिद राथर, निवासी - गांव यमराच, यारीपोरा; जाहिद अहमद मीर, निवासी- ओके, कुलगाम; जहूर अहमद भट, निवासी- गांव नगनाड, कुलगाम और मसरूर अहमद भट, निवासी- गांव फतेहपोरा, अनंतनाग के रूप में की गई थी। ये सभी श्रेणी "ए" के आतंकवादी थे। बरामद महत्वपूर्ण सामग्री के रूप में 04 एके-47 राइफलें, एके-47 की 04 मैगजीन, 01 यूबीजीएल और 05 यूबीजीएल ग्रेनेड शामिल थे। मुठभेड़ स्थल के चारों ओर उग्र भीड़ एकत्र होने के बावजूद, एलओ सैन्य दस्ते ने चतुराई से और पेशेवर रूप से स्थिति को संभाला तथा ऑपरेशनल सैन्य दस्ते की सुरक्षित वापसी सुनिश्चित की।

घाटी में यूएलबी और पंचायत चुनावों कराने के लिए चौगम में किया गया यह ऑपरेशन सुरक्षा बलों के लिए एक बड़ी उपलब्धि थी। बड़े समूह में उग्रवादियों की आवाजाही उनके खतरनाक डिजाइनों की ओर संकेत करता है। सफल ऑपरेशन का एक बड़ा श्रेय सीआरपीएफ के सैनिकों द्वारा तेजी से की गई कार्रवाई और जोरदार जवाबी कार्रवाई को दिया जा सकता है, क्योंकि इन सैनिकों ने अनुकरणीय साहस और पेशेवरता के साथ चुनौतीपूर्ण स्थिति का सामना किया और घायल कर्मियों के लिए बचाव अभियान के संचालन में समय पर पहल की। इस सफल ऑपरेशन के वास्तुकार रेंज क्यूएटी, अनंतनाग से श्री पी. के. बेहरा, असिस्टेंट कमांडेंट, हेड कांस्टेबल जी. विजय कुमार और कांस्टेबल शौकत अहमद राथर तथा यूनिट क्यूएटी, 18वीं बटालियन, सीआरपीएफ से कांस्टेबल नासिर अहमद और कांस्टेबल नरसपुरे राकेश प्रभाकर थे, जिन्होंने ऑपरेशन के दौरान समय पर और प्रभावी तरीके से क्रमशः 39 राउंड्स, 02 ग्रेनेड एवं 22 राउंड्स, 32 राउंड्स, 19 राउंड्स और 25 राउंड्स अपनी-अपनी एके -47 राइफल से फायर करके जबरदस्त धैर्य और अनुकरणीय वीरता दिखाई।

व्यक्तिगत जीवन के प्रति गंभीर और निरंतर खतरा होने के बावजूद, असाधारण एवं विशिष्ट बहादुरी, अदम्य साहस, अत्यंत समर्पण भावना और कर्तव्य के प्रति बचनबद्धता का प्रदर्शन के लिए, मैं 40वीं बटालियन, सीआरपीएफ के असिस्टेंट कमांडेंट (आईआरएलए-9590), श्री प्रवत कुमार बेहरा, 24वीं बटालियन, सीआरपीएफ, के नम्बर 005030245, हेड कांस्टेबल, जी. विजय कुमार; रेंज क्यूएटी,

सीआरपीएफ, अनंतनाग की 163वीं बटालियन, सीआरपीएफ के नंबर 125075344, कांस्टेबल शौकत अहमद राथर तथा 18वीं बटालियन, सीआरपीएफ के नंबर 055070997, कांस्टेबल नासिर अहमद और नंबर 135252763, कांस्टेबल नरसपुरे राकेश प्रभाकर को वीरता के लिए पुलिस पदक (पीएमजी) का पुरस्कार दिए जाने की सिफारिश करता हूँ।

इस ऑपरेशन में सर्व/श्री प्रवत कुमार बेहरा, एसी, जी विजय कुमार, हेड कांस्टेबल, शौकत अहमद राथर, कांस्टेबल, नासिर अहमद, कांस्टेबल और नरसपुरे राकेश प्रभाकर, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किये जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 15.09.2018 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/80/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन

विशेष कार्य अधिकारी

सं. 125-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक/ वीरता के लिए पुलिस पदक (मरणोपरांत) प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	देवेंद्र मोहन शर्मा	डीसी	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	स्वर्गीय महेश कुमार मीणा	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक (मरणोपरांत)

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

जैश-ए-मोहम्मद (जेईएम) के आतंकवादियों द्वारा जम्मू-कश्मीर के पुलवामा जिले के त्राल पुलिस स्टेशन के अंतर्गत ग्राम-अरिपाल के तेंत्रे मोहल्ला में एक बैठक त्राल में सुरक्षा बलों के कैप्सों पर फिदायीन हमले को अंजाम देने के लिए आयोजित करने के बारे में एक विश्वसनीय सूचना दिनांक 22 सितम्बर, 2018 को देर शाम प्राप्त होने पर, 180वीं बटालियन, सीआरपीएफ, 42 राष्ट्रीय राइफल्स (आरआर) और जेकेपी, त्राल के स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप (एसओजी) द्वारा लगभग 0400 बजे एक संयुक्त घेराबंदी और सर्च ऑपरेशन (सीएसएसओ) की योजना बनाकर 23 तारीख की सुबह यह कार्रवाई शुरू की गई।

दक्षिणी कश्मीर में पुलवामा जिले का त्राल सब-डिवीज़न पारंपरिक रूप से ही विभिन्न आतंकवादी संगठनों का गढ़ रहा है, जहाँ जैश-ए-मोहम्मद तन्ज़ीम के विदेशी आतंकवादी वस्तुतः उत्तरी त्राल के पहाड़ी क्षेत्र में अपने ठिकाने स्थापित करते रहते हैं। यहाँ घना जंगल और दुर्गम इलाका आतंकवादियों को सुरक्षित और प्राकृतिक शरण प्रदान करता है। पुलिस स्टेशन त्राल के अंतर्गत ग्राम अरिपाल, त्राल-सतुरा रोड पर सब-डिवीज़न त्राल के उत्तर में स्थित है, जो त्राल से लगभग 18 किलोमीटर दूर है और सीआरपीएफ की 180वीं बटालियन की ए कंपनी के शिविर से 01 किमी दूर है। अरिपाल एक बड़ा गाँव है, जिसे कई मुहल्लों में विभाजित किया गया है। अरिपाल गाँव के पूर्व में जरिलवेन पर्वत और पश्चिम में वनतिवान पर्वत श्रृंखलाएँ हैं, जो घने देवदार के जंगलों से ढकी हुई तथा गाँव के दक्षिणी किनारे पर अरिपाल नाला बहता है। यह गाँव समुद्र तल से 5,940 फीट की ऊँचाई पर स्थित है।

इस सूचना पर अरिपाल गाँव के तन्त्रे मोहल्ले पर डी/42 आरआर, ए/180 और एसओजी, अरिपाल द्वारा 0530 बजे तक घेराबंदी कर दी गई। जब घेराबंदी का कार्य पूरा हो गया तो, श्री देवेंद्र मोहन शर्मा, डिप्टी कमांडेंट की कमान में क्यूएटी/180 की एक टीम, इंस्पेक्टर/जीडी एच.एम. मेहतो की कमान में एफ/180 और श्री राजेश कुमार कमांडेंट-180 के साथ मुख्यालय/180 की 01 प्लाटून एसडीपीओ, त्राल के साथ लगभग 0600 बजे ग्राम अरिपाल पहुंच गई। घरों की तलाशी करने और तांत्रे मोहल्ले के निवासियों से पूछताछ करने के लिए लगभग 0615 बजे, सीआरपीएफ, आरआर और सिविल पुलिस की खोजी टीम बनाई गई। श्री देवेंद्र मोहन शर्मा, डिप्टी कमांडेंट के नेतृत्व में खोजी टीम अपने साथी No.075005505 कांस्टेबल, महेश कुमार मीणा के साथ फैयाज अहमद डार के घर पहुंचकर उनसे पूछताछ करने लगी, तो वे घबरा गए और डर गए। वह अपने घर में घुसने में भी संकोच कर रहा था और उससे पूछताछ के दौरान पता चला कि बीती रात को एक सशस्त्र पाकिस्तानी आतंकवादी उसके घर में घुस गया था और अभी भी उनके घर में मौजूद है। उस घर विशेष में सशस्त्र आतंकवादी की मौजूदगी होने की पुष्टि हो जाने पर, श्री देवेंद्र मोहन शर्मा के साथ क्यूएटी -180 और 42 आरआर की एक टीम तथा एसडीपीओ त्राल एवं उनकी पार्टी की टीम द्वारा घर के चारों ओर घेराबंदी को और अधिक मजबूत कर दिया गया था। लगभग 0800 बजे आतंकवादी को घर से बाहर आने और बलों के सामने आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया। हालाँकि, इस पर उससे कोई प्रतिक्रिया प्राप्त नहीं हुई। लगभग 0820 बजे, कुछ ऑसू गैस के गोले आतंकी को घर से बाहर निकालने के लिए घर के अंदर फेंके गए, लेकिन आतंकवादी

ने इसका जबाब एक छोटा विस्फोट करके दिया, जिसका माकूल जबाब घेराबंदी के अंदर श्री देवेंद्र मोहन शर्मा और उनके साथी ने दिया। लगभग 0845 बजे, कुछ एमजीएल राउंड लक्ष्य घर के अंदर दागे गए। तत्पश्चात, दुश्मन की ओर से कोई गोलीबारी नहीं हुई। चूंकि उस ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं हो रही थी, इसलिए सामरिक बुलेट प्रूफ शील्ड की आढ़ लेते हुए सेना के 02 जवान आतंकवादी का पता लगाने के लिए घर के प्रवेश वाले बरामदे की ओर बढ़ गए। जैसे ही वे दोनों सीढ़ी के पास तक पहुंचे, तो पीछे की ओर पोजीशन लिए हुए आतंकवादी द्वारा एक ग्रेनेड लुढ़का दिया गया, जिस कारण जवान पीछे हटने के लिए मजबूर हो गए। लगभग 0915 बजे देवेंद्र मोहन शर्मा ने घर के अंदर 02 यूबीजीएल राउंड दाग दिए, लेकिन तब तक आतंकवादी पोजीशन बदल चुका था और उसने लगातार पोजीशन बदल-बदल कर खिड़कियों से सैनिकों पर गोलीबारी की। आतंकवादी उन सैनिकों की ओर हथगोले भी फेंक रहा था, जिन्होंने घर के पास तक पहुंचने के लिए खुद को कंपाउंड की दीवार के पीछे तैनात किया हुआ था। इसके बाद, देवेंद्र मोहन शर्मा ने पहल दिखाई और अपने साथी के साथ आगे बढ़ते हुए लक्ष्य घर के करीब चले गए और घर के अंदर अलग-अलग दिशाओं से 02 यूबीजीएल राउंड फायर किए। यूबीजीएल से फायर करने के बाद, एक बार फिर दुश्मन की तरफ से कोई गोलीबारी नहीं की गई और न ही घर के भीतर कोई हलचल देखी गई। अब यह मान लिया गया था कि आतंकवादी यूबीजीएल फायर होने से मर चुका है। कुछ समय के इंतजार के बाद, लगभग 1030 बजे एक संयुक्त टीम को आतंकवादी के शव का पता लगाने के लिए खिड़की पर भेजा गया। मुश्किल से जवान ने खिड़की से अंदर झांक कर देखा ही था, कि आतंकवादी ने एक फायर किया, जिससे जवान घायल हो गया। लगभग 1100 बजे, श्री राजेश कुमार, कमांडेंट-180, सीओ-42 आरआर और एसएसपी अवंतीपोरा द्वारा योजना की समीक्षा की गई और फिर क्यूएटी/80वीं बटालियन एवं 42 आरआर के पास उपलब्ध फ्लेम थ्रोअर का दो अलग-अलग दिशाओं से एक ही समय पर उपयोग करने का निर्णय लिया गया, ताकि आतंकवादी घर के अंदर अपनी पोजीशन न बदल सके। लगभग 1200 बजे, जब 42 आरआर की एक टीम घर के अंदर ईंधन का छिड़काव कर रही थी, आतंकवादी ने पड़ोस के घर के अहाता की दीवार के पीछे से खिड़की के माध्यम से दो हथगोले दागे, जिससे संयोगवश कोई नुकसान नहीं हुआ। लगभग 1215 बजे, उसे एके-47 के साथ देखा गया, जो तेजी से दूसरे कमरे में अपनी पोजीशन ले रहा था और यह एक पहला अवसर था कि जब भारी हथियारों से लैस आतंकवादी को अच्छी तरह किलाबन्द घर में चलते हुए देखा गया था। इस मोड़ पर, देवेंद्र मोहन शर्मा ने अपने साथी महेश कुमार मीणा के साथ असाधारण साहस और वीरता का प्रदर्शन करते हुए अखरोट के एक विशाल पेड़ के पास तक जाने का फैसला किया, जहां से वे आतंकवादी को निशाना बना सकते थे। इस बीच, आतंकवादी ने उन दोनों की गतिविधि को भांपते हुए दोनों पर गोली चला दी। ये गोलियाँ अपने निशाने से चूक गईं, क्योंकि दोनों तुरंत अपने स्थान पर ही नीचे झुक गए। हालांकि, हार न मानते हुए और अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किये बिना वे फिर से आगे बढ़ गए और उस कमरे के अंदर आतंकवादी को खोजने में सफल हो गए, जहां से आतंकवादी द्वारा उन पर गोलीबारी की गई थी। विरोधी को मौका दिए बिना, देवेंद्र मोहन शर्मा और उनके साथी कांस्टेबल महेश कुमार मीणा ने तेजी से कार्रवाई की और अचूक निशाने के साथ गोलियां चलाकर भारी हथियारों से लैस आतंकवादी को मार दिया। बाद में घर की तलाशी करने पर मारे गए आतंकवादी का शव और साथ में 01 एके राइफल, 02 मैगज़ीन और 30 राउंड मिलता-जुलता गोला बारूद बरामद किया गया। मारे गए आतंकवादी की पहचान अदनान (श्रेणी-ए) निवासी-पाकिस्तान, एक उच्च प्रशिक्षित जेईएम कमांडर के रूप में हुई थी।

हालांकि, 5 जनवरी, 2019 को नंबर 075005505, कांस्टेबल, महेश कुमार मीणा, टांटेरे मोहल्ला, ग्राम अरिपाल, पुलिस स्टेशन-त्राल में सशस्त्र आतंकवादियों के साथ एक मुठभेड़ में वीरता के साथ लड़ते हुए गंभीर रूप से घायल हो गए और इलाज के दौरान 14 जनवरी 2019 को वे शहीद हो गए।

इस ऑपरेशन में श्री देवेंद्र मोहन शर्मा, डिप्टी कमांडेंट ने आतंकवादी को मार गिराने के प्रयास में खुद को अत्यधिक जोखिम में डालकर एक सेनापति, महान पेशेवर दक्षता और सामरिक कौशल के असाधारण गुणों का प्रदर्शन किया। दिवंगत कांस्टेबल महेश कुमार मीणा ने एक उच्च प्रशिक्षित और दृढ़निश्चयी आतंकवादी को मार गिराने के कार्य को अंजाम देते समय अपनी सुरक्षा की परवाह किये बिना दुस्साहसी साहस, दृढ़ निश्चय और एक दृढ़ संकल्प का प्रदर्शन किया।

बल की उच्चतम परंपराओं को बनाए रखते हुए उनकी वीरता, अदम्य साहस, दृढ़ संकल्प और गंभीर परिस्थितियों में भी कर्तव्यों के प्रति वचनबद्धता के मद्देनजर, मैं नंबर 075005505, स्वर्गीय कांस्टेबल महेश कुमार मीणा को वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक (पीपीएमजी) और श्री देवेंद्र मोहन शर्मा, डिप्टी कमांडेंट (आईआरएलए-7470), 180वीं बटालियन, सीआरपीएफ को वीरता के लिए पुलिस पदक (पीएमजी) का पुरस्कार दिए जाने की एतद्वारा सिफारिश करता हूँ।

इस ऑपरेशन में सर्वश्री देवेंद्र मोहन शर्मा, डीसी और स्वर्गीय महेश कुमार मीणा, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किये जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 23.09.2018 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/81/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 126-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारी को वीरता के लिए पुलिस पदक (मरणोपरांत) प्रदान करते हैं:—

स्व. श्री निर्मल घोष	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक (मरणोपरांत)
----------------------	-----------	------------------------------------

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

जिला- पूर्वी सिंहभूम (झारखंड) पुलिस थाना- गलुडीह/बोरम के अंतर्गत गांव-बरुबेड़ा के पहाड़ी/वन क्षेत्र में 10-12 सशस्त्र माओवादियों के एक समूह की गतिविधियों के बारे में एक खुफिया सूचना विश्वसनीय स्रोत से प्राप्त हुई थी। तदनुसार, इस सूचना को पुष्टा करने और माओवादियों को पकड़ने के लिए एक ऑपरेशन की योजना बनाई गई। 193वीं बटालियन की सी, ई एवं जी कंपनियों में प्रत्येक से एक-एक युवा प्लाटून और एफ/169वीं बटालियन के साथ झारखंड पुलिस की एसएटी ने जिला-पूर्वी सिंहभूम के सुकलारा, दलापानी, झंतीपहाड़ी, कुडलूंग, बनियागोराटोला, बरुबेड़ा पहाड़ी क्षेत्र में इलाके को नियंत्रण में ले कर वंहा तलाशी करने का एक ऑपरेशन शुरू किया।

दिनांक 11.07.2018 को लगभग 0905 बजे, जब सचिन कुमार, एसी की कमान में जी/ 193वीं बटालियन की टीम इलाके की तलाशी कर रही थी, तभी अचानक ही उन पर गोलियों की बौछार की गई। नक्सलियों ने सैनिकों पर घात लगाकर हमला किया है। तुरंत, सैनिकों ने पोजीशन ले ली और नक्सलियों पर जबाबी गोलीबारी शुरू कर दी। लगभग 02-03 मिनट तक आपसी गोलाबारी चली। सैनिकों की भारी जवाबी कार्रवाई ने माओवादियों को पीछे हटने के लिए मजबूर कर दिया। इस बीच, पास ही में ऑपरेशन की योजना के अनुसार सी/पुलिस के साथ-साथ हिलारियस बरला, एसी की कमान में सी/193वीं बटालियन की युवा प्लाटून जब सावधानीपूर्वक इलाके की तलाशी कर रही थी, तभी उन्हें गोलियों की आवाज सुनाई दी। वे सतर्क हो गए, लेकिन उन्होंने अपने कार्य को जारी रखा। लगभग 0915 बजे जब सी/193 के सैनिक दलापानी पहाड़ी/वन क्षेत्र में आगे बढ़ रहे थे, तभी माओवादियों ने उन पर अंधाधुंध गोलियां चला दीं। तभी, सैनिकों ने तुरंत अपनी पोजीशन ले ली।

माओवादी अपने गुप्त ठिकानों से गोलीबारी कर रहे थे, जिससे सैनिकों को उनके ठिकाने का पता लगाना मुश्किल हो गया। यह बाधा सैनिकों को नक्सलियों के विरुद्ध प्रभावी जवाबी कार्रवाई करने से रोक रही थी। माओवादियों के मारक क्षेत्र में फंसने के कारण सेना के जवानों के पास से समय निकला जा रहा था। जीवित बचने का एकमात्र उपाय दुश्मन का पता लगा कर उन पर जवाबी हमला करना था। सैन्य दल के जीवित बचने की संभावना अनिश्चित थी। तभी एक आशा की किरण जगी, कि सीटी/जीडी निर्मल घोष ही उस स्थान का सही-सही पता लगा सकता है, जहाँ से माओवादी फायरिंग कर रहे थे। माओवादियों की भारी गोलीबारी और घने कोहरे के कारण अन्य व्यक्ति ऐसा करने में समर्थ नहीं थे। कांस्टेबल निर्मल घोष 51 एमएम मोर्टार ले जा रहे थे, जो एक उच्च प्रक्षेपक हथियार है, जिसके लिए खुली जगह की आवश्यकता होती है। चारों ओर मोटी घास थी और माओवादी करीबी दूरी पर ही थे, जिस कारण वह अपने मोर्टार से गोलीबारी नहीं कर पा रहे थे। इस बीच, दूसरा सैन्य दस्ता माओवादियों के खिलाफ संघर्ष कर ही रहा था, क्योंकि वे उनकी पोजीशन का पता नहीं लगा सके थे। इस स्थिति में, कांस्टेबल निर्मल घोष ने एक साहसिक कदम उठाया, क्योंकि उन्होंने यह निर्णय ले लिया कि माओवादियों की पोजीशन की जानकारी देने के लिए और अपने साथी सैनिकों तक पहुंचने के लिए अपना कवर छोड़ा जाय, ताकि साथी सैन्य दस्ता माओवादियों के भागने से पहले उन पर एक प्रभावी जवाबी हमला कर सके।

यह एक घातक कदम था, क्योंकि गोलियां चारों ओर चल रही थीं और माओवादी सैनिकों की हर गतिविधि को देख रहे थे। फिर भी, सभी बाधाओं को धटा बताते हुए, कांस्टेबल निर्मल घोष अपने आस-पास के सैनिकों के पास पहुँच गए और उन्हें माओवादियों की गोलीबारी की पोजीशन की जानकारी दी। वह एक सिपाही से दूसरे सिपाही के पास गया, चिल्लाया और नक्सलियों को खत्म करने के लिए उन्हें प्रेरित किया। चूंकि, माओवादियों की पोजीशन के बारे में उनका मौखिक संकेत उनके साथी सैनिकों के लिए बहुत प्रभावी साबित नहीं हो रहा था, इसलिए उन्होंने कांस्टेबल अंशुर्न कुमार की यूबीजीएल अपने हाथ में ले ली और दुश्मन पर ग्रेनेड फेंक दिया।

कांस्टेबल निर्मल घोष के इस कार्य से अन्य सैनिक दुश्मन की गोलीबारी की जगह का ठीक ठीक अनुमान लगाने और उन पर प्रभावी तरीके से गोलीबारी करने के लिए उत्साहित हो गए। लेकिन, जैसे कि डर था, नक्सलियों ने कांस्टेबल निर्मल घोष की गतिविधि को देख लिया। माओवादियों ने उनकी ओर अपनी मारकशक्ति का प्रयोग किया, जिससे इस बहादुर जवान को एक गोली लग गई, जो घातक सिद्ध हुई और उन्होंने अपनी चोटों के कारण दम तोड़ दिया और शहादत प्राप्त की, लेकिन उन्होंने अपने साथी सैनिकों के लिए अनुकूल परिस्थिति पैदा कर दी। उन्होंने मातृभूमि की सेवा करते हुए और अपने भाइयों की रक्षा करते हुए, कर्तव्य की वेदी पर सर्वोच्च बलिदान दे दिया। कांस्टेबल निर्मल घोष के बलिदान ने माओवादियों के खिलाफ एक प्रभावी पलटवार करने का रास्ता साफ कर दिया। सैनिकों के दुस्साहसिक जवाबी हमले ने माओवादियों को भागने के लिए मजबूर कर दिया।

केवल कांस्टेबल निर्मल घोष के साहस और उनकी वीरतापूर्ण कार्रवाई के कारण ही मारक क्षेत्र में फंसे हुए सैनिक लड़ पाए और जवाबी हमला कर पाए। अगर उन्होंने सैन्य दस्ते को माओवादियों की गोलीबारी की पोजीशन न बताई होती, तो जवाबी हमला करना/उनका अम्बुश तोड़ना असंभव होता।

इस ऑपरेशन में स्व. श्री निर्मल घोष, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किया जाता है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 11/07/2018 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/82/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन

विशेष कार्य अधिकारी

सं. 127-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं :—

सर्व/श्री

01	मनीष कुमार	एसी	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	राजेन्द्र कुमार	हेड कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
03	काकड़े निशांत अरुण	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
04	अजय किंडो	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 26 अक्टूबर, 2018 को लगभग 0330 बजे, जिला-बारामूला (जेएंडके), में पुलिस स्टेशन -डांगीवाचा, पोडी-सोपोर के अंतर्गत ग्राम पजलपोरा, पीपी-वाटरगाम में भारी हथियारों से लैस आतंकवादियों की मौजूदगी होने के बारे में एक विश्वसनीय सूचना प्राप्त होने पर 92वीं बटालियन के सेकंड-इन-कमांड श्री जेपी सिंह की कमान में 92वीं बटालियन की क्विक एक्शन टीम (क्यूएटी) ग्राम पजलपोरा पहुंच गई तथा 22 राष्ट्रीय राइफल्स (आरआर) और स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप (एसओजी), सोपोर के सैन्य दस्ते के साथ शामिल हो गए। इस बीच, 177वीं बटालियन, 179वीं बटालियन और रेंज क्यूएटी बारामूला के सैनिक भी उक्त गांव में पहुंच गए। इसके बाद, सीआरपीएफ 92वीं, 177वीं, 179वीं बटालियन के कमांडेंट, सीओ -22 आरआर और वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, सोपोर द्वारा एक संयुक्त ऑपरेशन की योजना बनाई गई तथा तदनुसार, 92वीं बटालियन के सैनिकों द्वारा उत्तर-पश्चिम की तरफ, 177वीं बटालियन द्वारा दक्षिण-पश्चिमी की तरफ, 22 आरआर द्वारा पूर्वोत्तर में और एसओजी, सोपोर द्वारा दक्षिण-पूर्व की तरफ आंतरिक घेराबंदी की गई थी। बाहरी घेराबंदी 179वीं बटालियन के सैनिकों तथा 22 आरआर और एसओजी, सोपोर के शेष सैनिकों द्वारा की गई थी। रेंज क्यूएटी, बारामूला को जरूरत पड़ने पर कमरे में प्रवेश करने/तलाशी के लिए आरक्षित रखा गया था। जब शुरुआती घेराबंदी की जा रही थी, तो उस दौरान आतंकवादियों ने सैनिकों की मौजूदगी को भांप लिया और संयुक्त सैन्य दस्ते को निशाना बनाते हुए उन पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी, जिसका सैनिकों द्वारा प्रभावी तरीके से जबाब दिया गया। हालांकि, शुरुआती हमले में, 22 आरआर का 01 जवान गोली लगने से घायल हो गया, जिसे तुरंत अस्पताल पहुंचाया गया, लेकिन उसने दम तोड़ दिया। इस बीच, डीआईजी (ऑप्स) एनकेओआर, बारामूला भी मुठभेड़ स्थल पर पहुंच गए और उन्होंने ऑपरेशन की निगरानी की। प्रारंभ में असफलता हाथ लगने के बाद घेराबंदी को और अधिक कड़ा कर दिया गया था तथा भागने के संभावित मार्गों पर अवरोध लगाए गए। कुछ समय तक रुक-रुक कर गोलीबारी चलती रही, लेकिन फिर सन्नाटा छा गया। सुबह के पहले प्रकाश तक घेराबंदी को जारी रखा गया था, जब तक कि फंसे हुए नागरिकों को बाहर निकालने और लक्षित घर के साथ साथ आस-पास के घरों की तलाशी करने का निर्णय नहीं लिया गया। जैसा कि सर्वेस्क्वू ऑपरेशन बेहद जोखिम भरा था, इसलिए रेंज क्यूएटी, बारामूला की कमान में असिस्टेंट कमांडेंट श्री मनीष कुमार को 22 आरआर की क्यूएटी और एसओजी, सोपोर के साथ कमरे में प्रवेश करने और वहां तलाशी करने का कार्य सौंपा गया। संयुक्त तलाशी दलों ने सावधानी बरतते हुए सभी फंसे हुए नागरिकों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया। इसके बाद, सार्वजनिक सूचना प्रणाली के माध्यम से आतंकवादियों को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया, लेकिन उनकी तरफ से कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली। इसलिए, आतंकियों का पता लगाने के लिए लक्ष्य मकान, आस-पास के घरों और आस-पास के बागों/खेती वाले इलाके की तलाशी करने की योजना बनाई गई। तलाशी अभियान के दौरान, जैसे ही तलाशी दल एक संदिग्ध घर की ओर बढ़ा, तो आतंकवादियों ने तलाशी दलों पर अंधाधुंध गोलियां चला दीं। मनीष कुमार, जो अपने साथी नंबर 135250127, कांस्टेबल काकड़े निशांत अरुण के साथ तलाशी दल का नेतृत्व कर रहे थे, हर परिस्थिति के प्रति सतर्क थे और उन्होंने चतुराई पूर्वक पोजीशन लेते हुए जवाबी गोलीबारी की। तथापि, खड़देदार जमीन और प्राकृतिक कवर का फायदा उठाते हुए, आतंकवादी घर से बाहर चले गए और उन्होंने बाहर उपलब्ध खेती वाले क्षेत्र में पोजीशन ले ली। चूंकि, आतंकवादियों की पोजीशन स्पष्ट थी, इसलिए गोलीबारी चलती रही। मनीष कुमार और उनका साथी काकड़े निशांत अरुण दृढ़ संकल्प एवं साहस का परिचय देते हुए, चतुराईपूर्वक और चुपके से आतंकवादियों की तरफ बढ़ गए। हालांकि, क्यूएटी - 92वीं बटालियन और क्यूएटी-177 द्वारा की गई घेराबंदी को तोड़ने की कोशिश में उनमें से एक आतंकवादी निडर हो कर आगे बढ़ रहा था, जबकि दूसरे आतंकियों ने इस दौरान उसे कवर फायर प्रदान किया। सतर्क कॉर्डन पार्टियों ने पास आते आतंकवादी को देख लिया और गोलीबारी शुरू कर दी, जिससे आतंकवादी जल्दबाजी में पीछे हटने के लिए मजबूर हो गया। यह आतंकी अब आंतरिक घेराबंदी में मनीष

कुमार और उनके साथी काकड़े निशांत अरुण के नेतृत्व वाली सर्च पार्टी तथा क्यूएटी -92वीं बटालियन और क्यूएटी -177वीं बटालियन के सैन्य दस्तों के बीच फंस गया था। आतंकवादी ने खड़के दार जमीन में कवर ले लिया था, जिससे सुरक्षा बल प्रभावशाली तरीके से गोलीबारी नहीं कर सके। 92वीं बटालियन के नंबर 005071609, हेड कांस्टेबल, राजेन्द्र कुमार और क्यूएटी 177वीं बटालियन के नंबर 065176245, कांस्टेबल, अजय किंडो, जो अपनी पार्टियों में अंतिम व्यक्ति थे, द्वारा आतंकवादी की गतिविधि का बारीकी से अवलोकन किया जा रहा है और उन्होंने तदनुसार अपने संबंधित कमांडरों को सूचित किया। उन्होंने खुद को आतंकवादी पर आक्रमण करने और उसे मार गिराने की स्थिति में पाया। राजेन्द्र कुमार और अजय किंडो दोनों अपने कमांडरों से इशारा पाकर अपनी पोजीशन से बाहर आ गए और चुपके-चुपके आतंकवादी की पोजीशन की ओर बढ़ गए। चूंकि, वे आतंकवादी की पोजीशन के बहुत करीब थे, इसलिए आतंकवादी सतर्क हो गया और उसने गोलीबारी शुरू कर दी, जिसका हेड कांस्टेबल राजेन्द्र कुमार और कांस्टेबल अजय किंडो दोनों ने डटकर मुकाबला किया, क्योंकि वे इस समय आतंकवादी से कुछ ही दूरी पर थे। अब यह अभी नहीं तो, कभी नहीं की स्थिति थी। एक सशस्त्र आतंकवादी से होने वाले खतरे को अच्छी तरह जानते हुए भी, दोनों ने जोखिम उठाने का फैसला किया। वे दोनों अलग-अलग दिशाओं में चले गए, ताकि आतंकवादी को दोनों तरफ से घेर कर उस पर अचानक हमला किया जा सके। जैसे ही दुश्मन की ओर से गोलीबारी कम हुई, दोनों अपने कवर से बाहर आ गए और उन्होंने आतंकवादी पर गोली चलाकर उसे घायल कर दिया। अंधाधुंध फायरिंग होने से उसने रेंगते हुए वापस जाने की कोशिश की, जहां मनीष कुमार और उनके साथी काकड़े निशांत अरुण पहले से ही मौजूद थे। इस एक खतरनाक लड़ाई में, जिसमें भारी मात्रा में आपसी गोलीबारी हुई, वे आतंकवादी को मारने में कामयाब रहे। दूसरे आतंकवादी को 22 आरआर और एसओजी, सोपोर के सैनिकों द्वारा उलझाए रखा गया और फिर उसे मार दिया गया। बाद में इलाके की तलाशी के दौरान, दोनों मारे गए आतंकवादियों के शवों को बरामद किया गया। उनकी पहचान उस्मा और ज़ाहिद के रूप में की गई थी, दोनों पाक मूल

के लश्कर-ए-तैयबा (एलईटी) आतंकवादी संगठन से संबंध रखते थे। बरामदगी में दो एके -47 राइफल, 07 मैगजीन, 161 राउंड गोला-बारूद, दो हैंड ग्रेनेड, चाकू, वायर कटर, मोबाइल फोन और कई अन्य खतरनाक सामग्री शामिल हैं।

यह ऑपरेशन बेहद जोखिम भरा था, क्योंकि सुरक्षा बल भली-भांति सशस्त्र और कहर बरपाने में उच्च-प्रशिक्षित आतंकवादियों के खिलाफ लड़ रहे थे। हालांकि, श्री मनीष कुमार, असिस्टेंट कमांडेंट ने अनुकरणीय नेतृत्व गुणों और महान पेशेवरता और सामरिक कौशल का प्रदर्शन करते हुए अपने सैनिकों का नेतृत्व उनका साहस बढ़ाते हुए किया, जो सुप्रशिक्षित विरोधी के विरुद्ध लड़ रहे थे। कांस्टेबल काकड़े निशांत अरुण, हेड कांस्टेबल राजेंद्र कुमार और कांस्टेबल अजय किंडो ने आतंकवादी को उलझाने और उन्हें मार गिराने में असाधारण बहादुरी, साहस, महान सामरिक कौशल और कर्तव्यों के प्रति प्रतिबद्धता का प्रदर्शन किया।

इसलिए उनकी असाधारण बहादुरी, वीरता के विशिष्ट कार्य, सेना की सर्वोच्च परंपराओं को ध्यान में रखते हुए, गंभीर प्रतिकूल परिस्थितियों में अपने कर्तव्यों के प्रति अगाध समर्पण भावना के मद्देनजर, मैं एतद्वारा श्री मनीष कुमार, असिस्टेंट कमांडेंट (आईआरएलए - 9032), 3 बटालियन, नंबर 135250127, कांस्टेबल, काकड़े निशांत अरुण, 176वीं बटालियन, सीआरपीएफ, नंबर 005071609, हेड कांस्टेबल, राजेन्द्र कुमार, 92वीं बटालियन और नंबर, 065176245, कांस्टेबल, अजय किंडो, 177वीं बटालियन, सीआरपीएफ को वीरता के लिए पुलिस पदक (वीरता के लिए पुलिस पदक) दिए जाने की सिफारिश करता हूँ।

इस ऑपरेशन में सर्वश्री मनीष कुमार, एसी, राजेन्द्र कुमार, हेड कांस्टेबल, काकड़े निशांत अरुण, कांस्टेबल और अजय किंडो, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किये जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 26.10.2018 से दिया जाएगा।

(सं0-11020/83/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 128-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार प्रदान करते हैं:—

सर्वश्री

01	कुमार मयंक	2-आई/सी	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	राजबर्धन	असिस्टेंट कमांडेंट	वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार

03	जादव चंद्र बोरा	एसआई	वीरता के लिए पुलिस पदक
04	मोहम्मद हुसैन	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
05	रवींद्र सिंह तोमर	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

जम्मू-कश्मीर में जिला-पुलवामा (जेएंडके) के पुलिस स्टेशन-राजपोरा के अंतर्गत द्रबगाम गांव के क्षेत्र में हिजबुल मुजाहिदीन (एचएम) के खुंखार स्थानीय आतंकवादी समीर टाइगर सहित 2-3 आतंकवादियों की मौजूदगी होने के बारे में सिविल पुलिस से 30 अप्रैल 2018 को लगभग 0900 बजे एक विश्वसनीय इनपुट प्राप्त होने के बाद, एसएसपी पुलवामा, सीआरपीएफ की 182वीं बटालियन के सेकेंड-इन-कमांड और 44 राष्ट्रीय राइफल्स के कमान अधिकारी (सीओ) द्वारा एक संयुक्त कॉर्डन एंड सर्च ऑपरेशन (सीएसएसओ) की योजना बनाई गई थी। समीर टाइगर वर्ष 2016 में एचएम में शामिल हुआ था और स्थानीय लड़कों को आतंकवाद में भर्ती करने, प्रशिक्षण देने और उन्हें प्रेरित करने में काफी हद तक शामिल था। सुरक्षा बलों पर हमलों की योजना बनाने में भी उसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही थी और वह पुलवामा जिले में ऐसे ग्यारह मामलों में शामिल था। सुरक्षा बल उसे पकड़ने के लगातार प्रयास कर रहे थे। यह पिछले दिन ही बात थी, कि उसने एक वीडियो क्लिप में सुरक्षा बल के एक अधिकारी को चुनौती दी, कि उन्हें गंभीर परिणाम भुगतने होंगे। द्रबगाम एक बड़ी सघन आबादी वाला गाँव है, जहाँ कई रास्ते और छोटी-छोटी गलियाँ हैं तथा मकान नज़दीक बने हुए हैं। सामान्य रूप से पुलवामा और विशेष रूप से द्रबगाम हमेशा सुरक्षा बलों के लिए शत्रुतापूर्ण रहा है, जो कि एक बहुत बड़ी चुनौती थी। द्रबगाम चारों ओर से जंगलों और सेब के बागानों से घिरा हुआ है, जहाँ आतंकवादियों को उचित संरक्षण और भागने के मार्ग मिलते हैं।

द्रबगाम पहुंचने पर, सुरक्षा बलों को सबसे पहले बड़ी भीड़ से निपटना पड़ा, जो उस ऑपरेशन को बाधित करने के लिए वहाँ एकत्र हो गई थी और जो कि आजकल में वहाँ एक परंपरा बनी हुई है। श्री कुमार मयंक, सेकेंड-इन-कमांड, 182वीं बटालियन, ने आक्रामक भीड़ से निपटने के लिए कानून-व्यवस्था को देखने वाले घटकों को निर्देश दिया और इसके साथ ही, लगभग 08-10 संदिग्ध घरों की घेराबंदी कर दी गई। संदिग्ध घर कंक्रीट संरचना से बना एक दो मंजिला मकान था, जो लगभग 6 फीट ऊंची टिन की चादर वाली बाड़ और लोहे से निर्मित गेट से घिरा हुआ था। जब सैनिक घेरा डाल रहे थे, तो आतंकवादियों ने अपनी उपस्थिति का सबूत देते हुए डबल मंजिला इमारत से गोलीबारी कर दी। 44 आरआर के मेजर रोहित शुक्ला और उनका साथी इस अप्रत्याशित हमले का शिकार हो कर घायल हो गये। दोनों को तुरंत उस स्थान से बाहर निकाला गया और अस्पताल भेज दिया गया। चूंकि, आतंकवादियों की मौजूदगी की पुष्टि हो गई थी, इसलिए कुमार मयंक, जो मौके पर मौजूद सबसे वरिष्ठ अधिकारी थे, द्वारा घेरा को और अधिक छोटा कर दिया गया। 44 आरआर के सैनिकों ने लक्ष्य घर के पीछे उत्तर में पोजीशन ले ली तथा 182वीं और 183वीं बटालियन के सैनिकों को लक्ष्य घर के पूर्व और पश्चिम में तैनात किया गया। एक बुलेट प्रूफ बंकर को मुख्य द्वार पर इस प्रकार तैयार किया गया था कि अगर आतंकवादियों ने भागने का प्रयास किया, तो उनके भागने के हर तरह के मार्ग को अवरुद्ध किया जा सके। साथ ही, अन्य भागने के मार्गों को भी अवरुद्ध करने के लिए और अधिक बंकर बनाए गए। आम नागरिकों को हताहत होने से बचाने के लिए, घेराबंदी क्षेत्र के भीतर आने वाले आम नागरिकों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया। आतंकवादियों ने इस निकासी प्रक्रिया में बाधा डालने की कोशिश की और आम नागरिकों को निकालने के लिए इस्तेमाल हो रही कुमार मयंक की बीपी जिप्सी पर गोलीबारी की। हालांकि, किसी को कोई नुकसान नहीं हुआ। इसके बाद, सार्वजनिक सूचना प्रणाली पर घोषणाएं की गईं, जिसमें आतंकवादियों को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया, लेकिन उन पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा और लक्षित घर से गोलीबारी जारी रही। सुरक्षा बलों ने भी जवाबी कार्रवाई की। 183वीं बटालियन, सीआरपीएफ के असिस्टेंट कमांडेंट श्री राजबर्धन, ने नंबर 880977743, असिस्टेंट सब-इंस्पेक्टर, जे.सी. बोरा और नंबर 075340365, कांस्टेबल, मोहम्मद हुसैन के साथ लक्ष्य भवन के सामने एक स्कूल की इमारत की पहली मंजिल पर पोजीशन ले ली, जहाँ से उन्हें स्पष्ट दिखाई दे रहा था। इस बीच, सभी उपलब्ध कमांडरों द्वारा सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि कुमार मयंक, 2-आई/सी अपने साथी नंबर 075222229, कांस्टेबल, आरएस तोमर और 44 आरआर के कुछ घटक के साथ पीछे की तरफ से 10 फिट चौड़ा नाला पार करके लक्षित घर में प्रवेश करने का प्रयास करेंगे। तदनुसार, पार्टी संदिग्ध घर के पश्चिम से पीछे की ओर बढ़ गई। बाड़ के रूप में निर्मित टिन की चादरों को हटाने के बाद, जब उन्होंने परिसर में प्रवेश किया तो, एक ग्रेनेड उनके सामने आ कर फट गया, जिससे आरआर के एक जवान के बाएं हाथ पर चोट आ गई, जिससे उन्हें पीछे हटने के लिए मजबूर होना पड़ा, क्योंकि घायल जवान को सुरक्षा के लिए बाहर निकाला जाना था। गोलियों की तड़ितझाहट और ग्रेनेड फेंक जाने के बीच, कुमार मयंक और उनकी टीम ने घायल जवान को सुरक्षा के लिए बाहर निकाल लिया। चूंकि, फायरिंग करने से लक्ष्य घर पर किसी भी तरह से प्रभाव नहीं पड़ रहा था, इसलिए आरआर के सैनिक आईईडी लगाने के लिए आगे बढ़ गए। राजबर्धन की टीम ने सामने से कवर फायर प्रदान किया और इसी बीच कुमार मयंक और उनकी टीम ने पूर्व दिशा में एक आवासीय घर के ऊपरी हिस्से पर कब्जा कर लिया। तत्पश्चात, यूबीजीएल सहित विभिन्न हथियारों से लक्ष्य घर पर आग लगा दी गई। हालांकि, इससे आतंकवादियों का जोश कम नहीं हुआ, विशेष रूप से समीर टाइगर का, जो कि एक अनुभवी आतंकी था और वह मुठभेड़ स्थल से कई बार फरार हो चुका था। हालांकि, आग की गर्मी और निरंतर बमबारी सामना करने के लिए खतरनाक होती जा रही थी। घर के परिसर में चारों ओर हर जगह पर सेब के पेड़ और लकड़ी के ढेर थे। दो आतंकवादी, वहाँ पर उपलब्ध प्राकृतिक कवर का फायदा उठा कर अंधाधुंध फायरिंग करते हुए घर से बाहर भाग गए

और वे दोनों बाड़ से निर्मित एक छोटे से ढांचे, जिसमें चाय की एक छोटी सी दुकान थी, की ओर तेजी से आगे बढ़े। कुमार मयंक, उनके साथी कांस्टेबल आर.एस.तोमर और पार्टी ने उनकी गतिविधि को भांप लिया और उन्होंने भागने वाले आतंकवादियों पर निशाना साध कर गोलियां दागी। इससे एक आतंकवादी को चोटें आईं, लेकिन अपने सहयोगी की सहायता से वे दोनों किसी भी तरह दुकान के ऊपरी हिस्से तक पहुंचने में कामयाब हो गए और उन्होंने वहां एक ऐसी जगह पर पोजीशन ले ली, जहां से वे सुरक्षा बलों को आसानी से देख सकते थे। इस बीच, राजबर्धन और उनकी टीम में जे.सी. बोरा और मोहम्मद हुसैन, जिन्हें लक्ष्य घर के सामने दुश्मन पर हावी होने वाले स्थान पर पोजीशन किया गया था, भी आगे बढ़ रहे आतंकवादियों को अच्छी तरह देख सकते थे। जैसे ही वे दोनों दुकान के ऊपरी हिस्से के पास पहुंचे, राजबर्धन और उनकी टीम ने आतंकवादियों पर गोलीयों की बौछार कर दी, जिससे दुश्मन और अधिक कमजोर पड़ गया। चोट लगने के बावजूद, उन्होंने गोलीबारी जारी रखी और बहुत पास से ग्रेनेड दागे। हालांकि, ग्रेनेड धमाकों के भय से बाहर निकलकर, कुमार मयंक, राजबर्धन, जे.सी. बोरा, आर.एस.तोमर और मोहम्मद हुसैन ने आतंकवादियों पर अर्धधुंध गोलीबारी की। जब एक लंबे समय तक दुश्मन की ओर से गोलीबारी नहीं हुई, तो सीआरपीएफ की 182 और 183वीं बटालियन, 44 आरआर और सिविल पुलिस को मिलाकर बनाए गए एक संयुक्त तलाशी दल ने आंशिक रूप से ध्वस्त हुए घर, दुकान और आस-पास के परिसरों में तलाशी का कार्य पूरा किया, जिसके परिणामस्वरूप मारे गए दो आतंकवादियों के शवों की बरामदगी हुई। उन्होंने दो राइफलें, एक एके-56 और एक एके-47, मैगजीन, 7.62 गोला-बारूद के 77 राउंड, एक चीनी ग्रेनेड और अन्य आपराधिक सामग्री भी बरामद की। मारे गए आतंकवादियों की पहचान समीर अहमद भट उर्फ टाइगर उर्फ फैसल, एचएम गुट का श्रेणी ए ++, निवासी- गाँव दुबगाम, पीएस-राजपोरा, जिला पुलवामा और मोहम्मद अकीब खान, निवासी- राजपोरा, पी.एस.- राजपोरा, जिला पुलवामा के रूप में हुई।

इस ऑपरेशन में सर्व/श्री कुमार मयंक, 2-आई/सी, राजबर्धन, असिस्टेंट कमांडेंट, जादव चंद्र बोरा, एसआई, मोहम्मद हुसैन, कांस्टेबल और रवींद्र सिंह तोमर, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किये जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 30.04.2018 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/85/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 129-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	राकेश राव	कमांडेंट	वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार
02	जितेंद्र साहू	डिप्टी कमांडेंट	वीरता के लिए पुलिस पदक
03	शोफीकुल इस्लाम	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
04	बनवारी लाल	असिस्टेंट कमांडेंट	वीरता के लिए पुलिस पदक
05	अखिलेश पांडे	हेड कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
06	कमलेश सिंह	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
07	दीप चंद सिंह	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
08	लेख राज	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 11 मार्च 2017 और 24 अप्रैल 2017 को घटित दो दुखद घटनाओं के बाद, जिसमें सीआरपीएफ के 37 जवान शहीद हुए थे, इस क्षेत्र में माओवादियों की आक्रामकता को समाप्त करने के लिए दिनांक 23.06.2017 से 25.06.2017 तक "ऑपरेशन प्रहार" के नाम से एक विशेष संयुक्त ऑपरेशन (सीआरपीएफ और डीआरजी/एसटीएफ छत्तीसगढ़ पुलिस) शुरू किया गया था। 201 कोबरा के सैन्य दस्ते को सुकमा जिले के टोंडमारका गांव के क्षेत्र की जिम्मेदारी दी गई थी, जो कथित रूप से पीएलजीए बटालियन का हेड क्वार्टर था। यह क्षेत्र

किसी भी सुरक्षा बल के शिविर से लगभग 20 किलोमीटर की वायु दूरी पर अवस्थित है। डीआरजी/एसटीएफ को बड़ेकेडवाल गांव एक पृथक लक्ष्य क्षेत्र की जिम्मेदारी दी गई, जो टोंडमारका से लगभग 4 किमी. दूर था।

योजना अनुसार, श्री राकेश राव, कमांडेंट की समग्र कमान में 201 कोबरा के चार सैन्य दस्तों ने 23 जून 2017 को 0400 बजे लक्ष्य सत्र की ओर प्रस्थान किया। सैन्य दस्तों ने अपने लक्ष्य क्षेत्रों को खोजा और एक माओवादी शिविर का पता लगा लिया। माओवादी अपने शिविर से भागने में कामयाब हो गए। शाम के समय, उन्होंने लक्ष्य क्षेत्र के नजदीक विश्राम (एलयूपी) किया। माओवादियों ने इस अवसर/समय का उपयोग जवाबी हमला करने के लिए पुनः संगठित होने/योजना बनाने में किया।

दिनांक 24 जून 2017 को, सैन्य दस्ते अपने एलयूपी से आगे बढ़े और क्षेत्र की तलाशी जारी रखी। लगभग 0830 बजे, बड़ी संख्या में माओवादियों ने सैनिकों की घेराबंदी कर ली और उन पर भारी गोलाबारी शुरू कर दी। सैनिकों ने अपनी पोजीशन ली और आक्रामक माओवादियों पर जवाबी कार्रवाई शुरू की। लगभग 1020 बजे एसपी सुकमा ने सूचित किया कि डीआरजी/एसटीएफ सैन्य दस्ते के कुछ जवान माओवादियों से मुठभेड़ में जख्मी हुए हैं और उन्हें तुरंत वहां से बाहर निकाले जाने/एयरलिफ्ट करने की आवश्यकता है, लेकिन वे माओवादियों के कब्जे में हैं। घायलों को सुरक्षित जगह ले जाने के लिए सुरक्षित लैंडिंग सुनिश्चित कर लेने की शर्त पर हेलिकॉप्टर की मांग की गई। घायल सैनिकों को सुरक्षित जगह ले जाने के साथ-साथ अन्य सैनिकों की जान बचाने के लिए अतिरिक्त सैन्य बल की आवश्यकता थी। माओवादियों ने डीआरजी/एसटीएफ के सैनिकों को चारों ओर से घेर लिया है। माओवादियों की ओर से हो रही भारी गोलाबारी ने सैनिकों को अपनी जगह से हटने के लिए विवश कर दिया, क्योंकि जवाबी हमला करने की कोई गुंजाईश नहीं थी।

यह सूचना मिलने पर, 201 कोबरा के पार्टी कमांडर ने एसएटी (स्पेशल एक्शन टीम) को दो टीमों के साथ उक्त क्षेत्र में पहुंचने और डीआरजी/एसटीएफ सैन्य दस्ते को मदद पहुंचाने का निर्देश दिया। 201 कोबरा के कमांडेंट ने स्थिति की गंभीरता को समझते हुए स्वयं एसएटी का नेतृत्व करने का निर्णय लिया। श्री जितेंद्र साहू, डिप्टी कमांडेंट और श्री बनवारी लाल, असिस्टेंट कमांडेंट, अन्य दो टीमों का नेतृत्व कर रहे थे। कोबरा सैनिक समानांतर फोर्मेशन में लक्ष्य जीआर के पास पहुंच गये। श्री बनवारी लाल, असिस्टेंट कमांडेंट, की टीम ने बाईं ओर से कवर किया और श्री जितेंद्र साहू, डिप्टी कमांडेंट, की टीम ने दायीं ओर से क्षेत्र को कवर किया। आगे का हिस्सा एसएटी द्वारा कवर किया गया। जब कोबरा टीम हेलीकॉप्टर की लैंडिंग के लिए चिन्हित जगह से लगभग 200 गज की दूरी पर थी, तभी हेलीकॉप्टर उस क्षेत्र के ऊपर पहुंच गया और टोंडमारका गांव के नजदीक निर्धारित किए गए जीआर के ऊपर मंडराने लगा। दूसरी ओर, माओवादी सैन्य दस्तों पर लगातार गोलीबारी कर रहे थे।

अतिरिक्त सहायता दस्ते को अपने काफी करीब देखकर, माओवादियों ने बाईं ओर के सैन्य दस्ते और सामने के हिस्से में तैनात एसएटी के सैन्य दस्ते पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। जान के खतरे से बेपरवाह हो कर, श्री बनवारी लाल, असिस्टेंट कमांडेंट, अपने स्थान पर जमे रहे और उन्होंने आक्रमक माओवादियों को पूरी ताकत के साथ मुंहतोड़ जवाब दिया। आगे बढ़कर नेतृत्व करते हुए, वे घायल सैनिकों की ओर लगातार बढ़ते रहे। उनके साहसी जवाबी हमले ने माओवादियों को अपनी जान बचाने के लिए भागने पर मजबूर कर दिया।

माओवादी कुछ क्षण के लिए शांत हो गए। इस अवसर का लाभ उठाकर, श्री बनवारी लाल, असिस्टेंट कमांडेंट, अपने टीम के साथ घायल सैनिकों के पास पहुंच गए। इस बीच माओवादियों ने खुद को एक बार फिर संगठित कर लिया और कोबरा टीमों पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। माओवादी अत्यंत सुरक्षित जगहों से गोलीबारी कर रहे थे और सुरक्षाबलों को प्रभावी जवाबी हमले के लिए कोई मौका नहीं दे रहे थे। हेलीकॉप्टर अभी भी ऊपर मंडरा रहा था और इस वक्त उस जगह पर लैंडिंग के लिए उचित समय की प्रतीक्षा कर रहा था।

एसएटी के कांस्टेबल कमलेश सिंह, कांस्टेबल दीपचंद और कांस्टेबल सफीकुल इस्लाम अपने सेनापति का इशारा पाकर अचानक अपने सुरक्षा घेरे से बाहर निकले और माओवादियों पर गोलियों की बौछार कर दी। इस अप्रत्याशित जवाबी हमले ने माओवादियों को भयभीत कर दिया और उनकी गोलीबारी कुछ क्षणों के लिए थम गई थी। इस अवसर का लाभ उठाते हुए, श्री जितेंद्र साहू, डिप्टी कमांडेंट अपने टीम के साथ डीआरजी/एसटीएफ के सैनिकों के नजदीक पहुंच गए और उनके साथ संपर्क स्थापित कर लिया।

दोनों ओर से हो रही भारी गोलीबारी हेलीकॉप्टर की लैंडिंग को रोक रही थी। हेलीकॉप्टर अभी भी लैंडिंग के लिए चिन्हित जीआर के ऊपर मंडरा रहा था, क्योंकि पायलट को लैंडिंग के लिए डीआरजी/एसटीएफ की ओर से कोई संकेत नहीं मिला। यही वह क्षण था, कि जब श्री जितेंद्र साहू, डिप्टी कमांडेंट ने एक पहल की। उन्होंने सैनिकों को माओवादियों पर भारी गोलीबारी करने का निर्देश दिया। यह योजना सफल रही। सैनिकों की ओर से भारी गोलीबारी होने के कारण माओवादियों की गोलीबारी थम गई। भारी गोलीबारी के बीच, श्री जितेंद्र साहू सुरक्षा घेरे से बाहर निकले और अपना हाथ हिलाकर हेलीकॉप्टर को लैंड करने का संकेत दिया। उन्होंने घायल सैनिकों की जान बचाने के लिए अपनी जान की परवाह नहीं की। कोबरा टीमों की कवर गोलीबारी की सहायता ले कर, घायल सैनिकों को हेलीकॉप्टर के पास ले जाया गया और उन्हें उस स्थान से बाहर निकाला गया। स्थिति की गंभीरता को इस बात से समझा जा सकता है कि हेलीकॉप्टर को 3 गोलियां लगीं और उसे सुकमा में आपातकालीन लैंडिंग करनी पड़ी।

घायल सैनिकों को बाहर निकालने के पश्चात, सैनिकों ने माओवादियों पर जवाबी हमले करने पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। सैनिकों के संकेंद्रित जवाबी हमले ने माओवादियों को एक बार फिर पीछे हटने को मजबूर कर दिया। सैनिकों ने तलाशी जारी रखी और

अपने-अपने क्षेत्रों में आगे बढ़ते रहे। माओवादी छोटे-छोटे समूहों में दूर से सैन्य दस्ते का पीछा कर रहे थे और उन पर दुबारा हमले के अवसर की प्रतीक्षा कर रहे थे। जब डीआरजी/एसटीएफ के सैनिक दुरबा गांव से गुजर रहे थे, माओवादियों ने एक बार फिर उन्हें घेर लिया और उन पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। एक बार फिर कोबरा के सैन्य दस्ते से सहायता का अनुरोध किया गया। सहायता हेतु अनुरोध करने पर दो कोबरा टीमों उस क्षेत्र में पहुंच गईं और माओवादियों के विरुद्ध जवाबी हमले को बढ़ा दिया गया। माओवादी एक बार फिर अपनी जगह से पीछे हट गए, लेकिन इस बार उन्होंने अलग तरह की रणनीति अपनाई।

डीआरजी सैन्य दस्ते को दुरमा गांव के निकट दूसरी बार खतरे से बाहर निकालने के बाद, कोबरा टीम जब आगे बढ़ रही थी, तभी माओवादियों ने उन्हें घेरने की कोशिश की। हालांकि, उन्हें कमांडेंट, 201 कोबरा के सामरिक कौशल से आश्चर्यचकित होना पड़ा, क्योंकि माओवादियों की रणनीति को भांपते हुए टीम कमांडर उस दिशा में एसएटी और दो अन्य टीमों को मोर्चे पर पहले ही लगा चुके थे। इससे पहले कि माओवादी कोबरा की बचाव टीमों को घेरते, उन्हें एसएटी और कोबरा की दो अन्य टीमों द्वारा रोक लिया गया। कोबरा सैनिकों और माओवादियों के बीच भीषण गोलीबारी शुरू हुई। श्री राकेश राव ने अदम्य साहस और वीरता का प्रदर्शन करते हुए जवाबी हमले का नेतृत्व किया। अपने कमांडर के प्रेरक नेतृत्व में डिप्टी कमांडेंट, श्री जितेंद्र साहू, असिस्टेंट कमांडेंट, श्री बनबारी लाल, हेड कांस्टेबल अखिलेश पांडे, कांस्टेबल कमलेश सिंह, कांस्टेबल दीप चंद, कांस्टेबल शफीकुल इस्लाम और कांस्टेबल लेख राज शर्मा सामने से लड़ें और माओवादियों को भारी क्षति पहुंचाई।

माओवादियों ने अपने साथियों के शव और हथियारों के साथ मुठभेड़ स्थल से भागने की कोशिश की। भारी कवर गोलीबारी के बीच, माओवादी अपने मृत कैदरों के शवों को घसीट रहे थे। हेड कांस्टेबल, अखिलेश पांडे और कांस्टेबल, लेखराज शर्मा ने एक मृत माओवादी के शव को उनके साथी कैदरों द्वारा घसीट कर ले जाते हुए देखा। वे दोनों गोलीबारी और आगे बढ़ने की रणनीति को अपनाते हुए, मृत माओवादी के पास तक पहुंचे, लेकिन उसके शरीर को रिकवर नहीं सके, भले ही उन्होंने हथियार (एसएलआर) अपने कब्जे में ले लिया। इसी बीच कांस्टेबल, कमलेश सिंह, कांस्टेबल, दीपचंद और कांस्टेबल सफीकुल इस्लाम ने गोलीबारी और आगे बढ़ने की रणनीति अपनाकर एक माओवादी के मृत शरीर को अपने कब्जे में लिया। बाद में, माओवादी के शव की पहचान उईका लक्कू उर्फ महेश कवासी, पीएलजीए बटालियन संख्या 1 के सेक्शन कमांडर के रूप में की गई। अदम्य जवाबी हमले ने माओवादियों की मुख्य ताकत को तहस-नहस कर दिया और उन्हें जान बचाकर भागने के लिए मजबूर किया। माओवादियों की कुख्यात पीएलजीए बटालियन संख्या 1 के साथ यह लड़ाई पूरे एक दिन चली। माओवादी की यह इकाई सुरक्षाबलों के विरुद्ध कई दुखद घटनाओं में शामिल थी और इस इकाई को संगठन के बीच सबसे मजबूत माना जाता है। माओवादियों की इस नामी इकाई को उनके ही गढ़ में नेस्तनाबूद करने के बाद सैन्य दस्ता अगले दिन अर्थात् दिनांक 25.06.2017 को लगभग 0700 बजे बुर्कापाल शिविर पहुंच गया।

इस ऑपरेशन में सर्व/श्री राकेश राव, कमांडेंट, जितेंद्र साहू, डिप्टी कमांडेंट, शोफीकुल इस्लाम, कांस्टेबल, बनबारी लाल, असिस्टेंट कमांडेंट, अखिलेश पांडे, हेड कांस्टेबल, कमलेश सिंह, कांस्टेबल, दीप चंद सिंह, कांस्टेबल और लेख राज शर्मा, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किये जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 24.06.2017 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/92/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 130-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक/ वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार/ वीरता के लिए पुलिस पदक का पंचम बार प्रदान करते हैं :—

सर्व/श्री

01	नरेश कुमार	एसी	वीरता के लिए पुलिस पदक का पंचम बार
02	रवि शर्मा	एसी	पुलिस पदक का द्वितीय बार
03	विजय प्रकाश यादव	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
04	अनीश कुमार सिंह	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
05	यूनिस् अहमद डार	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

06	देवेंद्र कुमार	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
07	महिपाल सिंह	हेड कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

गासी मोहल्ला, छत्ताबल, श्रीनगर, जम्मू और कश्मीर में आतंकवादियों की मौजूदगी होने के बारे में दिनांक 04 मई 2018 को एक कार्रवाई योग्य खुफिया सूचना मिली थी। आतंकियों को दबोचने के लिए श्री नरेश कुमार, असिस्टेंट कमांडेंट, श्री एल इबोम्या सिंह, असिस्टेंट कमांडेंट और श्री रवि शर्मा, असिस्टेंट कमांडेंट के नेतृत्व में वेली क्यूएटी और

एसओजी, श्रीनगर की एक संयुक्त टीम लक्ष्य क्षेत्र के लिए रवाना हुई। सावधानी बरतते हुए और चतुराईपूर्वक आगे बढ़ते हुए सैन्य दस्ते ने संदिग्ध घरों के आसपास एक मजबूत घेराबंदी कर ली। उसके बाद, तलाशी करने के लिए 15-20 संदिग्ध बहु-मंजिला घरों के एक क्लस्टर की पहचान की गई। घरों के ये क्लस्टर बहुत एक दुसरे के निकट स्थित और आपस में जुड़े हुए थे।

जब पार्टी आंतरिक घेराबंदी के भीतर चतुराईपूर्वक आगे बढ़ चल रही थी, उन्हें संदिग्ध गतिविधि का आभास हुआ। तेजी से कार्रवाई करते हुए, श्री एल इबोम्या सिंह उसी दिशा में संदिग्ध का पीछा करने के लिए आगे बढ़ गए। इस पर संदिग्ध घरों में से एक घर से उन पर गोलियों की बौछार कर दी गई और श्री एल इबोम्या सिंह को उनके दाहिने पैर में गोली लग गई। साथी सैनिकों द्वारा उन्हें तुरंत उस स्थान से बाहर निकाला गया। इस बीच, सार्वजनिक संबोधन प्रणाली के माध्यम से घोषणाएं करके आतंकवादियों को हथियार डालने के लिए कहा गया, लेकिन यह सब व्यर्थ था।

आतंकियों की ओर से कोई प्रतिक्रिया न देखकर, सैनिकों ने एक-एक करके घरों की तलाशी शुरू कर दी। एक आतंकवादी एक दो मंजिला ढांचे में छिपा हुआ था, जो पहली मंजिल पर सुरक्षित रूप से छिपा हुआ था और इसलिए वह बाहर की गतिविधियों पर एक पक्षी की नजर रख सकता था। जैसे ही सर्च टीम लक्ष्य घर के करीब पहुंची, आतंकवादियों द्वारा उन पर भारी गोलीबारी की गई। सर्च पार्टी ने उचित कवर लेते हुए हमले के प्रति जबाबारी कार्रवाई की। सेना और आतंकवादी के बीच भारी मुठभेड़ हुई। खुद को फंसा हुआ पा कर और सैनिक दस्ते पर आक्रमण करने में खुद को असमर्थ पा कर, आतंकवादी उस स्थान से भागने के प्रयास में उस घर से तिलमिलाते हुए बाहर निकल गया और उसने सैनिक दस्ते पर भारी गोलीबारी कर दी। श्री नरेश कुमार ने आतंकवादी की योजना को भांप लिया। उन्होंने अपने साथी कांस्टेबल विजय प्रकाश यादव के साथ आतंकवादी के सामने बाधा पैदा की और उसे भागने से रोकने के लिए उस पर गोलीबारी की। इस बीच, श्री रवि शर्मा और कांस्टेबल अनीश कुमार सिंह भी आतंकवादी के करीब पहुंच गए और जवाबी हमला किया। इससे पहले कि आतंकवादी किसी भी तरह की योजना बना सके, उपरोक्त चारों बहादुर सैनिक गोलीबारी में आमने-सामने आ गए और उन्होंने इस आपसी गोलीबारी में पहले आतंकवादी को मार डाला।

मारे गए आतंकवादी की पहचान "लश्कर- ए- तैयबा" के कमांडर शौकत अहमद टाक के रूप में की गई थी। लड़ाई अभी खत्म नहीं हुई थी, क्योंकि वहां दो अन्य आतंकवादी घर में छिपे हुए थे और सैनिकों पर गोलीबारी कर रहे थे।

आतंकवादियों और सैनिकों के बीच आपसी गोलीबारी जारी रही। लक्ष्य घर के करीब जाने की हर कोशिश को आतंकवादियों द्वारा बहुत भारी मात्रा में गोलीबारी के साथ विफल किया गया था। लगभग 0800 बजे, कमांडरों द्वारा एमजीएल फायर का इस्तेमाल किया गया था, हालांकि, इससे किसी तरह का कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ा, क्योंकि आतंकवादी अपनी मजबूत स्थिति में थे। बाद में, लक्ष्य घर को खोलने के लिए सीजीआरएल का उपयोग करने का निर्णय लिया गया। यह एक बहुत ही जोखिम भरा कदम था, क्योंकि सैनिक बहुत नजदीक थे। उन्हें सीजीआरएल से फायर करना था, इसलिए एक को कवर से बाहर आना ही था। इस समय, ड्यूटी के आह्वान पर आरएल कमांडर हेड कांस्टेबल महिपाल सिंह ने चुनौती स्वीकार कर ली। महान सामरिक कुशलता और पेशेवर कौशल का प्रदर्शन करते हुए, उन्होंने लक्ष्य घर पर एचईएटी और एचई राउंड फायर किए। बगल के घर से सीजीआरएल टीम को कवर फायर प्रदान करते हुए, कांस्टेबल यूनिट अहमद डार और देवेंद्र कुमार को गंभीर चोट आई, लेकिन वे अपने स्थान से नहीं हटे तथा उन्होंने अदम्य संकल्प, साहस और दृढ़ वचनबद्धता के साथ अपनी पोजीशन को नहीं छोड़ा।

सीजीआरएल की सटीक गोलीबारी से कई बड़े छेद होने के कारण, भवन के अन्दर अब आतंकवादियों की गतिविधियाँ स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी। मुठभेड़ स्थल पर कानून-व्यवस्था की स्थिति अधिक खराब और हिंसक होती जा रही थी, इसलिए कमांडरों द्वारा लगभग 1130 बजे यह निर्णय लिया कि लक्ष्य घर से आतंकवादियों को बाहर निकालने के लिए कमरे में प्रवेश किया जाय। इसके बाद, इस उद्देश्य के लिए एक छोटी टीम का गठन किया गया था। आतंकवादियों को आश्चर्यचकित करते हुए, टीम ने निकटवर्ती भवन से दो भवनों के बीच की खाई को पाटने के लिए सीढ़ी का उपयोग करते हुए लक्ष्य घर में प्रवेश किया। योजना के अनुसार, कांस्टेबल विजय प्रकाश यादव और कांस्टेबल अनीश कुमार सिंह के साथ श्री नरेश कुमार और श्री रवि शर्मा के नेतृत्व वाली टीम ने सावधानी बरतते हुए कमरे की तलाशी शुरू कर दी। आगे बढ़ते समय, सैनिकों ने सीढ़ियों के पास आतंकवादियों की उपस्थिति को महसूस किया। गोलीबारी और तरह तरह की

चालों का इस्तेमाल करके उन्होंने हँड ग्रेनेड को सीढ़ियों की ओर गिरा दिया। सैनिकों को अपने करीब पाते हुए, आतंकवादियों ने जवाबी कार्रवाई करते हुए वापसी ग्रेनेड हमले के बाद भारी मात्रा में गोलीबारी की। घातक खतरों से निडर हो कर, सैनिकों ने अपनी हिम्मत को बांधे रखा और पूरी ताकत से हमले का जोरदार जबाब दिया। करीबी युद्ध में साहस का प्रदर्शन करते हुए, सैनिक सामने आ गए और आतंकवादियों को भी लड़ाई के सामने ला दिया। दुस्साहसिक जवाबी हमले में शेष दो आतंकवादी फयाज हमाल और अबू हमजा (एफटी) भी मारे गए।

"लश्कर" के 03 खूंखार आतंकियों को मारने में संयुक्त बलों की इस उपलब्धि को सीआरपीएफ के जबरदस्त धैर्य, दृढ़ संकल्प, अनुकरणीय वीरता और जोश से हासिल किया जा सका है।

इस ऑपरेशन में सर्वश्री नरेश कुमार, एसी, रवि शर्मा, एसी, विजय प्रकाश यादव, कांस्टेबल, अनीश कुमार सिंह, कांस्टेबल, यूनिश अहमद डार, कांस्टेबल, देवेंद्र कुमार, कांस्टेबल और महिपाल सिंह, हेड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किये जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 05/05/2018 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/188/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 131-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, रेलवे पुलिस बल (आरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारी को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं :—

स्व.श्री जगबीर सिंह राणा,	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक (मरणोपरांत)
---------------------------	-----------	------------------------------------

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

श्री जगबीर सिंह राणा, कांस्टेबल पुत्र श्री चंदर सिंह राणा, आदर्श नगर स्थित आरपीएफ पोस्ट पर तैनात थे। इस पोस्ट पर अपनी तैनाती के दौरान, उन्होंने अपने कर्तव्यों का निर्वहन पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ किया।

दिनांक 21.04.2019 को, कांस्टेबल जगबीर सिंह राणा को सिग्नल नंबर 07 पर 20.00 बजे से 08.00 बजे की पाली में तैनात किया गया था। एक मात्र गवाह श्री राजेंद्र के अनुसार दिनांक 21.04.2019 को लगभग 21.30 बजे आदर्श नगर और दिल्ली आजादपुर स्टेशन के बीच रेलवे ट्रैक पर तीन बच्चे बैठे हुए थे (अनुबंध-ए)। दिल्ली की तरफ से उसी ट्रैक पर एक ट्रेन बच्चों की तरफ आ रही थी। कांस्टेबल जगबीर सिंह राणा ने उन बच्चों के जीवन को खतरा होने की आशंका को भांप लिया और बच्चों को सचेत करने की कोशिश की, लेकिन बच्चे इस चेतावनी को नहीं सुन पाए और ट्रैक पार करने के लिए आगे बढ़ते रहे। बहादुरी का अनुकरणीय प्रदर्शन करते हुए, वे तुरंत अपने जीवन की परवाह किए बिना बच्चों की ओर दौड़ पड़े। बच्चों की जान बचाने की कोशिश में, वे तेजी से पास आती कालका शताब्दी (ट्रेन नंबर 12012) से बुरी तरह टकरा गए। ट्रेन नंबर 12012, कालका शताब्दी के लोको पायलट श्री अनिल कुमार का बयान भी कांस्टेबल जगबीर सिंह राणा की अपनी झूटी के प्रति उनके साहस और कर्तव्यनिष्ठा के अनुकरणीय प्रदर्शन की पुष्टि करता है, जिसमें 03 बच्चों के बहुमूल्य जीवन को बचाने में वे स्वयं 12012 कालका शताब्दी से बुरी तरह टकरा गए और इसके लिए उन्होंने अपना सर्वोच्च बलिदान दे दिया।

इस प्रकार, अपने जीवन की परवाह न करते हुए, उन्होंने बल के एक सदस्य के रूप में अनुकरणीय बहादुरी का प्रदर्शन किया, जो कि कर्तव्यनिष्ठा और समर्पण भावना तथा साथ ही बल के एक सदस्य के रूप में उत्कृष्टता को दर्शाता है।

कांस्टेबल जगबीर सिंह राणा द्वारा अपने कर्तव्य का निर्वहन बहादुरी के साथ करने की घटना को प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और सोशल नेटवर्किंग साइट्स द्वारा बड़े पैमाने पर कवर किया गया था। अपना सर्वोच्च बलिदान करके, उन्होंने बल की उच्चतम परंपराओं को बनाए रख उनका प्रदर्शन किया है और दूसरों के लिए भी अनुसरण हेतु एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है।

अपनी आखिरी सांस लेने के बाद, कांस्टेबल जगबीर सिंह राणा की आँखों को उनके परिवार की सहमति से नेत्र-बैंक में दान कर दिया गया।

इस ऑपरेशन में स्व. श्री जगबीर सिंह राणा, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किया जाता है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 21.04.2019 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/205/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 132-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	नरपत सिंह	एसी	वीरता के लिए पुलिस पदक
02	प्रदीप कुमार	हेड कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
03	भीम सिंह	हेड कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक
04	गणेश सिंह राणा	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

पुलिस स्टेशन-गोपीकांदर, जिला-दुमका (झारखंड) के अंतर्गत कछुआ क्षेत्र के वन क्षेत्र में बीजेएसएसी के खतरनाक माओवादियों की मौजूदगी के बारे में दिनांक 27.07.2018 को एक सूचना प्राप्त हुई, जिनमें 10-15 आर्म्स कैडर समेत विजय दा उर्फ नंद लाल मांझी, बलबीर महतो उर्फ रोशन दा, ताला दा उर्फ सहदेव राय उर्फ अग्नि शामिल थे। बंसलोई नदी के तट होने और जिला गोड्डा एवं पाकुड़ के सीमा क्षेत्र के पास स्थित होने के कारण इस क्षेत्र का सामरिक महत्व है। बीजेएसएसी लंबे समय से इस क्षेत्र में अपना प्रभाव बढ़ाने की कोशिश कर रहा है। कछुआ कांदर क्षेत्र में घनी वनस्पतियों की मात्रा अधिक है। यह क्षेत्र उबड़-खाबड़ है और उतार-चढ़ाव वाला पर्वतीय इलाका है, जो वहां ऑपरेशन करने के लिए क्षेत्र को प्रतिकूल और चुनौतीपूर्ण बनाता है। हालाँकि, ये कठिनाइयाँ सच्चे सैनिक को अपने मार्ग से नहीं रोक सकती।

कछुआ कांदर वन क्षेत्र में मौजूद माओवादियों को पकड़ने के लिए 35वीं बटालियन, दुमका और राज्य पुलिस झारखंड द्वारा एक ऑपरेशन की योजना बनाई गई थी। इस डेटिंग और चुनौतीपूर्ण कार्य को करने की जिम्मेदारी श्री नरपत सिंह, असिस्टेंट कमांडेंट की कमान में 35 वीं बटालियन के एसएटी (स्मॉल एक्शन टीम) को सौंपी गई। दो कम्पनियों नामश ए- कंपनी नारगंज, पुलिस स्टेशन - काठीकुंड, जिला- दुमका (झारखंड) और डी-कंपनी गोपीकांदर, पुलिस स्टेशन- गोपीकांदर, जिला- दुमका (झारखंड) को रिजर्व/अतिरिक्त सैन्य शक्ति के रूप में रखा गया था। ऑपरेशन की समग्र निगरानी 35वीं बटालियन, एसएसबी, दुमका (झारखंड) के कमांडेंट श्री परीक्षित बेहरा और एसपी, दुमका द्वारा की गई थी।

श्री नरपत सिंह, असिस्टेंट कमांडेंट के नेतृत्व वाली एसएटी में एक जिला पुलिसकर्मी समेत 22 सुप्रशिक्षित और उच्च प्रेरित कमांडो शामिल थे।

योजना के अनुसार एसएटी दिनांक 27.07.2018 को 1330 बजे बटालियन मुख्यालय, दुमका से निकल पड़ी और रात में नारगंज के पास एलयूपी लिया गया। दिनांक 28.07.2018 को श्री नरपत सिंह, असिस्टेंट कमांडेंट और श्री परीक्षित बेहरा, कमांडेंट, 35वीं बटालियन एसएसबी, दुमका योजना बनाते रहे और उस क्षेत्र में नक्सलियों के स्थान का पता लगाते रहे। उसी दिन 1400 बजे एसएटी (स्मॉल एक्शन टीम) सीओबी नारगंज में एकत्र हुई तथा समय और दूरी को कवर करने के लिए अमडीहा गाँव के जंगल क्षेत्र तक वाहनों द्वारा चल पड़ी, ताकि बरसात के मौसम में अंधेरे से पहले नक्सलियों को पकड़ा जा सके। एसएटी अमडीहा गाँव के जंगल के पास गाड़ी से उतर गई, जो कछुआ कांदर से 4 (चार) किलोमीटर दूर था। दो दिशाओं में कार्रवाई के लिए दो टीमों का गठन किया गया था। श्री नरपत सिंह, असिस्टेंट कमांडेंट की कमान में टीम -1 बाएं ओर यानी कछुआ कांदर क्षेत्र के उत्तर-पूर्व से सामान्य मार्गों

से बचते हुए महुआगरी जंगल के पहाड़ी रास्ते से होकर चतुराईपूर्वक आगे बढ़ी और टीम -2 दाएं तरफ यानि कछुआ कांदर जंगल के उत्तर-पश्चिम की ओर से चतुराईपूर्वक आगे बढ़ी।

हालाँकि, इलाके में भारी बारिश हो रही थी, फिर भी दोनों ही टीमों घने जंगल और पहाड़ी क्षेत्र के रास्ते आगे बढ़ते रही। श्री नरपत सिंह, असिस्टेंट कमांडेंट ने टीम -2 के कमांडेंट और डीसी (ऑप्स) के साथ नियमित संपर्क बनाए रखा। टीम -1 सरखिपहाड़ नामक पहाड़ी की चोटी पर पहुंच गई। लगभग 1500 बजे, कांस्टेबल (जीडी), गणेश सिंह राणा ने सरखिपहाड़ की तलहटी पर प्लास्टिक की चादरों से बने कुछ बीवौक्स को देखा, जो कि घने जंगल में पूरब की ओर कछुआ कांदर गाँव से 01 (एक) किमी की दूरी पर थे। दूरबीन की मदद से आगे की निगरानी करते हुए टीम-01 के कमांडर ने शिविर में लगभग 10-15 कर्मियों के समूह को देखा, जो प्रशिक्षण जैसी गतिविधियों में लगे हुए थे। उन्होंने यह भी देखा कि उनके पास स्वचालित हथियार हैं और उनमें से कुछ ओजी वर्दी में थे।

कमांडर ने टीम -1 को अपने शिविर की ओर चतुराईपूर्वक आगे बढ़ने के लिए कहा। श्री नरपत सिंह, असिस्टेंट कमांडेंट ने टीम -2 से संपर्क किया और उनके साथ जानकारी साझा की तथा उन्हें नक्सली शिविर की दिशा में चतुराई पूर्वक आगे बढ़ने के निर्देश दिए। टीम-1 ने नक्सली शिविर की ओर चतुराई से बढ़ना शुरू कर दिया और टीम लगभग 1600 बजे शिविर से लगभग 50 मीटर दूर स्थान पर पहुँच गई। कमांडर का मकसद नक्सलियों को पकड़ना था, लेकिन अचानक ही टीम -1 गोलीबारी की भारी बौछार में फँस गई। जैसे कि आशा की जा रही थी कि माओवादियों ने शायद सुरक्षा बलों की उपस्थिति को भांप लिया था और इसीलिए वे हमला करने के लिए तैयार थे। माओवादियों ने अपने कब्जे वाले रक्षा शिविर क्षेत्र से सैनिकों पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। श्री नरपत सिंह, असिस्टेंट कमांडेंट, हेड-कांस्टेबल (जीडी), प्रदीप कुमार और हेड कांस्टेबल (जीडी) भीम सिंह ने माओवादियों पर तुरंत जवाबी फायरिंग की, जिससे नक्सलियों को सुरक्षा बलों (एसएफ) को नुकसान पहुंचाने का कोई मौका नहीं मिला। बाकी सैनिकों ने भी नक्सलियों की गोलाबारी का मुंहतोड़ जवाब दिया। श्री नरपत सिंह, असिस्टेंट कमांडेंट ने टीम -1 को अपनी पोजीशन को बनाए रखने और नियंत्रित तरीके से गोलीबारी का जवाब देने का आदेश दिया। नक्सलियों की ओर से भारी शोर के साथ भारी गोलीबारी जारी थी। अगर टीम -1 ने जवाबी कार्रवाई नहीं की होती, तो वे नक्सलियों की भारी गोलीबारी में मारे जाते। श्री नरपत सिंह, असिस्टेंट कमांडेंट ने कुछ नक्सलियों को एक पेड़ के मोटे तने के पीछे पोजीशन लिए देखा और वे बाईं ओर से टीम -1 को निशाना बना रहे थे। श्री नरपत सिंह, असिस्टेंट कमांडेंट को यह अहसास हुआ कि अगर इन नक्सलियों को मारा नहीं किया गया, तो वे निश्चित रूप से टीम -1 को भारी नुकसान पहुंचाएंगे। उसी समय श्री नरपत सिंह, असिस्टेंट कमांडेंट ने नक्सलियों की गोलीबारी को रोकने के लिए बाईं ओर से आगे बढ़कर नक्सलियों पर हमला करने का फैसला किया। वे हेड-कांस्टेबल (जीडी) प्रदीप कुमार (टीम -1, 2 आई/सी) के साथ खुद की परवाह किये बिना और अपनी टीम के सदस्यों की जान बचाने के लिए उबड़-खाबड़ जगह पर छिपते हुए धीमी चाल से भारी गोलीबारी के बीच आगे बढ़ गए। वे टूटी-फूटी और उबड़-खाबड़ भूमि को पार करते हुए पोजीशन लेने के लिए बाएं किनारे से रेंगते हुए आगे बढ़ गए। वे एक लकड़ी के लॉग के पीछे पहुंच गए और उन्होंने फिर से सशस्त्र माओवादियों को आत्मसमर्पण करने के लिए चुनौती दी, लेकिन माओवादियों ने गोलीबारी की मात्रा बढ़ा दी, तभी श्री नरपत सिंह, असिस्टेंट कमांडेंट और हेड-कांस्टेबल (जीडी) प्रदीप कुमार ने नक्सलियों को मार गिराने के लिए जवाबी कार्रवाई की।

इस निर्णय के कारण, पेड़ के मोटे तने के पीछे से आ रही गोलीबारी बंद हो गई और नक्सलियों को अपने सुव्यवस्थित शिविर को छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा। यह आपसी गोलीबारी लगभग 50-60 मिनट तक जारी रही।

फायरिंग रुकने के बाद, श्री नरपत सिंह, असिस्टेंट कमांडेंट ने टीम -2 से संपर्क किया तथा दोनों टीमों को चतुराई पूर्वक आगे बढ़ने और नक्सल शिविर की तलाशी शुरू करने का आदेश दिया। तलाशी के दौरान, टीम को नक्सलियों के दो शव मिले और साथ ही 01 एसएलआर, 01 एचई ग्रेनेड, मैगजीन -04 और ढेर सारे गोला-बारूद भी बरामद किए। फिर दोनों टीमों का विलय कर लिया गया और मामले की सूचना उच्च मुख्यालय को दी गई।

इस ऑपरेशन में सर्व/श्री नरपत सिंह, एसी, प्रदीप कुमार, हेड कांस्टेबल, भीम सिंह, हेड कांस्टेबल और गणेश सिंह राणा, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किये जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 28.07.2018 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/94/2019-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 133-प्रेज/2020—राष्ट्रपति, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का तृतीय बार प्रदान करते हैं:—

सर्व/श्री

01	अशोक कुमार	2-आईसी	वीरता के लिए पुलिस पदक का तृतीय बार
02	विपिन कुमार	कांस्टेबल	वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण, जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले के ग्राम पिडिया ने अपनी किसी विरासत के कारण नहीं, बल्कि सीपीआई (माओवादियों), जिन्होंने इसे पश्चिम बस्तर संभाग का अपना मुख्यालय बनाया हुआ है, की मौजूदगी होने के चलते बदनामी का नाम कमाया है। इस भयावह गांव का एकमात्र दुर्भाग्य यह है कि यह बीजापुर और दंतेवाड़ा जिले की सीमा के पास स्थित है तथा यह घने जंगल से घिरा हुआ है, जहां संचार की कोई सुविधा नहीं है। पुलिस बलों और राज्य प्रशासन के लिए इस क्षेत्र में पहुंचना एक दुष्कर कार्य होता है और इसका लाभ उठाते हुए, सीपीआई (माओवादी) अपना हुकुम चलाते हैं और अपने नापाक मंसूबों को आगे बढ़ाने में निर्दोष ग्रामीणों को शामिल करने के लिए इलाके के गांवों में प्रायः बैठक आयोजित करते हैं।

22 जून 2017 को, पश्चिम बस्तर डिवीज़न के कमांडर गणेश के नेतृत्व में सीपीआई (माओवादियों) के एक सशस्त्र समूह की मौजूदगी होने के बारे में एक खुफिया जानकारी श्री अशोक कुमार, सेकंड-इन-कमांड, 204 कोबरा को प्राप्त हुई, जिन्होंने सशस्त्र समूह को मार गिराने के लिए तुरंत ही एक मिशन पर कार्य करना शुरू कर दिया। उन्होंने बीजापुर और दंतेवाड़ा के पुलिस अधीक्षकों के साथ परामर्श करके एक योजना बनाई तथा आगे इस योजना पर डीआईजी (ऑप्स), बीजापुर, सीआरपीएफ के साथ चर्चा की। क्षेत्र की विरलता, वनस्पतियों, नालों, सीपीआई (माओवादियों) की ताकत, सीपीआई (माओवादियों) प्रभुत्व वाले प्रमुख क्षेत्रों और अन्य परिचालन आवश्यकताओं का सूक्ष्म विश्लेषण करने के बाद, क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए सुरक्षा बलों के मिश्रित घटकों से युक्त पांच हमलावर टीमों का गठन किया गया और प्रत्येक हमलावर टीम को तलाशी के लिए एक अलग क्षेत्र दिया गया था।

तदनुसार, 204 कोबरा के सेकंड-इन-कमांड, श्री अशोक कुमार, बसागुड़ा बेस कैम्प से 204 कोबरा की दो टीमों तथा डीआरजी और एसटीएफ की टुकड़ियों के साथ दिनांक 22 जून 2017 को 1610 बजे लक्ष्य क्षेत्र की ओर बढ़ गए। जैसा कि पहले बताया गया था, कि मुख्य क्षेत्र तक पहुंचना कोई आसान काम नहीं था और सैनिकों को अपनी गतिविधियाँ छिपाते हुए जंगल में दो रात रुकना पड़ा। श्री अशोक कुमार, सेकंड-इन-कमांड की कमान के अधीन सैनिक 24 जून 2017 को अपने लक्ष्य क्षेत्र यानि गांव पिडिया के करीब पहुंची। जैसा कि उम्मीद की जा रही थी, कि दुश्मन को पता चले बिना कोर एरिया में पहुंचना एक असंभव बात थी। सीपीआई (माओवादी), जिन्हें सुरक्षा बलों की आवाजाही के बारे में भनक लग गई थी, ने श्री अशोक कुमार, सेकंड-इन-कमांड की टीम पर एक फायदेबंद पोजीशन से भारी गोलीबारी खोल दी।

यही वह क्षण था, जिसके लिए एक सैनिक को युद्ध लड़ने के लिए तैयार किया जाता है। सामने की ओर से ही एक दुश्मन अपनी बंदूक के साथ धधकते हुए सुरक्षित कवर के पीछे मोर्चा बना कर छिप गया और अब इसे मार गिराना एक चुनौती थी। श्री अशोक कुमार, सेकंड-इन-कमांड, जो दो दिनों से देश के इस दुश्मन के साथ संपर्क बनाने के लिए मशक्कत कर रहे थे, तुरंत हरकत में आए और उन्होंने सैनिकों को पूरी तीव्रता और ताकत के साथ जवाबी कार्रवाई करने और चतुराई से आगे बढ़ने का आदेश दिया। ऐसा लगता था कि उस दिन सीपीआई (माओवादी) के पास गोला-बारूद की कोई कमी नहीं थी। जवानों की एक छोटी सी हरकत होने के कारण भारी गोलीबारी शुरू हो गई, जिससे उनकी जान जोखिम में पड़ गई। श्री अशोक कुमार, सेकंड-इन-कमांड और साथ में उनके दोस्त कांस्टेबल विपिन कुमार द्वारा ऐसा ही एक प्रयास किया गया था, लेकिन जैसे ही वे अपने कवर से बाहर निकले उनके चारों ओर गोलियों की बौछार शुरू हो गई और वे बाल-बाल बच गए। श्री अशोक कुमार, सेकंड-इन-कमांड ने सीपीआई (माओवादियों) को ऐसा कोई अवसर नहीं दिया, जिससे कि वे सुरक्षा बलों को काबू में रखने के लिए अपनी शेखी पधार सके।

उन्होंने तुरंत योजना बनाई और एक दूसरी चाल चली, जिसमें उन्होंने माओवादियों के दो गुटों के लिए दो टीमें भेजी, जबकि स्वयं को अपने कुछ निडर सैनिकों के साथ केन्द्रीय स्थिति में रखा। जैसे ही दोनों टीमों इन गुटों के पास पहुंचीं, उन्होंने माओवादियों पर गोलियां चलाईं। माओवादी भी उनके साथ भीषण गोलीबारी में उलझ गए। यही वह मौका था, जिसके लिए श्री अशोक कुमार, सेकंड-इन-कमांड इंतजार

कर रहे थे। यह देखते हुए कि माओवादियों की टीम बंदूक की लड़ाई में उलझ गए हैं, उन्होंने कांस्टेबल विपिन कुमार और अन्य निडर सैनिकों के साथ अपने स्वयं के जीवन की परवाह किए बिना और सभी सावधानियों को नजरअंदाज करते हुए दुश्मन के अम्बुश के बीच एक फायदेबंद पोजीशन हासिल करने के लिए आगे बढ़ गए। इससे पहले कि दुश्मन श्री अशोक कुमार सेकंड-इन-कमांड के गेम-प्लान को समझ पाते, उन्होंने दुश्मन पर गोलीबारी शुरू कर दी। इसके साथ ही, वे और उनकी टीम बांछित स्थान पर कब्जा करने में सफल हो गई थी, लेकिन तब तक वे आधी लड़ाई ही जीते थे। दुश्मन को उखाड़ फेंकने और उन्हें जख्म देने की लड़ाई का दूसरा हिस्सा अभी तक नहीं लड़ा गया था।

वही गेम-प्लान सेकंड-इन-कमांड, श्री अशोक कुमार द्वारा एक बार फिर खेला गया। यह जानते हुए कि दुश्मन को नजदीक से मारने के लिए उन पर एक ओर से दबाव बनाना और दूसरी ओर से उन्हें मारना जरूरी है, उन्होंने दायीं ओर दस्ते को गोलीबारी करने और साथ ही चतुराई से आगे बढ़ने का आदेश दिया। माओवादी जाल में फंस चुके थे और वे दायीं ओर से आगे बढ़ते हुए दस्ते पर गोलीबारी करने पर अपना ध्यान केंद्रित कर रहे थे, इसी बीच श्री अशोक कुमार, सेकंड-इन-कमांड और कांस्टेबल विपिन कुमार अपने कवर से रेंगकर बाहर निकल गए। उनकी सटीक गोलीबारी से दो माओवादियों को चोटें आईं, जो घायल होने के बाद अम्बुश पार्टी की तरफ पीछे की ओर भागते हुए देखे गए। नजदीक पर सैनिकों की मौजूदगी से घबराकर, नक्सलियों ने सेकंड-इन-कमांड श्री अशोक कुमार पर गोलियां चला दीं। यदि कांस्टेबल विपिन कुमार ने उन्हें समय पर पीछे की ओर न खींच लिया होता तो, श्री अशोक कुमार, सेकंड-इन-कमांड गोली लगने के कारण गंभीर रूप से घायल हो गए होते। इसके बाद, साहसपूर्ण बहादुरी के साथ, श्री अशोक कुमार, सेकंड-इन-कमांड और कांस्टेबल विपिन कुमार अपनी बंदूक से गोलियां चलाते हुए माओवादियों की गोलीबारी के सामने आ गए और एक माओवादी को मारने में सफल हो गए, जो गोली लगने के बाद जमीन पर गिर गया।

निरंतर आगे बढ़ते सैनिक दस्तों के दबाव, चोटें लगने और उनके कैंडर के एक व्यक्ति के शव ने माओवादियों को अपनी रणनीति बदलने पर मजबूर किया और उन्होंने जल्द ही एक दूसरे की गोलीबारी की मदद से इस जगह से भागने की अपनी पुरानी रणनीति पर अमल कर लिया। सैनिक दस्तों ने कुछ दूरी तक भागने वाले माओवादियों का पीछा किया, लेकिन माओवादी इस क्षेत्र और साथ ही भाग निकलने के मार्गों से परिचित होने का लाभ उठाकर भाग गए। इलाके की तलाशी के दौरान, एक एसबीएमएल राइफल के साथ एक माओवादी का शव, एक टिफिन बम, एसएलआर राइफल के चार खाली केस, एके-47 के चौदह खाली केस, एक हैंड ग्रेनेड, इलेक्ट्रिक वायर, 50 ग्राम विस्फोटक और अन्य वस्त्रों का सामान बरामद किया गया।

इस ऑपरेशन को सफल बनाने का श्रेय पूरी तरह से श्री अशोक कुमार, सेकंड-इन-कमांड और कांस्टेबल विपिन कुमार को जाता है। मुठभेड़ के दौरान वे अपने स्वयं के जीवन की परवाह किए बिना दुश्मन की ओर बढ़े और कभी भी उन्होंने कवर की तलाश नहीं की। वे बहुत बहादुरी और वीरतापूर्वक लड़े तथा उन्होंने एक भयंकर मुठभेड़ में उच्च कोटि के साहस का परिचय दिया। करीबी मुकाबले में मौत हमेशा उनसे थोड़ी ही दूर रह गई थी और जरा सी चूक से उनकी जाने जा सकती थी।

इस ऑपरेशन में, सर्व/श्री अशोक कुमार, 2-आईसी और विपिन कुमार, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक की मंजूरी को शासित करने वाली नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए प्रदान किये जाते हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 24.06.2017 से दिया जाएगा।

(सं. 11020/107/2018-पीएमए)

(सं. 18004/01/2020—सीए-II)

जगन्नाथ श्रीनिवासन
विशेष कार्य अधिकारी

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
(कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 13 अगस्त 2020

सं.8-65/2017-पीपी II.—भारत सरकार, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग की समय-समय पर यथासंशोधित दिनांक 26.11.1993 की अधिसूचना संख्या 8-97/91-पीपी-I में आंशिक संशोधन करते हुए, यह सामान्य सूचना के लिए एतद्वारा अधिसूचित किया जाता है कि संगत शीर्षों के तहत निम्नलिखित प्रविष्टियाँ जोड़कर या प्रतिस्थापित करके शामिल की जाएंगी जिनमें उन अधिकारियों को पदनाम से विनिर्दिष्ट किया जाएगा, जो अन्य देशों जिन्हें ऐसे प्रमाणपत्र अपेक्षित हैं, को निर्यात के लिए वनस्पति और वनस्पति सामग्री के निरीक्षण, प्रधूमन या विसंक्रमित करने और पादप स्वच्छता प्रमाणपत्र प्रदान करने के लिए प्राधिकृत हैं:—

II राज्य/संघ राज्य क्षेत्र:

तमिलनाडु

- (v) उप निदेशक (बागवानी),
बागवानी विभाग,
मदुरै (टीएन)
(तमिलनाडु)
{कोड नंबर 'एस' (टीएन) 4}
- (vi) उप निदेशक (बागवानी),
बागवानी विभाग,
कोयंबटूर (टीएन)
(तमिलनाडु)
{कोड नंबर 'एस' (टीएन) 5}
- (vii) उप निदेशक (बागवानी),
बागवानी विभाग,
थूथकुडी (टीएन)
(तमिलनाडु)
{कोड नंबर 'एस' (टीएन) 6}
- (viii) उप निदेशक (बागवानी),
बागवानी विभाग,
त्रिची (टीएन)
(तमिलनाडु)
{कोड नंबर 'एस' (टीएन) 7}

आतिश चंद्रा
संयुक्त सचिव

नोट: मूल अधिसूचना कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग की दिनांक 26.11.1993 की अधिसूचना सं.-8-97/91-पीपी-I द्वारा जारी की गई थी और तत्पश्चात् दिनांक 25.11.97 की अधिसूचना सं.-8-97/91-पीपी-I, दिनांक 30.09.1999 की अधिसूचना सं.-8-70/98-पीपी-I, दिनांक 06.11.2001 की अधिसूचना सं.-8-86/2000-पीपी-I, दिनांक 06.05.2002 की अधिसूचना सं.-8-86/2000-पीपी-I, दिनांक 30.05.2002 की अधिसूचना सं.-8-86/2000-पीपी-I, दिनांक 07.06.2004 की अधिसूचना सं.-8-33/2003-पीपी-I, दिनांक 11.05.2005 की अधिसूचना सं.-8-217/2004-पीपी-I (पार्ट), दिनांक 20.06.2005 की अधिसूचना सं.-8-217/2004-पीपी-I (पार्ट), दिनांक 08.12.2005 की अधिसूचना सं.-8-217/2004-पीपी-I (पार्ट), दिनांक 09.01.2006 की अधिसूचना सं.-8-217/2004-पीपी-I (पार्ट), दिनांक 26.12.2011 की अधिसूचना सं.-8-217/2004-पीपी-I (पार्ट), दिनांक 30.01.2013 की अधिसूचना सं.-8-217/2004-पीपी-I (पार्ट), दिनांक 06.07.2015 की अधिसूचना सं.-8-217/2004-पीपी-I (पार्ट), दिनांक 21.06.2016 की अधिसूचना सं.-8-217/2004-पीपी-I (पार्ट), दिनांक 12.01.2017 की

अधिसूचना सं.-8-217/2004-पीपी-I (पार्ट) और दिनांक 13.04.2017 की अधिसूचना सं.-8-65/2017-पीपी-II और 11.08.2017 की अधिसूचना सं.-8-65/2017-पीपी-II और 14 मार्च, 2018 की अधिसूचना सं.-8-65/2017-पीपी-II, दिनांक 10.04.2018 की अधिसूचना सं.-8-65/2017-पीपी-II, दिनांक 10.5.2019 की अधिसूचना सं.-8-65/2017-पीपी-II और दिनांक 16.7.2019 की अधिसूचना सं.-8-65/2017-पीपी-II, 10.12.2019 की अधिसूचना सं.-8-65/2017-पीपी-II और दिनांक 21 फरवरी, जुलाई, 2020 की अधिसूचना सं.-8-65/2017-पीपी-II द्वारा संशोधित की गई थी।

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 26th January 2020

No.49-Pres/2020—The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Bihar Police:—

Shri Vivek Kumar	ASI	1 st Bar to PMG
------------------	-----	----------------------------

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 7th march, 2017 an intelligence input came to the CRPF Cobra Camp Gaya District, Bihar that Zonal Commander of Naxal outfit Aniljee @ Deepak was seen along with some other dreaded outfits near vill. Nawadih, Paroriati Baskatwa and Thamkola area surrounded by dense forest area at the border of Gaya and Nawada district. This information was verified and after confirmation the Commandant, 205 Cobra batalian camp Gaya and Senior SP Gaya have discussed and planned to raid for their arrest.

Two teams no 7 & no 9 of Cobra battalion camp Gaya have been formed under the leadership of Sri Dilip Mallick Dy. Commandant and Sri Divesh Mishra Asstt. Commandant. Two civil police officers namely Asstt. Sub-Inspector Sri Vivek Kumar and Sri Surendra Ram Asst. Sub-Inspector both from Police line Gaya were deployed by Senior SP, Gaya to accompany each team of Para Military forces as these civil police officers were acquainted with the topography of the assemblage area which was on a hilly and dense forest area.

The above raiding party decided to reach the place by train as it was very difficult to reach the area which was surrounded by dense forest, rocky boulders and dense vegetation. The team boarded train at Gaya railway station in midnight and got down much before the probable assemblage area near Baskatwa. Although the area was almost inaccessible due to heavy vegetation and rocky boulders but any how the raiding party moved towards village Thamkola and reached about 1.5 Km northwest to vill.-Thambkola & vill.-Paroriyatari. It was again traced and confirmed to the raiding party that the Zonal commander Anil Jee @ Deepak along with other outfits were camping on a hillock nearby.

Now it was decided to cordon the outfits with tactical strategy. Two search teams and two cordon teams were formed. Out of two Search teams, one was headed by Asstt. Commandant Sri Divesh Mishra and accompanied by ASI Vivek Kumar civil police officer from Gaya police line and members of CPMF team no.-7, SI Abhay Sharma, Hav. Channeil Singh, constable Pawan Kumar Constable Balvinder Singh constable Vinod Kr. Choudhry, constable Dilip Kumar, constable Anup Kr. & constable Mahendra Kumar. Second search team was formed under the command of Dy. Commandant Dilip Mallick with members of CPMF team no 9. Both the search teams, first under the leadership of Asstt. Commandant Divesh Mishra accompanied by ASI Vivek Kumar and another with Dy. Commandant Dilip Mallick advanced towards target followed by some of team members with SI Abhay Sharma. Two cordon teams, one of CPMF team no 7 members and another of CPMF team 9 members were formed to cordon of the area.

All moved towards the target in strategical manner and when the team reached closer to the outfits, who were there, opened fire towards the 1st search team of Asstt. Commandant Divesh Mishra and ASI Vivek Kumar. Any how they took protection of big boulder stones there but life of the search team members were in danger as regular firing was coming towards them. The raiding party then shouted that they are policeman and asked to surrender themselves but it resulted heavy firing from the Naxals and shouted war cry "Maowadi Jindabad". Commander of the search team lastly decided to respond to Naxal's fire to save their lives. Naxals started firing towards the second search team also who also responded by return fire. Cordon teams were at a rather safe position as they were one contour below and at a safe distance but life of both the search teams were in great danger. Members of both the search teams advanced slowly in crawling position simultaneously responding to the naxal's firing. The bullets fired by naxals were continuously hitting & reflecting with boulder stones which saved lives of the raiding police party. Some bullets even crossed closely near the police personals endangering their lives. After some time firing from the naxal stopped and then the police party tried to hear the movement of naxals but when assured themselves that naxals are not doing any activity, they proceeded towards their target and started searching them. They found four dead bodies lying there. Sophisticated arms and ammunitions, empty cartridges mobile phones Pithus etc. were found lying there. It was noticed that the other members of naxal party escaped from that place due to police firing. The cordon team chased them up to a distance but densely forested area helped the Naxals to escape.

On the place of occurrence two Insas rifle, one AK-47 rifle, one SLR and its magazine, huge no of ammunitions, IEDs, detonators, empty cartridges and other items which were left there by naxals have been recovered and seized. (copy of seizure list attached)

All the four dead bodies found there was later identified as 1. Anil Yadav @ Deepak 2. Chandan Yadav @ Nepali 3. Sukhari Choudhry @ Pramod @ Toofanijee 4. Arvind Verma @ Arvind Jee @ Lulha. All have previous criminal history and wanted in so many cases of Gaya & Nawada District. (List of cases attached).

A FIR regarding this incident has been registered with Sirdala Police station of Nawada District vide Sirdala PS case No. 47/17 dated 09.03.2017 u/s 147/148/149/333/332/337/324/342/307/379/ 411 IPC & 15/18/19 UAP Act 25(1-B)/A/26/35/27 Arms Act has been registered.

In the whole incident, both the search teams have exhibited extra ordinary, conspicuous gallantry, courage and devotion to duty. Assistant Sub-Inspector of police Sri Vivek Kumar who is a civil Police officer and not trained as Para Military forces has also shown equivalent courage even when his life was in grave danger. His devotion and gallant work needs appreciation and recognition.

In this operation Shri Vivek Kumar, ASI displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 08/03/2017.

(No. 11020/102/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No.50-Pres/2020 —The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/ 1st Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Bihar Police:

S/Shri

1	Amrendra Kishore	SI	PMG
2	Baijnath Kumar	SI	1 st BAR TO PMG
3	Devraj Indra	SI	PMG
4	Santosh Kumar Singh	SI	1 st BAR TO PMG
5	Rupak Ranjan Singh	SI	PMG
6	Pankaj Anand	SI	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

Under the leadership of SI Amrendra Kishore a team of STF Officers including SIs Devraj Indra, Santosh Kumar and Baijnath Kumar, was constituted to arrest Ranjit Mahto alias Ranjit Don, a dreaded criminal of Madhubani district who was a long time fugitive from court custody and carried a reward of Rs.50,000. He was the main accused in 20 criminal cases including cases of murders, loot, dacoit and extortion of money. In course of collection of intelligence about his movements and criminal activities it was gathered that he along with his gang members were staying in laynagar and plan a heinous crime.

The STF Team arrived on 15.5.2017 in Madhubani. A strategic plan to arrest Ranjit Don was prepared under the directions of SP Madhubani in unison with his District Police Team. On 16.05.2017 in pursuance of a secret information about the place where his gang members were to join him, the raiding police party in two teams left at about 1.10 hrs in night for the targeted village, Gobrahi. As per decided plan the Strike Team, consisting of SIP Officers, SIs Amrendra Kishore, Devraj Indra, Santosh Kumar and Baijnath Kumar with Sts Rupak Ranjan Singh and Pankaj Anand, Madhubani OPE, in order to maintain complete secrecy of operation, moved on foot towards Gobrahi village leaving the police vehicle near village Dullipatti. After a march for 30-35 minutes the team neared the Gobrahi brick house. Acting according to plan SIs Amrendra Kishore and Baijnath Kumar moved forward cautiously in crawling position deputed SIs Santosh Kr. Singh and Devraj Indra to the nearby old brick house with a view to cordon the gang members in L shape. As SI Amrendra and Baijnath Kumar with Pankaj Anand and Rupak Ranjan Singh neared the reported hiding place of the criminals, they, in the available moonlight, saw a motorcycle standing in front of a brick house compound. SI Amrendra, leader of the Strike Team, introducing themselves as police officers gave out a call. After a silence for 20-25 seconds, a sudden burst of fire began to come from the home. The police team, taking their positions against the field ridge called to them to surrender. The criminals, showing no respect for the police defiantly and intentionally continued firing rapid series of shots. Since the firing was coming directly towards the strike team, it made the situation grave and forced the police officers to open retaliatory fire in self defence. In the meantime SIs Santosh Kumar and Devraj Indra leaving their rear position joined the strike team SIs Baijnath Kumar and Rupak Ranjan Singh, ignoring the fact that criminal's bullets might hit them, moved from east to north in crawling

Position on rough and rugged land of the brick house projecting shape position with a view to cordon the criminals and in order to block their escape routes. This exchange of fire continued for 20-25 minutes, in which the criminals fired indiscriminately whereas the members of Strike Team carried out controlled and accurate firing. At about 4.45 hrs. in the morning the place of occurrence was searched. A dead body with a country made carbine, having a magazine with 5 live cartridges of 9 mm in his right hand, was found lying beside a raised platform in the compound of the brick house. A regular carbine with a magazine loaded with 5 live cartridges of 9 mm was recovered at about 06 metre west from the deceased body. A number of live and empty cartridges were recovered from the P.O. Recoveries of a big volume of firearms and other articles confirmed the presence of more than one criminal involved in the firing on the police team along with the deceased, however they managed to escape under the cover of firing.

The deceased was identified as Ranjit Don alias Ranjit Mahto, a criminal recently his gangsters had committed the broad daylight murder of one Nand Yuclay, a brick trader, in Jaynagar market. The public, particularly traders and businessmen in Jaynagar heaved a sigh of relief and bestowed high encomiums to the bravery and steadfastness of the police party.

In this joint operation the nominees displayed indomitable courage, commendable patience and sincere commitment to perform the task they were assigned. SI Amrendra Kishore, leading the team in an ingenious manner planned and executed a meticulous plan to neutralize one of the criminals, their Colleagues SIs Baijnath Kumar, Santosh Kr. Singh, Devraj Indra Pankaj Anand and Rupak Ranjan Singh showed great valour in the execution of the plan. This operation led to the injury of SIs Amrendra Kishore, Devraj Indra, Baijnath Kumar and Santosh Kumar Singh but following the plan strictly took positive course of action targeting their despite despite all odds like inadequate force, poor light and late arrival of back up team resulting in the death of a very tough, unyielding and diabolic crime thriller, Ranjit Don, and recovery of sophisticated weapons.

In this operation S/Shri Amrendra Kishore, SI, Baijnath Kumar, SI, Devraj Indra, SI, Santosh Kumar Singh, SI, Rupak Ranjan Singh, SI and Pankaj Anand, SI displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 17/05/2017.

(F. No. 11020/175/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 51-Pres/2020 — The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/1st Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Chhattisgarh Police:—

S/Shri

1	Indira Kalyan Elesela, IPS	Addl. SP	PMG
2	Ramakant Tiwari	Inspector	1 st Bar to PMG
3	Santosh Baghel	ASI	PMG
4	Lubendra Pujari	CT	PMG
5	Dinesh Khandey	CT	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

Bijapur Police has undertaken two joint operations in the northern part of the district that borders Maharashtra (National Park Area Committee of the Maoists) with Maharashtra Police in the month of January 2016 and achieved success in neutralizing a Platoon Commander rank Maoist and a Militia Member. The recoveries included an INSAS rifle, muzzle loading gun, detonators etc among other things. Another joint operation was launched at short notice in the month of February on the basis of confidential interrogation of a surrendered cadre of Divisional Committee Member (DVC) rank, in Telangana. He was aware of the events that took place in the earlier operations. The interrogation was done by Mr. Kalyan Elesela, Addl SP Operations, Bijapur and Mr Santosh Kumar Singh, Addl SP Operations, Sukma on 10th February 2016 and a decision was taken to launch an operation at the earlier, targeting the forests surrounding the villages Ondri, Gundepuri, Rengawaya, Gartul, Edapalli and Sendra.

The operation plan was prepared by Shri I. K. Elesela, IPS, Addl. SP Operations, Bijapur and forwarded to Shri Manjunath Singhe, IPS, Addl SP Gadchiroli for information and necessary cooperation.

A total of 76 men from District Reserve Guards (DRG), Bijapur led by Shri KalyanElesela left in the afternoon of 11th February 2016 and alighted near the PS Bedre and moved towards the target area. Owing to the early sunset and absence of moonlight the parties took an early LUP in the hills near Rengawaya village. The parties moved ahead tactically and carried out search operations in the surrounding villages. The team was divided into three groups commanded by Shri KalyanElesela Addl. SP Operations, Abdul Sameer, Inspector and Ramakant Tiwari Inspector.

The police parties moved in the early hours of 12th February towards the target area. As the police parties reached the forests and a small stream (Gundepurinala) around 1045 hrs, there was a sudden outburst of fire at the party on the right flank led by Inspector Ramakant Tiwari. The other two parties, in the centre and on the left, rushed for rescue while maintaining cover and fired at the Maoists who appeared to be in two or three groups. There was unabated exchange of fire between the Maoists and security forces for the next thirty to thirty five minutes.

The party led by Inspector Ramakant Tiwari assisted by ASI Santosh Baghel and Constable Dinesh Khande held firm during the exchange of fire and retaliated bravely. Meanwhile, the party in the centre commanded by Addl. S.P. KalyanElesela assisted by Constable Lubendra Pujari launched counter attack which lead the maoist leave the ground and flee towards the hills. However, he pressed forward, assisted by ASI Santosh Baghel to pursue the Maoists despite grave threat to life. He was ably assisted by Inspector Abdul Sameer and who provided fire cover to the party moving ahead. The exchange of fire continued while in pursuit. Learning from the mistakes of the past operations, KalyanElesela Addl. S.P. pressed his men to follow the blood trail left by the Maoists. The persistence paid off as the body of One Maoist was recovered quite far from the first exchange of fire. After ensuring that the firing ceased on both sides, a search was undertaken in the area of operation. It resulted in recovery of two more bodies of Maoists, (total three, one 303 rifle, two 315 rifle, three muzzle loading guns, live rounds of SLR, AK47 etc. It also yielded pittus, daily use items, batteries, wire, books etc of Maoists, None of the security personnel were injured in the exchange of fire.

Owing to the long distances to be covered to reach the nearest Police station in Bijapur district, it was decided to press forward and move towards Maharashtra border. Since the exchange of fire has exposed police presence, the team was divided into groups instead of three. One group led by Abdul Sameer Inspector left towards village Gartul and Carried all the recoveries, the other group led by Mr. KalyanElesela Addl. SP and assisted by Inspector Ramakant Tiwari, Constable Dinesh Khande and Lubendra Pujari move towards the south of the site of encounter and embarked on the long route to avoid ambush by the Maoists. The parties took LUP at different places on the night of 12th February and moved toward PS Damrancha on the Maharashtra border in the early hours of 13th February 2016. PS Damrancha was informed about the encounter and they have marched towards the route to be taken by the Bijapur Police to provide corridor protection. The teams safely crossed the Indravati River under the protection of teams from Maharashtra Police and reached PS Damrancha. All the team members moved back to Bijapur by MI-17 helicopter which were timely made available by the Indian Air Force.

The dead Maoists were later identified as PalloSukku, Commander, Area Action Team, Kumma Soma, Member, Militia and Sukhram, Member Militia Platoon." The operation was successful owing to the exceptional courage shown by the Bijapur Police team. The men have hazarded their lives in national interest and successfully neutralized three Maoists whose bodies were recovered. The site of encounter had sufficient evidence to indicate that many more were injured and probably died later.

Shri KalyanElesela, anticipating grave danger for the men that come under the killing zone at first, showed exceptional courage and presence of mind in marshalling his men and launched a counter offensive. His leadership by example and audacious response indire consequences and resulted in achieving success without suffering any loss of life or material. His tactics of splitting the parties near the target area and merging them post firing; embarking on different routes to prevent backlash by the Maoists is commendable. His favorable rapport with the border states of Telangana and Maharashtra proved highly productive. This operation is an example of joint action with Telangana aiding in procuring the inputs and Maharashtra coming in support when the troops from Chhattisgarh (Bijapur Police), were in distress. His initiative in inter-State operation and painstaking efforts in eliciting cooperation from bordering States is a testimony of his professionalism.

In this operation S/Shri Indira KalyanElesela, IPS, Addl. SP, Ramakant Tiwari, Insp., Santosh Baghel, ASI, Lubendra Pujari, CT and Dinesh Khande, CT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 12/02/2016.

(No. 11020/33/2018-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN

Officer on Special Duty

No. 52-Pres/2020 — The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry (Posthumously)/1st Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Chhattisgarh Police:—

S/Shri

01.	Raman Usendi	Insp	1 st BAR TO PMG
02.	Ramesh Kumar Sori	ASI	1 st BAR TO PMG
03.	Late Vinod Singh Kaushik	SI (Posthu)	PMG (POSTHUMOUSLY)

Statement of service for which the decoration has been awarded

Based on the intelligence input about presence of a large group of armed naxalites meeting in Becha area. On 17.11.2016, he along with his troops was sent on a search operation from village Barsoor, District Dantewada. During that search operation on 18.11.2016 at around 14.45 hrs. Inspector Raman Usendi along with his men of DRG Narayanpur had to face indiscriminate firing from the PLGA cadres of coy no. 06 of Maoist near the hills south east of village Becha, Police Station Chhotedongar District Narayanpur the Maoist were firing from Automatic and Semi Automatic weapons with an intention to harm the security forces and loot their weapons. The security forces disclosed their identity and warned the armed naxalites to stop firing and surrender. The armed naxalites ignored the warning and continued to indiscriminately fire upon the security forces. Inspector Raman Usendi and Sub Inspector Vinod Singh Kaushik like a determined and true leader, directed his troops to open retaliatory firing while advancing with proper co-ordination of caution and aggression.

Sensing this, Inspector Raman Usendi, Sub Inspector Vinod Singh Kaushik and Asst. Sub Inspector Ramesh Sori along with DRG team started moving forward by crawling while the bullets were being fired over them. The exchange of Fire continued for about one hour and then ultimately the Naxalites fled away in the jungles. On searching the area, police party recovered 03 Female and 02 Male naxalites dead body, 03 Nos 12 Bore rifle, 01 Nos 315 bore rifle, 42 Nos 12 bore live round and 03 Nos fired ammunition, 17 Nos 315 bore rifle live round and 04 Nos fired ammunition, 04 Nos Naxal pouch, Naxal literatures etc was recovered.

It is worth mentioning that Sub Inspector Shri Vinod Singh Kaushik displayed exemplary valour, grit and determination during an encounter with Maoists on 24.01.2018 but lost his life in the line of duty.

In this operation S/Shri Raman Usendi, Insp., Ramesh Kumar Sori, ASI and Late Shri Vinod Singh Kaushik SI (Posthu) displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 18/11/2016.

(No.11020/95/2018-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN

Officer on Special Duty

No. 53-Pres/2020- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Delhi Police:—

S/Shri

01.	Omvir Singh, IPS	DCP	PMG
02.	Dr. Hemant Tiwari, IPS	ACP	PMG
03.	Manish Joshi	Insp.	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 07.07.2017, Dr. Srikanth Goud of Metro Hospital, Preet Vihar, Delhi was reported "Missing" at P.S. Preet Vihar. It was reported that he booked an OLA cab for going to his house in Gautam Nagar, Delhi in the night of 06.07.2017 from Preet Vihar Metro Station and an FIR No. 168/17 was registered. Subsequently, a complaint from OLA company was also received which disclosed that driver of one OLA Cab No. DL-1R-TC-1611 had kidnapped one passenger and the driver was

demanding a ransom of Rs.05 Crores for releasing the passenger. On the basis of the two reports/information, it was established that Dr. Srikanth Goud was kidnapped for ransom by the alleged OLA Cab driver and his associates.

Preliminary investigation revealed that the kidnappers were operating/making ransom calls from different locations of Western U.P. and Uttarakhand. Accordingly, several teams were constituted. Sh. Omvir Singh, IPS, the then DCP/East District, Delhi assisted by Dr. Hemant Tiwari, IPS and Insp. Manish Joshi was designated as incharge of the team for attending the phone calls of the ransom callers for negotiating the safe release of the victim. The team under, the leadership of Sh. Omvir Singh, IPS was dispatched to Western U.P.

On 19.07.2017, a specific input was received about the location of abductors and the victim in Shatabdi Nagar, Meerut, Uttar Pradesh. Instantly, various teams were dispatched including the team led by Sh. Omvir Singh, IPS, assisted by Dr. Hemant Tiwari, IPS and Insp. (Exe.) Manish Joshi. The house of the suspects was cordoned off and the inmates were warned to come out. Sh. Omvir Singh, IPS, the then DCP/East District, Delhi and his team positioned themselves at the entry gate of the room, where the victim was kept under confinement. The abductors were asked to open the gate and surrender before the police team but they didn't heed to the command. So, Sh. Omvir Singh ordered to break open the door. The police team deployed forced open the door. The abductors, while coming out of the house, however, opened the fire on the police team and Sh. Omvir Singh, IPS and the police team narrowly escaped from the bullet. In this exchange of fire, one of the kidnappers/harbourers sustained bullet injury fired by Sh. Hemant Tiwari, without caring of his life. In the scuffle, Sh. Omvir Singh and Insp. (Exe.) Manish Joshi, without caring for their life managed to rescue the kidnapped victim Dr. Srikanth Goud and took him to the safe location. Thereafter, four accused persons, including the injured one, were arrested from the spot in a smooth operation led by Sh. Omvir Singh, IPS.

The entire operation was carried out with exemplary zeal, dedication and highest level of professionalism. In the prevailing challenging situation, Sh. Omvir Singh, IPS, the then DCP/East District, Delhi (leader of the police team), Dr. Hemant Tiwari, IPS (the then ACP/PreetVihar) and Insp. (Exe.) Manish Joshi (the then SHO/MadhuVihar) did not care for their life and displayed resolute courage, great valour and gallant spirit. Their brave efforts resulted not only in the successful rescue of abducted Dr. Srikanth Goud, the officer's inspirational leadership during tense encounter ensured that no unpleasant incident took place in the hostile zone which could have incurred heavy casualties and also endangered the life of the kidnapped victim.

In this operation S/Shri Omvir Singh, IPS, DCP, Dr. Hemant Tiwari, IPS, ACP and Manish Joshi, Insp. displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 19/07/2017.

(No. 11020/01/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN

Officer on Special Duty

No.54-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/1st Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Delhi Police:—

S/Shri

1	UmeshBarthwal	Insp	1 st BAR TO PMG
2	Mukesh Singh	SI	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

The Special Cell of Delhi Police was working on desperate, interstate rewarded, wanted and elusive gangster of Uttar Pradesh namely Sahun S/o Rehman r/o Village Bishambra, PS Shergarh, Mathura (UP). He was hotly wanted in 7 states across India. Delhi Police had announced a cash reward of Rs 2 lakh on the arrest of above said accused Sahun. He is reportedly carrying reward from UP, Haryana, Rajasthan and MP police.

He is involved in fierce encounter with different state police around 5 times but everytime managed to give a slip. He is master con who has mastered the art of escape from armed police custody and escaped on three occasion from UP and MP.

In the early hours of 8/11/2017, acting upon the input accused Sahun was spotted at KalindiKunj Chowk, Delhi. When the team tried to apprehend him Sahun opened fire upon the advancing police team. Insp. UmeshBarthwal, SI Mukesh Singh conspicuously displayed exemplary valour and put their lives to risk, crawled and made their way near firing desperado. Insp UmeshBarthwal and SI Mukesh were at the forefront and faced the maximum risk, however they made their

way while facing indiscriminate firing while having no cover. They managed to overpower the gangster and in the ensuing shootout Insp UmeshBarthwal and SI Mukesh Singh fired 3 rounds each from their 9 MM pistols.

One 7.65 bore US made pistol alongwith 5 live cartridges were recovered from his possession and fired 4 rounds upon the police party. One double barrel gun of 315 bore with 10 live cartridges of even bore was also recovered at his instance.

The brave action and gallant act won applause not only from the highest ranks of Police of different states & media, but also from the public at large. They have set an example of gallantry & commitment towards their duty.

In this operation S/Shri UmeshBarthwal, Insp. and Mukesh Singh, SI displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 08/11/2017.

(No. 11020/98/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN

Officer on Special Duty

No. 55-Pres/2020 — The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Delhi Police:—

S/Shri

1	SunilKumar	Insp.	PMG
2	Yashpal Singh	SI	PMG
3	Gulab Singh	ASI	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

An information was received on intervening night of 21/22 Nov'18 about the movement of terrorists in Kashmir, immediately a team comprising of Insp Sunil Kumar, SI Yashpal Singh, ASI Gulab& others were dispatched to Srinagar to act upon the information. After reaching Srinagar, the information was further developed in hostile environment. It was learnt that ISIS have been strengthening their unit at J&K for extending terrorism activities in Delhi. All the inputs gathered from various sources was analyzed under the supervision of DCP, Spl. Cell and decision for initiating immediate operation was taken with approval of Senior Officers of Spl Cell, Delhi Police. On corroboration, co-relation of various inputs and reconnaissance of possible hideouts, the specific information was further shared with Police Component, Kashmir on 24.11.18. As per the specifics of the input, immediately a special *Naka* was setup in the heart of Srinagar near Tourism Reception Center. TRC is one of the most populated area of Srinagar and is also frequented by foreign tourists and more so, during afternoon hours.

During checking of vehicles, one motorcyclist carrying two pillion riders bearing regn. No. JK01AB5154 was spotted by Insp Sunil Kumar, SI Yashpal& ASI Gulab and all other team was alerted. The motorcyclist jumped the naka and one of the pillion rider tried to lob grenade at the police party comprising of PC Srinagar & local Police team of PS Kothibagh. Realizing the gravity of the situation, Inspector Sunil Kumar, SI Yashpal Singh & ASI Gulab, who were stationed at the inner cordon, showed tremendous presence of mind, exceptional courage and without caring for their lives, pounce on the terrorists. As soon as one of the dreaded terrorist HarisMustaq was trying to open the safety pin with the motive to blast it, immediately Insp Sunil Kumar overpowered him and in the meantime SI Yashpal grabbed his hands tightly which restrained the terrorist from removing the safety pin from the grenade, during grappled, the grenade fell down but did not detonate as the safety pin was intact. One more grenade and fully loaded pistol were grabbed from him. This point of instant was highly risky. At the same time, ASI Gulab and others overpowered Tahir Ahmad Khan, another dreaded militant and snatched the grenade and one loaded pistol from his possession before he could make any harmful act. The third militant namely Asif Suhail who was riding the motorcycle was also caught during the operation. This timely intervention saved innumerable lives at the crowded TRC, Srinagar which was overcrowded with foreign tourists.

A case vide FIR No. 93/2018 was registered at PS Kothibagh, Srinagar under section 307 Ranbir Penal Code, 7/25 IA Act, 16(B), 18 ULA(P) Act in this regard.

The active militants came with three grenades and two loaded sophisticated pistols on a bike. The swiftness of Police team in identification of militants averted a grenade blast in the heart of Srinagar and it also resulted into the apprehension of three hardcore terrorists of Islamic State of J&K (ISJK) namely (i) Hans Mushtaq Khan, (ii) Tahir Ahmad Khan and (iii) Asif Sohail. Apprehension of three active terrorists in Srinagar is a gallant effort and it resulted in to collection of plethora of information. During sustained interrogations, lots of valuable information was extracted and raids were conducted at over a dozen hideouts of this module and in the continuing operation, six more terrorists of ISJK were arrested in this case. Due to the importance of the case NIA took over the investigation of this case.

In this operation S/Shri SunilKumar, Insp.,Yashpal Singh, SlandGulab Singh, ASI displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 24/11/2018.

(No. 11020/87/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN

Officer on Special Duty

No. 56-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Delhi Police:—

S/Shri

1	Pooran Chandra Yadav	Insp.	PMG
2	Sanjeev Kumar Yadav	Insp.	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 26/04/2018, three bike borne armed robbers waylaid a cash van of SIS Prosecur Company near DSIDC Vardhman Mall, Narela, Delhi. Robbers fired about 30 rounds on cashier and gunman of the cash van and shot them dead in full public view. After shooting the duo dead, they decamped with Rs. 12 lakhs. A case vide FIR No. 306/18 u/s 394/397/302/34 IPC & 25/27 Arms Act was registered at PS Narela in this regard. The sensational killing caused huge uproar in public at large. Incident made headlines in print as well as electronic media. Several other similar incidents were also reported in outer Delhi and adjoining area of Haryana. Analyses of the modus operandi of the gang reflected that the members of the gang were in the habit of shooting indiscriminately at the custodians of cash may it be security guards/gunmen's or the employees. First they would shoot at the security guards/gunmen's to create terror in their minds and thereafter they would rob/loot the cash. They would open indiscriminate fires at the custodians and even towards the general public so as no one would dare to apprehend or chase them.

A team of Special Cell led by Inspector Sanjeev Kumar and Inspector PooranChand Yadav worked hard in tandem, deployed sources and also mounted technical surveillance to arrest the perpetrators of the sensational crime. The perseverance of the team bore fruits on 01/05/2018, when an information that the accused involved in robbery cum murder have gone to Haridwar and would be returning back was received.

On 01/05/2018, a trap was laid and gang members namely 1. Mahabir s/o Sh. KanchiLal r/o K-143 Ghogha Dairy, Narela, Delhi, 2. Deepak @ Mantar s/o Sh. Jawar Singh R/o Village Ranapur, Distt. Bulandshahr, UP and 3. Gurcharan s/o Sh. Vedpal r/o H. No. 152, Gali No.1, Prem Colony, Narela were apprehended from near Shahbad Road, Sector-26, Rohini with arms and ammunition. A case vide FIR No. 51/18, u/s 25/54/59 Arms Act, PS Special Cell was registered in this regard and the interrogation of accused persons revealed that the crime of robbery cum double murder of Narela area was committed by Bharat Bhushan @ Tony along with his associates Deepak @ Mantra, Jitu and Vikas all r/o Narela, Delhi. One .32 bore pistol, which was used in robbery cum double murder case, and cash Rs. 3 Lakhs, was recovered from accused Deepak.

Accordingly raids were conducted to nab gang leader Bharat Bhushan @ Tony and his associates Jitu and Vikas. Accused Vikas s/o Harish r/o H. No. 409, Dada Mai Wali Colony, Bankner, Narela was apprehended from Pocket- 5A, Narela. One .32 bore pistol, which was used in crime of PS Narela, was recovered at his instance. Apart from this, robbed cash of Rs 1.9 lakh, his share, was also recovered from him. Accused Bhushan @ Tony and Jitu remained still at large. Accused Bharat Bhushan @ Tony was a notorious history sheeter of PS Narela. To douse the police he rented out his own house to his associate Deepak and he himself was running a dairy at Ghogha Dairy area for namesake but he was very much active and was indulging in spate of armed robberies in outer Delhi and neighbouring area of Haryana with his associates.

On 02.05.2018, another information was received that accused Bharat Bhushan @Tony would be visiting his associates near Khair Village Canal in EECO Car No. DL-3CCF-2417 in the wee hours. Going by the modous operandi of accused it was obvious that he would be having sophisticated weapon and would definitely open fire on the police team in case he is trapped. The police team deputed for the operation was briefed accordingly and the team was asked to put on all safety measures including bullet proof jackets. The team was given specific directions that in case of firing by the gangster minimum force would be used and no one would fire aiming at the gangster as his apprehension was very important as this could open several cases of armed robberies and murders. On the basis of this information, a trap was laid down. At about 5:20 AM one.

Eeco car as above was spotted coming from PrahladPur side. The car was signalled to stop but the car driver accelerated. Insp. Sanjeev Kumar who was at the forefront of the vehicle warned the driver to stop but he did not pay heed and continued to drive dangerously in haphazard manner. He nearly mowed down Insp Sanjeev Kumar who escaped narrowly. Sensing the urgency Insp. Sanjeev Kumar aimed at the tyre of the van and flattened it. Driver lost the control over the van and rammed it into the footpath. The driver, Bharat Bhushan got out with a bag in one hand and sophisticated pistol in other hand. Insp. Pooran Chand Yadav again warned Bharat Bhushan to stop and surrender but he started firing at the police team with the intention to kill and in a bid to escape. Both the inspectors escaped narrowly. Even after knowing well that the gangster would fire again, Insp. Pooran Chand Yadav and Insp. Sanjeev Kumar without caring for their lives chased the gangster & Insp. Pooran Chand Yadav fired twice in air to deter Bharat Bhushan @ Tony from escaping. As expected, the gangster again fired in retaliation and two bulletshit the bullet proof jacket of a Constable. Finally accused was shot in leg and he was apprehended after scuffle. One .32 bore pistol with two live cartridges one spare magazine with five live cartridges and cash of Rs. 3.3 lakhs was recovered from his bag. He was immediately shifted to hospital. A Casevide FIR No. 53/18 u/s 186/353/307 IPC & 25/27/54/59 Arms Act, PS Special Cell was registered in this regard and after treatment in hospital, accused Bharat Bhushan @ Tony s/o Late Shri Jaipal r/o Gali No. 01, Prem Colony, Narela, Delhi was arrested in the case.

The brave and gallant action of Insp. Sanjeev Kumar and Insp. Pooran Chand Yadav of Delhi Police won applause not only from the highest ranks of Police of different States & Media, but also from the Public at large. Arrest of these criminals was a need of the hour as the accused persons were involved in a spate of armed robberies by killing or injuring the custodians of cash which had created a havoc and sense of terror in Delhi. Impact of these armed robberies wherein several persons were killed was such on the agencies involved in collection of cash or in replenishing cash in ATMs have begun to refuse to go in some areas. Both the officers set an example of gallantry & dedication towards their duty by taking the operation as a challenge. During the whole operation, they were having no cover for their safety and were directly in the firing line of desperate criminal. They closely faced the volley of bullets fired by the dreaded criminal. Undeterred and unfazed, they put their life at risk and bravely confronted the criminals and showed extra ordinary courage, devotion & dedication towards their duties, exemplary professionalism, intelligence, application & presence of mind and rare gallant act in apprehending the desperate criminals. They played crucial role in apprehension of above desperate criminals and solving of number of cases including the sensational double murder cum cash van robbery case and have given a sense of safety and security amongst the citizens of Delhi and adjoining area of Haryana, so they need to be rewarded.

In this operation S/Shri Pooran Chandra Yadav, Insp. and Sanjeev Kumar Yadav, Insp. displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 02/05/2018.

(No. 11020/100/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN

Officer on Special Duty

No.57-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Delhi Police:—

S/Shri

1	Pramod Singh Kushwah, IPS	DCP	PMG
2	AmulTyagi	Insp.	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 20/01/18, on the basis of a specific information team of Special Cell laid a trap in Gazipur area of Delhi. At about 08:07 PM, a white color Santro car No. UP 21 CA 7164, in which two persons were seated, was spotted. The informer identified the co-passenger in the car as Abdul Rehman @ Abdul Subhan @ Tauqeer. Vehicles of Police team tried to intercept the Santro car but they sped away towards Khoda Colony, UP. Finally, after a chase, the team in Govt. Gypsy, led by DCP Pramod Singh Kushwah, blocked the way of Santro car. ACP Govind Sharma, Insp. AmulTyagi and staff also reached there. The occupants of the car were loudly warned to surrender by the DCP after disclosing their identity. Instead of surrendering, Abdul Subhan Qureshi Tauqeer, fired two rounds at the police party. One of the bullet hit the bullet proof jacket of DCP Pramod Singh Kushwah and another narrowly missed ACP Govind Sharma. Undeterred, DCP Pramod Singh Kushwah and ACP Govind Sharma closed in on the terrorist, who again fired two rounds but both the police officers overpowered him after a scuffle. The DCP and the ACP also fired two rounds each in self-defense. The driver of the car, Mohd. Aziz, also fired aiming towards police party. One bullet fired by him hit the bullet proof jacket of Insp. AmulTyagi, who still kept on following the miscreant. The Inspector also fired two rounds in self-defense. However, taking advantage of thick plantation, darkness and open ground, Mohd. Aziz managed to escape. One pistol "SMITH and WESSON SPRINGFIELD MA USA SW9VE" loaded with five live cartridges was recovered from the possession of accused Abdul Subhan Qureshi Tauqeer. Subsequently, a case vide FIR No. 8/18 dt 20.01.18 u/s 186/353/307/34 IPC r/w 25/27 Arms Act P.S. Special Cell was registered against them on the complaint of Insp. AmulTyagi.

In this operation S/Shri Pramod Singh Kushwah, IPS, DCP and AmulTyagi, Insp. displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 20/01/2018.

(No. 11020/171/2018-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN

Officer on Special Duty

No. 58-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—

S/Shri

1	Sarfaraz Bashir Ganai	DySP	PMG
2	Mohd. Akbar Lone	SgCT	PMG
3	Mohd. Ashraf Lone	CT	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

In the wee hours of 24/10/2016 a specific input was generated regarding presence of a terrorist in village SiverKawari of WarnowLolab area. The input was further developed and shared with 18 RR. A joint operation was planned and launched by Kupwara Police and contingents of 18 RR under the close supervision of Sh. Arif Amin Shah ASP Kupwara, Sh. Sarfaraz Bashir DySP PC Lolab and I/C PP Khurhama. Area was cordoned off and Nakas were established at strategic locations. All buddy stops were plugged-off with proper deployments. 01 coy of CRPF 148thBn was also deployed in outer-cordon. Immediately two dedicated teams of Police officials/SPOs were constituted and one assigned the task to carry search operation while as another one was tasked to give cover protection to the search team. SI Ab. Rashid No. 125/PAU, HC Gh. Mohd. No.. 55/KP, SgCt. Mohd. Akbar No.

620/AP 7th, Ct Imran Khan No. 406/P, Ct Sarjan Yousuf No. 545/KP, Ct. Noor ul Almas No. 868/KP, SPOs SPO Farooq Ahmad No. 36, Sarwar Hussain No. 677, Fayaz Ahmad No. 219, Maroof Bashir No. 93, Mohd.

Sultan No. 755, Mushtaq Ahmad No. 847, Naseer Ahmad No. 309 volunteered themselves to be part of search and cover teams. Search operation was started under the close supervision of operational officers present on the spot and was led by Addl. SP Kupwara. While carrying search of the suspected area, all of a sudden, the search team came under heavy fire from the terrorist who had taken shelter in the house of one Abdul Ahad Najar adopted Son-in-Law of Mohd. Abdullah Najar R/O Siver Kawari. The search team was enough vigilant and remained unharmed during the attack. Keeping in view the security of the house inmates, the fire was not retaliated and a meticulous strategy was chalked out to evacuate safely the house inmates. Following the directions of undersigned and other operational officer present on the spot, cover team engaged and confined the hidden terrorist in one side of the house with tactful retaliatory fire and search team led by ASP Kupwara which was now assigned the task to make safe evacuation of holed-up house inmates which they did successfully without any harm. Later the hidden terrorist was successfully engaged with heavy retaliatory fire and zeroed. Seeing his death close, he jumped from the said house in order to escape, but was instantly gunned-down in the compound of the said house. The role of Const. (Opr) Mohd. Ashraf No. 3025/PW was praiseworthy as he maintained communication between deployed forces aimed at better coordination which finally yielded desired results. After carrying further search of the area no further movement/presence of terrorist(s) was established and finally operation was called-off. Arms/ammunition have been recovered from the encounter site includes 01 AK-47 Rifle, 03 AK-47 Magazines, 85 Rounds of AK-47 and 01 I-Corn Wireless Set. Investigation conducted into the matter revealed that said eliminated terrorist was a foreigner and affiliated with LeT out-fit. He was identified as Saad @ Shahid A+ categorized terrorist. For the said incident, case FIR No. 137/2016 u/s 307 RPC, 7/27 I.A Act stands registered in Police Station Lalpora and further investigation is going on. During the whole operation, evacuation of holed-up house inmates and elimination of LeT dreaded terrorist in particular, role of ShSarfaraz Bashir, DySP KPS-125839, SgCt. Mohd. Akbar No. 620/AP 7th and Const. (Opr) Mohd. Ashraf No. 3025/PW remained praiseworthy who without caring for their lives fought a fierce gun-fight with the heavily armed terrorist from the front.

In this operations S/Shri Sarfaraz Bashir Ganai, Dy SP, Mohd Akbar Lone, SgCT and Mohd. Ashraf Lone, CT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 24/10/2016.

(No. 11020/118/2018-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN

Officer on Special Duty

No. 59-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/ 1st Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—

S/Shri

1	Shafkat Hussain	Addl.SP	PMG
2	Mashkoor Ahmad	DySP	1 st BAR TO PMG
3	Bilal Ahmed Bhat	SgCT	PMG
4	Javaid Ahmad Fafoo	CT	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 04-02-2017 at about 11:40 hours while acting on a specific intelligence input regarding movement/Presence of some HM terrorists in the general area of Naseem-Bagh Bye-Pass, Sopore who were in an attempt to move towards Srinagar to carry out some major strike upon the Police and security force, Sopore Police in collaboration with SOG Party Baramulla and 52-RR cordoned off the specific area of Naseem-Bagh, Bye-Pass Sopore and launched search operation, besides established some multiple NAKA's to neutralize the terrorists during

which a NAKA Party consisting upon Shri Mashkooor Ahmad-KPS, HC Farooq Hussain 762/B, Ct. MohdYounis 743/Spr, Ct. Irshad Ahmad 668/Spr, Ct. Tawseef Ahmad 689/Spr, Constable Javaid Ahmad No. 706/IRP 13thBn, SPO Tariq Ahmad 422/SPO-Bdm, SPO MohdRafiq 68/SPO-Spr, SPO Reyaz Ahmad 226/SPO-Bla, SPO Ashak Hussain 1610/SPO-Bla led by Shri Shafkat Hussain-KPS SP (Ops) Baramulla, intercepted two terrorists and while being challenged the terrorists lobbed a hand grenade and fired upon the NAKA party resultantly Shri Shafkat Hussain No. 017356-KPS, SP (Ops) Baramulla, got injured. The officer despite being injured promptly defended his positions and moved his party by exhibiting highest degree of professionalism, valour and resilience towards the terrorists and retaliated the fire resultantly an open gun battle triggered. Since there was heavy traffic rush on the bypass road and large number of pedestrians were also walking from either sides of the road and the officer sensed that the terrorists may escape from the spot by taking advantage of traffic and civil movement, the officer alongwith his team without wasting any time starts approaching towards the terrorist backed by an another team of Insp. Masrat Ahmad ARP-026108, Ct. Zaheer Ahmad 682/IR 6thm Ct. Irshad - Ahmad 395/IR 13thBn, Ct. Javeed Ahmad 684/B Ct. Bilal Ahmad 624/Spr, SPO Mohd Shah 502/SPO-Bdm, SPO Mohammad Zahid 141/SPO-Bla, SPO Aijaz Ahmad 295/SPO-Bla by giving covering/ backup firing. The terrorist who were two in number after seeing that the police party is advancing towards them, they (terrorists) as per their well strategy took two sides/directions. The Police Party led by Shri Shafkat Hussain-KPS SP (ops) Baramulla immediately stood in front of the terrorists by putting themselves in great risk and by showing extra-ordinary courage/professionalism fired volley of bullets upon the terrorist resultantly one terrorist got killed and in the meanwhile another terrorist has tried to escape from an opposite directions, another Police Party led by Insp. Masrat Ahmad No. ARP-026108 immediately engaged the said terrorist and in the gunfight 2nd terrorist also got killed in a brief encounter without any collateral damage. The slain terrorists were later on identified as Mohammad Azhar Khan @ Umar S/ONazir Ahmad Khan R/O TurchKeegamNatnoosaKupwara (category 'C') and Sajad Ahmad Lone @ Babar S/O Mohd Akbar R/O EdiporaBomaiSopore (category 'C') of HM outfit. Arms/ammunition were recovered from the possession of slain terrorists includes .01 AK 47 rifle (Short Gun), 01 AK 47 rifle (Damaged), 01 Pistol along with Magazine, 63 Rounds of AK-47, 07 Rounds of Pistol, 05 AK-47 Magazines, 02 PouchsChitra (one damaged) and 04 Hand Grenades. In this regard, case FIR No. 09/2017 U/S 307 RPC, 7/27 A. Actstands registered in P/S Tarzoo.

In this operation S/Shri Shafkat Hussain, Addl. SP, Mashkooor Ahmad, DySP, Bilal Ahmed Bhat, SgCT andJavaid Ahmad Fafoo, CT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 04/02/2017.

(No. 11020/119/2018-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN

Officer on Special Duty

No.60-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/2nd BartoPolice Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—

S/Shri

1	Gh. JeelaniWani	SSP	2 nd BAR TO PMG
2	Amir Hassan lone	SgCT	PMG
3	Javid Ahmad Rather	SgCT	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On specific information generated by Police Handwara regarding presence of terrorists in Khan MohallahHajinKralgund on 14-02-2017 a joint operation was planned and executed by Police Handwara, 30 RR at Hajin village and adjoining areas. The presence of terrorists was established and cordon around the hiding terrorists was further tightened. During the search operation heavy volume of fire opened by the hiding terrorists created a chaos among the resident civilians. A joint team Police & Army headed by SSP Handwara Shri Ghulam JeelaniWani-KPS augmented by SgCt Amir Hassan No.715/AP13th and Ct Javid Ahmad No.193/H volunteered themselves to take the responsibility of evacuating the civil population to safer place. Despite the risk involved they showed utter disregard to their personal safety, evacuated the civilians amidst volley of fire. After the safe evacuation of civilians on spot assault teams were constituted to eliminate the dreaded terrorists without any collateral damage. SSP Handwara Ghulam JeelaniWani-KPS, SgCt Amir Hassan and Ct Javid Ahmad again volunteered themselves for the task and marched towards hiding terrorist in various directions thus tightened cordon further and swiftly retaliated the terrorist attack. As the terrorists were heavily armed and highly trained, they started indiscriminate firing on the

assault teams and lobbed several grenades. During this fierce fire fight one army Major namely Satish Daya of 30 RR got seriously injured, the assault teams tactfully evacuated the injured officer who was shifted for medical treatment where he succumbed to his injuries. This abrupt assault of terrorists make the task more difficult for the assault teams to move forward. Recommendees SSP Handwara Ghulam JeelaniWani-KPS, SgCt Amir Hassan and Ct Javid Ahmad without caring for their own lives, showing nerve of steel marched towards dreaded terrorists in a fire retaliatory action and reached in close proximity of the hiding terrorists. The assault teams provided cover fire to them during the final assault upon the hiding terrorists resulting killing of three most wanted foreign terrorists of LeT outfit who were later identified as (01) Darda R/O PaK (02) Saad R/O PaK and (03) Mavia R/O PaK. During this joint anti militancy operation other participants of assault teams were provided/ recommended for OTP/Conversion and suitable reward as per their role played during the anti militancy operation.

However, in the entire operation SSP Handwara Ghulam JeelaniWani-KPS, SgCt Amir Hassan and Ct Javid Ahmad displayed matchless courage and selfless devotion to duty of highest order and ensured safe evacuation of the civilians. The exemplary initiatives exhibited by them resulted in successful culmination of the operation without any collateral damage.

In this operation S/Shri Gh. JeelaniWani, SSP, Amir Hassan lone, SgCT and Javid Ahmad Rather, SgCT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 14/02/2017.

(No.11020/120/2018-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN

Officer on Special Duty

No. 61-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—

S/Shri

1	Nissar Ahmad Darzi	DySP	PMG
2	MohdSaideq	ASI	PMG
3	Gh. MustaffaKatoch	CT	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 15-08-2016 Police Baramulla received information through reliable source that 05 foreign terrorists have been sighted in the GodhathalMayiyan of P/S Bijhama. The input was further developed and shared with 17 JAK RIF. Acting upon the said information Police Baramulla proceeded towards the said village along with 17 JAK RIF under the supervision of Addl. SP Baramulla. The operation team cordoned the area and Naka's were established at strategic locations. All buddy stops were plugged-off with proper deployment. 01 co of Army and some Police personnel and SPO were deployed in outer-cordon. Immediately two POs were constituted and one assigned the task to carry search operation while as another one was tasked to give cover protection to the search team. Shri Nissar Ahmad Dy SP (OPS) Baramulla, SI MohdMurtaza, ASI MohdSadeeq No. 39/B, HC Ajaz Ahmad No. 79/B(then 125/Spr), Sgct. MohdSaleem No.515/B, Sgct. Javeedlqbal No. 305/AP 5th Sgct. Parvaiz Ahmad No. 1336/B, Sgct. Showkat Ali No. 964/B, Sgct. Nasir Ahmad No. 556/B Sgct. Mushtaq Hussain No. 451/B, SgctGh Mustafa No. 66/AP 9th (AWP), Ct. Abdul Wahid No. 601/IR 9th, Ct. Bilal Ahmad No. 510/IR 14th Ct. Muzafar Ahmad No. 737/IR 13th Bn, Ct. Javid Ahmad No. 447/IR 13th Bn, Ct. Ameet Pal Singh. No.1117/B, Ct.

Rameez Ahmad No. 731/B, Ct. MohdYousuf, No.338/IR 8th Bn, Ct. Gulzar Ahmad No. 497/AP 13th Bn, SPOJavaid Ahmad No. 148/SPO, SPO Wasim AhmadNo. 1014/SPO, SPO Tauseef Ahmad No. 310/SPO, SPO Hakim Din No. 747/SPO(Baramulla), SPO Gulzar Ahmad No. 83/SPO, SPO Mohamad Arif No. 297/SPO,,SPO Amjad Khan No. 1014/SPO, SPO Syed Suheel No. 885/SPO, SPO Sareer Ahmed No. 1074/SPO, SPO FayazAhamd No.1538/SPO, SPO Mohd Amin No. 1741/SPO, SPO Bashir Ahmad No. 723/SPO, SPO Umar Majeed No. 95/SPO, SPO Mohdlqbal No.588/SPO and SPO Ab. Rehman No.703/SPO volunteered themselves to be part of search and cover teams. Search operation was stated under the close supervision of operational officers present on spot and was led by Shri Nissar Ahmad Dy SP (OPS) Baramulla. While carrying out search of the suspected area, all of sudden the searching team

came under heavy fire from the terrorists who had taken shelter in the hideout. The search team was enough vigilant and remained unharmed during the attack. Keeping in view the safety and security of the house inmates, the fire was not retaliated and a meticulous strategy was chalked out to evacuate safely the house inmates, as well as the people from the adjacent houses. Following the directions of undersigned and other operational officers present on spot, cover team engaged and confined hidden terrorists in one side of the hideout with tactful retaliatory fire and search team led by Shri Nisar Ahmad Dy SP (OPS) Baramulla which was assigned the task to make safe evacuation of houses intimates which they did successfully without any harm. Soon after the evacuation exercise, rescue party was also assigned the role of site intervention as they volunteered for this life threatened act. Terrorists opened fire indiscriminately upon the said party and tried to break the cordon, however, the fire was retaliated. The police party remained committed and did not allow the terrorists break the cordon. The fierce encounter between the assault party and terrorists under the outer covering support of joint operation teams and terrorists remained continued for hours together. Seeing their death close, the hidden terrorists came out from hideout in open fields and fired indiscriminately upon assault party in order to escape towards nearby forests, but assault party remained committed and all the 05 terrorists were instantly gunned down. After carrying further search of the area no further movement/presence of terrorists was established and finally operation was called-off. Arms/Ammunition were recovered for the encounter site includes 02 AK-47 Rifle, 03 AK-56 Rifle, 03 UBGLs, 22AK-47/56 Magazines, 420 AK-47 cartridges, 69 Empty cartridges (Khokha), 21 Chinese Hand Grenade (Destroyed on spot), 27 UBGL Grenades, 03 IED (destroyed), 01 BP Patkha, 05 Pouch, 03 Watches, 01 Stop Watch, 02 Knife, 04 Lighter, 05 Bag (Hokersacks), 01 Ispagol (Made in Pakistan), 08 Tab. Brofien (Diclophnic) (Made in Pakistan), 05 Tab. Grovin (Seal open) and 01 Fresh up (Made in Pakistan). In this connection, Investigation conducted into the matter reveals that these terrorists were foreigners and have infiltrated into this side recently for carrying out subversive activities in the valley. For the said incident Case FIR No. 15/2016, U/s 7/27 Arms Act 307 RPC, stands registered in P/S Bijhama and further investigation is going on.

In this operation S/Shri Nissar Ahmad Darzi, DySP, MohdSaideq, ASI and Gh. MustaffaKatoch, CT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 15/08/2016.

(No. 11020/121/2018-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN

Officer on Special Duty

No. 62-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—

S/Shri

1	Ajaz Ahmed Zarger	Addl. SP	PMG
2	Bilal AhmadSheikh	CT	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 2nd of August 2017, following a credible intelligence input, Police Kulgam in assistance of 9/62 RR and 18thBn CRPF under the command of SP Kulgam launched a joint operation at village Gopalpora. Initially cordon was strengthened, all escape routes plugged, efforts made to evacuate the civilians and terrorists were asked to surrender. The hiding terrorists hurled grenades with indiscriminate firing upon police/ SFs in order to flee and took shelter in a drain. Shri Ajaz Ahmad, Addl. SP Kulgam along with his buddy Const Bilal Ahmad instantly evacuated the civilians from the village to safer places to avoid any civil causality and took every effort to chase the terrorists who took shelter in a nearby drain. The officer showed his ability as a team leader and capitalized his team in skilled manner to strengthen the cordon of the area. Darkness, and drain surrounded with dense orchards was biggest barrier for the operational party to execute the operation. The trapped terrorists were trying their best to give slip to the security forces so as to flee away from the spot. The officer and his buddy did not give them a chance to move away from the spot. The brave officer took risk and came closer to the terrorist in an open field without caring for their personal safety. The terrorists tried to abolish their belongings (valuable information and evidences) by throwing in water to destroy it. The police party under the command of Addl. SP Kulgam retaliated and neutralized both the terrorists and culminated the operation successfully without any collateral damage. Another peculiar feature of the operation was that Shri Hilal Khaliq KPS DySP PC Kulgam along with his buddy Const Arshid Ahmad No. 488/SPN (now 1076/Kgm) and Inspector Vishal Shoor along with his

buddy Const. Anil Singh No. 481/IR 2nd sealed the outer periphery of encounter site and backed the operational contingent professionally and did not allow the gathering to swell which would have been turned into law & order breach. Due to relentless efforts and efficient management made by these brave officers/officials proved crystal clear operation which is exceptional by means of security sensitivity of the district. Most importantly the team maintained public order in such a manner that no law & order problem arises anywhere and did not allow the ANE's to provoke/ instigate the youth in such a vulnerable pocket. Police, CRPF and RR officers and their parties dealt the situation in a professional manner and neutralized both the terrorists, without causing any collateral damage to local population. After neutralizing terrorists, the officers ensured that bodies of terrorists, their weapons & explosives are retrieved safely. The ensuing gun battle lasted for an hour and resulted in elimination of below mentioned terrorists of banned outfit HizibulMujahideen (HM). Aqib HussainIttoo S/o Ab Hamid R/O Gopalpora (Category "C") Suhail Ahmed Rather S/O Arif Hussain Rather R/O Tantraypora (Category "C"). It is pertinent to mention here that without brave and gallant action of Shri Ajaz Ahmad Addl. SP Kulgam and his buddy Const. Bilal Ahmad No. 929/Kgm, it would have been difficult to eliminate these terrorists. The terrorists could have managed to flee taking the cover of grenade lobbing and darkness, had not the officer and his buddy exhibited their professional skills, maintained presence of mind, and ready to sacrifice their lives purely in the interest of national integrity and security of state. Their role was exemplary and outstanding in the conducting of particular operation.

In this operation S/Shri Ajaz Ahmed Zarger, Addl. SP and Bilal Ahmad Sheikh, CT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 02/08/2017.

(No. 11020/123/2018-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN

Officer on Special Duty

No. 63-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—

S/Shri

1	MohdSubhanNaik	SgCT	PMG
2	Imtiyaz Ahmad Malik	SgCT	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 29/01/2016 a specific input was received through reliable sources regarding presence of a heavily group of armed terrorists in Dardpora village of Lalpora area. The input was further developed and an operation was planned and launched by District Police Kupwara headed by Shri Ajaz Ahmad (then SSP Kupwara), Shri Fayaz Hussain (then ASP Kupwara) and Shri Hilal Khaliq (then DySP PC Lolab) involving manpower of P/S Lalpora, PC Sogam and contingents of Army 28 RR and 162 Bn CRPF. The target area was cordoned and search operation launched. SgCtMohdSubhan No. 338/KP (Now HC) and SgCtImtiyaz Ahmad No. 713/KP (Now HC), SgCt. Tanveer Ahmad No. 601/AP 7th, Ct. Mushtaq Ahmad No. 813/KP, Ct. Manzoor Ahmad No. 1049/PI, Ct. Muneer Ahmad No. 931/KP, SPO Shabir Ahmad No. 638/SPO, SPO Mohdlqbal No. 1031/SPO, SPO Jahangir Ahmad No. 13/SPO, SPO Ab. Majeed No. 367/SPO, SPO Manzoor Ahmad No. 1024/SPO and SPO Fayaz Ahmad No. 16/SPO volunteered themselves for the teams and tasked to carry search operation and to give cover protection to the search party. In the evening, while search operation was on, hiding terrorists fired heavily on the search party of Army and police with the intention to kill them. The search party was attentive and escaped the attack of terrorists. The fire was effectively retaliated by the cover party during which one terrorist got instantly killed. Rest 02 terrorists took shelter in the house of Manzoor Ahmad Chohan S/O Shah Zaman R/O LoharMohallaDardpora. Since the said area was already under the cordon of Police and Army, the terrorists find no way to flee from the spot and fired heavily on the police party. Due to darkness, the search operation was halted to avoid any harm to the security forces/house inmates. In the wee hours of 30/01/2016, inmates of the house were safely evacuated and after that a dedicated team of officers/officials and above mentioned officials exercising the operational drill made the final assault on the terrorists. Terrorists were zeroed and after a fierce gun-fight, both the terrorists were eliminated. A thorough search of the area was again conducted but no presence of terrorists was further seen/reported and finally the operation was called off. In the whole operation, 03 hardcore terrorists were eliminated who were identified as 1. Muzamil @ Abu Usama (A+ Cat.) 2. Maroof @ Dujana (A+ Cat.) and 3. Israr (A Cat.) of LeT Outfit. These terrorists were operating

in District Kupwara particularly in Lolab belt since 2013 and were involved in a series of attacks on SFs. Their elimination brought an end to the old survival group of LeT terrorists. The arms/ammunition recovered during the operation includes AK-47 Rifle 3, AK-47 Mag 14, AK Rounds = 427 Rds, 9 mm Pistol 1, Mag. Pistol 2 Nos, 9 mm Amn 20 Rds, Indian Currency Rs. 2810, Radio (Rubina) = 01 Nos and other war like stores. For the instant operation, case FIR No. 07/2016 U/S 307 RPC, 7/27 I. A Act stands registered in P/S Lalpora. Further investigation of the case is going on.

In this operation S/Shri MohdSubhanNaik, SgCT and Imtiyaz Ahmad Malik, SgCT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 29/01/2016.

(No. 11020/128/2018-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN

Officer on Special Duty

No.64-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—

S/Shri

1	Syed MajeedMosavi	Dy.SP	PMG
2	Asif Iqbal Qureshi	CT	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 26-01-2016, on a specific information generated by Police Srinagar/Anantnag regarding presence of terrorists in the house of Ab. Rashid Wani S/o Ab. Khaliq Wani R/O Khalhar, Kokernag. Accordingly, a joint operation was launched by SOG Kokernag / SOG Srinagar with the assistance of 19 RR. Two teams lead by Syed MajeedMosaviDySP (Ops) PC Srinagar and Shri Mohd Aslam, Dy. SP Ops (PC) Kokernagalongwith Shri JavidIqbal, Dy.SP KPS-125737, L/HC DolleyKour 26531S, SgctRashpal 647/IRP, Ct Rakesh Pandita 817/S, Ct. Mohammad Firdous 32/AWP, SgCt Asif Iqbal No. 1344/A, SPO Umer Bashir 197/SPO, SPO Showkat Ahmad 176/SPO, SPO Javid Ahmad 1352/SPO, SPO Gowhar Hussain 160/SPO, SPO Showkat Ahmad 93/SPO and SPO Mohammad Issac 912/SPO were deputed for carrying out CASO. Both the officers coordinated with 19 RR and cordoned the village under the supervision of SP (OPS) Anantnag and overall supervision of SSP Anantnag. The operational component along with 19 RR headed by the above mentioned officers zeroed in the target site house. On seeing the police parties approaching towards the target house, terrorist hiding inside fired indiscriminately to inflict casualties on police and to break the cordon but due to extreme presence of mind and strong command over the teams lead by Sh. Syed MajeedMosavi, DySP PC Srinagar and Sh. Mohd Aslam DySP PC Kokernag did not provide any chance to terrorists to break the cordon and kept advancing towards the target house without caring for their own safety. It was exceptionally brave effort from the teams who advanced despite bullets being showered over them by the terrorists. The officers in order to avoid any civilian/ collateral damage, evacuated the neighboring population and kept picketing towards the target house. The terrorist in utter frustration came out of the house, fired indiscriminately on police parties in order to break the cordon and escape, but the brave and gallant action of Shri Syed MajeedMosavi, DySP PC Srinagar and Shri Mohd Aslam DySP PC Kokernag and their teams who without caring for their lives not only managed elimination of the terrorist but also ensured zero collateral damage and evacuation of civilians from the area. The eliminated terrorist was later identified as Mushtaq Ahmad Haroo @ Adil S/o Mohammad Amin Haroo R/O PushwaraAnantnag of HM outfit (B-Category). Arms/ ammunition recovered during the operation includes 1 AK-47 Rifle, 4 AK-47 Magazines, 107 AK-47 Rounds, 1 Pouch and 1 Aadhar Card (S.No. 480319198834). Case FIR No. 11/2016 u/s 307 RPC , 7/27 I.A Act stands registered in P/S Kokernag in this regard.

Needless to mention here that the slain terrorist was active since 2015 and was great threat for peace and tranquility in the area. He was frequently visiting Kokernag area to carry out terrorist attack on SFs. He was under the radar of SOG Kokernag. The slain terrorist was motivating the youth to join terrorist ranks to rebuild the HM base in Anantnag/Kokernag towns.

In this operation S/Shri Syed MajeedMosavi, Dy.SP and Asif Iqbal Qureshi, CT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 26/01/2016.

(NO. 11020/133/2018-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN

Officer on Special Duty

No.65-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/ 1st Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—

S/Shri

1	Masrat Ahmad Mir	Insp.	1 st BAR TO PMG
2	Mohd. Hafiz	SI	PMG
3	Manga Ram	HC	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 30-07-2017, at about 0330 hours, reliable information was received by Police Pulwama regarding movement of terrorists in village TahabPulwama. The information was shared with Sh Sayed Zaheer Abbas Jafari, DySP (Ops) Pulwama and it was established that terrorists are hiding in the house of Abdul Khaliq Bhat S/O Mohammad Rajab Bhat. This information was then shared with 55 RR 182/183 Bn CRPF and it was decided to launch a joint operation. SSP Pulwama and DySP (Ops) Pulwama along with Police component Pulwama including HC Zahoor Ahmad 1376/PL, HC Zafferlqbal 906/PL, Ct Mushtaq Ahmad 1619/PL, Ct. Mushtaq Ahmed 1544/PL, Ct. Zahid Abass 1297/PL Foll. Mohammad Asgar 21/F/others along with officers/officials of 55 RR and 182/183 Bn CRPF left towards the TahabPulwama and a joint cordon was laid. SOG Pulwama led by SI Mohd Hafiz ARP- 109251 with the assistance of SPO Sabzar Ahmed 596/SPO, SPO SomNath 63/SPO-Jammu, SPO Mohammad Shafi 463/SPO, SPO Bashir Ahmed 330/SPO, SPO Irshad Ahmed 115/SPO, SPO Ashiq Hussain 145/SPO, SPO Akhter Hussain 382/SPO and SPO Imtiyaz Ahmed 161/SPO and others joined the inner cordon parties and terrorists fired upon them. During fire retaliation, Inspector Masrat Ahmad Mir ARP 026108, SI Mohd. Hafiz ARP 109251 and HC Manga Ram No 586/IR 7th Bn managed to enter into the target house and had a head to head fight with the terrorists during which Inspector Masrat Ahmad Mir, SI Mohd. Hafiz and HC Manga Ram had a narrow escape. Since terrorists were on an advantageous position thus could attack the team lead by Inspector Masrat Ahmad Mir however, the officer and his men effectively retaliated the fire and were able to demoralize the terrorists. Also in order to avoid the collateral damage, the officer positioned themselves at two different sides of the house and a pause in fire retaliation was witnessed. In the meantime, DySP (Ops) Pulwama along with Ct Mudassir Ahmad 1533/PL EXK-127104 and Foll Shabir Ahmad Kooli F-46/IR 11th ARP- 135666 reached near the target house and terrorists while seeing the police party approaching towards them, opened indiscriminate firing upon DySP (Ops) Pulwama and his team. The officer applied good presence of mind and effectively retaliated the fire. The holed up terrorists in an attempt to escape from the cordon, jumped out from the window of the said house and kept on firing indiscriminately upon the police party led by DySP (Ops Pulwama). The police party without caring for their lives, remained alert at the point of death and kept their mind cool and present, tackled the situation bravely which resulted in elimination of terrorists in an open field. The slain terrorists were identified as Showkat Ahmad Mir @ Shabir (Category-C) S/O Mohammad Ahsan Mir R/O Mehand Srigofwara Anantnag and Sharik Ahmad Sheikh (Category-C) S/O Ali Mohammad Sheikh R/O Gulzar Pora Awantipora. Arms/ammunition recovered during the operation includes 1 SLR Rifle (damaged), 1 INSAS Rifle (damaged), 2 SLR Magazines (1 damaged), 1 INSAS Magazine (damaged), 1 LMG Magazine (damaged), 32 SLR live rounds, 12 INSAS rounds and 2 Pouch. Case FIR No. 245/2017 U/S 307 RPC, 7/27 I. A. Act stands registered in Police Station Pulwama in this regard.

In this operation S/Shri Masrat Ahmad Mir, Insp., Mohd. Hafiz, SI and Manga Ram, HC displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 30/07/2017.

(NO. 11020/138/2018-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN

Officer on Special Duty

No. 66-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/ 1st Bar to Police Medal for Gallantry/3rd Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—

S/Shri

1	Harmeet Singh	SSP	3 rd BAR TO PMG
2	Sajad Ahmad Ganie	SI	PMG
3	Farooq Ahmad Mantoo	ASI	1 st BAR TO PMG
4	Mazafar Ahmad Tantray	HC	1 st BAR TO PMG
5	Akeel Ahmad Malik	SgCT	1 st BAR TO PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 05-08-2017 at about 12:30 AM, Police Sopore received a specific information regarding presence/ movement of LeT terrorists in Jamia Mohalla of Amargarh Sopore who are in attempt to carry out some major strike on Police/SF establishments. Acting on the information, Sopore Police alongwith the troopers of Army 52RR & CRPF contingents of 179/ 177/ 92 Bn CRPF cordoned off the area and launched search operation. During search, a contact was established with the terrorists who were hiding in a residential house of one Bashir Ahmad Ganie S/o Ghulam Nabi Ganie R/O Jamia-Mohalla Amargarh, Sopore. Since it was dead of night and people were in deep sleep, there was every possibility of civil causality, if the target house is stormed at the very movement. So in order to avert the civil causality two joint parties of Police/ Army/ CRPF comprising upon 1st Joint Party SI Sajad Ahmad ARP-109307, ASI Yousf-ul-Umer 29/IR 3rd Bn, ASI Farooq Ahmad 24/Spr, HC Muzaffer Ahmad 34/Spr, Sgt Tariq Ahmad 222/Spr, Sgt Fayaz Ahmad 45/Spr, Sgt Akeel Ahmad 46/Spr, SPO Asif Rasool 198/SPO, SPO Mohd Ashraf 420/SPO, SPO Shabir Ahmad 285/SPO, SPO Ab Majeed 306/SPO, SPO Ishfaq Ahmad 10/SPO, SPO Aijaz Ahmad 208/SPO led by Sh. Harmmet Singh SSP Sopore and 2nd Joiny Party comprising of Inspr. Sabzar Ahmad No. 7179/NGO, HC Javid Ahmad 220/Spr, Sgt Bilal Ahmad 709/Spr, Ct. Myser Ahmad 475/Spr, Ct. Nazir Ahmad 593/Spr & Ct. Mubashir Ahmad 588/Spr, SPO Zahoor Ahmad 324/SPO, SPO Hushiar Singh 497/SPO-Ang, SPO Parwaiz Ahmad 152/SPO, SPO Fayaz Ahmad 295/SPO, SPO Mohd Altaf 89/SPO, SPO Aijaz Ahmad 308/SPO led by DySP (Ops) Sopore were formed. Both the teams were tasked to evacuate the trapped civilians first and accordingly the 1st Joint Party started evacuation of the civilians by putting themselves in a great risk and the 2nd Joint Team was tasked to provide protection to the 1st Joint Party and all the trapped civilians were safely evacuated from the cordon area and the cordon was tightened. The holed up terrorists were warned to surrender but in return they opened heavy volume of firing upon the joint parties. In the initial firing ASI Yousf-ul-Umer. got injured and immediately evacuated to the hospital for treatment. The 1st Joint Party comprising of SI Sajad Ahmad led by Sh. Harmmet Singh—SSP Sopore which was already on forefront did not lose their morale despite of the fact that their colleague sustained bullet injuries retaliated the firing resulting in fierce firefight. Since the terrorists were inside the house and three in number, were in defensive positions who kept firing continuously in different directions upon the joint parties. The 1st joint party volunteered themselves to approach the target house for final assault and the 2nd Joint team was providing covering firing/ protection. The 1st joint party started approaching towards the target house and the 2nd joint team gave covering firing/ protection and as soon as the 1st Joint Teams was about to reach the main front door of the target house, two holed up terrorists jumped out the house through the main door and while jumping out they fired indiscriminately upon the advance party with their sophisticated weapons, but the advance party by exhibiting highest degree of bravery, professionalism, persistence and presence of mind retailed the firing effectively which too in close propinquity/ volatile situation and in the shootout two terrorists were killed on spot. In the meanwhile other holed up terrorist after noticing that his two accomplices were killed, also jumped out from the house through a window and while coming out from the house, he kept firing continuously upon the Police/ SFs. While escaping he tried to hide himself and to take safe shelter/ position in a deep drain passing nearby the target house, but the 2nd Joint Team which was already put on outer side provided back up firing support. During the assault, 3rd terrorist was also neutralized. The slain terrorists were identified as Abid Hamid Mir S/O Ab Hamid R/o Mir Mohalla Hajin Distt. Bandipora (C-Category 'LeT'), Javaid Ahmad Dar S/O Mohd Akber Dar R/O Kumar Mohalla Khanpora District Baramulla. (C-Category of LeT) and Danish Hassan Dar @ Furkan S/O Gh. Hassan Dar R/O Mumkhak Sopore. Arms/ammunition recovered during the operation includes 3 AK-47 Rifle, 6 AK-47 Magazines and 10 Rounds of AK-47. Case FIR No. 82/2017 U/S 307/IPC, 7/27 A. Act stands registered in to the incident in Police Station Tarzoo and investigation taken up.

In this operation S/Shri Harmeet Singh, SSP Sajad Ahmad Ganie, SI, Farooq Ahmad Mantoo, ASI, Mazafar Ahmad Tantray, HC and Akeel Ahmad Malik, SgCT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 05/08/2017.

(No. 11020/140/2018-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 67-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/1st Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—

S/Shri

1	Mohd Aslam	SSP	1 st BAR TO PMG
2	Sayed Zaheer Abbas Jafari	DySP	1 st BAR TO PMG
3	Tajdar Ahmad Ganai	CT	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 03/04-07-2017, at about 0700 hours, reliable information was received by SSP Pulwama regarding movement of terrorists at village Bamnoo Pulwama. The input was further shared with Shri Chandan Kohli-IPS, ASP Ops Pulwama and Shri Syed Zaheer Abbas Jafari, Dy.SP Ops Pulwama. The said information was further developed and specified by Addl. SP Pulwama to the effect that terrorists are hiding in three houses belonging to Mohammad Yousuf Wagay S/o Abdul Khaliq Wagay, Ab. Rashid Wagay S/o Ab. Khaliq and Ali Mohammad Wagay S/o Mohammad Jamal of village Bamnoo. This information was also shared with 44 RR, 182/183 Bn CRPF and it was decided to launch a joint operation. Afterwards, SSP Pulwama, Addl. SP Pulwama and DY.SP Operations Pulwama along with Police party from Police Component Pulwama, 44 RR and 182/183 Bn of CRPF left towards the village Bamnoo Pulwama in order to cordon the target Mohalla and a joint cordon was laid. A rapid action party of SOG Camp Pulwama comprising Ct Babar Mohi-Ud-Din No. 1465/PL EXK-127400, Ct Tajdar Ahmad No. 11261PL EXK- 115833, Ct Javiad Ahmad No. 1618/PL EXK-127363, Ct Jaffar Bashir No. 1630/PL EXK-127646, Ct Mohammad Muzaffar No. 1078/PL EXK-116473, Ct Anees Ahmad No. 1130/PL EXK-119927, SPO Bilal Ahmad No. 87/SPO, SPO Rouf Ahmad No. 250/SPO, SPO Mudasir Manzoor No.130/SPO, SPO Mustafa Kamal No. 267/SPO and SPO Owais Ahmad Sheikh No. 139/SPO under the supervision/command of SSP Pulwama without taking too much time, cordoned the target houses from the North, Northeastern and Northwestern sides alongwith party of 44 RR, 182/183 Bn CRPF. Another party of the same camp comprising Ct Ab. Rashid No. 1021/PL EXK-111871, Ct Suhail Hussain No. 1170/PL EXK-112111, Ct Mohammad Ibrahim No. 812/PL EXK-106257, Ct Bilal Hussain No. 1305/PL EXK-135578, SPO Mohammad Ismaiel No.1100/SPO, SPO Bilal Ahmad No. 221/SPO, SPO Arshid Ahmad No. 44/SPO, SPO Vijay Kumar No. 19/SPO, SPO Bilal Ahmad No. 21/SPO, SPO Nisar Ahmad No. 99/SPO and SPO Aijaz Ahmad No. 540/SPO supervised by Shri Syed Zaheer Abbas Jafari, Dy.SP Ops Pulwama cordoned the area from South, Southeastern and Southwestern sides along with another party of 44 RR 182/183 Bn CRPF. These officials maintained the inner cordon and remained alert. SSP Pulwama and DySP Ops Pulwama personally supervised tightening of the cordon around the target houses. After laying/strengthening the cordon, steps for search of terrorists in the target houses were started. As the houses were located adjacent to each other and were all bigger in size, it was decided to lead the searching parties from two different directions. One led by SSP Pulwama alongwith ASI Ishtiaq No. 166/IR 11th Bn and Ct Tajdar Ahmad No. 1126/PL and another led by Dy. SP OPS Pulwama along with HC Abdul Khaliq and Ct Suhail Hussain. Shri Chandan Kohli, Addl SP Pulwama assisted by Ct Nazir Kohli No.1046/PL with the help of police party who had maintained the inner cordon provided the covering fire for room intervention to the parties mentioned above. Both the parties approached from two different directions simultaneously and managed to enter into the target house. Terrorists on seeing the approaching police parties fired indiscriminately on them and gave them a narrow escape. However, showing exemplary courage and presence of mind SSP Pulwama, DySP (Ops) Pulwama and Ct Tajdar Ahmad immediately took positions and retaliated in self defense forcing terrorists to turn defensive. Both the parties, after examining the location inside the target houses returned to the cordon safely but this time the strategy to execute the operation was fully organized. The cordon was intensified and retaliation of fire was firmly executed. The terrorists continued to fire indiscriminately on SFs from three sides which could have result in loss of lives of troops and the civilians who were on foot as usual in view of day hours. But coordinated management of SSP Pulwama, DySP Operation Pulwama assisted by Ct Tajdar Ahmad tackled such a crucial situation and retaliated the fire with absolute bravery. The operation continued for whole day but no success in dominating terrorists were made in the day. During night several measures were taken to dominate terrorists so they could not escape from the cordon. Next morning i.e on 04-07-2017 at about 0500, hours, SSP Pulwama/DySp (Ops)Pulwama again through respectable of the area cautioned terrorists to lay down their arms before Police/SFs besides. The caution was ignored by terrorists and instead

they started indiscriminate firing upon the Police and security forces with the intension to kill them and escape from the cordon. The officers/officials of Police present there without caring their lives remained alert and retaliated bravely. When the firing stopped from the side of terrorists, a joint searching party of officers/officials of Pulwama Police /Army/CRPF was constituted. During search, three dead bodies were recovered and later on identified as Akthar Alam Khan (Category-C) S/o Noor Alam Khan R/o Vajaypur Reasi Jammu, Jahangir Ahmad Khanday (Category-C) S/o Ghulam Rasool Khanday R/o Kellar Shopian and Kifayat Ahmad Khanday (Category-B) S/o Mohammad Ahsan Khanday R/o Rajpora Bamnoo Pulwama. The details of arms/ammunition recovered during the operation are mentioned at seizure memo. Case FIR No. 40/2017 U/S 307 RPC, 7/27 I. A. Act stands registered in Police Station Rajpora in this regard.

In this operation S/Shri Mohd Aslam, SSP, Sayed Zaheer Abbas Jafari, DySP and Tajdar Ahmad Ganai, CT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 03/07/2017.

(No. 11020/143/2018-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN

Officer on Special Duty

No. 68-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry (Posthumously) to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—

Shri

Late Aman Kumar	DySP	PMG (POSTHUMOUSLY)
-----------------	------	--------------------

Statement of service for which the decoration has been awarded

In the wee hours of 2/9/17, acting on a credible input about presence of terrorists in village Tantraypora, Police Kulgam, an operation under the supervision of Sh Shridhar Patil-IPS, SSP Kulgam, Sh Ajaz Ahmad, Addl. SP Kulgam, Sh Aman Kumar, DySP (Ops) Hatipora was launched. In the operation, troops of PC Manzgam/62 RR and CRPF 18th Bn were involved which laid cordon of said village. Hiding terrorist on noticing the movement of SFs, tried to flee away taking the advantage of darkness. Terrorist was asked to surrender but he denied and fired indiscriminately upon the searching party. Being an auspicious Muslim festival Eid-ul-Azha, on that day, a strategy was chalked out and terrorist was provided escape so that he may be trapped outside the village to avoid civil interface. Strategically an ambush was laid nearby Orchards under the command of Sh. Aman Kumar, DySP Ops Hatipora along with his operational team comprising SgCt Nisar Ahmad No. 812/Kgm, Const. Mohammad Abass 703/IRP ARP-085717, Const. Shah Nawaz Ahmad No. 582/Kgm EXK-077504, Const. Ashiq Ahmad No. 988/Kgm EXK-116619, SPO Mohd Abass No. 371/K, SPO Kalwant Singh No. 181/K, SPO Mohd Sharief No. 248/K and SPO Mohd Yanoos No. 398/K to nab the terrorist. Due to strenuous efforts, planning and better supervision/coordination with other forces Shri Aman Kumar, DySP (Ops) Hatipora and his above mentioned team succeeded in elimination of dreaded terrorist in a close pitched battle. On the other side HC Chail Singh No. 149/IR 9th and SgCt Naseer Ahmad No 807/Kgm have controlled the outer periphery of the encounter site. Due to the collective efforts put forth by the officers and officials, one terrorist namely Ishfaq Ahmed Padder S/o Ab Rehman Padder of LeT outfit Category `C" recommended for "B" was neutralized without any collateral damage. The recoveries effected from the encounter site includes 1 AK Rifle, 2 AK Empty Magazines(damaged), 42 Live rounds of AK, 1 Pouch, 1 Pull Through, 1 Purse with Rs. 540/- rejected note 1 No. of Rs. 500/-, 1 Identity Card (Aadhar No. 795851432635 and 1 Mobile Charger. For which case FIR No. 71/2017 U/S 307 RPC, 7/27 I A Act stands registered in P/S Yaripora.

It may be mentioned that the area was vulnerable and there was every apprehension that civilians might have tried to reach the encounter site to help the terrorist to flee away and sympathizers/OGWs of the terrorists could have provoked the general people especially youth to indulge in stone pelting by taking the advantage of Eid. HC Chail Singh alongwith SgCt Naseer Ahmad No 807/Kgm after assessing the situation chalked out the strategy with other officers and sealed the area properly which resulted crystal clear operation and ensured Eid-ul-Azha prayers peacefully when situation was predicted to be volatile. These brave officers lead the joint teams of Police and RR in professional manner and dealt the situation amicably which resulted in the elimination of the terrorist who was big threat to the security of people/state.

In this operation Late Shri Aman Kumar, DySP displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 02/09/2017.

(No. 11020/144/2018-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN

Officer on Special Duty

No. 69-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—

S/Shri

1	Jan Mohmad Ganaie	SI	PMG
2	Robin Ravinder	SgCT	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 06-10-2016, at 05:05 hrs, Handwara Police received information that heavily armed terrorists has attacked Bn Hqrs 30 RR Camp Langate with the intention to enter forcibly into the Camp and carry out a suicidal attack. Accordingly, police party rushed towards the spot. On reaching the spot (30 RR camp), the army authorities informed that 02/03 terrorists has launched a suicidal attack (Fidayeen attack) on the rear side of 30 RR Bn Hqr. The terrorists had managed to crossover the boundary fencing of the camp but were still hold up near the army post. In order to eliminate the heavily armed terrorists without collateral damage, a meticulous planning was formulated. The entire area was cordoned off including the adjacent Mohallas of Langate area. As the presence of terrorists was already established near the rear side of the Army Camp, a joint assault team from Army & Police was formulated in which SI Jan Mohmad No.248/PAU and Ct Robin Ravinder No.848/AP 7th volunteered themselves for the assault teams. The assault team headed by Sh. Gh. Jeelani Wani, SSP Handwara along with SI Jan Mohmad Ganaie ARP-109243, HC Mohd Shafi 111/H, SgCt. Irshad Ahmad 467/H, SgCt Robin Ravinder ARP-095475, Ct. Imran Ahmad 618/H, Ct. Javid Ahmad 624/H, Ct. Showkat Ahmad 366/H, SPO Latief Ahmad 16/Ex, SPO Tariq Ahmad 112/SPO, SPO Qasim Rashid 47/Ex, SPO Firdos Ahmad 340/SPO, SPO Wasim Raja 204/SPO, SPO Khusheed Ahmad 397/SPO, SPO Rayees Ahmad 126/SPO, SPO Firdos Ahmad 105/SPO and SPO Nazir Ahmad 582/SPO started advancing towards hiding terrorists. However, the terrorists opened heavy volume of fire upon them. The team provided cover fire to each other, without caring for their own lives reached in close proximity of the terrorists in a fire retaliatory exercise. During this exercise they were well supported by each other which provided protection against the terrorist fire and at the same time, gunned down one terrorist. This counter attack from the assault team put terrorists on back foot however they (terrorists) have already taken advantageous positions due to which the task was becoming more difficult. At around 0615 hours, SI Jan Mohmad alongwith SgCt Robin Ravinder advanced further and the terrorists indiscriminately opened fire on them who had reached very close to the terrorists, however with great caution and exhibiting skilled battle tactics, no harm was done to the assault team, at the same time SI Jan Mohmad and SgCt Robin Ravinder retaliated swiftly, launched an audacious counter attack on the terrorists. The fierce gun battle continued about half an hour and during the exchange of firefight, the remaining three terrorists were also eliminated. Although whole assault party displayed great valor during the elimination of the dreaded terrorists but it was only with great valor and missionary zeal of SI Jan Mohmad and SgCt Robin Ravinder that the fidayeen attack of terrorists was foiled. The slain terrorists were later identified as Hataf R/o PaK A+ Category, Khitab R/o PaK A+ Category and Ilyas R/o PaK A Category terrorist of LeT outfit.

In this operation S/Shri Jan Mohmad Ganaie, SI and Robin Ravinder, SgCT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 06/10/2016.

(No. 11020/153/2018-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN

Officer on Special Duty

No. 70-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—

S/Shri

1	Arif Amin Shah	ASP	PMG
2	Faraz Hussain Shah	DySP	PMG
3	Mushtaq Ahmed Mir	ASI	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

In the wee hours of 14/03/2017, an input was generated regarding presence of terrorists in village Kunnard Jugtiyal of Batpora Haihma area of District Kupwara. The input was further developed and shared with 41 RR. Accordingly joint operation was planned and launched by Police Kupwara and 41 RR. 41 RR was also involved in the process of cordon search operation and 01 coy of CRPF 98th Bn was deployed in the outer-cordon. The whole area was put under tight cordon and during the operation, the search team came under heavy fire from terrorists who were hiding in the house jointly owned by Fareed Ahmad and Showkat Ahmad both S/Os Nek Alam R/O Kunnard Jugtiyal. During the attack, one constable namely Danish Ahmad 1087/KP who was part of the search team got injured and he was airlifted and shifted to 92 Base Army Hospital Srinagar for treatment. A tactical team plan was chalked out based on the ground realities and an assault team comprising of ASP Arif Amin, DySP Faraz Hussain, DySP Fayaz Hussain, SI Mohd Iqbal ARP-109315, SI Harvinder Singh ARP-109247, ASI Mushtaq Ahmad 152/KP, HC Ab. Rashid 300/KP, HC Mehraj-u-din 196/KP, SgCt. Sartaj Ahmad 178/IRP 8th Bn, Ct. Manzoor Ahmad 1081/KP, Ct. Mushtaq Ahmad 1040/KP, Ct. Mohd. Younis 539/KP, Ct. Mohd Ashraf 1108/KP, Ct. Mohd. Shabir 1071/KP, Ct Iqbal Yakooob 949/KP, Ct. Imran Khan 406/KP, Ct. Ashiq Ahmad 1018/KP, Ct. Gh. Rasool 697/KP, Ct. Danish Mand 1087/KP, Foll. Mohd Shafi 22/F, SPO Nazir Ahmad 622/SPO, SPO Mohd Iqbal 444/SPO, SPO Mushtaq Ahmad 269/SPO, SPO Anzar Hussain 796/SPO, SPO Fayaz Ahmad 147/SPO, SPO Mousam Ali 177/SPO, SPO Mohd Yousuf 346/SPO, SPO Javeed Ahmad 179/SPO, SPO Manzoor Ahmad 5/SPO, SPO Mohd Haneef 890/SPO, SPO Shams-u-din Chechi 718/SPO, SPO Javeed Ahmad 1076/SPO, SPO Parvaiz Ahmad 815/SPO and others led by SSP Kupwara was tasked to advance towards the target and make final assault upon the terrorists. The team exercised operational drill and moved close to the target and faced stiff resistance from the hiding terrorists, but the team holds steel nerve and repulsed the fire tactfully and succeeded by engaging with retaliatory fire during which the target house was zeroed. The terrorists fired indiscriminately due to which stray bullets hit 02 children namely Faisal Ahmad Chechi (aged about 7 years) and Kaneeza (aged about 6 years) son and daughter respectively of Khushi Mohd R/O Kunnard Jugtiyal. Later, both the injured children were evacuated but Kaneeza succumbed to injuries on spot. Injured Faisal was shifted to SKIMS Srinagar for further treatment. Later making the final assault, all the 03 terrorists were eliminated. The house in which the terrorists were hiding got fully damaged. Arms/ammunition recovered during the operation includes 3 AK Rifle, 11 AK Magazines, 280 AK Rds, 03 Pouches, 01 Wireless set (without battery).01 Sim, 01 GPS Set, 04 Hand Grenades (Chinese), 02 UBGL Shells and 01 Matrix Sheet. Investigation conducted into the matter revealed that the slain terrorist were foreigners and affiliated with LeT outfit. They were identified as Abu Mala, Anas Bhai and Abu Mansoor (all "A" categorized terrorists). For the said incident, case FIR No. 57/2017 u/s 307 RFC, 7/27 I.A Act stands registered in Police Station Kupwara and further investigation taken up.

In this operation S/Shri Arif Amin Shah, ASP, Faraz Hussain Shah, DySP, Mushtaq Ahmed Mir, ASI displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 15/03/2017.

(No. 11020/154/2018-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN

Officer on Special Duty

No. 71-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal/ 1st Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—

S/Shri

1	Shriram Dinkar Ambarkar, IPS	SP	1 st BAR TO PMG
2	Muneer Ahmad Bhat	SI	PMG
3	Ravees Ahmad	HC	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 18-12-2017, Police Shopian received a specific information regarding presence of terrorists in Village Batamurran Wanpora of P/S Keller. After getting this specific information, Police Shopian along with 44 RR & 14th BN CRPF cordoned off cluster of houses at the said village. In order to make the operation successful, two Police/SF teams under the joint supervision of Shri Shriram Dinkar Ambarkar-IPS, SP Shopian were constituted to identify the actual location/hideout of terrorists. The constituted teams were succeeded in zeroing the suspected house in which these terrorists were hiding and subsequently neutralize them without any collateral damage. All the parties positioned themselves according to the plan as enumerated above. The cordoned area comprised of a very difficult terrain which included scattered residential houses, dense orchards and deep Nallas. The area was sealed off and all the possible escaping routes including path ways for orchards, interior roads & lanes/by-lanes were plugged properly. In order to make the operation successful, the whole deployments were divided into two parties under the overall supervision of SP Shopian with full coordination of 44 RR and 14th Bn CRPF. The First party comprised of Police and QRTs of 44 RR/14th Bn CRPF headed by Shri Wajahat Hussain DySP assisted by Si Muneer Ahmad EXK109557 was asked to lay the cordon of the suspected house from North- East and South- Eastern side. The 2nd Police party with QRTs of 44 RR and 14th Bn CRPF headed by SP Shopian assisted by SI Arif Hamid ARP115626 laid the cordon of the target house from North —West and South Western sides. Two search parties comprising of Police Shopian (PC DPL) and QRT of 44 RR and 14 BN CRPF under the supervision of Shriram Dinkar Ambarkar, IPS (SP Shopian) and 2nd party comprising of Police Camp Keller and QRT of 44 RR and 14 BN CRPF under the supervision of Shri Wajahat Hussain DySP were constituted. During the search, the terrorists hiding in the area resorted to indiscriminate firing upon the troops from different sides with the intention to cause damage and to break down the cordon. The hiding terrorists kept changing their locations in order to avoid disclosing their specific location. The search party immediately took cover and retaliated with a strategy and precision due to which the terrorists did not find any opportunity to escape from the besieged area. In order to avoid any civilian causality, the operational Commander (SP Shopian) directed the parties to evacuate the people trapped in the cordoned area. While the evacuation process was taking place, the assault groups headed by SSP Shopian came under heavy fire of terrorists. However they did not lose their concentration and continued the evacuation process without caring for their personal lives. In the meantime; a violent mob started heavy stone pelting on the troops engaged in the cordon with the intention to breakdown the cordon so that the trapped terrorists can get opportunity to flee from the area. However, the law & order components deployed in the area for the purpose exercising maximum restraint and handled the situation tactfully. Since it had become dark and there was every apprehension that the besieged terrorists may attempt to escape from the cordon in the darkness , as such it was decided to reinforce the cordon and the troops were briefed to hold up the CASO strictly and strongly so that the trapped terrorists may not find any opportunity to flee during the night. At about 2000 hours, the besieged terrorists hurled grenades followed by indiscriminate firing upon the parties and tried to escape from the cordoned area. However Shri Shriram Dinkar Ambarkar, IPS, SP Shopian alongwith Police parties including Shri Wajahat Hussain Dy.SP, SI Muneer Ahmad, SI Arif Hamid, HC Ravees Ahmad 1309/PL, Sgct Ankit Koul 479/IR 18th, Sgct Ravees Ahmad 1146/OL, Sgct Arshad Ahmad 218/IR 18, Ct Manzoor Ahmad 623/SPN, Ct Anjum Javid 746/IR 14th, Sgct Mohd Abass 808/IR 18th, Ct. Rakesh Singh 719/IR 14th, Ct Tahir Yousuf 708/SPN, Sgct Bilal Ahmad 555/AP 8th, Ct. Abid Ali 644/IR 18th, SPO Raheel Ahmad Qazi 125/SPN, SPO Shahid Ahmad 151/SPN, SPO Kaheem Farooq 163/SPN, SPO Masroor Ahmad 236/SPN, SPO Mohd Ishaq Reshi 113/SPN, SPO Shabir Ahmad 322/BD, SPO Muzaffar Ahmad 14/SPN, SPO Mohd Imran 97/SPN, SPO Showkat Ahmad 186/SPN and SPO Rayees Ahmad 401/SPN fought from the front and succeeded in elimination of two dreaded terrorists including a Foreigner. However the third terrorist managed to hide himself in another house. The search for the 3rd terrorist continued till 2200 hours during the night. As darkness fell, the Operational Commander decided to suspend the search process till first light. However, at about 0400 hours, the besieged terrorist hurled few grenades followed by indiscriminate firing upon the troops which has resulted bullet injuries to two CRPF/Police personnel and a civilian lady. Instead of chasing the terrorist, the forces preferred to save the lives of injured persons and shifted them to hospital for treatment. Taking advantage of the situation arisen due to injury of two CRPF/Police personnel and civilian lady, said terrorist managed his escape from the spot in the darkness. The slain terrorists were later on identified as Kahaf © Ali Bhai Qari, a Pakistani terrorist (category A+) and Tanveer Ahmad Bhat S/o Gh. Nabi R/o Batamurran Wanpora (category B) of JeM outfit. Arms/ammunition recovered during the operation includes 02 AK series Rifles (damaged), 04 AK series Magazines, 40 AK rounds, 02 Pouch Chitra, 01 Shaving Kit (Black), 02 Jaap Mala, 02 Shampoo Bottles (empty), 02 Oil Bottle (Black) and 01 Belt. Case FIR No. 65/2017 U/S 307 RPC, 212 RPC, 7/27 A.Act, was registered in P/S Keller and investigation taken up.

In this operation S/Shri Shriram Dinkar Ambarkar, IPS, SP, Muneer Ahmad Bhat, SI and Ravees Ahmad, HC displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 18/12/2017.

(No. 11020/156/2018-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN

Officer on Special Duty

No. 72-Pres/2020—The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry/2nd Bar to Police Medal for Gallantry/3rd Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—

S/Shri

1	Sheikh Zulfkar Azad	SSP	3 rd BAR TO PMG
2	Rashid Akber Makayee	DySP	2 nd BAR TO PMG
3	Mehboob Hussain Banday	Insp.	1 st BAR TO PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 05.06.2017 at 03:40 am, Police Bandipora received information that a heavily armed Fidayeen Squad comprising of 04 foreign terrorists R/O Pakistan intended a prolonged siege and extensive damage to CRPF 45 Bn located near to FCI Sumbal. The terrorists attempted by cutting the concertina wire fencing and forcing their entry by shooting at the sentry with bullets. In the meanwhile, Police Party of Police Bandipora also reached the spot. The sentries responded with alacrity and retaliated resulting in heavy exchange of fire. A core team of JKP headed by Sh Sheikh Zulfkar Azad, SSP Bandipora assisted by Sh Stanzin Losal, Addl. SP Bandipora, Sh Baljit Singh, DySP PC Bandipora, Sh Rashid Akbar Makayee SDPO Sumbal, Sh Mehboob Hussain Banday SHO PS Sumba and their buddy Sgt Mohammad Rameez 189/Bpr, Sgt Mohd Shafi 244/Bpr and Ct Ashaq Ahmad Dar 969/Bpr showing nerve of steel, volunteered for the said job. This rescue team comprising of Sgt Ab. Hameed 420/Bpr, Sgt Nissar Ahmad 430/Bpr, Sgt Tariq Ahmad 3135/Sgr, Ct Willayat Ali 154/AP 8th, Iftikhar Ahmad 342/Bpr, Ct. Aejaaz Ahmad 415/Bpr, Ct. Gulzar Ahmad 578/Bpr, Ct. Shamas din 719/Bpr, Ct. Aijaz Ahmad 928/Bpr, Ct. Farooq Ahmad 951/Bpr, Ct. Mushtaq Ahmad 535/AP 8th, SPO Ishtiyaz Mir, 15/SPO, SPO Raqeeb Ahmad 42/SPO, SPO Hilal Ahmad 49/SPO, SPO Aijaz Ahmad 51/SPO, SPO Shabir Ahmad 59/SPO, SPO Farooq Ahmad 65/SPO, SPO Jehangir Ahmad 82/SPO, SPO Ali Mohammad 138/SPO, SPO Abdul Rasheed 158/SPO, SPO Firdous Ahmad 167/SPO, SPO Shabir Ahmad 179/SPO, SPO Manzoor Ahmad 205/SPO, SPO Mohammad Asif 223/SPO, SPO Shafiqul Rehman 233/SPO, SPO Gh Rasool 278/SPO, SPO Shabir Ahmad 310/SPO, SPO Zahoor Ahmad 316/SPO, SPO Imtiyaz Ahmad 322/SPO, SPO Showkat Ahmad 323/SPO, SPO Jalal ud din 416/SPO and SPO Naseer Ahmad 425/SPO led by Sh Sheikh Zulfkar Azad put their lives in great risk as terrorists kept on firing indiscriminately upon the rescue teams. Sh Stanzin Losal Addl. SP Bandipora had got the area blocked by the team of Police Sumbal, Police Bandipora, SOG Bandipora and 13 RR around the target using concertina wire. Feeling the noose around their necks the terrorists started the deceptive firing in order to get a space for fleeing and to confuse the operation team, but the meticulous planning of Addl. SP Bandipora, DySP PC Bandipora along with their buddy did not let the terrorists to execute their evil designs, retaliated in an audacious manner and moved towards the target site in a fire retaliatory exercise resulting in the neutralization of 04 hard core foreign terrorists of fidayeen squad. Arms/ammunition recovered during the operation includes 4 AK-47 Rifle (damaged), 12 AK-47 Magazines (damaged), 137 AK-47 Rounds, 07 UBGL Grenades, 01 UBGL, 07 Grenades, 04 Ammu. Pouch and 03 Patrol Bottles. Case FIR NO 59/2017 U/S 307 RPC, 7/27 I A. Act stands registered in P/S Sumbal in this regard.

In this operation S/Shri Sheikh Zulfkar Azad, SSP, Rashid Akber Makayee, DySP and Mehboob Hussain Banday, Insp. displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 05/06/2017.

(No. 11020/158/2018-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN

Officer on Special Duty

No. 73-Pres/2020—The President is pleased to award the 2nd Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—

Shri

Shafat Mohammad Najar	DySP	2 nd BAR TO PMG
-----------------------	------	----------------------------

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 24-01-2018, at about 1900 hours, on a specific information about presence of terrorists in Village Chaigund Aadoora, Police Shopian in association with troops of 44 RR, 14 Bn CRPF under the command of SP Shopian laid a joint CASO of said Village to trace out the terrorists hiding there. In order to make the operation successful, 04 assault teams were constituted to cover the vulnerable areas effectively. Accordingly, all the exit routes including lanes by lanes and path ways through the Nallah and orchards were plugged and search operation started. On seeing the Police party headed by Shri Shriram Dinkar Ambarkar, IPS SP Shopian assisted by SI Arif Hamid I/C PC Keller Operations Keller marching towards the suspected house, the terrorists started indiscriminate firing upon the search parties looking for an escape from a particular route which was immediately manned by Police party headed by Shri Shafat Mohammad Najar, DySP Ops Keller. Due to the indiscriminate firing of terrorists, a youth and 02 girls sustained bullet injuries who were immediately shifted to hospital for treatment. In order to avoid any further civilians fatal/non fatal injuries, SP Shopian briefed the troops to evacuate the civilians trapped in the cordoned area to safer places. During the evacuation process, the Police parties came under heavy firing without any injury. Accordingly, the above Police Party decided to advance towards the terrorists. On sensing the crawling movement of troops, the terrorists opened volley of fire upon the joint troops. However, the fire was retaliated in a professional manner by the Police party including HC (Dvr) Bashir Ahmad 16/SPN, HC Mohd Farooq 116/AP 12th, Ct Tanveer Ahmad 497/Spn, Ct. Javid Ahmad 806/Spn, Ct Sanjay Kumar 488/IR 18th, Ct Mashooq Ahmad 627/IR 6th, SPO Gulzar Ahmad 211/Spn, SPO Gowhar Ahmad 162/Spn, SPO Tariq Ahmad 98/Spn, SPO Mohd Rafiq 150/Spn, SPO Gulzar Ahmad 349/Spn, SPO Farooq Ahmad 06/Spn & SPO Mohd Fazil 402/Spn who fought with courage, without caring for their lives and were instrumental in the elimination of 02. LT's namely Firdous Ahmad Lone S/o Abdul Rashid Lone R/o Ganowpora Shopian (category-B) and Sameer Ahmad Wani S/o Hilal Ahmad Wani R/o Audoora Cheegund, Shopian (category-C) of HM outfit. Details of arms/ammunition recovered during the operation are mentioned at seizure memo. Case FIR No. 21/2018 U/S 307 RPC, 7/27 A. Act has been registered in P/S Shopian and investigation taken up.

In this operation Shri Shafat Mohammad Najar, Dy.SP displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 24/01/2018.

(No. 11020/159/2018-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN

Officer on Special Duty

No. 74-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—

S/Shri

1	Chandan Kohli, IPS	ASP	PMG
2	Gowhar Ahmad Bhat	SI	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

In the intervening night of 13/14-10-2017, at about 2330 hours, information was received by SSP Pulwama about the presence of terrorists at village Litter Pulwama to carry out terror attacks in the District. Accordingly, SSP Pulwama informed Addl.SP Pulwama Sh. Chandan Kohli, IPS and in the meantime, it was known that terrorists are hiding in the joint house of Tariq Ahmad Malik, Raju Malik, Arif Malik (sons of Ghulam Hassan Malik and Bashir Ahmad Malik of the said village). This information was shared with 55 RR, 03 RR 182/183 Bn CRPF and a joint cordon of the targeted Mohalla was laid. Thereafter, Addl. SP Pulwama along with DySP (Ops) Pulwama with SOG party from Police Component Pulwama comprising of HC Lateef Ahmad 814/PL, SgCt Yashpaul 292/IR 1st Bn, SgCt Gh. Mohd 355/PL, SgCt. Gazi Shah 556/PL, SgCt Fayaz

Ahmad 342/PL, Ct Javaid Ahmad 853/PL, Ct Maqsood Ahmad 872/PL, SPO Aqib Ahmad 181/SPO-ANG, SPO Shoib Ahmad 314/SPO, SPO Hilal Ahmad 313/SPO, SPO Manzoor Ahmad 81/SPO, SPO Basheer Ahmad 234/SPO, SPO Manzoor Ahmad 277/SPO, SPO Touseef Ahmad 149/SPO and SPO Abdul Rasheed 128/SPO among others, 55 RR, 03 RR and 182/183 Bn of CRPF left towards Litter Pulwama in order to cordon the targeted house. Addl. SP Pulwama also instructed I/C PC Lassipora SI Mohammad Hafeez ARP- 109251 and I /C PP Lassipora SI Gowhar Ahmad EXK-109472 to reach out the targeted location. On reaching the targeted place, a joint cordon of Police Pulwama under the command of Addl. SP Pulwama was laid.

Despite having specified knowledge about the terrorists hiding in the target house, the search for the terrorists in the adjoining houses was started and the families were shifted to the safer places to avoid any casualty. Addl. SP Pulwama along with his team members which included SI Mohammad Hafeez ARP-109251, SI Gowhar Ahmad EXK- 109472, Ct Maqsood Ahmad 872/PL, SPO Touseef Ahmad 149/SPO, SPO Abdul Rasheed 128/SPO moved towards the targeted house which was already under cordon. The house was 03 storied and during search nothing was found in the first 02 floors. But as soon as the search party was moving to the 3rd floor of the house, terrorists hiding there started indiscriminate firing on the troops. However, they had a narrow escape in the incident. The presence of mind and gallant action shown by the officers by retaliating the fire inside the house and managed to escape from the said house. Meanwhile, the cordon was intensified on the directions of Addl SP Pulwama and 04 teams were constituted to execute the retaliation. One comprising of Addl SP Pulwama himself along with his SOG party which include Sgct Mohammad Shafi 1326/PL, SgCt Sunil Kumar 820/IR 11th Bn, Sgct Naseer Ahmad 884/PL, and Sgct Heemu Kumar 818/IR11th Bn and other troops of Army/CRPF cordoned the house from southern side Another 03 sides were accordingly cordoned by DySP (Ops) Pulwama Sh. Zaheer Abbas Jafari, SI Mohammad Hafeez ARP109251 and SI Gowhar Ahmad EXK-109472 along with their parties and counter parts of CRPF/ Army from Northern, Eastern and Western sides respectively. Since, it was dark, all measures so that terrorists could not escape and Generator was plugged on to illuminate the targeted area. This task was completed under the supervision of above named officers. After the illumination of targeted area, civilians present there were evacuated one by one which was personally executed by Addl. SP Pulwama Sh. Chandan Kohli IPS assisted by SI Gowhar Ahmad EXK-109472 and SI Mohammad Hafeez ARP-109251 amidst volley of fire fired by the terrorists. The evacuation of civilians was made possible with the help of covering fire provided by DySP (Ops) Pulwama Shri Zaheer Abbas Jafari. After evacuation process, the terrorists were given an opportunity to lay down their arms (through respectables of the area) which they denied and kept indiscriminate firing upon the troops. The officers/officials present there remained alert at the point of death and life, kept their mind cool/present and tackled such a crucial situation bravely which resulted the elimination of two terrorists who were later on identified as Waseem Ahmad Shah @ Usama (Cat. A++) S/O Gull Mohammad Shah R/O Tengpora Heff Shirmal Zainapora Shopian and Nisar Ahmad Mir (Cat-B) S/O Ab. Hameed Mir R/O Litter Pulwama. Arms/ammunition were made from the eliminated terrorists includes 1 AK-56 Rifle (damaged), 1 AK-47 Rifle, 3 AK-56/47 Magazines (1 damaged), 54 AK56/47 Live Rounds and 2 Body Pouch Chitra Colour (Burnt). Case FIR No. 363/2017 U/S 307, 148, 149, 336, 353 RPC 7/27 I. A. Act registered in Police Station Pulwama and investigation taken-up in this regard.

In this operation S/Shri Chandan Kohli, IPS, ASP and Gowhar Ahmad Bhat, SI displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 13/10/2017.

(No. 11020/160/2018-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 75-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/ 1st Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—

S/Shri

1	Parvaiz Ahmad Bhat	SI	PMG
2	Arif Ahmad Shekih	SI	1 st BAR TO PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

In the month of October 2017, a technical input was generated by ESU South Srinagar that PAK based LeT Commander Waleed Bhai has directed his valley based LeT Commander Mohammad Bhai R/O PAK to carry out a fidayeen attack in Srinagar City through his carders. On receipt of this input, SI Mohammad Irfan EXK-109318, SI Parvaiz Ahmad EXK-993381, SI Arif Ahmad EXK-109225, ASI Mohammad Amin EXK-971365, HC

Azad Ahmad EXK-984097, SgCt Mohammad Altaf EXK125500, SgCt Showkat Ahmad EXK-075602, CT Khursheed Ahmad EXK-096166, CT Saleem Khan EXK-021785, SPO Parvaiz Ahmad Mir 196/SPO, SPO Suhail Mushtaq 158/SPO, SPO Javid Ahmad 950/SPO, SPO Ab Gani Dar 122/SPO, SPO Gh. Mohammad 534/SPO and SPO Mohammad Saleem No. 209/SPO of ESU South Srinagar visited the area of operation of LeT Commander Mohammad Bhai R/O PAK i.e. Ananwan Handwara, Magam and Rafiabab Sopore and activated the local sources of the area. On 21/10/2017, at 2000 hours, the input was further developed by SI Mohammad Irfan, SI Parvaiz Ahmad, SI Arif Ahmad, ASI Mohammad Amin, HC Azad Ahmad, SgCt Mohammad Altaf, SgCt Showkat Ahmad, CT Khursheed Ahmad, CT Saleem Khan, SPO Parvaiz Ahmad Mir, SPO Suhail Mushtaq, SPO Javid Ahmad, SPO Ab Gani Dar, SPO Gh. Mohammad and SPO Mohammad Saleem No. through technical analysis and cultivated human sources that LeT Commander namely Mohammad Bhai R/O PAK of LeT outfit is hiding at orchards of Ananwan Handwara. A special team from ESU South Srinagar under the command of SI Mohammad Irfan and others visited the said village and got a complete briefing from the source. The team after carrying out the recce of the area reported back. The team also succeeded in zero in the area in which the said LeT Commander was hiding i.e. Ananwan Handwara. On 22/10/2017, at about 0400 hours, the team under the supervision of Sh. Ashish Mishra-IPS (SP South Srinagar) along with adequate nafri from ESU South Srinagar rushed to the spot. Before the operation was conducted, it was decided to share the information immediately with 30 RR/9PARA and joint operation was planned in the above mentioned area in order to avoid collateral damage and to conduct clean operation. All the operational nafri was divided into two parties. First party comprised of 30 RR was tasked to lay the outer cordon of the target area. The second party comprised of SP South nafri and 9 PARA was tasked to lay the inner cordon of orchards Ananwan Handwara in which the terrorist was hiding and if required to make an intervention under the command of Sh. Ashish Mishra-IPS (SP South Srinagar) with full coordination. All the parties positioned themselves according to the plan as enumerated above. The search operation was started during onset of the limelight and while carrying out search operation of the area, the terrorist opened indiscriminate firing upon the joint searching party resulting in the fierce fire fight. Since the terrorist was holding up huge cache of Arms/Ammunition, resulting in long drawn gun battle during which the terrorist made series of attempts to cause casualties to police/ SFs. However, the vigilant joint operational team exhibited extra ordinary professionalism/courage, neutralized one Pak Fidayeen terrorist later identified as @ Mohammad Bhai R/O PAK without any collateral damage. Arms/ammunition recovered from the possession of slain terrorist includes 1 AK-47 Rifle, 3 AK Magazines, 35 AK Live Rounds, 5 AK dead Rounds, 1 Pouch, 2 Grenade, 3 notes of Pak Currency (Rs.100), 1 note of Pak Currency (Rs. 500), 4 Notes of Indian Currency (Rs. 500), 4 tablets Medicine Ibuprofen, 1 Tablet Medicine Adrosve Genctide, 4 Tablets Medicine Doxycylin, 1 Medicine Alcohol Pad and 01 Medicine Bandit. Case FIR No. 109/2017 U/S 7/27 I.A.Act stands registered in Police Station Kralgund Handwara, in this regard.

It may be mentioned that the slain terrorist was operating in the area and in its surroundings for quite some time and was playing an important part for his mentors operating across the border. He was given the responsibility of receiving fidayeen groups from across the border and dispatching them to different parts of the valley. His elimination is believed to be a big achievement for the Police/SFs.

In this operation S/Shri Parvaiz Ahmad Bhat, SI and Arif Ahmad Shekih, SI displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 22/10/2017.

(No. 11020/164/2018-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN

Officer on Special Duty

No. 76-Pres/2020—The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry/ Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—

S/Shri

1	Abdul Jabbar, IPS	SSP	PPMG
2	Gh. Hassan Sheikh	DySP	PPMG
3	Mohd Aslam	DySP	PMG
4	Rishi Kumar Barwala	SI	PMG
5	Arif Iqbal Qureshi	CT	PPMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 08.07.2016, Shri Abdul Jabbar, IPS, SSP Anantnag developed an actionable intelligence regarding presence of terrorists of HM outfit in village Voi-Bomdoora Kokernag. Immediately, on receipt of the information, a joint strategy was chalked out by SOG Srinagar/Anantnag with 19 RR. Accordingly heavy deployments of SOG from Cargo Srinagar and SOG Hqrs Anantnag along with active assistance from the troops of 19RR, was launched for a counter insurgency operation under the command of SSP Anantnag with assistance of DySP (OPS) PC Kokernag and other Police party of District Anantnag present on the ground to control and coordinate the sensitive operation. The challenging task was dealt very tactfully & finally well planned cordon was laid. First joint search party comprising Shri Ab Jabbar, IPS, SSP Anantnag alongwith Shri Mohd Aslam., Dy. SP PC Kokernag, SI Rishi Kumar, ARP115577, Sgct Ashiq Hussain 407/IRP, Sgct Sanjeev Singh 439/IRP, Sgct Mohammad Khalil 377/IRP, Sgct Mushtaq Ahmad 368/IRP, Sgct Suresh Kumar 926/A, Ct Manzoor Ahmad 1849/A, Ct Mushtaq Ahmad 612/AWP, Ct Arif Hussain 546/IRP, Ct Sham Lal 527/IRP, Ct Tajamul Hussain 1481/A, Ct Khurshid Ashraf 580/Awt, Ct Ishfaq Ahmad 1616/A, Ct Zahoor Ahmad 639/IRP, Ct Ajay Kumar 235/IRP, Ct Asif Iqbal 1344/A, Basharat Ahmad No.1166/SPO, Waheed Ahmad Lone No. 425/SPO, Firdous Ahmad No.212/SPO, Bilal Ahmad No. 1298/SPO, Farooq Ahmad No. 668/SPO, Firdous Ahmad No. 1172/SPO, Aijaz Ahmad No. 1259/SPO, Adil Hussain No. 252/SPO, Imtayaz Ahmad No. 692/SPO, Ab Qayoom No. 263/SPO, Bashir Ahmad No. 875/SPO, Mohd Rafeeq No. 893/SPO, Irshad Ahmad No. 204/SPO, Mazoor Ahmad No. 342/SPO, Arshid Ahmad No. 552/SPO and Javid Ahmad No. 271/SPO entered into the house and they came under heavy volume of fire from 02 different directions. The second searching party comprising of Sh Javaid Iqbal KPS, SP (Ops) Srinagar alongwith Sh. Gh Hassan KPS, DySP (PC) Srinagar, SI Gowhar Rashid ARP109410, SgCt. Asif Iqbal Qureshi 1344/A, HC Ramesh Kumar 2194/S, HC feroz Ahmad 450/IRP, HC Parmanand Thapa 129/IRP, Sgct Shamas Din 378/IRP, Sgct Altaf Hussain 470/IRP, Ct Pawan Kumar 156/S, Ct Shabir Ahmad 4521/S, CT Parvaiz Ahmad 552/IRP, Ct Mohammad Maqbool 720/IRP, Ct Sushil Bali 356/IRP, Ct Rakesh Pandita 817/S, SPO Parvaiz Ahmad 362/SPO, SPO Mudasir Nabi 914/SPO, SPO Iftikhar Ahmad 307/SPO, SPO Mohammad Rameez 260/SPO, SPO Mohammad Alyas 301/SPO, Mohammad Parvaiz 363/SPO, SPO Raoof Ahmad 1019/SPO, SPO Mehraj-u-din 463/SPO, SPO Mohammad Amin 844/SPO and SPO Farooq Ahmad 594/SPO was also constituted.

At the first moment, civilians including children, women and elderly people were evacuated from the cordoned area to avoid civilian casualties. Shri Abdul Jabbar, then SSP Anantnag properly briefed & deployed nafri at strategic points to prevent escape of the hidden terrorists. After analyzing the situation, SSP Anantnag alerted the troops to keep the confidence & hold the cordon strongly. The hiding terrorists were asked to come out from the house and laid down their Arms. The adamant terrorists replied with heavy fire followed by grenades upon the cordoned parties to enable them to escape. However, the fire was effectively retaliated without caring for their precious lives which led to the killing of three terrorists including most wanted hardcore Divisional Commander of HM namely Burhan-ud-din Wani Arif S/O Muzafar Ahmad Wani (A++ Category) R/O Shareefabad Tral, Sartaj Ahmad Shiekh ©Khalid S/O Mohammad Munnawar R/O Takiya Ahmad Shah Peer Takiya Kokernag A+ Category) and Parvaiz Ahmad Bhat S/O Wall Mohammad Bhat R/O Noorpora Tral. Arms/ammunition recovered from the eliminated terrorists includes 2 AK-47 Rifle, 1 AK-56 Rifle, 9 AK Magazines, 4 UBGL Grenades, 2 UBGL Thrower, 181 AK Rounds, 2 Grenade, 3 Detonators, 2 Pull Throw, 02 LED Lites, 3 Pouch, 3 Battery, 2 Ear Phones, 2 Scent Bottles and 2 Gillette Blades. Case FIR No. 117/2016 U/S 307 RPC, 7/27 A. Act has been registered in P/S Kokernag in this regard.

Needless to mention that the terrorist commander Burhan Wani was active since last six years known as Poster boy. He was acting as Divisional Commander HM and involved in a number of terrorist activities. On his directions, HM carried out attacks on SFs/Police leading to killing of several SFs/police personnel and injuries to others. He was mastermind in spreading Cyber war against the Government of India by using Hi-tech Social media He was mastermind in motivating the youths to join terrorist ranks. All the three slain terrorists were great threat for peace and order in SKR particularly main towns on NSW viz Bijbehera, Anantnag and Awantipora including Railway track.

In this operation S/Shri Abdul Jabbar, IPS, SSP, Gh. Hassan Sheikh, DySP, Mohd Aslam, DySP, Rishi Kumar Barwala, SI and Arif Iqbal Qureshi, CT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 08/07/2016.

(No. 11020/165/2018-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN

Officer on Special Duty

No. 77-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/ 1st Bar to Police Medal for Gallantry/ 2nd Bar to Police Medal for Gallantry/3rd Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—

S/Shri

1	Shriram Dinkar Ambarkar, IPS	SP	2 nd BAR TO PMG
2	Ifroz Ahmad	ASP	1 st BAR TO PMG
3	Ashiq Hussain Tak	DySP	3 rd BAR TO PMG
4	Sanjay Kumar Dhar	SgCT	PMG
5	Sameer Ahmad	SgCT	PMG
6	Mohd Ashraf Dangroo	CT	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 31-03-2018 Police Shopian received specific information that HM terrorist cadres operating in District Shopian are convening a meeting at Village Kachdoora to discuss the strategy to be adopted for carrying out more and more subversive actions in district Shopian. The said village was surrounded by thick orchards had been very vulnerable from terrorism point of view and conducting an operation in such an area was a challenging task for the Police/SI²s in the prevailing situation of fear psychosis created by terrorists. Upon developing a specific input about the presence of HM leadership in the said village, it was decided to launch a quick cordon and search operation in village Kaehdoora. In order to make the operation successful two Police/SF teams under the supervision of SP Shopian were constituted to zero in on the location/hideout of terrorists and subsequently neutralize them without any collateral damage. For the said purpose, DIGP SKR Anantnag divided Police Personnel into two parties. The First party comprising of Police Shopian and QRTs of 34 RR and 14th Bn CRPF headed by SP Shopian assisted by Dy.SP Hqrs Shopian was asked to lay the cordon of the target area from North Eastern and South Eastern side and the second Police part' and QRTs of 34 RR and 14th Bn CRPF headed by SP Ops Shopian assisted by and DySP PC Keller was tasked to lay the cordon of the target area from North-West and South-Western side. All the parties positioned themselves according to the prepared plan as enumerated above. The cordon area comprised of a very difficult terrain which included scattered residential houses, dense orchards, deep Nallas and other dense vegetation. "lbe area was sealed off and all the possible escaping routes including path ways for orchards, interior roads & lanes/by-lanes were plugged tightly. Two search parties comprising of Police Shopian and QRT of 34 RR and 14 Bn CRPF, under the supervision of Shri Shrimm Dinkar Ambarkar-IPS, SP Shopian & Shri Ashiq Hussain DySP and second party comprising of Police Shopian and ORI of 34 RR and 14 Bn CRPF under the supervision of Shri Ifroz Ahmad. SP Ops Shopian and Shñ Majad Ali DySP Ops Keller were constituted. During the search process the terrorists hiding in the area hurled grenades following by indiscriminate firing upon the troops from different sides with their illegal automatic weapons with the intention to cause damage to the forces and to break down the cordon resulting in bullet injuries to 03 Army personnel who were immediately evacuated to hospital for treatment, however, they later on succumbed to their injuries. The hiding terrorists kept changing their locations again and again in order to avoid disclosing their specific location. The search party immediately took cover and retaliated with a strategy and precision due to which the terrorists did not find any opportunity to escape frail thebesieged area. In order to avoid any civilian causality the operational Commander (SP Shopian) asked the parties to evacuate the people trapped in the cordoned area. While the evacuation was taking place the assault groups headed Shri Shriram Dinkar Ambarkar SP Shopian, Shri Ifroz Ahmad SP Ops, Shri Ashiq Hussain DySP and Shri Majad Afi DySP came under heavy fire, however they did not lose their concentration and continued the evacuation process without caring for their lives and completed it successfully. In the meantime, a violent mob started pelting stones on the troops engaged in the cordon with the intention to breakdown the cordon, however, the law & order components deployed in the area for the purpose exercising maximum restrain and using minimum force handled the situation tactfully. In view of darkness, there was every apprehension that *the* besieged terrorists may attempt to escape from the cordon in the night, as such, it was decided to reinforce the cordon and the troops were directed to hold up the CASO strictly and strongly so that the trapped terrorists may not flee in the darkness. In the meantime, the cordon party came under heavy firing from outside the cordon as the terrorists from other locations tried to help the trapped terrorists to escape from the cordon. This firing was effectively retaliated by the cordon party without loosening the cordon in any manner and thus foiled their nefarious plan. However, the trapped terrorists made repeated attempts to come out of the cordon by firing indiscriminately upon the cordon party taking advantage of *the* darkness. This fire was effectively retaliated by the cordon party and repulsed the trapped terrorists back into the cordon area.

In the first light the search operation was resumed and the search party was able to zeroing the suspects place and the adjoining houses in which the tenonst presence was established. The besieged terrorists were asked to surrender; however, they denied and opened heavy volume of fire upon the forces. The search party headed Shri Amit Kkmar, IPS, DIGP SKR Anantnag and Shri Shriram Dinkar Ambarkar SP Simpton retaliated the lire effectively with courage wid bravely and neutralized the top 03 terrorist. At the same time, the terrorists hiding in the adjoining house opened heavy the upon the search pans . lthese terrorists were once again asked to lay down the arms. However, they refused to accept the call for sun'ender and resumed heavy firing. Then, the assault parties includinu Shri Ifroz. SI Muneer Ahmad EXK I 09557, SI Arif Hamid ARP-I I 5778 HC Ravees Ahmad Sgct Fariq Ahmad 189/SPN, Sgct Firdous Ahmad 493/SPN, Sgct Sanjay Kumar 523/IR 18, Sgct Raj Pal Singh 510/SPN, Sri

Mohd Akliter 468/AP 14, Sget Shafeeq Ahmad 469/AP 4th, SgCt. Sameer Ahmad No. 495I PL. Ct. Mohd Ashraf 464/SPY, Ct Mohd Waseeni 3789/PW, Ct Aijaz Ahmad 543/SPY, Ct Asif Iqbal 5561/SPN, Ct Shabir Ahmad 789/SPN. Ct Bilal Rasool 761/SPN, Ct Naseer Ahmad 764/SPN. Ct Nazir Ahmad 699/SPN. Ct Irshad Ahmad 462/SPN, Ct Showkat Alunaci 52911R 10th, Ct Shahbaz Ahmad 635/IR 18, SPO Bilal Ahmad 413, SPO Mohd Iqbal 182, SPO Zameer Ahmad 32, SPO Ab Ahad 169, SP() Reshpal Lal 555/J, SPO Diyal Sineh 859/1, SPO Muzafar Wani 357/SPN, SPO Zahid Ramzan 184/SPO Mohd Ashraf 239/SPN, SPO Ab Salam 201/Kgm, SPO Shahir Ahmad 203, SPO Gh Hassan 01, WO Shiraz Ahmad 171, SPO Nahida After 04. SPO Nasir Ahmad 316, SPO Gulxzar Ahmad 66, SPO Ichpal Singh 27, SPO Javid Ahmad 144 and SPO Narinder Singh 245/B retaliated the terrorist lire effectively and successfully neutralised two more dreaded terrorists. Five terrorists are eliminated namely Ishfaq Ahmad Thoker S/o Ab Majeed R/o Padderpora, Aitmad Ahmad Dar S/o Fayaz Ahmad R/o Amshipora, Samir Ahmad Lone S/o GH Nabi r/o Hillow. Aqib Iqbal Malik S/o Mohd Iqbal R/o Ringath D H Pora Kulgam and Gayas-UI- Islam S/o Bashir Ahmad Thoker R/o Padderpora of HM outfit. Arms/ammunition were recovered from the possession of slain terrorists includes 01 INSAS Rifle, 109 INSAS Rounds, 03 INSAS Magazines, 02 AK-56, 04 AK 56 Magazines (01 damaged), 106 AK 56 Rounds, 16 Pistol Rounds and 04 Lvs Seizure memo arms/ammunition recovered memo's etc. Case FIR No. 91/2018 U/S 307,336,353 RPC 7/27 A. Act, has been registered in P/S Shopian, in this regard.

In this operation S/Shri Shriram Dinkar Ambarkar, IPS, SP, Ifroz Ahmad, ASP, Ashiq Hussain Tak, DySP, Sanjay Kumar Dhar, SgCT, Sameer Ahmad, SgCT and, Mohd Ashraf Dangroo CT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 31/03/2018.

(No. 11020/13/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 78-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—

S/Shri

1	Hilal Khaliq Bhat	DySP	PMG
2	Dr. Aejaaz Ahmad Malik	DySP	PMG
3	Riyaz Ahmad Laway	SgCT	PMG
4	Yasir Ahmad Pathan	CT	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 04.12.2017, a group of terrorist had laid an ambush to carry out fidayeen attack on Army Convoy near the Village- Nano Badrazund, Kulgam and tired upon the Army vehicles. The patrolling party of Army alongwith Police headed by DySP PC Mirbazar Shri Aijaz Malik with his buddy SgCt Riyaz Ahmad No. 1027/Kgm also sustained injuries. Consequent upon this, the patrolling party of Police / Army retaliated effectively to aver fidayeen attack. Also the patrolling party acted swiftly and did not leave any chance for the terrorist to flee away from die spot. Meanwhile, SSP Kulgam alongwith SOG components of District Kulgam CRPF 163 En and Army personnel of 10 Sikhli reached on spot and launched the search operation in the area and identified the target house where terrorists had taken shelter. The operational Police party headed by Aijaz Ahmed Malik DySP PC, Mirbazar and Hilal Khaliq DySP Kulgam and Dr. Aejaaz Ahmed Malik. DySP PC Khudwani Manzgam and his team engaged these terrorists in gun battle and the area was cordoned by the backup parties of Army/Police, Kulgam headed by SHO Qazigund DySP Prob Sahil Mahajan. It was also learnt that the terrorists have forcibly entered in a private building nearby, NHW. The terrorist were asked to surrender hut they refused and hurled grenade towards police party followed by heavy firing which we retaliated by the joint party of Police/Army. In the first instance, one soldier of 10 Sikh sustained grievous injuries. Die police/Skis sensitized the whole area; the locals of the area were evacuated to avoid civilian casualties. During ensuing encounter, 02 FTs(Pak Nationals) and LT were eliminated who were identified as Furkan R/o Pakistan, Abu Maviyah R/o Pakistan and Yawar Bashir S/o BashirAhmed Wani R/o Habilish. Arms/Ammunition recovered from the possession of the slain terrorists includes 03 AK-47 Rifle (damaged), 04 AK Magazines (02 damaged), 54 AK Rounds, 01 Pouch Chitra 01 Trimmer, 03 Strip Medicine (OX I4G), 01 Vaseline Nafees, 02 Oil Bottle (Streak), 01 Key, 01Ball Pen, 01 Bag Black (Stodious), OI Booklet, 03 Brush (usable), 01 Shave Machine (Blue), 01 Nail Cutter, 01 Watah (Black). 04 Cells, 02 Tube, 01 Pack Blade Silver (Made in Pakistan), 01 Miswak, 01 Charger (Black), 02 Pouch and 01 UBGL. Case FIR No. 333/2017 302, 120-B, 332 RPC 7/27 Arms Act stands registered in Police Station Qazigund, in this regard.

The officers/officials involved in this operation maintained presence of mind by evacuating all the civilian/pedestrians to safer places. In the mean time, reinforcement front PC Kulgam headed by DySP PC Kulgam Shri Hilal Khaliq alongwith his buddy SgCt Yasir Ahmed No 657/Kgm and other troops of SOG arrived at the location and cordoned the area swiftly in a professional manner.

In this operation S/Shri Hilal Khaliq Bhat, DySP, Dr. Aejaz Ahmad Malik, DySP, Riyaz Ahmad Laway, SgCT and Yasir Ahmad Pathan, CT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 04/12/2017.

(F. No. I 1020/14/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 79-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/ 1st Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—

S/Shri

1	Mohd Nawaz Khandey	DySP	1 st BAR TO PMG
2	Aijaz Ahmad Mir	ASI	1 st BAR TO PMG
3	Ashiq Hussain Yatoo	CT	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 06.03.2016, specific information was received about the presence of terrorist in village Buchroo located towards north east of District Kulgam and hypersensitive terrorism infested area. Taking into the contemplation, distinctive location and topography of the area, Kulgam police/police party of PC Srinagar under the supervision of Sh. Mumtaz Ahmed—JKPS, then SSP Kulgam was grouped into two parties. Each party was assigned with different responsibilities. The first party led by DySP OPS Manzgam, Sh. Mohd Nawaz Khanday-KPS and his buddy Ct. Ashiq Hussain No, 614/Kgm EXK-126205 along with police party were assigned for inner cordon. DySP (Ops) Manzgam was heading the operation as first tier avenger and the second party headed by ASI Aijaz Ahmed 2606/S EXK-983076 were assigned for outer cordon and law and order duty. Terrorist had taken shelter in village Buchroo (Mir Mohalla) which, is densely populated surrounded by dense plantation and easy escape routes. The cordon was tightened and no space was left for terrorists to break the cordon. The first party led by DySP (OPS) Manzgam along with his buddy/police party cordoned Buchroo (Mir Mohalla) without caring for their lives in a professional manner in civil vehicles to make revelation. Terrorist opened fire and lobbed grenade upon the first approaching party in order to escape from the village and tried to impose casualties in which DySP (OPS) Manzgam along with his buddy narrowly escaped and bravely fought back with the terrorist. DySP (Ops) Kulgam, DySP (OPS) Manzgam along with police party consisting of ASI Shahnawaz Ahmed 3656/S, ASI Surinder Singh 45/IR 11th Bn, HO Sukdev Singh 04/IR 11th Bn, HC Azad Ahmad Naik 3856/S, SgCt Manzoor Ahmad 961/S, Ct Ruksar Ahmad 656/Kgm, Ct Mohd Altaf 4529/S, Ct Mukhtar Ahmad 4546/S, Ct Fida Hussain 718/Kgm, Mohd Iqbal 973/Kgm, SPO Riyaz-ul-Islam 563/SPO, SPO Manjeet Singh 182/SPO, SPO Surinder Singh 839/SpO, SPO Mohd Ashraf 388/K, SPO Bilal Ahmad 373/K, SPO Waseem Ahmad 472/K in particular, audaciously/tactically took position and fired upon terrorist. To obstruct him from further movement and to avoid civil killings, as the people of the said area were very close to the target of terrorist. DySP (OPS) Manzgam along with his buddy have taken every risk to save them from the direct hitting bullets as the terrorist was very much willing to target on common masses so that he can fled away from the spot creating law and order problem. DySP (OPS) Manzgam with his buddy and SOG party along with 1st RR use to take every risk without thinking that they too were under the fierce encounter and are under the close vision of the terrorist, still they have evacuated most of the people from the vicinity and kept them at the safer place. Since the terrorist was hiding in the village and the firing was going on from both the sides. At the other end, police party led by Shri Zaheer Abbas DySP Ops Kulgam with his buddy Ct. Mohd Altaf have shown outstanding performance and immediately laid outer cordon of the area. ASI Surinder Singhand ASI Shahnawaz Ahmed did not allow the gathering to swell and controlled the situation meticulously. The entire team played a vital role during the encounter without caring for their personnel safety. The ensuing gun battle lasted for about four hours and culminated with the elimination of one hardcore HM terrorist namely Dawood Ahmed Sheikh (A+ category) and recovery of huge arms/ammunition including 1 AK-56 Rifle, 2 AK-56 Magazines and 15 AK Rounds. Case FIR No. 49/2016 U/S 307 RPC and 7/27 A. Act stands registered in P/S Kulgam in this regard.

Needless to mention that the slain terrorists were involved in a number of cases viz FIR bearing No. 137/2015 U/S 302/RFC, 7/27 A. Act in P/S Kulgam registered for the killing of a retired Police officer Bashir Ahmed Dar R/O

Ashmuji Kulgam and in other FIRs. With the elimination of said terrorist, HM received a tremendous setback and plans of HM cadre to sabotage SANJY-2016 have been thwarted.

In this operation S/Shri Mohd Nawaz Khandey, DySP, Aijaz Ahmad Mir, ASI and Ashiq Hussain Yatoo, CT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 06/03/2016.

(No. 11020/16/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 80-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—

S/Shri

1	Mohd Majid Malik	ASP	PMG
2	Gh. Hassan Sheikh	DySP	PMG
3	ZahoorAhmadGanie	Insp.	PMG
4	Gh Rasool	HC	PMG
5	Tawseeq Ahmad Dar	HC	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

During the intervening night of 29/30-11-2017 an input was received by CIU Budgam-that 3-4 Fidayeen terrorists of JeM (Afzal Guru Squad) outfit were hiding in joint house of Assadullah Bhat and Mohammad Ahsan Bhat both son's of Gh. Ahmad Bhat and are reportedly planning for a suicidal attack on SF establishment in District Budgam. Accordingly, Police parties lead by SSP Budgam Sh.Tejinder Singh IPS, ASP Budgam alongwith Sh. Mohd Majid Malik-JKPS, DySP PC Chadoora, Sh. Gh Hassan Shiekh-JKPS and DySP PC Budgam Sh. Parupkar Singh-JKPS including SFs proceeded towards the target location. The joint team of Police and SFs cordoned off the target area. In order to safeguard life and property of civilians, all inhabitants of surrounding houses including target house were evacuated successfully without any collateral damage. Hence four joint teams of police and other SFs were formulated to retaliate and neutralize the terrorists. The first team led by ASP Budgam assisted by Insp. Zahoor Ahmad Ganie, SI Rabinder Singh I/C QRT PC Budgam, HC Tawseeq Ahmad Dar and QRT of 181 BN CRPF, were given to cover the western side of the target house. Second team led by DySP PC Chadoora assisted by HC Gh. Rasool and HC Nazir Ahmad I/C QRT Pakherpora was given the responsibility to cover Eastern side of the target house. Third team led by Major Aditya of 10 Gharwal Rifles, Maj. Pankaj of 53 RR and Capt. Shashank of 10 Gharwal Rifles was given the responsibility to cover the rear side of the target house. The fourth team led by Maj. Jarmal Sandhu of 53RR and QRT of 178 BN CRPF was given the responsibility of Southern side of the target house. As the gun fight continued, terrorists hiding in the target house positioned themselves on the first floor of the house and started targeting the security forces from all sides. But all the four teams had taken their strategic positions hence terrorists failed to hit any of them. The stone pelting mob was trying their best to dislocate the forces deployed in cordon and make the way for trapped, terrorists to escape. Meanwhile one of the dreaded terrorists came out of target house and lobbed a grenade upon the party of Sh. Gh. Hassan Sheikh-JKPS Dy. SP operations Chadoora, HC Nazir Ahmad I/C QRT ,Pakherpora and others in order to escape the cordon. But keeping their nerves, the team at once pounced upon the terrorist with volley of bullets in such a way that the terrorist was left with no option but to move back into the target house. After a while. the hiding terrorists, made a second attempt by lobbing grenades and tried to cause causality to the Police/SFs and escape from the spot. However, the team retaliated back with full might and neutralized him instantly, who was later identified as Fauji Chacha, a Fidayeen terrorist of JeM outfit R/Q Pakistan. Another terrorist came out from the target house and in a bid to escape the cordon ran towards the western side of the house firing indiscriminately upon the SFs deployed on that side. The party deployed at that side led by Sh. Mohd Majid Malik-KPS and assisted by SI Rabinder Singh I/C QRT PC Budgam retaliated back courageously without caring for their personal safety and eliminated the terrorist from a close range who was later identified as Abu Bakar R/O Pakistan. The third terrorist came out in same fashion lobbying grenades and firing indiscriminately between the area of Maj. Jarmal Sandhu of 53RR, Maj. Aditya of 10 Garhwal Rifles, Maj. Pankaj of 53 RR and Capt. Shashank of 10 Gharwal Rifles and who in retaliation without caring for their personal safety and in a gallant way opened LMG fire on the fleeing terrorist eliminating him on the spot. This terrorist was later identified as Shabir Ahmad Dar @ Shabir Thoker R/O Thokerpora Rajpura, Pulwama. During search three dead bodies were recovered and later all the three were identified as, Fauji@ FaujiChacha of Afzal Guru Squad (Fidayeen A++), Abu Bakar of Afzal Guru Squad (Fidayeen A++), Shabir_Ahmad Dar@ Shabir Thoker (Category C).

Arms/amm, were recovered from their possession includes 01 AK47 rifle bearing No.1968-MK-4950 w/o cleaning rod (piston grip damaged), 05 AK-47 Magazine (02 magazines damaged), 66 AK 47 Live Rounds, 01 AK-56 w/o No./Cleaning rod Gas tube and front hand guard semi burnt shelling catch broken), 02 AK-56 Magazines, 45 AK 56 Live Rounds, 01 Short AK-47 (Semi burnt), 03 Pouch (Semi Burnt) and 01 Aadhaar Card No. 364423671032. Case FIR No. 107/2017 U/S 307 RPC, 7/27 A. Act, 03 PASSA stands registered in Police Station Charar-i-Sharief, in this regard.

In this operation S/Shri Mohd Majid Malik, ASP, Gh. Hassan Sheikh, DySP, Zahoor Ahmad Ganie, Insp., Gh Rasool, HC and Tawseeq Ahmad Dar, HC displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 30/11/2017.

(No. 11020/17/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 81-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—

S/Shri

1	Ravinder Kumar	SI	PMG
2	Syed Waseem Akram	SI	PMG
3	Abdul Wahid Sheikh	SgCT	PMG
4	Tasaduk Hussain Bhat	SgCT	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 26-09-2017, Police Baramulla received information through reliable sources regarding presence of terrorists at Maidan valley Uri. The information was shared with 34 RR Army. Accordingly Police Baramulla/34 RR launched a joint search operation at Maidan valley. The search party under the command of Shri Shafkat Hussain, Addl. SP Baramulla and Syed Javaid DySP, SDPO Uri who were searching a part of suspected area, sensed that the terrorists are hiding inside a hideout and immediately they directed their parties not to get close to the hideout to avoid any civilian/SF causality. Rescue team of police personnel was framed headed by SI Ravinder Kumar, EXK-791328 comprising of SI Syed Waseem Akram ARP-115586, SgCt Ab. Wahid EXK-108194 and SgCt Tasaduk Hussain No. ARP-105669 and led it from front.

Rescue party of Police headed by SI Ravinder Kumar got engaged in rescuing the civilian adjacent to target site. During rescue operation, Police party were fired upon by the terrorists, however, no retaliation was made to avoid civilian causality. Soon after completion of the evacuation exercise, a joint assault party was framed comprising of SI Syed Waseem Akram, SgCt. Ab Wahid and SgCt Tasaduk Hussain headed by SI Ravinder Kumar were assigned the role of site intervention. The hiding terrorists were challenged and asked to come out from the house and surrender before the police party, instead the hiding terrorists opened indiscriminate fire upon police party and tried to break the cordon. However, the fire was retaliated and SI Ravinder Kumar with his men remained committed and did not allow the terrorists to come out from the site and break the cordon. The fierce encounter started between the assault party consisting upon SI Waseem Akram, SgCt Ab. Wahid, SgCt Tasaduk Hussain, and SI Mohd Murtaza 7601/NGO, HC Muneer Ahmad 295/BD, SgCt Manzoor Ahmad 444/B, Ct. Sheeraz Ahmad 1425/B, Ct. Mohd Ishaq 1070/B, Ct Syed Arif Hussain 1277/PL, Ct. Ashiq Hussain 602/B, Ct. Zeeshan Ali 1280/B, Ct. Hilal Ahmad 490/B, Ct, Bashir Ahmad 437/IRP 13th Bn. Recommended for OTP), and (SPO Mukhtar Ahmad 485/SPO, SPO Irshad Ahmed 678/SPO, SPO Shabir Ahmad 437/SPO, SPO Mohd Sadiq 487/SPO, SPO Tanveer Ahmad 799/SPO, SPO Javid Ahmad 1125/SPO, SPO Sayeen Tanveer 319/SPO, SPO Showkat Ahmad 526/SPO, SPO Ali Mohd 798/SPO, SPO Bashir Ahmad 1234/SPO, SPO Zaffar Iqbal Mir 904/SPO (Sgr), SPO Abdul Rashid 199/SPO and SPO Mohd Farid 24/SPO under the outer covering support of joint operation teams and terrorist remained continued for hours together during which the recommendees showed high order camaraderie and retaliated the fire from a very close distance. The recommendees and others intensified the retaliation which leads to their intervention at the site and further advancement to the site where terrorists were hiding. The recommendees without caring for their lives opened volley of fire towards the site where terrorists were hiding. The close range gun battle between recommendees and terrorist took place more than half an hour which lead to elimination of dreaded terrorist of HM outfit, who were later on identified as Ab. Qayoom Najar S/o Ab, Rashid R/O Mumkak Mohalla Sopore, Chief Commander of Lashkar-e-Islam outfit (A++ category terrorist). Case FIR No. 71/2017, U/S 7/27 Arms Act, 307 RPC, stands registered in Police Station Uri, in this regard. Arms/ammunition recovered from the scene of occurrence includes 01 AK-47 Rifle, 04 AK-47 Magazines, 120 AK-47 Rounds, 01 Pistol, 06 Pistol Magazines and 68 Pistol Rounds.

In this operation S/Shri Ravinder Kumar, SI, Syed Waseem Akram, SI, Abdul Wahid Sheikh, SgCT and Tasaduk Hussain Bhat, SgCT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 26/09/2017.

(No. 11020/18/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 82-Pres/2020—The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry/2nd Bar to Police Medal for Gallantry/ 4th Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—
S/Shri

1	Harmeet Singh	SSP	4 th BAR TO PMG
2	Gh Mohammad Sheikh	ASI	1 st BAR TO PMG
3	Farooq Ahmad Mantoo	ASI	2 nd BAR TO PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 30-11-2017 at about 09:45 AM while acting on specific information regarding movement/ presence of LeT terrorists in Kumar Mohalla of Sagipora area, Sopore Police with the assistance of Army 22-RR & 179/ 177/ 92 Bn CRPF cordoned off the area and launched search operation. During search operation contact was established with one terrorist who was hiding in a Nallah near water point in Kumar Mohalla of Sagipora area who was asked to surrender, in return the terrorist opened heavy fire with his sophisticated weapons on the Police/ SFs, Since there were some civilians inside the cordon area and as such the Police/SFs to avert the civil causality could not retaliate effectively and first preference was given to evacuate the civilians. Accordingly, a joint party including Shri Showkat Ahmad-Dy.SP (Ops) Sopore, ASI Gh. Mohammad 281/Spr, HC Muzaffer Ahmad 34/Spr, Sgct Mushtaq Ahmad 247/Spr, Sgct Irian Farooq 389/Spr, ASI Farooq Ahmad 24/Spr, Sgct Javid Ahmad 15/Spr, Ct. Myser Ahmad 475/Spr, Ct Younis Ahmad 721/Spr, Mohd Ashraf 418/SPO, Khurshid Ahmad 298/SPO, Sajad Ahmad 426/SPO, Javid Ahmad 26/SPO, Mohd Arif 54/SPO, Bilal Ahmad 343/SPO, Ab. Hamid 315/SPO, Aijaz Lateef 308/SPO, Asif Rasool 198/SPO, Mohd Ashraf 180/SPO & Ishfaq Lateef 10/SPO led by Shri Harmeet Singh-KPS- SSP Sopore was formed to evacuate the civilians. The joint party started the civilians evacuation process and while evacuating the civilians the hiding terrorist fired upon the joint party in which ASI Gh. Mohammad 281/Spr, ASI Farooq Ahmad 24/Spr and SSP Sopore, who were leading in front had narrow escape and Dy.SP (Ops) Sopore, HC Muzaffar Ahmad 34/Spr, Sgct Mushtaq Ahmad 247/Spr and Sgct Irfan Farooq 389/Spr, who were also the members of joint party gave them covering fire. But the party did not lose their morale and continued the evacuation process till all trapped civilians were shifted to the safer places. After complete civilians evacuation, the cordon was tightened and all entry and exist points were resealed, so as to ensure that the terrorist do not escape from the area. Since the terrorist was hiding, in the Nalla and the adjoining area was harshly undulated and there were apprehension of terrorists escape. So keeping in view the situation, SSP Sopore and his team volunteered themselves for final and last assault upon the terrorist and accordingly they started approaching towards the terrorist in crawling position during which the terrorist kept firing continuously and even many bullets hit the closest of SSP Sopore and his team, but they didn't lose their morale and continued approaching towards the terrorist. As soon as they reached close to the terrorist they thoughtfully stood up from the crawling position and effectively fired volume of bullets upon the terrorist resulting which the terrorist got killed on spot, who has been later on identified as Muzammil R/O Pak (A++) of LeT outfit vide PHQ Categorization list No. OPS/RWD/Criteria/2017/1229-60 Dated 15-11-2017 at S. No. 182. Arms/ammunition recovered from the possession of slain terrorist includes 01 AK-47 Rifle, 05 AK Magazines, 124 AK Rounds, 01 UBGL, 03 UBGL Rounds, 01 Pouch and 01 Magnetic Compass. Case FIR No. 92/2017 U/S 307/IPC, 7/27 A. Act stands registered in Police Station Bomai, in this regard.

In this operation S/Shri Harmeet Singh, SSP, Gh Mohammad Sheikh, ASI and Farooq Ahmad Mantoo, ASI displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 30/11/2017.

(No. 11020/19/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 83-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—

S/Shri

1	Raiz Ahmed	DySP	PMG
2	Javid Ahmad Lone	SI	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 02-11-2017, a credible input was received about the presence of foreign terrorists in village Naristan Samboora. Accordingly, cordon was carried out jointly by the Police Awantipora, Army 50-RR and 130/180 Bn CRPF under the close supervision of Shri Mohammad Zaid, SSP Awantipora assisted by Dy. SP (PC) Pampore Raiz Ahmed and SI Javid Ahmad Lone No. EXK-983086. During search operation suspicious movement was noticed in the house of Hilal Ahmad Khanday S/O Mohammad Shaban Khanday R/O Naristan Samboora. The joint party moved towards the said house where from terrorists fired indiscriminately upon the joint team. However, the target house was closely cordoned off by the search party to evade the escape of terrorists. Owner of the house and his family members were asked to come out from the target house, As the family members were about to leave the house, the terrorist hiding inside the house fired indiscriminately upon the joint search party due to which civilian got stuck in the house. The fire was retaliated in self-defense. The hiding terrorist was asked to surrender and also to allow the family members to come out of the house which the terrorist declined. It was planned to evacuate the family members trapped inside the house first. The Joint search party comprising of Shri Raiz Ahmed-JKPS, Dy.SP (PC) Pampore, SI Javid Ahmad Lone, ASI Irshad Ahmad 346/Awt, HC Karnail Singh 776/AP 5th Bn, HC Ab. Rashid Khanday 86/Awt, Sgct. Haq Nawaz Yousuf 538/Awt, Sgct. Parvaz Ahmad 166/Awt, Ct. Saqib Rasool 653/Awt, Mohammad Rafeed 374/IRP 18th Bn, Ct. Mukhtar Ahmad Bhat 727/Awt, SPO Showkat Ahmad 74/SPO, SPO Kan Ahmal 287/SPO, SPO Shah Arif 654/SPO, SPO Irshad Ahmad 228/SPO, SPO Mudasir Ahmad 55/SPO, SPO Waseem Raja 189/SPO, SPO Farooq Ahmad 347/SPO, SPO Muzaffar Ahmad 292/SPO, SPO Mohd Afzal Mir 11/SPO and SPO Sameer Ahmad Dar 145/SPO entered the house premises, where from they came under heavy volume of fire. Despite that they proceeded meticulously towards the house and successfully opened the door of the room wherein the family members were trapped. All the family members ran out of the house under the cover of search party who on one hand engaged the terrorist in firing and on the other took the family members safely out of the gate. While seeing that the search party is meticulously moving towards him without caring for their lives, the hiding terrorist while trying to jump out from the house fired indiscriminately towards the search party in order to make his escape good. But the joint search party with their prompt action and without caring threat to their lives positioned themselves against the terrorist and killed him with accurate fire, who was identified as Badar Bai of JeM outfit (FT). Arms/ammunition recovered from the possession of slain terrorist includes 01 AK47 (damaged), 04 AK Magazines (03 damaged), 88 AK Rounds, 01 UBGL Grenade (damaged), 03 Chinese Grenade, 01 UBGL, 01 Sunglass Cover (damaged), 01 Medicine, 01 Tooth Brush, 02 Batteries Small, 01 Tactical Pouch, 01 Lip Guard and 01 Colgate. Case FIR No. 192/2017 U/S 302, 307 RPC, 7/27 A. Act stands registered in P/S Pampore, in this regard.

In this operation S/Shri Raiz Ahmed, Dy. SP and Javid Ahmad Lone, SI displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 02/11/2017.

(No. 11020/21/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No.84-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—

S/Shri

1	Tahir Amin Sheikh	DySP	PMG
2	Mohd Iftikhar Lone	SgCT	PMG
3	Bilal Ahmad Malla	SgCT	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 11.10.2017, Bandipora Police has received information through reliable source that Terrorists are hiding in the Village Paribal Salamabad Hajin and these terrorists are planning to target nearby Army/Police camp. Accordingly, the input

was further shared with Army 13 RR and CRPF 45 Bn. The operation was meticulously planned and during the wee hours of 11.10.2017, a joint team of Police Bandipora under the overall supervision of Sh Sheikh Zulfikar Azad- JKPS SSP Bandipora supported by Sh Tahir Amin Sheikh- JKPS 125759 SDPO Sumbal, Sgct Mohd Iffikhar Lone No. 342/Bpr and Ct Bilal Ahmad Malla No. 952/Bpr. The operational parties has used their tactical acumen to reach to the target house without getting exposed. Initially two composite squads of Army/Police were constituted for laying close and strong cordon of suspected area. One operational component under the command of Sh Mubashir Rasool —JKPS 125772 DYSP PC Hajin, Sgct Manzoor Ahmad No. 660/Bpr and Army component of 13 RR were assigned to lay cordon from North to South, while as the second component under command of Sh Gazenfer Syed No. 3007/NGO and Ct Mir Ishfaq No. 3859/PW were assigned to lay cordon from other side of target house. During cordon the composite force component i.e. Police and Army has established great co ordination through mutual exchange of their respective communication wireless sets and hence acted in very synchronized and professional manner. While as, the CRPF 45 BN team and another JK Police party were assigned to lay outermost cordon in law and order mode with the instructions to not allow any civilian towards the target area, so that main target area shall not be disturbed by unruly mob and to keep this area sterile from civilian's interference during conduct of operation. As soon as cordon gets laid out, the hiding terrorists fired indiscriminately upon the operational parties. The party challenged him to surrender but he striked back with volley of fire and lobbed grenades and in the initial burst of fire/grenade by Terrorists, 02 Soliders of Army got martyred. It was a herculean task for the operational parties to evacuate safely the civilians who get trapped. Therefore, two teams were constituted for safe evacuation of civilian from the area under cordon and from the adjoining houses.

Needless to mention that, both the above volunteered operational teams stormed the target house without caring for their personnel life while establishing great co ordination with the outer team in cordon for fire control and during the ensuing close battle in which 02 Foreign/local terrorists got neutralized, who were subsequently identified as Maaz "A+" Category R/o PaK figuring at Sr No. 36 of PHQ Categorization list issued under Endstt No. Ops/Reward/Criteria/2017/915-30 Dated 24.07.2017 and Nasrullah Mir @ Anna S/o Nazir Ahmad Mir R/O Mir Mohalla Hajin recommended for inclusion in categorization list as "A" Category vide this office letter No. CS/Cat(M)-19/2017/18916-18 Dated 09.06.2017. The slain terrorists were major challenge to the state machinery. Arms/ammunition was recovered from the encounter site are enclosed. Case FIR No. 61/2017 U/S 302, 307, RPC, 7/27A. Act has been registered in Police Station Hajin, in this regard.

In this operation S/Shri Tahir Amin Sheikh, DySP, Mohd Ifthikhar Lone, SgCT and Bilal Ahmad Malla, SgCT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 11/10/2017.

(No. 11020/22/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 85-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—

S/Shri

1	Zafar Mahdi	DySP	PMG
2	Ajaz Ahmad Malik	ASI	PMG
3	Nasir Ahmad Bhat	HC	PMG
4	Shokat Ali	SgCT	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 14-01-2018, Police Baramulla received an information through reliable sources to the effect that a fidayeen group of terrorists equipped with heavily sophisticated weapons have infiltrated towards own side via Bhim post Uri for carrying out fidayeen attack on army/ SF's in Dulanga area. Acting on this information police party from SOG Baramulla headed by DySP (OPS) Baramulla Shri Irshad Ahmad Ahanger JKPS-125832 under the supervision of SSP Baramulla/SP (OPS) Baramulla moved towards the Dulanga Uri and a joint operations was launched with the help of 4 Madras Army and 53 Bn CRPF. After a brief discussion with the army with regard to the topography of the area, process of cordon and search operation was started. Two teams of Troops of 4 Madras Army and police personnel were constituted and first party was assigned the task for carrying search operation while another one was tasked to give cover protection to the search team. Shri Zafar Mahdi Dy. SP OPS Pattan, HC Nasir Ahmad Bhat No. 556/B, SgCt. Javid Ahmad No. 541/B, Shri Irshad Ahmad Dy.SP OPS Baramulla, Insp. Tabraiz Ahmad SHO P/S Uri, ASI Ajaz Ahmad Malik No. 79/B, HC Muneer Ahmad No.

295/BD, HC Inderjeet Singh No. 1897/B, HC Kishore Kumar No. 367/B, SgCt. Mohd Younis No. 1597/B, SgCt. Farooq Ahmad No. 1334/B, SgCt. Amraiz Ahmad No. 890/B, SgCt. Mushtaq Ahmad No. 753/B, SgCt. Gulzar Ahmad No. 497/AP 13th Bn. SgCt. Shokat Ali No. 703/IRP 13th SgCt. Tanveer Ahmad No. 381/B, SgCt. Mohd Amin No. 797/B, SgCt. Muzaffar Ahmad No. 721/B, SgCt. Gul Zaman No. 951/B, SgCt. Shabir Ahmad No. 1026/B, SgCt. Manzoor Ahmad No. 375/B, SgCt. Dileep Kumar No. 334/B, Ct. Manzoor Ahmad No. 1131/B, Ct. Tariq Ahmad No. 858/B, Ct. Hilal Ahmad No. 1580/B, Foll Haqeeq Ahmad No. 81/F. SPO Tariq Ahmad No. 1200/SPO, SPO Mohd Irfan No. 1227/SPO, SPO Showkat Ahmad No. 1727/SPO, SPO Shabir Ahmad No. 595/SPO, SPO Iftikar Ahmad No. 1075/SPO, SPO Ashiq Nabir, 2579/SPO, SPO Rafeeb Hussain No. 1273/SPO, SPO Mohd Yaqoob No. 914/SPO, SPO Ab. Razaq No. 1208/SPO, SPO Noor Hussain No. 491/SPO, SPO Akhtar Hussain No. 950/SPO, SPO Raja Mahboob No. 1629/SPO, SPO Syed Altaf No. 167/SPO, SPO Shabir Khan No. 1220/SPO, SPO Ashiq Hussain No. 1610/SPO, SPO Gurmukh Singh No. 409/SPO, SPO Sameer Hassan No. 439/SPO, SPO Arif Ramzan No. 93/SPO, SPO Barkat Shah No. 23/SPO, SPO Ranjeet Kumar No. 306/SPO, SPO Gh. Rasool No. 122/SPO, SPO Bashir Ahmad No. 1814/SPO, and SPO Mohd Amin No. 981/SPO, volunteered themselves to be part of search and covering teams. Search operation was started under the close supervision of operational officers present on spot. While carrying search of the suspected area, all of sudden the search team came under heavy fire from the terrorists who had taken shelter inside thick bushes. The searching team was enough vigilant and remained unharmed during the attack and a meticulous strategy was chalked out by the operational officers and the location of the terrorists were marked/identified. After this, a plan was devised on spot wherein joint parties of Army and Police were placed at very close to the target site.

Needless to mention that, after this Shri Zafar Mahdi, DySP (Ops) Pattan along with ASI Ajaz Ahmad Malik, HC Nasir Ahmad Bhat No. and Sgct. Shokat Ahmad No. 13th Bn made a very daring move and crawled through thorny bushes to the target site and aimed at the terrorists hiding inside thick bushes behind a terrain. On the directions of team leader a volley of fire was fired upon the terrorists. Terrorists fired on assault party, but the assault party did not give in and remained committed, and from close range gun battle between terrorists and assault party continued till elimination of all the 04 dreaded Fidayeen terrorists. During the process explosive material attached with the body of terrorist also exploded with a big bang. Extensive search of the said area was carried out and no further movement/presence of terrorists was established and finally operation was called-off. Arms/ammunition were recovered from the possession of slain terrorists includes 04 AK Rifle (01 damaged), 19 AK Magazines (07 damaged), 480 AK Rounds (20 Damaged), 01 UBGL (Damaged), 02 Wrist Watch (damaged) and 01 Life Jacket. Case FIR No. 03/2018 U/S 307 RPC, 7/27 Arms Act stands registered in Police Station Uri, in this regard.

In this operation S/Shri Zafar Mahdi, Dy. SP, Ajaz Ahmad Malik, ASI, Nasir Ahmad Bhat, HC and Shokat Ali, SgCT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 14/01/2018.

(No. 11020/24/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 86-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/ 2nd Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—

S/Shri

1	Mohd Zaid	SSP	2 nd BAR TO PMG
2	Altaf Ahmad Shah	HC	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 05-03-2018 at about 1630 his, reliable information was received about the presence of a foreign terrorist in the house of one Ghulam Mohi-ud-din Dar S/o Ghulam Ahmad Dar R/O Mohalla Sumbal Hatiwara. The operation was planned and the cordon was established with the assistance of 50-RR, 130 and 110 Bn CRPF. Two joint search parties were constituted one headed by Shri Mohd Zaid-JKPS and another by Shri Perwaiz Ahmed-JKPS, SDPO Awantipora. Owner of the house and his family members were asked to come out from the target house. As the family members were about to leave the house, the terrorist hidden inside the house fired indiscriminately due to which the civilians got stuck in the house. The fire was retaliated in self defence. The terrorist was asked to surrender through public address system which the terrorist declined. It was planned to evacuate the family members from the house first. The first joint search party headed by Shri Mohd Zaid, SSP Awantipora alongwith ASI Ali Mohammad Rather No. & 6/A, HC Altaf Ahmad Shah No. 535/Awt, SPO Akther Ali No. 163/SPO, SPO Rayees Ahmad No. 102/SPO, SPO Mohd Ashraf No 48/ SPO and Ganesh Kumar No. 275/SPO proceeded meticulously without caring for their lives towards the said house but while entering the premises of the house they came under heavy volume of fire. This was an extremely difficult phase of operation. The 2nd search party headed by

Shri Perwaiz Ahmad-JKPS alongwith HC Bilal Ahmad No.263/Awt, Ct Amir Rasool No.734/Awt, Ct Qmar Ali No.688/Awt, Ct Pervaiz Ahmad No.784/Awt, SPO Gh Mohi-ud-din No.159/AWt, SPO Mustafa No. 182/SPO, SPO Gh Mohi-ud-din No. 337/SPO and SPO Mohammad Irfan No. 2343/SPO kept the terrorists engaged in firing while as first joint search party successfully opened the door of the room wherein the family members were trapped. All the family members ran out of the house. While noticing that the 1st joint search party have entered the house the hiding terrorist began to fire indiscriminately by positioning himself behind the stairs then lobbed a grenade towards them in order to make his escape. However, luckily the grenade exploded without causing any damage. In the meantime, the first party noticed that the terrorist is out of bullets and is busy in changing his magazine and within a fraction of time ASI Ali Mohammad Rather No. 76/A (EXK-872402) fired upon the terrorist resulting in grievous injury to the terrorist. Then the 1st joint search party lobbed a couple of grenades towards the terrorist and in order to protect himself from grenade splinters the terrorist jumped from the window in order to make his escape good, but the 2nd joint search party headed by Shri Perwaiz Ahmad-JKPS accompanied by abovementioned officers who were already in position within a fraction of time noticed the movement of the terrorist and with the prompt action killed the terrorist. The eliminated terrorist was later on identified as Mufti Waqas R/O Pakistan of JeM outfit (recommended for A++ category vide this office letter No. CS/91/2018/5108-09 dated 06-06-2018). Arms/ammunition were recovered from the possession of slain terrorist includes 01 Pistol Chinese, 01 Pistol Magazine, 04 Pistol Rounds, 01 Knife, 01 Battery for IED (Small) and 02 Fuse. Case FIR No. 34/2018, U/S 307 RPC, 7/27 A. Act, 16, 18, 19, 20 and 38 ULA (P) Act stands registered in P/S Awantipora, in this regard.

In this operation S/Shri Mohd Zaid, SSP and Altaf Ahmad Shah, HC displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 05/03/2018.

(No. 11020/26/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No.87-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/ 2nd Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—

S/Shri

1	Shriram Dinkar Ambarkar, IPS	SP	PMG
2	Ashiq Hussain Tak	DySP	2 nd BAR TO PMG
3	Imtiyaz Ahmad Mir	DySP	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

After the killing of Abu Dujana Commander LeT outfit for South/Central Kashmir, mentors operating across had directed Abu Ismail Commander of LeT outfit to shift his base to Srinagar with the intention to carry out sensational attacks including Cop killing, hurling of grenades on the Police establishments and other important installations etc. to create panic among the peace loving people in the heart of summer capital Srinagar. This was also corroborated with intelligence inputs received from different sister agencies. In this regard the field sources of the District were alerted to generate information about his presence, besides Police component Srinagar was also geared to analyze all the related communications carefully to thwart any untoward incident in the District. On 14.09.2017 Police Srinagar received information through reliable sources to the effect that some terrorists carrying arms/ammunition are roaming in the area of Aribagh, Baghat-i-Kanipora, District Budgam (P/S Nowgam Srinagar). Immediately after getting information about the presence of terrorists in Aribagh, Baghat-i-Kanipora Budgam, police teams of District Srinagar/District Shopian under the joint supervision of SP Shopian and SP Police Component Srinagar were constituted and directed to identify the location/hideout of terrorists and subsequently neutralize them without any collateral damage. The team of Shopian Police and Police Srinagar were succeeded in zeroing the hide, (House of Gh. Ahmad Wani S/o Mohammad Akbar Wani, Magray Mohallah, Aribagh, B.K.Pora) in which these terrorists were hiding. Before the operation was conducted, it was decided to co-opt., CRPF 29 Bn., CRPF 44 Bn. and 50 RR in order to avoid any collateral damage in the area and to conduct clean operation. All the nafri was divided into two parties. First party comprised of Police Shopian and small QRTs of 29 Bn. CRPF and 50 RR headed by SP Shopian was asked to lay the cordon of the target area from North-Western and South-Western side. The second party comprised of a team of Srinagar Police headed by SP Police Component Srinagar was asked to lay the cordon of the target house from North -Eastern and South-Eastern side, in which the terrorists were hiding and also if required make a joint intervention of the house with full coordination of other security forces.

All the parties positioned themselves according to the prepared plan. Sh. Shriram Ambarkar-IPS, SP Shopian and Sh. Javaid Iqbal, SP PC Srinagar who were in charges of the cordon parties formed small teams of Police Srinagar under the command of Sh. Azhar Rashid DySP PC Srinagar and Sh. Ashiq Hussain Tak DySP Shopian for evacuation of the inmates of adjoining houses. The teams very tactfully and bravely evacuated the inmates of the adjoining houses and shifted them to a nearby safer place in order to avoid any collateral damage. In the first instance, the two holed up terrorists were asked to surrender, which they declined totally. Instead of surrendering they opened fire on the operation parties. Immediately intervention of the house was planned and two small parties were constituted, one party comprising of Sh. Imtiyaz Ahmad Mir, DySP PC Srinagar, Sh. Azhar Rashid, DySP PC Srinagar, Inspector Shiek Munzoor Ahmad No.7559/NGO(EXK-002160), SI Mohammad Ashraf No ARP-115646, ASI Mushtaq Ahmad No. 788/S, HC Babu Ram No. 280/AP 6th, SgCt. Ali Mohd No. 300/IRP 2nd, Ct. Mushtaq Ahmad No. 2649/S, Ct. Mohd Iqbal No. 4518/S, SPO Irshad Ahmad 118/SPO, SPO Javaid Razak No. 88/SPO, SPO Rafiq Ahmad 324/SPO, SPO Mohd Ashraf 108/SPO, SPO Farooq Ahmad 841/SPO, SPO Syed Javid Ahmad 471/SPO and adequate naffri of Police Srinagar with a small QRTs of 44 Bn. CRPF/50 RR under the command of Sh. Javaid Iqbal, SP PC Srinagar and 2nd party of District Police Shopian comprising of Sh. Ashiq Hussain Tak, DySP Shopian, SgCt. Javaid Ahmad 434/IR 7th, SgCt. Mohd Ashraf 1242/S, SgCt. Rakesh Tikoo 806/AP 7th, Ct. Mohd Ashraf 464/SPn, Ct. Ab. Ahad 1276/S, Ct. Vikram Hangloo 49111RP 19th Bn, ARP-086047, Ct. Irshad Ahmad 763/SPN, EXK-127329, SPO Feroze Ahmad 95/SPO, Aarif Ahmad 229/SPO, SPO Bilal Ahmad 42/SPO, SPO Jehangir Ahmad 213/SPO and SPO Parvez Ahmad 829/SPO of District Shopian under the command of Sh. Shriram Ambarkar-IPS, SP District Shopian with a small QRTs of 29th Bn. CRPF/50 RR. First party decided to enter the house from South-East side and 2nd party decide to enter the target house from South-West side, but the holed up terrorists lobbed grenades from a window, which caused no damage as the approaching parties were advancing tactically. Simultaneously Sh. Javaid Iqbal, SP Police Component Srinagar, along with his team reached nearer to the window, from South-East side, where from the terrorists lobbed the grenades/ fired. The terrorist opened the main door of the house and started firing indiscriminately with the intention to break the cordon. At this moment Sh. Javaid Iqbal, SP PC Srinagar, Azhar Rashid DySP PC Srinagar, Inspector Manzoor Ahmad, SI Mohd Ashraf and other Security Force personnel after reaching near the target house and retaliated the fire effectively without caring for their personal lives and neutralized one terrorist and the another terrorist, who in order to save himself change the hide, escaped in other part of the said target house and opened indiscriminate fire from the South-West side window on the 2nd party to break the cordon, but the party comprising of Sh. Shriram Ambarkar IPS SP Shopian and Sh. Ashiq Hussain Tak, DySP Shopian, Ct. Vikram Hangloo No. 491/IRP 19th Bn.(ARP-086047), Ct. Irshad Ahmad 763/SPN(EXK-127329) and other Security Force personnel viz 29th Bn. CRPF/50 RR, which had already taken position near the house from South-West sides, retaliated the fire bravely and in the exchange of fire, the said terrorist also got killed. After the operation conclusion 02 killed terrorists were identified as Abu Ismail R/o PoK and Abu Qasim @ Chota Qasim @ Ali R/o Pok of LeT outfit. The elimination of both the terrorists is a very big jolt to the LeT network.

Needless to mention that, the above killed terrorist was active in the areas of South/Central Kashmir since last 03 years and was responsible for several subversive activities in these areas and killing of Police men/other Security Force personnel/Political activists, besides he was involved in weapon snatching incidents in District Shopian. It is also mentioned here that the said terrorist namely Abu Ismail was master planer and executer of attack on Shri Amar Nath-Ji Yatra vehicle at Batengo near Khanabal Chowk, in which 07 pilgrims and 32 others were injuries. The said terrorist was also master planner of attack on CRPF convey and Fidayeen attack at DPS Athawajan Panthachowk Srinagar. In the said incident 02 foreign militants were killed. Arms/ammunition was recovered from the site of encounter includes 02 AK 47 Rifles, 04 AK Magazines, 36 AK Rounds, 01 UBGL, 02 UBGL Grenades, 01 Combat Pouches, 01 Civil Jacket Black, 01 Civil P-Cap, 02 Toothpaste, 02 Toothbrush, 01 Sewing thread, 05 Safety Pin, 04 Shaving Blades, 01 Axe Signature Powder and 01 Shaving Machine. Case FIR No. 109/2017 U/S 7/25 I. A Act stands registered in Police Station Nowgam Srinagar.

In this operation S/Shri Shriram Dinkar Ambarkar, IPS, SP, Ashiq Hussain Tak, Dy. SP and Imtiyaz Ahmad Mir, DySP displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 14/09/2017.

(No. 11020/27/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 88-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—

Shri

Rouf Ahmad Zarger	SgCT	PMG
-------------------	------	-----

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 08-01-2018, SOG Budgam received a reliable input regarding the presence of a terrorist in village Patrigam in the jurisdiction of P/S Chadoora District Budgam. Subsequently, a party of SOG Budgam and party of B-Coy 53 RR proceeded towards the spot in pursuit of 'hiding terrorist who reportedly was planning to carry out terrorist activities in the said area. As the parties approached the concerned area, the cordon was laid. As the hiding terrorist noticed the forces, he started volley of fire upon them in a bid to escape, but the forces/SOG acted swiftly and retaliated, as a result the terrorist failed to escape. The house which was later identified as the house of Manzoor Ahmad Ganie S/O Gh. Rasool Ganie R/O Patrigam Chadoora was zeroed in, hence ensuing a gunfight. Acting swiftly, the cordon around target house was tightened strategically. Heavy exchange of fire started from both the sides, Accordingly reinforcement of Budgam Police led by SSP Budgam, Sh. Tejinder Singh IPS, ASP Budgam Sh. Mohd Majid KPS, Dy.SP (Ops) Chadoora, Sh. Gh Hassan Shiekh (KPS), Dy.SP (Ops) Budgam, Sh. Parupkar Singh (KPS) along with their escort, party of 53 RR led by Lt. Col Sh. Sandeep Rana and party of 178 Bn CRPF led by CO, Sh. Anil Kumar Vriksh also reached the said spot. Hence 04 joint teams of Police and other SFs were formulated to retaliate and neutralize the terrorist.

The first team led by ASP Budgam Sh. Mohd Majid Malik-KPS assisted by SI Rabinder Singh I/C QRT PC Budgam along with HC Ajay Kumar 307/AP 13th BN, Sg.Ct Rouf Ahmad Zarger 582/BD (EXK-098644), Ct. Tawseef Ahmad 799/BD, SPO Showkat Ahmad Baba 488/SPO, Farooq Ahmad Dar 405/SPO and SPO Bilal Ahmad Dar 25/SPO was given the responsibility to cover the northern side of the target house, Second team jointly led by Dy.SP PC Chadoora, Sh. Gh Hassan Shiekh-KPS and SDPO Charie sharief, Sh. Farooq Ahmad No.EXJ-905842 assisted by Inspector Mohd Raffi Shah ARP986461, ASI Surjeet Singh 407/GRP-J, HC Firdous Ahmad 56/AP 13th, Ct Sameer Ahmad 1163/PI, SPO Ab Lateef Dar 346/SPO, Mohd Ashraf Bhat 83/SPO, SPO Mohd Ashraf 577/SPO was given the responsibility to cover the rear side of the target house. Third team led by Lt. Col Sh. Sandeep Rana of 53/RR was given the responsibility to cover Eastern side of the target house. Fourth team led by CO 178 BN CRPF Sh. Anil Kumar Vriksh was given the responsibility to cover the Southern side of the target house. As the gun fight continued, terrorist hiding in the target house started targeting the security forces. But all the four teams had taken their positions strategically due to which the terrorist failed to hit any of them. The stone pelting mob was trying their best to dislocate the forces deployed and make the way for trapped terrorist to escape. After a while, terrorist came out of the target house and lobbed a grenade upon the party led by ASP Budgam in order to escape from the cordon. But keeping their nerves, the team at once pounced upon the terrorist with volley of bullets in such a way the terrorist was left with no option but to move back inside the target house. In the meantime, the terrorist came out from rear side of target house and fired indiscriminately upon the SFs deployed on that side in order to escape from the cordon. The party deployed on that side led by Dy.SP PC Chadoora, SDPO Charie sharief alongwith Inspector Mohd Raffi Shah, ASI Surjeet Singh, Ct. Sameer Ahmad, SPO Ab Lateef Dar, Mohd Ashraf Bhat, SPO Mohd Ashraf retaliated back courageously without caring for their personal safety and eliminated the terrorist from a close range, The killed terrorist was later identified as Abu Rehman @ Rehman Bhal R/O Pakistan of LeT outfit. Arms/ammunition recovered from the possession of slain terrorist include 01 AK 56 Rifle, 03 AK 56 Magazines (02 Damaged), 32 AK 56 Rounds and 01 Pouch. Case FIR No. 03/2018 U/S 307 RPC, 7/27 A. Act has been registered in Police Station Chadoora on 08-01-2018 in this regard.

In this operation Shri Rouf Ahmad Zarger, SgCT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 08/01/2018.

(No. 11020/29/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 89-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—

S/Shri

1	Gowhar Rashid Malla	SI	PMG
2	Muddasar Hussain	HC	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 03-08-2017, specific information received through reliable sources regarding the presence of terrorist in the village of Karloo Kanalwan, Bijbehera District Anantnag. On this information, an operation was launched by SOG Anantnag

along with 3rd RR and 90/40 Bn. CRPF. Two teams led by Sh. Afrat Hussain, DySP Ops Anartag and Sh. Gh Mohd Bhat, DySP PC Srigufwara alongwith SI Gowhar Rashid Malla ARP-109410, HC Muddasar Hussain 608/IRP, SgCt Tanveer Ahmad 1873/A, SgCt. Murtaza Nazir 1353/A, Sgct Javid Ahmad 609/A, Const. Hamidullah 1092/A, SPO Sarmand Rashid 579/SPO, SPO Owais Ahmad 415/SPO and SPO Bilal Ahmad 312/SPO were deputed to conduct the search. During search operation terrorist hiding in the village fired indiscriminately upon search party to break the cordon. Police party retaliated the fire without caring of their precious lives, resulting one terrorist namely Yawar Ahmad Wagay (Shergujri) @ Algazi S/o Nisar Ahmad Wagay R/O Shirpora Anantnag of HM outfit got eliminated. In this regard, case FIR No. 113/2017 LES 307 RPC, 7/27 I A. Act stands registered in Police Station Bijbehara, District Anantnag.

In this operation S/Shri Gowhar Rashid Malla, SI and Muddasar Hussain, HC displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 03/08/2017.

(No. 11020/30/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 90-Pres/2020—The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry/ 2nd Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—

S/Shri

1	Sayed Zaheer Abbas Jafari	DySP	2 nd BAR TO PMG
2	Amjad Hussain Mir	SI	1 st BAR TO PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 30-04-2018, at about 0700 hours information was received by the then SSP Pulwama about the presence of terrorists at village Drubgam Pulwama with the task given by their mentors to carry out terrorist attacks on security establishments in District Pulwama. Accordingly, SSP Pulwama informed Addl. SP Pulwama and DySP (PC) Pulwama Sayed Zaheer Abbas Jafari (JKPS-116057). The said information was further specified by DySP Ops Pulwama, shared with 44 RR, 182/183 Bn CRPF and it was decided to lay a joint cordon of the target Place. Afterwards DySP OPS Pulwama alongwith SOG party from Police Component Pulwama headed by SI Amjad Hussain Mir EXK-109479 and 182/183 Bn of CRPF left towards village Drubgam Pulwama in order to cordon the target Place. On reaching the target location a joint cordon of Police Pulwama under the command of DySP OPS Pulwama alongwith Army and CRPF was laid.

It is to mention here that while cordoning the target area Major of 44 RR and his buddy got injured as terrorists fired upon the party so lead by the Major and his escort personnel. The Major was immediately given medical assistance and was evacuated to 44 RR Bn HORS. After the injury of Major the party there, became leaderless and at the time, DySP OPS Pulwama managed to restore the situation by heading the party. DySP Ops Pulwama covered the area where Major was injured and retaliated from that point. Terrorists on seeing the rescue party retaliating throw some grenades near the point in which various Police officials including DySP OPS Pulwama got injured. Despite of injury, DySP OPS Pulwama continued to fight back and also directed SI Amjad Hussain Mir to cover the back side of the target place and retaliate, thus leaving no room for the terrorists to escape from the cordon. The terrorists tried to escape from the back side but due to indiscriminate firing by SI Amjad Hussain Mir forced them to stay in the target house. The cordon was intensified further and firing continued to dominate the terrorists. After some time, firing stopped from the side of terrorists, DySP OPS Pulwama assisted by SI Amjad Hussain Mir without caring for their lives evacuated all the civilians who were trapped inside the target house and its adjoining houses.

Despite of the fact, those terrorists seriously injured an Army officer and his buddy during the fierce gun battle, DySP OPS Pulwama received multiple injuries. Terrorist anyway were given a chance to surrender before Police/SFs present there. They were cautioned through PA system to surrender before Police but instead they ignored the offer and kept on firing indiscriminately upon the SFs. A major strategy prepared by DySP OPS Pulwama was followed to eliminate the terrorists. 04 teams of SOG party alongwith SFs were constituted to retaliate the fire from two opposite sides so as to conclude the encounter without taking too long. One led by DySP OPS Pulwama and another led by SI Amjad Hussain Mir. Further another, 02 parties lead by SI Vikram Kundal ARP-115589 were also constituted so that they would intensify the cordon and

provide cover fire for first two parties from all the sides. The officers/officials due to their presence of mind remained careful, alert at the point of uncertainty, tackled the situation bravely. Due to retaliation of fire from all the sides by approaching parties resulted in the elimination of (02) terrorists who were later identified as Sameer Ahmad Bhat @ Tiger S/o Mohammad Maqbool Bhat R/o Drubgam Pulwama and Aaqib Mushtaq Khan S/o Mushtaq Ahmad Khan R/o Rajpora Pulwama. Case FIR No. 35/2018 U/S 307, 7/27 I.A Act stands registered in Police Station Rajpora, in this regard.

In this operation S/Shri Sayed Zaheer Abbas Jafari. DySP, Amjad Hussain Mir, SI displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 30/04/2018.

(No. 11020/31/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 91-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—

S/Shri

1	Naresh Singh	Addl.SP	PMG
2	Vivek Shekhar	DySP	PMG
3	Mohan Lal	DySP	PMG
4	Surinder Pal Singh	Insp.	PMG
5	Ashwani Kumar	Insp.	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 12.09.2018, at about 0715 hours, a truck bearing registration No. JKO3F/1476, which was coming from Jammu side, was signaled at the police naka near Suketar falling under the jurisdiction of P/S Jhajjar Kotli. The said truck did not stop and speed away towards Udhampur. On this, the police party chased the vehicle and found that it had halted near Sai Caferia near Jhajjar Kotli Bridge.

When the police party started searching the vehicle, terrorists hiding inside the truck opened fire on the police personnel and escaped into the jungle. They left behind an AK-56, 02 pistols, 07 magazines, 04 grenades and other articles. They also opened fire on two civilians namely Ganesh Dass and Om Parkash while escaping.

Police took custody of the truck driver namely Riaz Ahmed S/o Ghulam Ahmed Nagroo Rio Hanjan Bala Pulwama and his associate namely Mohd. Iqbal Rather S/o Abdul Kaliq R/o Budgam on questioning, they disclosed that they were ferrying 03 Pakistani terrorists from Jammu and Srinagar, who had now escaped in the jungle. Sensing the danger, police of Reasi and Udhampur districts were also alerted and a combing operation was launched. CRPF and Army were also requested to join the operation. An FIR No. 89/2018 U/S 307/120-B/121/122/123 RPC, 4/25/26/27 Arms Act, 16/18 Unlawful Activities Act was registered at P/S Jhajjar Kotli and investigation was taken up.

Next day on 13.09.18 SSP Reasi along with SP Katra and team went for searching the area adjacent to SMVD University. Meanwhile the team under SDPO Katra descended towards Jhajjar Nalla near Dhirti village of Kakryal. While conducting search of university area at around 11:00 am SSP Reasi received a call from team of SDPO Katra searching the Jhajjar Nalla area near Dhirti village that they had received a call from a villager in Dhirti regarding presence of terrorists in the house of one Raj Kumar S/o Sh. Muthri Ram R/o Village Dhirthi, Kakryal Katra. SSP Reasi directed them to immediately reach at the said location and Reasi police informed senior police officers regarding the development. SSP Reasi along with SP Katra immediately rushed to the spot alongwith CO CRPF 6th BN and CO CRPF 187th BN. with their respective troops and saw that whole team of SDPO Katra, SHO Katra, SHO Reasi and CRPF team had also reached the spot after climbing from Jhajjar nallah. On reaching near the said location it was observed that the crowd had started to congregate, hence immediately the public was evacuated from the vicinity of the house to the safer places to prevent any collateral damage. SSP Reasi made two teams of police officers present over there i.e. SP Katra and SHO Katra in one team and SDPO Katra and SHO Reasi in the other team and asked them to reach the house of Raj Kumar cautiously and to assess the situation on ground. The said teams moved towards the Raj Kumar's house after passing through dense maize fields. The said house was a single rectangular room with a tin roofed brick structure. The two teams cordoned the target house from two sides as due to the topography and presence of maize fields around the house it was not possible to cordon it from all sides and there was an apprehension of cross fire leading to own casualties. There was a hole in a wall of the house and to ensure

presence of terrorists inside the house the search party of police peeped inside from the said hole tactically and ensured that no hostage was held inside the house. They saw 03 terrorists sitting cautiously inside the room who got alerted and on sensing the presence of Police party started firing on police party. The police party took strategic position and retaliated the fire. Meanwhile, CRPF party had also cordoned the house from the front side at the distance of around 50/70 mtrs. The gunfight between terrorists and 02 police teams and CRPF team continued for some time. Suddenly terrorists started firing UBGL Grenades on the police and CRPF party. In this heavy UBGL firing 05 CRPF personnel including Assistant Commandant CRPF 187 Bn. namely Sh. Manoj Kumar Yadav, Deputy Commandant CRPF 6th Bn. Sh. Harshpal Singh, Ct. Abay Singh of 187 CRPF Bn, Pancham Singh of 6th CRPF Bn. and Ct. Zakir Hussain of 06th CRPF Bn. had joined the CRPF party in gun battle were injured. The said CRPF party had to momentarily move back from the encounter site to evacuate their injured officers and officials for their timely medical treatment.

Meanwhile around the house of Raj Kumar, 02 police parties carried on the gun fight with the 03 holed up terrorists, the police parties who were engaged in gun fight at this time had clear hunch that 03 holed up terrorists will use the presence of dense maize fields and heavy vegetation/jungle to their advantage for fleeing from the gun battle site and accordingly the 02 police teams chose strategic locations to stop the 03 terrorists from running away from the encounter site. Terrorists being desperate to leave the encounter site area and to reach the safety of jungle/maize fields made the last effort to run away. While running they kept firing towards the police party at about 1135 hrs. at the same time, 02 police teams comprising of Naresh Singh, SP Katra along with Inspr. Surinder Pal Singh, SHO Katra and their team and Vivek Shekhar SDPO Katra along with Inspr. Ashwani Sharma SHO Reasi and their team, as striking party immediately reacted and killed 02 terrorists on the spot and severely injured third terrorist who managed to escape into the dense maize fields. In this gun fight 02 police personnel namely SgCt. Mohd Iqbal No.265/RSI and Ct. Yashpal Singh No.923/RSI received injuries in the form of bullets and splinters of Grenades fired by terrorists. Ct. Yashpal Singh (PSO of SDPO Katra) was severely injured and SDPO Katra Vivek Shekhar and SHO Reasi Ashwani Sharma braving bullets moved cautiously towards him and evacuated him by supporting him between themselves. As the third injured terrorist was trying to flee he came across the outer cordon laid down by SDPO Nagrota Sh. Mohan Sharma and his team and fired towards him as a result of which SDPO Nagrota was injured. The retaliation by the said party forced the terrorist to back off into the cordon. From his hiding place he kept on firing towards the team which was in his pursuit. During this fire Ct. Bhanu Pratap was severely injured and was lying in the pool of blood within the line of fire. Sensing the gravity of situation, SP Katra Naresh Singh and SHO Katra Surinder Pal Singh unmindful of their own safety braved the bullets and crawled upto him and evacuated him to safety. Timely brave action by Officers was instrumental in saving his life.

Subsequent to this, surviving terrorists changed his tactics and stopped firing. It became difficult to zero in his location in surrounding maize fields and heavy vegetation coupled with undulating topography of the area. To flush out the 3rd injured terrorist, team of Para 4/9 Commandos (Army), CRPF, SOG Rajouri headed by Inspr. Mohd Amin and Reasi Police party including SI Irfan, SI Suman Manhas and SI Pardeep Singh along with Jawans reinforced the existing forces on the ground and started the search of the injured terrorist. At around 4.00 pm in the evening, when the third terrorist saw the parties reaching his hiding place he fired upon them. During this gun fight, 01 Officer and 02 army officials namely Major Deepak Upadhaya, Ct. Rajinder Singh and Sudhir Singh of Para 4/9 Commando received injuries. After all 03 terrorists were neutralized and their dead bodies were recovered from the encounter site and Arms & Ammunitions in their possession was also taken into custody.

It was the highest degree of professionalism and courage amid clear and persistent danger that the joint teams of Police, CRPF and Army succeeded in neutralizing all the heavily armed 03 Pak terrorists without any collateral damage in a day long operation.

Accordingly Case FIR No. 191/2018 u/s 307/121/122/123/1208 RPC, 7/25/26/27/A Act, 16/18/38 UAPA Act stands registered in P/S Katra into the matter.

The whole operation was conducted without an iota of collateral damage only because of the outstanding command and control exercised by Ops. team conjugated with the display of the rarest of the rare bravery and extreme devotion to duty by them. The members of the police teams generally and especially Shri Naresh Singh ASP Katra, Shri Vivek Shekhar SDPO Katra, Shri Mohan Lal SDPO Nagrota, Inspr. Surinder Pal Singh SHO P/S Katra and Inspr. Ashwani Kumar SHO P/S Reasi saved the HOLY TOWN KATRA & SHRI MATA VAISHNO DEVI JI SHRINE from extreme danger of terror attack. Moreover, Shri Mata Vaishno Devi University and Narayan Super Specialty Hospital were also very close to the encounter site and had the terrorists reached there they would have wrecked and could have taken hostage of general public/staff/students over there and could have dictated their terms.

In this operation S/Shri Naresh Singh, Addl.SP, Vivek Shekhar, DySP, Mohan Lal, DySP, Surinder Pal Singh Insp. and Ashwani Kumar, Insp. displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 13/09/2018.

(No. 11020/32/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN

Officer on Special Duty

No. 92-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—

Shri

Manzoor Hussain Peer	HC	PMG
----------------------	----	-----

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 24-03-2018, Police Budgam /Srinagar received information from reliable sources regarding presence of few armed terrorists in the house of one Maqsood Ahmad Khan @ Jugnoo S/O Mohammad Maqbool Khan Rio Chak-i-Marg Arizal in the J/D of P/S Beerwah. On the basis of this information, joint operation was launched by Police Budgam, Police Srinagar, 53 RR, 178 CRPF and 0/43 CRPF. The joint teams cordoned off the area at about 2330 hours.

First team led by Addl. SP Budgam Shri Mohd Majid Malik-KPS assisted by Dy.SP PC Chadoora Sh. Aakash Kohli KPS-155781, SI Rabinder Singh I/C QRT P.C.Budgam, HC Lakhbir Singh No.1446/S, SgCt Nazir Ahmad No. 502/BD, Ct Nawaz Ahmad No.1274/BD, SPO Altaf Hussin No. 99/SPO, SPO Bashir Ahmad No.537/SPO, and SPO Farooq Ahmad No. 507/SPO was given the responsibility to cover northern side of the target house. Second team led by Parupkar Singh DySP PC Budgam & assisted by SI Rakesh Pandita No. 252/PL, EC Manzoor Hussin No.961/S4EXK-003349), HC Shabir Ahmad No.1506/S, SgCt Javaid Ahmad No. 220/S, SPO Javid Ahmad No. 63/SPO and Showkat Ahmad No. 901/SPO was given the responsibility of covering the front side of the house near its entrance. Third Team of army party led by Maj. Abhinav No. IO-77623K of 53 RR (Punjab) was given the responsibility to cover eastern side of the target house. Fourth team of CRPF led by Sh. Z.A. Khan 2nd I/C 178 CRPF alongwith 0/43 CRPF personnel was given the responsibility to cover the Southern side of the target house. The operation was coordinated by SSP Budgam Shri Tejinder Singh (IPS), CO 53 RR Col. Anoop Nair and Addl. SP Budgam Shri Mohd Majid Malik (KPS). After ensuring that the area has been properly cordoned off, a search party was formulated. The search party consisted of Dy.SP PC Chadoora Sh. Aakash Kohli KPS-155781, Major Abhishek of 53 RR and troops of Police Budgam/Srinagar and 53 RR. Before starting the search, it was ensured that all the inhabitants of the target house are evacuated safely. As soon as the search party moved towards the house, the terrorist hiding inside came out and fired indiscriminately in all directions. The security forces took cover and retaliated back effectively and during the ensuing gun battle, a terrorist namely Shafqat Hussin Wani S/O Mohammad Akbar Wani R/O Wago, Ora, Tehsil Pattan District Baramulla of LeT outfit, category (a) figuring at &No. 54 in the category list issued vide PHQ order under endstt. No.OPS/RWD/ Criteria/2017/1229-60 dated 15-11-2017 was neutralized. Arms/ammunition recovered from the possession of slain terrorists includes 01 A rifle, 01 A magazines, 102 AK Rounds, 01 Pouch, 01 Wireless set with antenna, 01 Torch, 01 Pull through, 03 Mobile Phones, 01 Mobile Battery, 01 Mobile Charger, 01 Aadhar Card, 01 Pillow Cover, 01 Phirin and Rs. 31,570/- Indian Currency. Case FIR No. 37/18 U/S 307 RPC, 7/27 A. Act has been registered in Police Station Beerwah, in this regard.

In this operation Shri Manzoor Hussain Peer, HC displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 24/03/2018.

(No. 11020/33/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN

Officer on Special Duty

No. 93-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—

S/Shri

1	Dr. Ruhail Mircha	DySP	PMG
2	Raja Majid Batt	DySP	PMG
3	Aijaz Ahmad Malik	ASI	PMG
4	Ishaq Ahmad Mogray	SgCT	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 23rd Sept. 2017, Police Baramulla received a specific information regarding movement of heavily armed terrorists (Fidayeen group) in and around Kalgi area of Salamabad Uri, who are planning to attack on army formation in the area. Acting on this information a joint cordon and search operation by police, army and CRPF 53 Bn was launched in the area during night hours of 23rd Sept. 2017 and the area was cordoned off. In the wee hours three separate searching parties headed by DySP Raja Majid, DySP Ruhail Mircha and DySP Nissar Ahmad assisted by Inspr. Tabraiz Ahmad, SI Khalid Fayaz 109446, ASI Aijaz Ahmad 79/B, SgCt Ishaq Ahmad 427/B, SgCt Javaid Ahmad 541/B, SgCt Ganesh Dass 725/IR, SgCt Gh Mustafa 66/AWP, SgCt Mumtaz Ahmad 30/AWP SgCt Firdous Ahmad 833/B, SgCt Mukhtar Ahmad 432/B, SgCt. Amraiz Khan 890/B, SgCt. Mohd Younis 1597/B, SgCt. Firdous Ahmad 716/AWP, SgCt Gh. Hassan 865/AWP, Ct. Shahnawaz Ahmad 1188/B, Ct. Muzaffar Ahmad 1283/B, Ct. Shabir Ahmad 456/B, Ct. Ashiq Hussain 1431/B, Ct. Aijaz Ahmad 1287/B, Ct. Firdous Ahmad 1105/B, Ct. Fayaz Ahmad 1021/B, SPO Irfath Hussain 561/SPO, SPO Fayaz Ahmad 1297/SPO, SPO Abdul Khaliq 1101/SPO, SPO Ajaz Ahmad 189/SPO, SPO Amair Hussain 680/SPO, SPO Parvaiz Ahmad 1121/SPO, SPO Shabir Ahmad 990/SPO, SPO Mohd Ashraf 185/SPO, SPO Shafi Ahmad 1492/SPO, SPO Ghulam Rasool 1314/SPO, SPO Bilal Ahmad 530/SPO, SPO Tasveer Hussain 166/SPO, SPO Mohd Altaf 215/SPO, SPO S.Sher Singh 261/SPO, SPO Fayaz Ahmad 1080/SPO, SPO Shabir Ahmad 340/SPO (Awantipora), SPO Vipam Kumar 1445/SPO, SPO Gh. Nabi 111/SPO, SPO Mohd Shafi 1935/SPO, SPO Tanveer Ahmad 516/SPO, SPO Javid Ahmad 42/SPO (Spr), SPO Safer Ahmad 323/SPO, SPO Ab. Rahim 1171/SPO, SPO Ab. Rashid 1799/SPO, SPO Aasif Ahmad 273/SPO (Spr) were constituted under the supervision of Addl. SP Baramulla Shri Shafkat Hussain KPS-017356. During search, operation party headed by Shri Raja Majid Dy.SP came to know that one of the Fidayeen terrorist has taken refuge in one of the house and has held the family members hostage. The operation party showing professional skills entered into the house and handled the hostage situation with great bravery without caring for their precious lives resulted in elimination of said terrorist without any collateral damage, besides the family members were rescued. On 24.09.2017 while search was going on Shri Shafkat Hussain, Addl. SP Baramulla found that one terrorist has taken shelter in nearby mosque. Keeping in view the sanctity of mosque and law and order sensitivity attached to it, a crack team of Police/CRPF consisting upon, Nissar Ahmad Dy.SP, SgCt Mukhtar Ahmad 432/B and SgCt Amraiz Khan 890/B headed by Shri Shafkat Hussain Addl. SP Baramulla advanced with crawling and made entry in the mosque and neutralized the terrorist without causing any damage to the mosque.

After neutralization of terrorist from mosque, the search party sensed the presence of other terrorists in nearby house, Shafkat Hussain, Addl. SP Baramulla with his party moved ahead and launched a fire fight and eliminated 02 foreign Fidayeen terrorists and operation culminated on 25.09.2017. Case FIR No.70 of 2017 under section 307 RPC, 7/27 A. Act, 15, 18 U.L.A.(P).Act has been registered in Police Station Uri, in this regard.

In this operation S/Shri Dr. Ruhail Mircha, DySP, Raja Majid Batt, DySP, Aijaz Ahmad Malik, ASI and Ishaq Ahmad Mogray SgCT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 23/09/2017.

(No. 11020/34/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 94-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry /1st Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:—

S/Shri

1	Ajaz Ahmed Zargar	SP	1 st BAR TO PMG
2	Satinder Singh	CT	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 10/11.09.2017, acting on specific information about group of terrorists in village Khudwani, Police Kulgam under the supervision of SSP Kulgam along with troops of 1st RR and CRPF 18th Bn laid a cordon. However, the terrorists hiding in the village tried to escape and took shelter in a school. Accordingly cordon was expanded and all the escape routes were plugged off to trap them. Operational party under the command of Shri Ajaz Ahmed Zargar Addl SP Kulgam and Aman Kumar DySP PC Hatipora alongwith their party identified the target area where terrorists have taken shelter. Accordingly the terrorists were asked to surrender but they refused to do so except one chronic OGW Arif Ahmad Shah who was accompanying the terrorists surrendered before the security forces and otherterrorist tried to escape from the spot, and fired indiscriminately upon the security forces. The area being congested was properly sealed and in the first instance all the civilians residing in adjoining areas were evacuated. Sh Ajaz Ahmed Zargar Addl SP Kulgam alongwith his buddies ASI

Shahnawaz Ahmad Paddy 3656/S, SgCt Satinder Singh 532/Kgm took lead and fought head on with terrorists and engaged them in gun battle without caring for their safety. The brave officer and his buddy showed presence of mind, operational skills and abilities to fight against the menace of terror in a professional manner and neutralized both the hardcore terrorists affiliated with HM. Being a vulnerable area both from law and order and terrorism point of view, it is quite difficult to carry out such crucial and surgical operation in the area. Due to effective coordination and exemplary role of operational party consisting of SgCt Bilal Ahmad 653/IR 11th Bn ARP-012623, SgCt Mushtaq Ahmad 263/IR 3rd ARP-036732, Ct Jahangir Ahmad Ganie 6681Kgm, EXK-127655, Ct Arshid Ahmad 1076/Kgm, EXK-155944, Ct Adil Nabi Mir 1026/A EXK-118621, SPO Rayees Ahmad 399IK, SPO Nazir Ahmad 196/K, SPO Mohd Rafiq 47/K and SPO Shabir Ahmad Dar 247/SPO(Bla), though the terrorists have good public support and vast OGW network in the area which they potentially use against security forces, especially during cordon and search operation. The cordon was laid in manner and restraint people from indulging in stone pelting to avoid any kind of damage to civilian property and life. On the other hand Shri Aman Kumar Thoker alongwith SgCt Parvinder Singh 291/IR 3rd, SgCt Mohd Iqbal 276/IR 11th Bn, Arshid Ahmad 10761Kgm, EXK-155944, Ct Adil Nabi Mir 1026/A EXK-118621, SPO Showkat Ahmad 304/A, SPO Farooq Ahmad 295/SPO, SPO Mohd Iqbal 61/K, SPO Mohd Ashraf 237/K, SPO Aijaz Ahmad Dar 393/K, SPO Mohd Yaqoob 358/K, SPO Mohd Maqbool 41/K handled the situation outer side of the cordoned in a professional manner. Some youth of the area tried to instigate the people with the intention to provide escape route for trapped terrorist but their ultimately these brave hearted officers/officials conduct the operation in a professional manner and eliminated two terrorists namely Dawood Ahmad Allaje_S/o Late Ab Hamid Allaie "B" category HM outfit and Sayar Ahmed Wani S/O Gh Mohd Wani R/O Wanpora Qaimoh Kulgam HM (B) category. Arms/ammunition recovered from the possession of slain terrorists includes 01 AK-47 Rifle, 02 AK Magazines (01 damaged), 63 AK Rounds, 01 INSAS (damaged), 01 INSAS Magazine, 60 INSAS Rounds, 01 Pistol, 01 Pistol Magazine, 02 Pistol Rounds and 02 Pouch (damaged). Case FIR No. 141/2017 U/S 302/IPC, 7127/Arms Act stands registered in P/S Kulgam, in this regard.

Needless to mention that, the elimination of these dreaded terrorist was a big blow to terror organizations. The command and control and operational skills in laying effective cordon under such circumstances were commendable which resulted into the accomplishment of the mission after a long hot pursuit of tracking down terrorist. Another peculiar feature of the operation was that Kulgam Police accomplished the mission almost exclusively on own intelligence. The valour exhibited by the officials needs to be acknowledged so as to inspire other police personnel of operational party to fight continuously against the terrorism.

In this operation S/Shri Ajaz Ahmed Zargar, SP and Satinder Singh, CT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 10/09/2017.

(No. 11020/35/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 95-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry (Posthumously) to the under mentioned officers of Jharkhand Police:—

S/Shri

1	Awadhesh Kumar Jha	ASI	PMG
2	Late Om Prakash Chourasia	Hav (Posthu)	PMG (POSTHUMOUSLY)
3	Jai Prakash Singh	CT	PMG
4	Sachindra Kumar	CT	PMG
5	Anuj Kumar Singh	CT	PMG
6	Madan Prasad Yadav	CT	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 24/12/2014 at about 19:10 pm a patrolling team comprising of 1. ASI Awadesh Kumar Jha, 2. Havildar Omprakash Chourasia, 3.No.294 Jai Prakash Singh, Constable, 4. No. 1085 Sachinder Kumar Singh, Constable, 5. 1037 Anuj Kumar Singh, Constable on a police Rakshak vehicle no 13A/7418 were coming from Bhadrakli Mandir to Itkhor P.S. On the way near Sahi pond a group of MCC cadres detonated the IEDs planted on the road as a result of which the Rakshak turned turtle and its lid i.e. opening on the roof got opened. The MCC cadres sitting on the ambush started indiscriminate firing on the patrolling vehicle while targeting the police personnel. Havildar Omprakash Chourasia showed extra ordinary gallant and without caring for his life tied the roof lid tightly with his black towel and started counter firing in self defence. In this encounter Havildar Omprakash Chourasia gave supreme sacrifice and his gallant act saved the lives of his fellow mates and also saved the arms and ammunition from looting. The entire team meanwhile engaged the MCC cadres with heavy exchange of fire unless the reinforcement from Itkhor P.S came which left them with no option but to flee from the ambush site taking the advantage of darkness. In the encounter Havildar Omprakash Chourasia got Martyr and Anuj Kumar Singh, Constable, Jai Prakash Singh, Constable and Sachinder Kumar Singh, Constable were seriously injured and ASI Awadesh Kumar Jha & No. 959 Madan Parsad Yadav, Driver were partially injured. Hence the show of unparalleled gallant, extra ordinary courage by the team involved in the encounter comprising of 1. Martyr Havildar Omprakash Chourasia 2. ASI Awadesh Kumar Jha 3. Jai Prakash Singh, Constable, 4. Sachinder Kumar Singh, Constable 5. Anuj Kumar Singh, Constable and 6. Madan Parsad Yadav, driver are recommended for P.M.G award for their extraordinary courage, gallant & courageous encounter.

In this operation S/Shri Awadhesh Kumar Jha, ASI, Late Om Prakash Chourasia, Hav, Jai Prakash Singh, CT, Sachindra Kumar, CT, Anuj Kumar Singh, CT and Madan Prasad Yadav, CT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 24/12/2014.

(No.11020/92/2018-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No.96-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jharkhand Police:—

S/Shri

1	Arun Kumar Singh	Addl. SP	PMG
2	Ranjeet Kumar	CT	PMG
3	Balram Das	CT	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

The present recommendation is merely an endeavor to imprint the conspicuous gallantry, resolute fighting spirit, absolute dedication and devotion to duties exhibited by nominees during fatal encounter between the police team and the heavily armed cadres of dreaded CPI (Maoist) on 08/02/2018 in an untrodden hilly area, falling within the Naudiha Bazar Police station under jurisdiction of Palamau District.

CPI (Maoist) is a banned extremist outlawed group, spread across the areas of adjacent states and known for their reign of terror. The might of this outfit is strengthened due possession of latest firearms and large cadre strength in upper base of the Junjulu hill which is surrounded with dense forest and tough undulated terrain. The general area of Junjulu forest is in complete isolation with no connectivity by either means which renders it hostile for police in want of timely reinforcement and support. In these circumstances the sequence of events could have effected serious and heavy casualty and damage to police team with loss of arms/ammunition involved in the said encounter. But police team under the cutting-edge command of Addl.S.P.(OPS), Palamau, Sri Arun Kumar Singh alongwith team of CRPF /134 Bn, IRB-03 & DAP, was not only succeeded in neutralizing one of the dreaded Maoists of outlawed CPI(Maoist) but also succeeded in arresting one injured female armed cadre and recovering a huge cache of arms, ammunitions, devices, stuffs and propaganda materials. The heroic action with courage by team under apt determination, foolproof planning and immaculate execution with tactics, leadership and professionalism of highest order laid by Sri Arun Kumar Singh, Addl S.P (OPS) could save our men and arms/ammunition from any casualty/loss. This piece of gallant episode is entirely elaborated in Naudiha Bazar P.S. Case No.05/2018 dated 09/02/2018 registered U/S 147,148,149,353,307,504,506 IPC, 25(1-A),25(1-b)A,26,27,35 of Arms Act and 10,13,16,20,23 UAP Act and 17 CLA Act.

The Superintendent of Police, Palamau, at 14:00 PM on 07/02/2018, on getting tip of information about movement of Sub-zonal commander Rakesh Bhuiyan, the dreaded maoist of banned outlawed CPI (Maoist) with 20-25 armed members

around Junjulu forest and neighbouring undulated terrain with some ulterior motive. After going through discussions with officers concerned, a police team constituted under leadership of Sri Arun Kumar Singh, Addl. S.P.(Operation) Palamau, with SHO Patan P.S, SI Pramod Kr, Hay. Shanti Ram Mahto, Constable 170 Ranjeet Kumar, constable 904 Balram Das, constable 1337 Chhotelal Kr, officers and personnels of 134bn CRPF for establishing the intelligence by verification and further necessary action. Accordingly ops was launched on 07/02/18(A.N) under the leadership of Addl.S.P.(Operation) Arun Kumar Singh. Subsequently, on 2nd day of the Ops i.e on 08/02/18, the police team carefully forwarded towards Junjulu forest surrounding from western side and tactically reached till a drain at 15:00 Hrs. This place was covered by thick vegetation, undulated ground and bushes all around. Suddenly, the police team perceived the presence of few persons wearing black uniform and carrying Insas and police rifles. In no time, the OPS party took position, identified and signaled about the arm carrying members of CPI (Maoist). Once they got closer, the police team shouted *giving* own identification as police and suggested for surrender to armed outfit but intending to kill police team Maoists started barrage of bullets . An encounter was evident which was soon established with incessant and indiscriminate fire. The group also echoed slogans "MAOWAD JINDABAD" with gunshots. The police team still kept its nerve cool and again suggested giving loud alarm to surrender but the maoists continued firing from south and east directions. With no alternative left in their safeguard, the Addl.S.P.(Operation) with QAT commander and members of police team crawled ahead, ensured tactical position and opened counter-fire in the East and south direction. By 17:30 Hrs, the armed extremists reduced their firing rate. Thereafter, the Addl.S.P.(Operation) with his team alongwith the team led by Dy. Commandant CRPF 134 BN, proceeded in the east direction to encircle those armed maoists with intention to pressurize them for surrender. At that event , the police team was in jaws of death and were also having danger to their lives. Although it was a risky affair to take a lead during hostile firing, Finding themselves under close clutch of police party, the armed Maoists once again opened indiscriminate firing on advancing police team.They also tried to discourage the police party by start abusing Police verbally alongwith making slogans of "Maowad Jindabad.

Finally they retreated and vanished into dense jungle and hilly terrain due to onset of evening darkness.

Directing the team to continue with controlled firings in self defence, Addl.S.P.(Operation) with his buddy constable 170 Ranjeet Kumar, constable 904 Balram Das and other active members of the team, started search in area of conflict. The body of one maoist was recovered whereas one female armed maoist was found injured who during interrogation, disclosed the names of other sixteen armed maoists and also about 10-12 other unidentified members. First aid was immediately provided to the injured female maoist and subsequently she was taken to hospital for treatment and early to that the matter was reported to S.P. Palamau in details. Various arms, stuffs and propaganda materials were also recovered. After arrival of the S.D.O. Chhattarpur, B.D.O. and C.O. of Naudiha Bazar with Jaguar Team, on 09/02/18, the inquest report of dead armed maoist identified as Mahesh Bhokta @ Jitan Ganjhu @ Gardian Da was done and on search of the dead body, one 0.315 bore rifle and one magazine containing live cartridges was recovered and from nearby the dead body various arms, ammunitions and other materials whose details have been listed in the seizure list.

In continuation to this operation on dated 10/02/18, Mao Rajesh Yadav, Area comdr CPI (Maoist), arrested from vill.Tenudih (near to vill. Junjulu) under Naudiha Bazar P.S and on his confession one .303 Police rifle with magazines, live ammunitions, explosive materials and many other items were recovered from encounter site which is elaborated in case no 06/18 dtd 10/02/18 Naudiha Bazar P.S. In addition and consequences to this, with heroic act and sound strategy Addl.S.P.(Operation) Sri Arun Kumar Singh later on conducted successful operation in which Mao Deepak Ganjhu, SZC (05 lakh reward), Mao selvam, Mao Yogendra Bhuiyan, Mao Gita and Inermila were arrested while Mao Rajendra Bhuiyan surrendered before police . Mao Rakesh Bhuiyan, SZC, Mao Lallu Yadav, Mao Rubi and Mao Rinki were neutralized in police encounter. All were actively participated in ransacking of police team from the upper portion of Junjulu Hill on 08/02/2018 for which at Naudiha Bazar P.S. case No.-05/2018 and Chhattarpur P.S. Case No. 28/2018 have been registered leading to recovery of sophisticated, restricted and police looted rifle, other weapons and ammunitions, explosives and other materials which is usually carried by this armed squad of CPI (maoist).

During the operation, Shri Arun Kumar Singh, Addl.S.P (OPS), shown humanity to save an injured female armed maoist and exceptional leadership qualities blended with exemplary courage risking his own life in neutralizing the dreaded maoist before he could cause any fatality to his fellow policemen.

Shri Arun Kumar Singh, Addl. S.P, displayed a solid example of loyalty, the guts of gallant and real qualities of a leader, in keeping with the highest traditions of any police force. The act of discipline, extreme bravery, leadership of highest order and exemplary courage since beginning to the end, shown by the aforementioned nominees, established high moral of the entire police team and instilled other's confidence and deserves recognition and appreciation of the highest level.

In this operation S/Shri Arun Kumar Singh, Addl. SP, Ranjeet Kumar, CT and Balram Das, CT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 08/02/2018.

(No. 11020/103/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 97-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jharkhand Police:—

S/Shri

1	Ramendra Kumar	DySP	PMG
2	Om Prakash Tiwary	DySP	PMG
3	Alok Kumar Dubey	SI	PMG
4	Pramod Yadav	CT	PMG
5	Manoj Kumar	HC	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

This recommendation emanates from the heroic, gallant deeds of exceptional valour, firm determination self less service, magnificent leadership and high level of co-ordination displayed by the nominees. This refers to the two deadly and fierce encounter which took place on 01/02/2018, in hilly and dense forest area of Viii: Pandra, under PS: Garu, Distt Latehar, State : Jharkhand, between the Police team and the dreaded extremists of CPI (Maoists) in which one Sub-Zonal Commander of CPI(Maoist) was killed. It is important to mention here that Latehar district of Jharkhand occupies a prominent place on the map of Maoists because of its strategic importance in, establishing their hold in Jharkhand, Bihar and Chhattisgarh and further stretching the RED CORRIDOR to have easy access in the areas where they like to operate.

On 31/01/2018 human intelligence was received regarding movement of armed group of CPR Maoists) in Bhitara Pandra forest area, under Garu PS. Subsequently a Joint Operation "BATHUATOLI" Was planned, including AG-3 of Jharkhand Jaguar and District Police Team consisting Sh Om Prakash Tiwari, SDPO Mahuatana, SI ,Alok Kumar Dubey,, OC Netarhat PS and 17 other police personnel under over all command of Sh Ramendra Dy SP of AG-3 (JJ).

On 01-02-2018 at about 0300 hrs ops team left for its 'assigned area Pandra from Bathutoli (Netarhat). At 0430 hrs ops team started tactically advancing through a very steep slope, near Ghaghari falls .= Sh Ramendra Kumar was in scout group leading the force with Ct Pramod Yadav, Ct Ajit and HC Manoj, Sh Om Prakash, SDPO Mahuatana & SI Alok Kumar Dubey, OC Netarhat were leading the police team in mid section and rear party respectively. Team was advancing in thick forest area towards Bhitara Pandra through steep slope with high hill ranges on both the sides. Ct Pramod and HC Manoj noticed some suspicious movement on upper ridge in left side. They immediately informed the team commander Sh Ramendra, he in turn alerted Sh Om Prakash and SI Alok Kumar Dubey to be vigilant. Suddenly heavy fire came upon the scout group, they challenged them that they are police and asked them to surrender but they returned the call with increased volume of fire. Sensing the eminent threat on security forces Sh Ramendra Kumar Sh Om Prakash and SI Alok Kumar Dubey ordered their team to retaliate With controlled fire in self defence. Dy SP Ramendra along with scout Ct Pramod Yadav, Ct Ajit and HC Manoj opened fire on Maoists and retaliated valiantly and hold them, Sh Om Prakash and SI Alok Kumar Dubey formed a small team and started encircling the maoist from left flank and advanced in the direction of fire using the ground and whatever cover available without caring for their life. Seeing dominating police party Maoists fled the scene and disappeared taking advantage of thick forest and hilly terrain, leaving behind huge cache of ammunition, explosives and naxal propaganda literature. This encounter lasted for almost 1 hour. Once the fire was stopped from Maoists, Sh Om Prakash and Sh Ramendra ordered their troops to search the area and while searching, one Sub-Zonal commander of Maoists, Birbal Oraon @ Laldeo Oraon s/o, Vill: Salgi Budhiya Toli, PS- Ghaghra, Distt-Gumla who was in naxal uniform with a weapon beside him was found lying in pool of blood in seriously injured condition. He was immediately administered first aid by police party and thorough search was ordered in which large no of detonators IEDs ammunition and Naxal Propaganda literature was recovered. Showing humanitarian approach towards injured naxal Sh Ramendra Kumar Dy SP and Sh Om Prakash decided to evacuate him. When police team advanced tactically in order to evacuate the injured extremist for timely treatment, on reaching near village Bhitara Pandra maoists ambushed them and fired upon heavily, behind the cover of civilians, with the intention to release their commander, maoist Birbal Oraon and to take away the recovered arms ammunition and explosives. Again police team re —org themselves, Om Prakash Tiwari Dy SP with his team stayed there with the injured Naxal and also gave strong retaliation to the naxals and prevent them from advancing towards them. Mean while SI Alok Kumar Dubey with his team advanced from left flank and Sh Ramendra with his Section No-3 advanced towards the naxals from right flank and moved in the direction of fire showing utter disregard to their life. Sensing the strong retaliation from the police force naxals once again flee taking the advantage of thick forest and hilly terrain.

Sh Ramendra Dy SP, Sh Om Prakash Tiwari Dy SP and SI Alok Kumar Dubey with their team fought valiantly and showed exemplary level of co-ordination and cohesion at the crunch time and infused extraordinary valour in the troops, HC Manoj and Ct Pramod fought audaciously along with their commanders and showed fearless bravery without caring for their life amid heavy firing by Maoists and gave befitting reply to their offensive act. The well co-ordinate plan perfect execution and exemplary cohesion at the time of crisis, gallant and vigorous act of the team commanders and their team lead to killing of Sub-Zonal commander of CPI (Maoist) namely Birbal Oraon @ Laldeo Oraon s/o Karma Oraon, Vill: Salgi Budhiya Toli, PS: Ghaghra, Distt: Gumla. This gallant episode is elaborated in detail in the FIR of Garu PS Case no. 02/18 dated 01.02.18 U/S - 147/148/149/353/307 WC, 25(1-b)/25(1-A)/26/27 arms act, 3/4 Exp act, 10/13/16/20 UAP act and 17 CLA act. It is pertinent to mention here that there were total 12 cases registered against him in different police stations and Govt of Jharkhand had announced TWO LACS CASH reward to arrest him alive or dead.

In the above mentioned encounter with their professional acumen, immaculate planning heroic and conspicuous gallant action and aggressive leadership Sh Ramendra Kumar Dy SP, SI Alok Kumar Dubey, OC Netarhat PS, and with display of great level of courage and team spirit by HC Manoj Kumar Ct Pramod Yadav, set very high standards of service aims, dedication bravery and loyalty which will remain an ideal for every force personnel.

In this operation S/Shri Ramendra Kumar, DySP, Om Prakash Tiwary, DySP, Alok Kumar Dubey, SI, Pramod Yadav, CT and Manoj Kumar, HC displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 01/02/2018.

(No. 11020/106/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 98-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jharkhand Police:—

S/Shri

1	Brijesh Kumar Yadav	DySP	PMG
2	John Murmu	SI	PMG
3	Bihari Marandi	SI	PMG
4	Radhe Shyam Prasad	HC	PMG
5	Ritul Kumar	CT	PMG
6	Rinku Kumar Yadav	CT	PMG
7	Jeevan Kispotta	CT	PMG
8	Gun Bahadur Thapa	CT	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded.

This recommendation emanates from the gallant deeds, firm determination, selfless service, magnificent leadership and high level of coordination displayed by the nominees. This refers to the deadly and fierce encounter which took place on 24th Sep 2017 in general hilly and dense forest area of Toniya kolatupu toli, Girda O.P, P.S.- Bano between the police team and the dreaded extremists of PLFI in which a two lakh rewarder of Jharkhand Govt. and area commander Radha Nayak with two other Dasta members (Lalu Lohra and Manish Surin) were killed.

On 23rd September, 2017 around midnight, an intelligence was received by SP Simdega regarding presence of some of most fierce leaders and members of banned PLFI group in area of Pangur, Kamlabera and Toniya kolatupu toli. Based on the input 05 parties were formed including 04 cut offs and 01 main raiding party which was led by D.C. Brijesh Kumar Yadav, Jharkhand Jaguar. At about 11:00 Hrs, when assault team reached near general forest area of Toniya kolatupu toli, Bano, some extremists emerged near scout party suddenly and taking cover of trees started firing with automatic weapon on scout party in which constable Rinku Kumar, constable Ritul Kumar and D.C. Brijesh Kumar were present. Immediately, Sh. Brijesh Kumar, D.C. cum AG commander ordered his men to take position against naxalite and challenged the extremists to stop firing and surrender themselves. Regardless of the caution extremists kept on firing on police party. On this the police party started firing in self defense. Meanwhile Sh. Brijesh Kumar Yadav, D.C. along with constable, Ritul Kumar and constable, Rinku Kumar endangering their lives crawled towards left side where naxalite had taken position and started firing on them.

Meanwhile, S.I John Murmu and S.I. Bihari Marandi without caring of his own life crawled towards right side and started firing on the extremists. As soon as the firing started, they challenged the extremists from their side. On seeing the attack from other side naxalites started firing indiscriminately on them. With all exemplary courage and leadership. SI John Murmu ordered their men S.I. Bihari Marandi, HC Radheshyam and constable, Gun Bahadur Thapa to take position and they endangering their lives crawled towards right side in where naxalites has taken position and started firing on them. S.I. John Murmu, S.I. Bihari Marandi, HC, Radheshyam and constable, Gun Bahadur Thapa accompanied with constable Jiwan Kispotta showed enormous courage and exemplary leadership in encircling the extremists and opened fire on them. The exchange of fire continued up to 20-25 minutes.

After that a search operation was carried out in general area in which 03 dead bodies, heavy cache up arms and ammunitions and logistic items as per seizure memo were recovered.

Team Commander and their team led to elimination of area commander of PLFI Radha Nayak rewarder of 2 lakh from Jharkhand Govt. and mastermind of many barbaric acts in the area and two other Dasta members Lalu Lohra and Manish Surin.

In this operation S/Shri Brijesh Kumar Yadav, DySP, John Murmu, SI, Bihari Marandi, SI, Radhe Shyam Prasad, HC, Ritul Kumar, CT, Rinku Kumar Yadav, CT, Jeevan Kispotta, CT and Gun Bahadur Thapa, CT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 24/09/2017.

(No. 11020/107/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No.99-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jharkhand Police:—

S/Shri

1	Arun Kumar	SI	PMG
2	Sanoj Kumar Choudhary	SI	PMG
3	Abhishek Kumar	ASI	PMG
4	Manish Rajwar	CT	PMG
5	Anoj Kumar Ojha	CT	PMG
6	Naresh Tigga	CT	PMG
7	Indrajit Tiwari	CT	PMG
8	Shyamanand Prasad Gupta	CT	PMG
9	Chotu Yadav	CT	PMG
10	Manoj Kumar Bawri	CT	PMG
11	Mithun Kumar Ravi	CT	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded.

This recommendation emerges from the chivalrous deeds, audacious actions, exceptional valour, firm determination professional acumen and leadership and great degree of co-operation and coordination displayed by the nominees. This refers to the deadly and fierce encounter which took place on 04/04/2018, in "Kauwakhoh Nala" in Bhargaon-Sikid Forest area under PS: Herhanj, Distt Latehar. State : Jharkhand, between the Police team and the dreaded extremists of CPI (Maoists) in which 5 Sub Zonal Commanders of CPI (Maoist) were killed. It is apposite to mention here that Latehar district of Jharkhand is strategically very important area for the CPI(Maoist) to establish their hold in Jharkhand. Bihar and Chhatisgarh. North Latehar is the region which provides corridor of movement towards Bihar to the Naxal leaders who move to and fro to conduct meetings and plan their future strategies against the Government and the Security Forces.

On 03/04/2018 human int. as well technical int. was received regarding movement of armed group of CPI(Maoists) in the bordering forest area of Manika-Herhanj-Latehar PS. Subsequently an Ops "Khirakhand" was launched including 2 teams of CoBRA 203 teams of 11 Bn CRPF, Assault Group No. 3 & 34 of Jharkhand Jaguar and police team consisting Vipul Pandey, Addl SP (Ops) Latehar, SI Sanoj Cahudhary, OC Herhanj PS, 1 ASI and 4 CTs. All the six teams were assigned 6 different areas to search and neutralize the naxals. Team-5, consisting AG-3 of Jharkhand Jaguar under command of Sh Ramendra Dy SP, team of 6 police personnel including SI Sanoj Chaudhary, OC Herhanj, under overall command of Sh Vipul Pandey, Addl SP Ops, was assigned to search the Nala b/w Sikid PF and Bhargaon PF. Ops Team moved on 03-04-18 at 1900 hrs for its assigned area and reached Sikid forest area around 2300 hrs and took harbor in forest area and team tactically advanced around 0600 hrs on 04-04-2018 for searching and combing their earmarked area as planned. After advancing upto certain distance SI Snaoj suggested team commander Sh Vipul Pandey to split the team in two parts for better domination and search. Sh Vipul Pandey, discussed it with Sh Ramendra, AG-3 Commander and it was decided to move section no 3 of AG, under command of ASI Abhishesh Kumar on the mid ridge and remaining team to search the nala. While on the move Vipul Pandey noticed 2-3 freshly dug earth (chuanri) to collect water, in the nala. He immediately alerted the troops and directed them to be more vigilant, team kept moving tactically, after few minutes again sound of interference in the radio set was heard by Vipul Pandey, he again alerted the troops and asked AG commander Sh Ramendra to alert the section moving in mid ridge. Around 0700 hrs when team was tactically moving in the East direction all of sudden heavy volley of fire came on the section no-3 moving on the mid ridge as well as on the team moving in the nala. Fire was indiscriminate and targeted on the police force. Sh Vipul Pandey, SI Sanoj Chaudhary and Sh Ramendra challenged the armed Maoists to surrender but the call was returned with increased volume of fire. Thereafter the whole party was ordered to retaliate with directional but controlled fire. Maoists were firing heavily on the section-3 which was moving on mid ridge but ASI Abhishesh Kumar Ct. Manoj Kumar Bawari and Ct Mithun Kumar Ravi who were in scout retaliated valiantly and hold

them. Sh. Vipul Pandey sensing that Maoists are trying to encircle section no-3, small team instantly consisting AG-3 commandar Sh Ramendra, SI Sanoj Chaudhary, Ct Anoj Ojha, Ct. Manish Rajwar, Ct Naresh Tigga, Ct Chotu Yadav and moved towards Section no-3 which was pinned down by the heavy volume of fire by the naxals. This party advanced towards height employing fire and move tactics and by making the best use of the ground, during their movement few naxals who had taken defensive position in the dry nala, going downwards, fired heavily on them. But with grit cohesiveness and great determination and without caring for their lives, this team kept advancing with whatever cover available to support Section no-3 which was under heavy fire. Soon this party encircled the Maoists from right flank and gave befitting reply and strong retaliation. This courageous action of the troops pushed Maoists to defensive mode. Mean while a group of naxals advanced towards nala with heavy fire and with the intention to break into the troops taken defensive position in the nala and who were giving support to the troops moving upwards. But SI Arun Kumar who was alert and vigilant sensed their intention and he along with Ct Indrajeet Tewari, and CT Shyamanand Prasad took position strategically and realigned them to launch counteroffensive attack against the naxals who were firing heavily and advancing towards them but this courageous & determined team of SI Arun, showing utter disregard to their life, gave them strong retaliation, and hold the naxals from advancing inspite of being at less advantageous position i. e. at relatively lesser height and forced them to withdraw back. Since Maoists were on back put this was the best time to launch counter attack, Sh Vipul Pandey, Sh Ramendra, SI Sanoj Chaudhary re-org the troops and lead the hot pursuit of the fleeing Maoists, showing fearless bravery in the face of intimidating fire and utter disregard to their personal safety. They employed heavy firepower, and advanced tactically inside jungle adopting fire and move tactics. Finally sensing the extreme aggression and counter offensive approach of the troops, the Maoists fled taking cover of the thick forest, leaving behind huge cache of explosive arms and ammunition. Encounter lasted for almost 03 hours. Sh Vipul Pandey, Sh Ramendra, SI Arun Kumar SI Sanoj Chaudhary and ASI Abhishesh Kumar fought valiantly and showed exemplary level of co. ordination and cohesion at the crunch time and infused extraordinary valour in the troops. Ct Anoj Ojha Ct Manish Rajwar, Ct Naresh Tigga, Ct Indrajeet Tewari, Ct Chotu Yadav, Ct Shyamanand Prasad, Ct Manoj Kumar Bawari and Ct Mithun Kumar Ravi fought audaciously along with their commanders and showed fearless bravery without caring for their life amid heavy firing by Maoists and gave befitting reply to their offensive act. The well co-ordinate plan perfect execution and exemplary cohesion at the time of crisis, gallant and vigorous act of the team commanders and their team lead to killing of DREADED SUB ZONAL COMMANDERS OF KOYAL SHANKH ZONE OF CPI (MAOISTS) namely:—

Shrawan Yadav@Yogendra Yadav	Total 41 cases were registered against him
Madan Yadav@Majnu	Total 24 cases were registered against him
Shivlal Yadav	Total 30 cases were registered against him
Ashish Yadav@Rajesh Yadav	Total 02 cases were registered against him
Narsingh Yadav	Total 02 cases were registered against him

Beside above sophisticated weapons like AK 47, INSAS rifle and large cache of ammunition were also recovered. These dreaded extremists had created atmosphere of terror and had strong hold in North Latehar region. Their death led to establishment of peace and tranquility in North Latehar an support base of Maoists in that region is almost finished. Thus the absence of leadership, forced the Maoist commanders, to merge North Latehar Sub Zone (of Koyal Shankh Zone) with the Madhyal Zone Committee of CPI (Maoists), which is evident from the seized naxal literature regarding 4th meeting of Koyal Shankh Zone Committee. Later one more Sub-Zonal Commander Birender Shankar, who had got injured in that encounter also surrendered. This gallant episode is elaborated in detail in the FIR of Herhanj PS Case No. 14/18 dated 04.04.18 U/S 147/148/149/342/353/307 IPC25(1-a)(1-b) a/26/27/35 Arms act, 10/13/18/20 UAP act & 7(i)(ii) CLA act. It is pertinent to mention here that Out of five dreaded extremists who were killed in the fierce encounter, on threat extremists, Govt. of Jharkhand had announced FIVE LACS CASH reward (on each) to arrest alive or dead.

In the above mentioned encounter with their gallant action aggressive leadership and team spirit SI Arun (AG-3 of Jharkhand Jaguar), SI Sanoj Choudhary, OC Herahanj PS, ASI Abhishesh (AG-3 of Jharkhand Jaguar), CT Manish Rajwar, CT Anoj Kumar Ojha, CT Naresh Tigga, CT Indrajeet Tiwari, CT Shyamanand Prasad Gupta, CT Chotu Yadav, CT Mithun Kumar Ravi and CT Manoj Kumar Bauri set very high standards of service aims and leadership which will remain an ideal for every force personnel.

In this operation S/Shri Arun Kumar, SI, Sanoj Kumar Choudhary, SI, Abhishek Kumar, ASI, Manish Rajwar, CT, Anoj Kumar Ojha, CT, Naresh Tigga, CT, Indrajit Tiwari, CT, Shyamanand Prasad Gupta, CT, Chotu Yadav, CT, Manoj Kumar Bawri CT and Mithun Kumar Ravi, CT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 04/04/2018.

(No. 11020/108/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 100-Pres/2020.—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Maharashtra Police: —

S/Shri

1	Mithu Namdev Jagdale	SI	PMG
2	Surpat Bawaji Wadde	Naik	PMG
3	Ashish Maroti Halami	PC	PMG
4	Vinod Chaitram Raut	PC	PMG
5	Nandkumar Uttareshwar Agre	PC	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

PSI Mithu Namdev Jagdale, NPC/2628 Surpat Wadde, PC/5954 Ashish Maroti Halami, all of them were posted at special operation squad (C-60) Gadchiroli and PC/4190 Vinod Chaitram Raut and PC/4216 Nandkumar Agre were posted at QRT Pendhari.

On 24.07.2016 PSI Mithu Namdev Jagdale alongwith party commander Surpat Wadde and 19 policemen left Gadchiroli and reached AOP Karwafa for conducting anti naxal operation. The above police party was joined by another police party i.e. QRT Pendhari and Karwafa and both the parties then reached AOP Gatta (Fu) on 27.07.2016.

The naxalites of CPI (Maoist) groups had called for observing Band in the district from 28th July to 3rd August. Every year during this period, the naxalites call band in order to disturb law and order and to start their violent activity.

Based on reliable information received by PSI Jagdale the police parties set out from Gatta (Fu) on 28.07/2016 to Bhimpur forest for conducting anti naxal operation. After reaching the forest of Bhimpur 3 groups were formed. One group consisting of 9 men was headed by party commander NPC/2628 Surpat Wadde, another group consisting of 11 policemen including PC/5954 Ashish Halami was headed by PSI Mithu Jagdale. The 3rd group consisting of 17 policemen including PC/4190 Vinod Raut, PC/4216 Nandkumar Agre was headed by HC/161 Krishna Shende, party commander of QRT pendhari. These 3 groups then started carrying out anti naxal operation in 3 different directions in the forest of Bhimpur.

At around 10.30 hr, the police party headed by party commander Surpat Wadde was suddenly attacked by armed naxalites by open fire. The police party at once took position in the forest and noticed 30 to 40 naxalites in olive green uniform were firing at them. The police party convinced that the attackers belonged to the CPI (Maoist) group. Hence, PSI Mithu Jagdale made an appeal to surrender, but the naxalites overlooked the appeal made by the police and continued to fire at the police party. The naxalites were heard calling themselves aloud "Indira, Ramesh, Nilesh, do not let the policemen, go away kill them and snatch away their arms and ammunition. Mahesh Jyoti, Arti, you all cover the police party from left and ensure that they are killed" In the meantime, the naxalites attacked PSI Jagdale and his staff by opening rapid fire. Also, 3 to 4 members belonging to party commander Surpat Wadde were being targeted by the naxalites. So for providing protection to these policemen, PSI Jagdale along with some members of his party risking their own life into grave danger and simultaneously opened controlled fire at the direction of attacking naxalites. In such a fearful situation the policemen were retaliating to the naxalites by putting their own life to great degree of risk as the retaliation by all the 3 police party went on increasing the naxalites had no other alternative but to run into the deep forest. The firing between the naxalites and the police party lasted for half an hour.

Thereafter, PSI Mithu Jagdale informed all police personnel parties to assemble at a place cautiously. He then carried out an assessment of the status of the police personnel involved in the encounter. It was transpired that PC/5488 Kailash Gedam, PC/4219 Nandkumar Agre and PSI Jagdale had sustained injuries while taking position during the firing and the rest of the personnel were safe and unharmed.

Thereafter, the police personnel conducted a search of the place of incident following proper SOPs during the search operation, a woman naxalite in a olive green uniform was found lying unconscious on the ground with 12 bore gun, 20 empty cartridge of 12 bore gun, 3. Pieces of detonator, 2 empty cases of 12 bore gun, etc. beside her.

The police party collected the following ammunition Viz. 356 rounds of AKM rifle, 65 rounds of SLR, 2 Cells of UBGL, further the QRT, Pendhari had collected 229 rounds of AKM rifle, 140 rounds of SLR. Along with the material seized from the place of incident. The police party reached AOP Gatta (fu) at around 07.00 hrs. The body of woman naxalites was immediately taken to Primary Health Center at Gatta (fu). But since the Medical Officer was not available. The body of woman naxalite was shifted to General Hospital, Gadchiroli for treatment.

Later on the dead body of woman naxalite was identified as Indira alias Meshi Sannu Korami, Dalam Member of Platoon No. 3, Age 21, years. at. Karem, Taluka Etapalli, District Gadchiroli.

The above anti naxal operation in a forest of Bhimpur was launched during the Naxal Shahid Week wherein the police personnel displayed outstanding courage and dedication towards their duties by exposing their life to grave risk and completed the mission successfully. The extra ordinary courage displayed by PSI Mithu Namdev Jagdale alongwith Surpat Wadde, Ashish Halami of Vinod Raut and Nandkumar Agre has laid to the elimination of naxalites and seizure of arms and ammunition.

In this operation S/Shri Mithu Namdev Jagdale, SI, Surpat Bawaji Wadde, Naik, Ashish Maroti Halami, PC, Vinod Chaitram Raut, PC and Nandkumar Uttareshwar Agre, PC displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 28/07/2016.

(No. 11020/100/2017-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 101-Pres/2020 —The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Maharashtra Police: -

S/Shri

SI No	Name	Rank	Award
1	Dr. MCV Maheswar Reddy, IPS	Addl.SP	PMG
2	Sameersinh Dwarkojirao Salve	DSP	PMG
3	Avinash Ashok Kamble	NPC	PMG
4	Vasant Buchhaya Atram	PC	PMG
5	Hamit Vinod Dongare	PC	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

Dr. MCV Maheswar Reddy, Additional operations had received credible information that a group of about 100-120 naxals; heavily armed with automatic weapons have crossed from Maraknar village to Fulnar village on the night of 31.10.2017. Based on interrogation of surrendered naxals, probable areas of their presence was chalked out and accordingly operation was launched. The probable area of operation was koparshi jungle area; which is part of Abuz Maad and bordering area of Narayanpur district, Chhattisgarh. This area is considered as Naxal strong area and liberated zone by Naxals, as all top leadership of Gadchiroli Naxals stays in the area. Also, in most of previous operations in this area; police personnel has suffered losses. On 22nd march 2015, police party ventured in this area after many years and was ambushed by naxal; 2 policemen attained martyrdom in the event. And again on 3rd May 2017 another attempt was made but again police party was ambushed and 3 policemen suffered severe injuries. Another party sent by Mine protected vehicle(MPV) for reinforcement came under IED attack and 1 policemen attained martyrdom and 21 policemen were badly injured. So in order to boost morale of force, operational success in this area was badly required. Hence after careful planning and waiting for right opportunity, this operation was ordered by Dr. Abhinav Deshmukh IPS, SP Gadchiroli to be personally led by Dr. MCV Maheswar Reddy, IPS Additional SP operations.

On night of 1/11/2017 under the leadership of the Addl. S.P. Dr. MCV Maheswar Reddy operation was launched. It comprised Dy.S.P. Shri. Sameersinh Salve, API Rajesh Khandave, PSI Ajit Patil, PSI Rankhamb, Motiram Madavi party, Rakesh Hichami party, Nagesh Tekam party, Sanjay Wachami party and QRT Bhamragad. All groups were set out in private vehicles for conducting anti-naxal operation in the forest area; around the villages Poyar kothi, Fulnar and Koparshi under the jurisdiction of AOP Kothi under Bhamragad Sub-division. They reached the forest of Arewada at about 11 pm in night and then discarded the vehicles. Operation teams walked whole night and at about 5 in the morning reached Gundurvahi jungle area. Thereafter, they formed 3 teams under the leadership of Shri. Dr. MCV Maheswar Reddy, DySP Shri. Sameersinh Salve and ASI Motiram Madavi and started search of jungle area. It was decided all 3 teams will keep in contact through wireless VHF communication and in time of need will help out each other and automatically work as cutoff party. On night of 2nd November all 3 teams completed their area of search and came together on a predetermined spot and rested there. Again on early hours of 3rd November 2017 operation was again started. Three teams were again formed for searching the area.

On centre is team lead by Dr. Maheswar reddy, right side is team lead by Sameer salve and on left side was team lead by ASI Motiram madavi. At about 11.30 AM, left side team came in contact with naxals and firing has started. NPC/2187 Avinash kamble, PC/5231 Vasant Atram and PC/5575 Hamit Dongre were at the front of the party

and showed extraordinary courage and opened controlled fire upon naxals. Avinash Dongre used his UBGL very effectively and due to his exact fire of UBGL cells, the naxals moved away from that spot and party remained safe due to their combined attack on naxals. While the firing by Motiram Madavi team was going on the instruction of Dr. MCV Maheswar Reddy, Addl. S.P. (Ops.), remaining 2 teams started moving towards the firing spot from different directions. The groups headed by Dr. MCV Maheswar Reddy and Sameersinh Salve, encounter with naxals and came under fire from Naxals. Accordingly, police team also retaliated in self defense, and opened fire in the direction of naxalites. While retaliating to the naxals Sameersinh Salve was asked to reach the spot of firing and reinforce Motiram party. Dr. MCV Maheswar Reddy team took a detour to protect the route of which retreating police teams.

Information through local villagers reached till naxals that police had protected retreating route and so naxal could not ambush the retreating police teams which they did in previous occasions. Meanwhile 2 teams on spot had started search of area and found one Naxal male dead body, SLR rifle, 1 carbine rifle, 1 air rifle and huge cache of naxal material and literature was recovered. Both the teams are ordered to wrap up all seized material and return without wasting any time. Any delay by police, naxal will get time to plan and execute ambush. Both the teams started to retreat from the spot. As the tactically sound ambush with high platform to shoot at retreating parties was covered by Dr. Maheswar Reddy team, naxal approached an area which not suitable for ambush and fired on retreating parties. The splinters of the bullet hit the right leg of commando named PC/3117 Sainath Murkute. It was necessary to move from the spot quickly. Sameersinh Salve team and Motiram team rapidly opened fire to retaliate the naxals. In the meanwhile, ASI/1331 Motiram Madavi also got injured on the spot.

Dr. MCV Maheswar Reddy, personally took active role in the battle against Naxalites and ensured that nobody in the party was left vulnerable to attack. He gathered all the commanders and instructed them about the next plan to move safely from the spot. He actively led from the front and guided the parties to the safer area. On night of 3rd November 2017, all teams rested in koparshi jungle. All teams walked till safe area carrying Naxal dead body for 10 kms in spite of not having any food for about 24 hours. Next day morning, all teams crossed parakota river and reached kothi AOP, from where naxal dead body, seized material and injured persons were airlifted to Gadchiroli HQ.

Police parties seized following material from the spot :—

1)SLR Rifle - 1, 2) Carbine Rifle - 1, 3) Air Gun - 1, 4) SLR Rifle Magazine - 1, 5) SLR Rifle live rounds - 08, 6) WTs - 3, 7) Solar plates - 5, 8) Naxal Dangri - 2, 9) Naxal Pittos - 3, 10) Radio - 1, 11) WT charger - 2, 12) red color Horse-1 and Medicine Box along with other literature etc. In addition to these, they recovered one dead body of a intelligence department (SID) gave report that one more Naxal injured in the encounter died after 1 day.

Successful Koparshi encounter was result of meticulous planning and extraordinary courage to protect each other was showed by Addl. SP Dr. MCV Maheswar Reddy, DySP(Ops) Shri Sameersingh Salve, NPC/2187 Avinsh Kamble, PC/5231 Vasant Atram and PC/5575 Hamit Dongre. All 5 policemen, throughout the operation had exhibited their tactical skills and ensured minimum casualty on the part of the police force. After this success operations this area which was known as liberated zone of naxals will no more be out of bounds for police and administration. People of this area will remember this landmark encounter for breaking this naxal myth of the liberated zone. It is pertinent to note that Police did not explore till they attended contact with Naxals. With out extract intelligence input, Naxal location was zeroed down by use of tactics like following track of footprints of Naxals. This encounter is in true sense a surgical strike of Police on Naxals.

In this operation S/Shri Dr. MCV Maheswar Reddy, IPS, Addl. SP, Sameersinh Dwarkojirao Salve, DSP, Avinash Ashok Kamble, NPC, Vasant Buchhaya Atram, PC and Hamit Vinod Dongare, PC displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 02/11/2017.

(No. 11020/44/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 102-Pres/2020 —The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/ 4th Bar to the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Manipur Police: -

S/Shri

1	B Lunthang Vaiphei	Insp.	4 th BAR TO PMG
2	Md. Samadur Rahaman	Hav	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

The Kuki National Army (India), in short KNA(I), a hill based terrorist outfit led by one NekjangHaokip, assisted by one HemminthangHaokip of Phoipi village and others were terrorizing the villagers of Leimatak area, Govt. Contractors, Officials of NHPC and businessmen in Loktak project area of Bishnupur and Churachandpur District of Manipur. The outfit indulged in prejudicial activities like, extortion, kidnapping for ransom. In the recent past, they kidnapped two persons namely, Rajesh Singh contractors of NHPC and his driver Daniel Pamei and demanded a huge sum of money from their families.

In order to rescue the kidnapped persons, contain and neutralized the activities of KNA(I) led by Nekjang and HemminthangHaokip, a special team of Commando was detailed for the task by the Superintendent of Police, Bishnupur District, under the command Inspt. Lunthang Vaiphei assisted by (i) ASI. Ph. Sunil Singh, (ii) Hav.No.1207765 Md. Samadur Rahaman (iii) Hav.No.1299017 Samuel Kamei (iv) Hav.No.1299078 S. Hemanta Singh of CDO-BPR. Very soon, the Commando team collected enough information about their modus operandi, movement and possible hide outs of the outfit possession of sophisticated weapons.

On received of the information, the special team initiated and a bigger operational group, comprising 06 teams from Bishnupur and another 02 teams from Imphal West district was requisitioned for the special operation. The teams from Imphal West district were earmarked to cordon off the area and accordingly deployed immediately. The special team led by Insp. Lunthang vaiphei and teams from Bishnupur started the search operation from different sides.

While the special team led by Inspt. LunthangVaiphei was at the junction of the Loilamkot village, One DI-TATA Bearing Reg. MN04-A1655 came from Churachandpur side towards Nalon village, On seeing the police, two youths jumped out from the vehicle and opened fire towards the police and tried to flee away to the forest. The police personnel immediately ducked to the ground and lie flat for some times but keenly observed the movement of the two youth. After regaining their senses, they immediately gave a hot chase to the fleeing youths with intermittent firing in the air to scare them. After chasing them for about 300 metres in the thick Forest, one youth was corner near a big rock and was asked by Hav. Md. Samadur Rahaman to surrender, instead he fired a few rounds towards him. Having no alternative, Insp. Lunthang Vaiphei told Samadur Rahman to continue engaging him verbally to surrender and he himself risking their lives, went over crawling from behind covering only by the big rock between them. On reaching the rock, he suddenly overpowered him from behind by grasping his rifle and pressing him on the ground. Hav. Samadur Rahman also swiftly ran after him and snatched his rifle. The other youth escaped in the jungle.

On the spot verification, he identified himself as HemminthangHaokipHemin (28) yrs s/o Manglal Haokip of Phoipi village, who is an active cadre of KUKI NATIONAL ARMY (INDIA) in short KNA(I). The arm was checked and found to be an AK-56 Rifle with magazine loaded with five live rounds of ammunition.

On throughout search of the area, one white bag mark as 'anello' containing 5(five) Gelatin sticks, 24(twenty-four) Detonator, 1(one) Safety fuse wire of one metre long and one MI-5A mobile handset with one AIRTEL SIM card with mobile No. 7085376965 as disclosed by him was found and 3(three) empty case of AK ammunition was recover near the bag and seized by making a formal seizure memo.

It refers to case F.I.R. No.25(10)2018 u/s 400 IPC,25(1-C) Arms Act & 5 Expl. Subs. Act. Of Loktak Police Station.

In the operation, all the officers and men played all vital role, however, the following role of the officer and man of special team of Bishnupur Commando mentioned below exhibited great courage, dedication, dogged determination and professional skill under adverse condition in utter disregard of their personal safety. Had the Police officer of Bishnupur Commando not acted with determination and great courage, the hardcore KNA(I) cadre would not have been arrested in the thick forest rather, he could have killed our officer and men. The officer and men of Bishnupur Commando had not only exhibited extra-ordinary courage. but also brought laurels to the Police Department. Therefore, in recognition of their outstanding courage, extreme devotion to duty and conspicuous act of gallantry, the following officers are recommended for the award of Police Medal for Gallantry which they deserves.

In this operation S/Shri B.Lunthang Vaiphei, Insp. and Md. Samadur Rahaman, Hav. displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 26/10/2018.

(No. 11020/96/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 103-Pres/2020 —The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Odisha Police:—

S/Shri

1	Gagan Bihari Nayak	SI	PMG
2	Krushnalok Behra	Hav	PMG
3	Murali Manohar Dash	CT	PMG
4	Maheshwar Dhakad	CT	PMG
5	Manohar Bhumia	CT	PMG
6	Siba Prasad Nayak	CT	PMG
7	Bhabani Shankar Patli	CT	PMG
8	Arjuna Chandra Kurami	CT	PMG
9	Binaya Kumar Mishra	CT	PMG
10	Rajesh Kumar Dewan	CT	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 04.11.2018 afternoon SP, Malkangiri received an information from credible source that a group of outlawed CPI (Maoist) cadres of Kalimela Dalam were moving around the Populur forest area under Populur G.P. of Kalimela PS limit. The (Maoist) group was conducting camps and meetings in and around the Populur forest area and propagating subversive feeling amongst the local tribal and thereby trying to wage war against the state. On receiving the information, Sri Jagmohan Meena, IPS, SP, Malkangiri launched one operation of two SOG teams under the leadership of SI (A) Laxmikanta Nayak and SI (A) Gagan Bihari Nayak and teams proceeded to Populur forest area for conducting a search operation in that area. The operation party reached Populur forest area around 2 am in the night. While combing operation in the area was going on, on 05.11.2018 at about 6 AM, the party could see in the morning lights that an armed group of people numbering 12 to 15 including some female members, some of them wearing olive green colour dress holding weapons were camping near a hamlet in the forest. The police party got confirmed that they were members of the banned CPI (Maoist) group. Then immediately the entire party divided into 4 groups namely (1) left cordon, (2) right cordon, (3) Main firing group, (4) Assault and carry group. The main firing group was led by SI (A) Gagan Bihari Nayak, assault and carry group was led by Havildar Krushna Alok Behera. Thereafter the suspected naxals were asked in high pitch of tone to surrender but in vain. Again, they were told to surrender but this time naxals started indiscriminate firing aiming towards police party. They also lobbed grenades with the intention to kill and also blasted I.E.Ds to inflict huge casualties on the police team. Due to their sudden attack and lobbing of grenades & I.E.D. blast, some police personnel sustained splinter injuries on their body. Finding no other alternative to save their lives, the police party took tactical position. As per the tactics and plan all the groups immediately started crawling, approached to strategic locations for counter action against the Maoists group irrespective of the indiscriminate firing by the maoist groups upon the police party. Both the left cordon and right cordon party took their positions to restrict the escape of the Maoists and after that main firing group and assault and carry group started firing upon the maoist group and started controlled fire in self-defence. Process of exchange of fire between the armed cadres of banned CPI (Maoist) and the police party continued for about one hour. While firing was going on, intimation over satellite phone was sent to S.P., Malkangiri for sending a reinforcement to search the area and to respond any counter attack. Thereafter, when firing stopped from CPI (Maoist) cadres, police waited for an hour and then search operation was carried. During search of the area, the police party found five dead bodies were lying on the ground. The police party cautiously approach towards the lying down persons and found them to be dead bodies of 02 female cadre maoists and 03 male cadre maoists with gunshot injuries having SLR rifle-02 nos, INSAS rifle-01 no, .303 rifle-01 no, SLR Magazine-06 nos, INSAS Magazine-02 nos, Broken INSAS Magazine-01 no, SLR ball ammunition-111 rounds, INSAS ball ammunition-33 rounds, .303 ball ammunition-35 rounds, H.E. Hand Grenade-03 nos, Detonator-12 nos (connected with wires), Detonator-01 no (without wire), 01 tiffin bomb/claymore mine, electric wire, Maoist literature, daily use articles in their possession. Kit bags were also lying by the side of the dead bodies. Police also recovered some other articles like maoist literature from the spot. After completion of search operation the police party tactically retreated from the spot.

All the four members willfully became part of the cordon groups though they knew that their lives would be at stake for that. The cordon parties firstly moved to take dominating positions before firing started from police side. While crawling along with other groups in the midst of firing from Maoists' side, they could have been martyred being exposed. In the furtherance of operation, though they sustained splinter injuries but still carried out the orders. They rose to the occasion and, though in the process they have endangered their lives by coming in open. It was indeed a gallant action because bullets fired by the Maoist might have targeted them but they risked their lives unhesitatingly and our party was able to get success.

In this operation S/Shri Gagan Bihari Nayak, SI, Krushnalok Behra, Hav., Murali Manohar Dash, CT, Maheshwar Dhakad, CT, Manohar Bhumia, CT, Siba Prasad Nayak, CT, Bhabani Shankar Patli, CT, Arjuna Chandra Kurami, CT, Binaya Kumar Mishra, CT and Rajesh Kumar Dewan, CT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 05/11/2018.

(No.11020/195/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No.104-Pres/2020 —The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/1st Bar to the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Odisha Police:—

S/Shri

1	Rajendra Choudhury	SI	PMG
2	Sukhi Ram Rana	Hav	1 st BAR TO PMG
3	Ganesh Dharua	Commando	PMG
4	Rabindra Kumar Parmanik	Commando	PMG
5	Padmanav Ray	Commando	PMG
6	Madan Mohan Pradhan	Commando	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 11.03.2019 acting upon a credible intelligence input on the activities of CPI (Maoist) in the dense reserve forest area of Nakudiparha, Lengeramaha, Dendarpatta, Janagarha, Rampadar, Balimusti and Dapakia under Tumudibandha PS, of Kandhamal district an intensive combing operation was launched consisting of three assault teams of SOG At No. 13, 32 and DVF Kandhamal. When the Police search team was searching the jungle area, on 13.03.2019 near about 08.00 AM insurgents who were hiding, taking the advantage of hilly terrain and dense jungle resorted to sudden unprovoked heavy firing from automatic weapons and tried to mount flanking attack, making the Police team susceptible to enemy fire from two fronts. Six members of Police team suffered grievous injuries. The Police team under the leadership of S.I(A) Rajendra Choudhury retaliated valiantly despite numerical disadvantages and severe terrain limitations. Shri Choudhury along with two commandos namely, C/2066 Ganesh Dharua & C/379 Padmanava Ray charged the enemy in a very risky frontal attack braving heavy fire and forced the insurgents to retreat. Hav. Sukhiram Rana led another small unit of two commandos namely C/582 Rabindra Kumar Paramanik & C/313 Madan Mohan Pradhan and countered the flanking attack by launching a tactical offensive, despite severe risk of being detached from the main Police team. Due to the valor of assault team the Maoist could not resist and started fleeing from the location by taking covering fire from their team members. The leader and the team members rose to the occasion when it was most needed and acted bravely in such manner that not only the numerical superior and tactically better placed enemy had to retreat but the Police team could inflict heavy casualty on them with little collateral damage. The successful operation led to the death of one Maoist cadre named Loke Kabasi of BGN division on whom the Govt. of Odisha had declared a reward of Rs. 1,00,000/- (One Lakh).

The leader as well as the above mentioned Commandos have displayed great degree of courage and determination in facing the enemy and did not care for their personal safety on the line of duty. During the process, they had exposed themselves to enemy fire several times, some of them received injuries yet that had not deterred them from discharging their duty. Their fearless action not only ensured safety of the Police team from a surprise attack by the enemy but also confirmed the success of the operation.

In this operation S/Shri Rajendra Choudhury, SI, Sukhi Ram Rana, Hav, Ganesh Dharua, Commando, Rabindra Kumar Parmanik, Commando, Padmanav Ray, Commando and Madan Mohan Pradhan, Commando displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 13/03/2019.

(No. 11020/207/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 105-Pres/2020 —The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry\1st Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Punjab Police:—

S/Shri

1	Gurmeet Singh Chauhan, IPS	AIG	PMG
2	Bikramjit Singh Brar	Insp	1 st BAR TO PMG
3	Balvinder Singh	SI(LR)	1 st BAR TO PMG
4	Kirpal Singh	ASI(LR)	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

A secret information was received that Harjinder Singh @ Vicky Gounder, Prem Singh @ Prema Lahoriya alongwith their accomplice were hiding in the area of District Fazilka, Abohar, along the border of Rajasthan-Punjab. It is pertinent to mention here that Vicky Gounder and Prema Lahoriya were notorious gangsters and on the most wanted list of Punjab and Rajasthan and carried a reward on their heads. They were involved in sensational jailbreak of Maximum Security Jail, Nabha District Patiala in the year 2016, in which mastermind Prema Lahoriya alongwith his others 14 hardcore criminals, heavily armed with weapons attacked the Maximum security jail in broad day-light and managed to flee 06 terrorists/gangsters including Vicky Gounder. After fleeing from jail, Vicky Gounder and Prema Lahoriya alongwith their gang members had created terror in the states of Punjab, Rajasthan and Haryana as they started their daring criminal activities of carjacking, extortion, kidnappings and murders etc. In April 2017 Vicky Gounder killed three members of his rival gang in Gurdaspur. These gangsters without fear of law openly issued threats to the government/police officials on social media. Vicky Gounder and Prema Lahoriya were involved in more than dozen criminal cases that include murder, attempt to murder, extortion, dacoity, etc in Punjab, Rajasthan and Haryana. Acting on the information, Inspector Bikramjit Singh (Now DSP) along with police team of Organized Crime Control Unit (OCCU), Punjab, reached Abohar and launched an operation to track and arrest the above mentioned gangsters. The corroboration of technical and field inputs further indicated that Vicky Gounder along with his accomplices was hiding in the farm house of Lakhwinder Singh @ Lakha, which is located at village Pakki along the Gang Canal (Rajasthan). The information was shared with Sh. Gurmeet Singh Chauhan, IPS, AIG OCCU and Sh. Sandeep Goel, PPS, AIG, Intelligence, Punjab: The farm house of said Lakhwinder @ Lakha was cordoned and raid was conducted by the teams under the supervision and led by Shri Gurmeet Singh Chauhan, IPS, AIG, OCCU. He along with Inspector Bikramjit Singh (Now DSP) entered the farm house without fearing for their lives and appealed to Harjinder Singh @ Vicky Gounder and his accomplices to surrender. Meanwhile, Vicky Gounder along with his two accomplices challenged the Police party and came out of a room of farm house and fired at the police officials with the intention to kill. Despite being warned several times, these criminals did not surrender and continued to fire indiscriminately at the police party. The bullets fired by the criminals hit two police personnel, namely, SI/LR Balvinder Singh No. 362/PTA (now SI) and ASI Kirpal Singh No. 1250/PTL (now SI/LR) who entered in the farm house without fearing for their lives with the raiding parties. It is pertinent to mention here that warning shots were fired in the air by the police party to persuade the criminals to surrender, but in vain. Notwithstanding, the criminals continued to fire on the police party. Sh Gurmeet Singh Chauhan, IPS, AIG, OCCU and Inspector Bikramjit Singh (now DSP) who were leading the Police parties, entered the farm house along with their raiding teams while gunshots were being fired on the Police officials. Both the officers bravely and intelligently crawled forward towards the criminals at the grave risk to their lives and without caring for their personal safety, returned fire from their weapons in self defence. Consequently, Vicky Gounder and one of his accomplice Sawinder Singh got injured and fell down on the ground. The two were overpowered by the police team. However, Vicky Gounder died on the spot and the other accomplice was injured. In the meanwhile, one of the criminals managed to scale the wall of the farm house and jumped outside and fired on the covering team, deployed outside the farm house under the supervision of Sh. Sandeep Goel, PPS, AIG, Intelligence, who fired in self defence. The criminal fell down and died on the spot. This criminal was later identified as Prema Lahoriya, a notorious gangster who was wanted in several heinous criminal cases. In this police action the criminals Harjinder Singh @ Vicky Gounder s/o Mahal Singh caste Jat Sikh r/o Sarawan Bodla, P.S. Kabarwal district Sri Mukatsar Sahib and his accomplice Prema Lahoria both A category gangsters in Punjab were killed. The injured criminal and the injured Police OCCU were rushed to Civil Hospital, Abohar, where the third gangster also succumbed to his injuries. During the search of site, huge quantity of live and vacant cartridges along with weapons used in commission in crime had been recovered. Details of which has been mentioned in the seizure memo separately.

In this above mentioned police action, Sh Gurmeet Singh Chauhan, IPS, AIG, OCCU, Inspector Bikramjit Singh (now DSP), SI/LR Balvinder Singh (now SI) and ASI Kirpal Singh (now SI/LR) had shown

exemplary courage, boldness, presence of mind and bravery in the discharge of their duty, without caring for their own lives, are recommended for President's Police Medal for Gallantry in case F.I.R. No. 26 dated 27.01.2018, u/s 307, 332, 353, 186, 216, 225, 120-B IPC and 3, 25, 27 of Arms Act PS Hindumalkot, distt. Ganganagar (Rajasthan).

In this operation S/Shri Gurmeet Singh Chauhan, IPS, AIG, Bikramjit Singh Brar, Insp., Balvinder Singh, SI(LR) and Kripal Singh, ASI(LR) displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 26/01/2018.

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 106-Pres/2020 —The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Border Security Force (BSF):—

S/Shri

1	Santosh Kumar	HC	PMG
2	Chandrappa Lamani	CT	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On the intervening night of 20/21 Feb, 2017, No. 97254325 CT(Now HC) Santosh Kumar and No. 98009265 Const Chandrappa Lamani were detailed for night sentry duty at Patrol Base (PB) No. 02 and 03 of FDL 507 (AIOs) of 163 Bn BSF. At about 2100 hrs, Const Chandrappa L deployed at PB No. 03 observed suspicious movement of 01 unidentified person with a rucksack. Sensing the gravity of the situation, Const Chandrappa L immediately alerted Const (Now HC) Santosh Kumar, Sentry at PB No. 02. Simultaneously, Const Chandrappa L also challenged the intruder. While challenged, the intruder immediately took position and started firing towards own troops at PB No. 03. BSF troops also retaliated. Const Chandrappa L displayed high level of battle acumen & professionalism and promptly brought down effective fire on the intruder/militant with his personal weapon. Meanwhile, other troops deployed at PB No. 3 also started firing at the said militant. Due to the pin-pointed retaliation by the troops, the said militant shifted his position and moved backwards to take position behind the stony bolders near the AIOs and continued firing towards PB No. 03. In the meantime, another militant came from forward slope of the POK side and started firing at own troops. Around this time, a group of another 3/4 militants who had possibly taken position at approx. 30-40 Mtrs from the AIOs on POK side also opened fire of automatics with apparent intention to provide cover fire to the two militants with whom the exchange of fire was going on, in order to assist in their escape. The militants continued firing heavily towards own troops by using automatics, including AK47 Rifles and UBGL/Hand Grenades. In retaliation both Const (Now HC) Santosh Kumar (at PB No. 02) and Const Chandrappa L (at PB No. 3) displayed exemplary courage and battle prudence relentlessly engaging the militants and not allowing them to escape.

Effective retaliation by both Const Chandrappa L and Const (Now HC) Santosh Kumar resulted in killing of one of the militants and grievous injuries to 2-3 others. During the search of the area in the morning, blood trails of 2-3 injured militants were noticed moving away towards LC from the incident site. On 21 Feb' 2017 immediately after the first light, search and mopping up operation in the area was launched under the close supervision of Senior Commanders. The dead body of the killed militant was found stuck up with the AIOs alongwith AK 47 and during further search of the area huge quantity of war like stores were recovered. Later, one IED was also found strapped on the body of slain militant.

During the entire operation, Const Chandrappa L and Const (Now HC) Santosh Kumar 163 Bn displayed tremendous courage and battle prudence under direct and heavy militant firing, which led to the neutralization of 01 Fidayeen militant of LeT Tanzim and also caused grievous injuries to 2-3 others.

In this operation S/Shri Santosh Kumar, HC and Chandrappa Lamani, CT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 21/02/2017.

No. (11020/82/2018-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 107-Pres/2020.—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry (Posthumously) to the under mentioned officers of Border Security Force (BSF):—

Shri

Late Tapan Mondal	CT (Posthu)	PMG (Posthumously)
-------------------	-------------	--------------------

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 02 Nov. 2017 at about 0800 hrs, Zero line patrolling/Area maintenance party consisting of 01 Officer, 03 SOs and 11 ORs of BOP Manguchak, 173 Bn BSF (deployed on Indo-Pak International Boundary) including No. 120805206 Const Tapan Mondal (as member of patrol party) went ahead of the Border Fence to carry out Zero Line Patrolling and Area maintenance in the area corresponding to BP No. 135 to 136 which falls in front of Fwd duty point No. NJ 941. Const Tapan Mondal was detailed to perform the Scout duty/Guard of the Zero Line Patrol/Area maintenance party. At about 0930 hrs, while the party was carrying out area maintenance, two bursts of UMG were fired from Pak Post Peer Bunker on own party. As a result, Const Tapan Mondal who was deployed on the forward line close to the IB sustained bullet injury on his right shoulder. Despite being seriously wounded, with scant regard to his personal safety, Const Tapan Mondal displayed combat audacity and exemplary courage under trying conditions and promptly alerted his fellowmen/party members to immediately take cover and move to safer place. Meanwhile, after taking necessary safety precautions, the entire party including injured Const Tapan Mondal moved tactically to the own side of the Border Fence and the injured Const was immediately evacuated to 166 MH, Satwari Jammu after administering necessary First Aid, where the On Duty Doctor checked and declared him dead at about 1100 hrs. After the safe evacuation of the injured Const, heavy retaliatory fire was brought down on enemy positions.

Const Tapan Mondal displayed tremendous sense of camaraderie and commitment towards duty in an extremely hostile situation and despite being grievously wounded, promptly alerted his fellowmen to take cover and move to safer place to avoid further casualty to own party. He made supreme sacrifice in the line of duty on the International Boundary.

In this operation Late Shri Tapan Mondal, CT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 02/11/2017.

(No.11020/123/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 108-Pres/2020 —The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry (Posthumously) to the under mentioned officers of Border Security Force (BSF):—

Shri

Late Devendra Singh	CT	PMG(Posthumously)
---------------------	----	-------------------

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 14th May 2018, No. 112546919 Const Devendra Singh alongwith No. 881613933 HC Sakai Dev Pandit and No. 110411415 Const Ajeet Singh was deployed for Naka duty at Fwd Duty point No. 938 in AoR of BOP Manguchak of 173 Bn BSF, deployed on the Indo-Pak International Boundary. At about 1423 hrs, the alert Naka party observed suspicious movement of 3-4 persons on HHTI installed at the Duty point. The said movement was observed in the dead ground area close to the IB near BP No. 138. While further tracking the suspicious movement, 01 Para Bomb of 51 mm Mor was fired in the direction to illuminate the area so as to correctly locate the movement and also to engage the possible target effectively. Simultaneously, Const Devendra Singh, with scant regard to his personal safety, also fired 3-4 bursts of 7.62 mm LMG in the direction of suspected movement. In response, a long burst of flat trajectory weapon was brought down on Fwd Duty point No. 938 from the place where the suspicious movement was noticed which was again promptly retaliated by Const Devendra Singh.

Later at about 1500 hrs, the said movement was once again observed (through the HHTI) near the Pak Fwd Bundh close to IB on Pak side; on which Const Devendra Singh brought down heavy fire in the direction of the suspected militants. The same was heavily retaliated from the Pak side and the exchange of fire continued intermittently for some time. Meanwhile, movement of the suspected militants was continuously tracked on the HHTI. During the exchange of fire, pin point & accurate firing by Const Devendra Singh from the loophole of the Fwd Duty point No. 938 successfully prevented a definite forced infiltration attempt. Meanwhile, at about 1501hrs, during the continued intermittent exchange of fire, a long burst of UMG entered through the loophole of fwd duty point No. 938 and hit Const Devendra Singh on his left eye. However, despite being grievously injured, Const Devendra Singh kept on

firing from his LMG in the direction of the militants and also alerted his fellowmen. As the firing subsided, he was promptly evacuated to 166 MH Satwari, Jammu after administering necessary first aid, where the on duty Doctor examined and declared him brought dead at about 0504 hrs.

Const Devendra Singh displayed exemplary courage and high degree of battle audacity in bringing down effective fire on the militants and thereby successfully foiled a definite forced infiltration attempt by the Pak based militants. However, in the process Const Devendra Singh made supreme sacrifice while fighting the enemy on the International Boundary for the cause of National Security.

In this operation Late Shri Devendra Singh, CT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 14/05/2018.

(No. 11020/125/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 109-Pres/2020 —The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry (Posthumously) to the under mentioned officers of Border Security Force (BSF):—

Shri

Late Brijendra Bahadur Singh	CT(Posthu)	PMG(Posthumously)
------------------------------	------------	-------------------

Statement of service for which the decoration has been awarded

On the intervening night of 14/15 Sept 2017, No. 052542888 Const Brijendra Bahadur Singh alongwith No. 901099031 Const A Nizam (Party Commander) and No. 102541492 Const Vipin Kumar was deployed at Fwd Duty point No. NJ 575 for night Naka duty in AoR of BOP Chinaz of 192 Bn BSF from 1418 hrs to 1506 hrs. The said duty point being located in close proximity to the IB as well as surrounded by Pak Fwd bundh from almost three sides, is considered as highly sensitive & vulnerable Duty point. At about 1520 hrs, forward Morchas of Pak BOP Khanoor suddenly started unprovoked firing by use of flat trajectory weapons targeting Fwd Duty points of BOP Chinaz including at the Duty point No. NJ 575. Anticipating the ill intentions of the enemy, Const Brijendra Bahadur Singh, without caring for his personal safety, promptly encouraged his fellowmen i.e Const A Nizam and Const Vipin Kumar to retaliate the enemy fire. Accordingly, Const A Nizam and Const Vipin Kumar immediately retaliated to the enemy fire without caring for their personal safety and in the process pinned down the forward enemy positions. However, the enemy realizing the effective fire, after some time, started heavy volume of fire targeting Duty point No. NJ 575. In the process of heavy exchange of fire, a few bullets entered through the loop hole of the said duty point and hit Const Brijendra Bahadur Singh on left side abdomen through the gap of front & rear BP plates of his BP Jacket. As a result, he fell down on the ground. However, despite being grievously wounded, the valiant Borderman with indomitable spirit could not be overawed or overwhelmed and thereby encouraged his fellowmen to retaliate to the enemy fire in hard hitting manner. Accordingly, his fellowmen deployed at the said duty point retaliated to the enemy fire in befitting manner. Simultaneously, the Coy HQ was informed and Const Brijendra Bahadur Singh was immediately evacuated to BOP Chinaz and further to GMCH, Jammu after administering necessary First aid, where Duty Doctor declared him brought dead at about 1502 hrs.

Const. Brijendra Bahadur Singh, with his will to fight to the hilt & indomitable spirit, displayed tremendous courage and battle grit under fierce enemy fire and in the process laid down his life for the motherland while being deployed on a highly sensitive duty point on Active Duty in close proximity to the enemy positions.

In this operation Late Shri Brijendra Bahadur Singh, CT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 15/09/2017.

(No. 11020/126/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 110-Pres/2020 —The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry (Posthumously) to the under mentioned officers of Border Security Force (BSF):—

S/Shri

1	Late Shri Sat Narayan Yadav	ASI(Posthu)	PMG (Posthumously)
2	Late Shri Vijay Kumar Pandey	CT(Posthu)	PMG (Posthumously)
3	Vijay Karan Singh	HC	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 03 June 2018, No. 872545472 ASI Sat Narayan Yadav of 92 Bn BSF alongwith No. 890011580 HC Vijay Karan Singh and No. 124529890 Const Vijay Kurnar Pandey of 33 Bn BSF was detailed for Naka duty at Fwd Duty point No. NJ 30 of BOP Chakphagwari 33 Bn BSF, District- Jammu (J&K), deployed on the Indo-Pak International Boundary. As per duty allocation, Const Vijay Kumar Pandey was on Sentry Duty from 030001 hrs to 0303 hrs. At about 0115 hrs, suddenly 02 single (Sniper) shots were fired from Pakistan side on Fwd duty point No. 30 and 32 of BOP Chakphagwari of 33 Bn BSF, out of which one bullet entering through the loop hole hit Const Vijay Kumar Pandey on his head, resultantly, he fell down on the ground in unconscious state. On hearing the sound of fire, ASI Sat Narayan Yadav (Naka Comdr) took stock of the overall situation and immediately alerted and directed his fellowman HC Vijay Karan Singh to retaliate to the adversary fire and himself, showing tremendous grit & courage, promptly rushed towards the injured Const Vijay Kumar Pandey in order to rescue him. In the meantime, again a burst of automatic weapon fire came from Pak side and entering through the loop hole hit ASI Sat Narayan Yadav on the right side of his chest. Resultantly, he also fell down on the ground in unconscious condition. At that time, HC Vijay Karan Singh who was inside the said Duty Point, with scant regard to his personal safety, promptly retaliated to the enemy fire by firing 20 rounds from 7.62 mm LMG so as to avoid any further loss to BSF personnel as well as to prevent any possible infiltration into Indian territory. Simultaneously, he also informed the matter to the Post Comdr and further to Coy Comdr. In the meantime, Pakistan side continued with heavy firing & shelling by use of flat & high trajectory weapons incl HMGs, UMGs, 60 mm & 82 mm Mortars and targeted all the Fwd Duty points/BOP5 and adjoining bordering villages in the AoR of 33 Bn. In response, own troops also retaliated to the adversary fire in befitting manner by use of 7.62 mm MMG, AGL and 51 mm Mor. Meanwhile, as the intensity of fire was reduced, injured ASI Sat Narayan Yadav and Const Vijay Kumar Pandey were evacuated to PHC Pargwal after administering necessary first aid, where the on duty doctor examined both and declared them brought dead at about 0330 hrs.

Late ASI Sat Narayan Yadav of 92 Bn and No. 124529890 Late Const Vijay Kumar Pandey of 33 Bn were performing duties on the forward most tier of Border Protection grid close to the IB in an extremely sensitive area and under the direct threat of enemy fire. Both of them displayed highest level of commitment towards duties and laid down their lives while defending the motherland.

HC Vijay Karan Singh of 33 Bn, who was also deployed at the same Duty point, displayed tremendous battle prudence & combat audacity under the continued enemy firing. While immediately taking control of the situation, he effectively retaliated to the enemy fire so as to prevent further loss/damage as well as to ward-off any possible infiltration into Indian Territory.

In this operation Late Shri Sat Narayan Yadav, ASI, Late Shri Vijay Kumar Pandey, CT and Shri Vijay Karan Singh, HC displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 03/06/2018.

(No. 11020/127/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 111-Pres/2020 —The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry (Posthumously) to the under mentioned officers of Border Security Force (BSF):—

Shri

Late Dipak Kumar Mandal	2-I/C	PMG (Posthumously)
-------------------------	-------	--------------------

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 16.10.2017, at about 0140 hrs, Shri Dipak Kumar Mandal, 2IC/Offg Comdt, 145 Bn BSF was informed about accident of a BSF Vehicle near Sonamura. The Officer immediately rushed to the spot alongwith Ct/Dvr Prem Singh and Ct B Chandrakant. Enroute, he observed 25-30 Smugglers/ANEs attempting smuggling by pushing 15-20 Cattles to Bangladesh side. On seeing this, the Officer immediately stopped his vehicle, got down and challenged the Smugglers/ANEs. In turn, Smugglers/ANEs started pushing the cattles towards Bangladesh. The Officer assessed the overall situation and without wasting time, directed Ct/Dvr Prem and Ct B Chandrakant to catch hold of the nearby Cattles. The Smugglers/ANEs were in possession of stones/bricks/machetes/sharpedged weapons and they encircled Shri Dipak Kumar Mandal. The Smugglers/ANEs also called their accomplices in two vehicles and started stone pelting on BSF party. Shri Dipak Kumar Mandal, with scant regard to his personal safety, stood firmly against them and tried to engage them till arrival of reinforcement from nearby BOP Belaredappa.

Shri Dipak Kumar Mandal, displaying exemplary courage, bravely countered the Smugglers/ANEs and forced them to withdraw from their nefarious intentions without caring for his life. Smugglers/ANEs sensing their helplessness retaliated through their inhuman act by hitting Shri Dipak Kumar Mandal, 2IC/Offg Comdt, 145 Bn BSF repeatedly with their vehicle 'Bolero Pickup' with intention to run over him. Inspite of sensing the danger, the Officer, despite continuous threat to his life, didn't give up and boldly faced the situation in order to thwart that smuggling attempt. Then, the Smugglers/ANEs conspired and hit Shri Dipak Kumar Mandal with another 'Bolero pickup' at very high speed with intention to kill him. Resultantly, Shri Dipak Kumar Mandal fell down on the road and sustained multiple grievous injuries on his head/body. Ct Chandrakant also fired 04, rounds from his personal weapon in defence. Meanwhile, reinforcement under Inspr Joiraj Kocher, Offg Coy Comdr reached at the spot and took control of the situation.

On 20.10.2017 at 1135 hrs, Shri Dipak Kumar Mandal, 2IC/Offg Comdt attained martyrdom and BSF lost one brave Officer, who, by sheer dint of extraordinary courage, valiantly fought with the Smugglers/ANEs, while serving his Nation with exemplary professionalism and loyalty towards his motherland and set an example of unparalleled gallant action coupled with high standard of leadership. This not only brought good name to the Battalion but also to the Border Security Force.

In this operation Late Shri Dipak Kumar Mandal, 2IC displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 16/10/2017.

(No.11020/128/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 112-Pres/2020 —The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Central Reserve Police Force (CRPF): -

Shri Atul Karwal, IPS	IG	PMG
-----------------------	----	-----

Statement of service for which the decoration has been awarded

Observing the days of National importance in the Kashmir Valley brings new challenges to the Security Forces as the anti-national forces make all efforts to disrupt the celebrations. The celebration of Independence Day 2016, turned out to be more challenging due to the highly volatile and vulnerable Law & Order situation in the Valley in the aftermath of the killing of a "Hizbul Mujahedeen" Commander by SFs. To ward off disruptions and thwart the nefarious designs of militants, Srinagar city was kept under strict vigil.

On 15/08/2016, at about 0800 hours, terrorists, holed up in a building near Nowhatta Chowk, Srinagar, opened indiscriminate fire upon the troops of 28 Bn deployed there and a fierce encounter ensued. On getting the information, troops from nearby CRPF formations rushed towards the incident site and cordoned off the area. Commanders on the ground, analysed the situation and with a counter-attack plan, moved towards the area where the terrorists were holed up. No sooner had Sh Atul Karwal, IPS, IG Srinagar (Now ADG) received the information than he directed Valley QAT of CRPF U/C Sh Naresh Kumar, AC to reach the incident site and augment the counter-attack. Quickly, he also joined the troops and took over the command of the operation.

During the ensuing gun-battle, two jawans got hit by bullets and required immediate evacuation. Acting promptly, Sh Atul Karwal, without disturbing the troops engaged in the ongoing battle, rushed towards

the injured personnel and amid the heavy firing, evacuated the injured troops from the killing zone with the support of his escort. After evacuating the injured, he located the position of militants, analysed the situation and chalked out a plan to neutralise the threat.

He directed Sh. Rajeev Kumar Commandant 28 Bn and Sh. Pramod Kumar Commandant 49 Bn to cover the target building from the flanks, while he along with Valley QAT, decided to take position in a building in front of the target house. This building overlooked the position of the terrorists but was across an exposed area. Though he could have chosen to coordinate the operation from the safe confines of his armoured vehicle, he chose to lead the assault team personally. Sh Karwal exited his BP Gypsy and along with the Valley QAT team, braved the volley of bullets to move tactically towards this building. The terrorists saw this movement and opened massive fire on them, but taking cover of parked vehicles and other BP vehicles, they managed to reach the building unscathed.

Once they entered the building, they saw there were civilians stranded in the house. Sh Atul Karwal directed his troops to evacuate the civilians first, to prevent any collateral damage. Meanwhile, the flanking teams kept engaging the militants and injured one of them. However, during the exchange of fire, one bullet hit Sh. Pramod Kumar, Commandant and he attained martyrdom; a big setback for the troops. Surmounting their great loss, troops kept on fighting against the terrorists.

Meanwhile, after evacuating the civilians, Sh. Atul Karwal along with Valley QAT took position in the building in front of the target house. However, before they could aim at the militants, the terrorists noticed their presence and opened a barrage of fire towards them. But Sh Karwal and the troops had taken tactical positions at the windows and were now prepared to take on the terrorists. Holding their nerves, they retaliated the attack, with a volley of fire on to the terrorists. A fierce encounter ensued between the troops of Valley OAT under the command of Sh. Karwal and the terrorists. Firing from flat trajectory weapons was not proving effective due to the strong built quality of the target building and hence the gun battle was getting prolonged. Sensing that militants may escape from the site, Sh Atul Karwal directed Valley OAT troops to fire from UBGL on the terrorist's position. Displaying their sharp professional acumen, Valley OAT troops fired UBGL rounds on the target house, into the windows from where fire was emanating, under the guidance of their commander. The tactics worked as the terrorist's fire stopped after some time.

Thereafter Sh Atul Karwal and Commanders of SOG/JKP assessed the situation and decided to launch a final assault by room intervention. Accordingly, a joint search team from Valley QAT and SOG J&K Police was formed for the purpose. The joint team, ignoring the impending threat to their lives, tactically entered the building and came out with the dead bodies of two foreign militants, without any collateral damage.

During the operation, troops, led by Sh Atul Karwal, IPS, IG Srinagar displayed unparalleled valour with utmost devotion and dedication towards the assigned task in adverse conditions. They accomplished the task quickly, efficiently and effectively. Displaying the true characteristic of leadership, Sh Atul Karwal had chosen to face the same danger as expected of his troops and physically led them from the front in the most challenging conditions, ensuring complete professionalism and attainment of the objective. His unrelenting resolve, dedication and display of courage in this critical situation brought wide acclaim to CRPF.

In this operation Shri Atul Karwal, IPS, IG displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 15/08/2016.

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 113-Pres/2020 —The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force (CRPF): -

S/Shri

1	Rajender Singh	AC	PMG
2	Praveen Kumar	HC	PMG
3	Sanjeev Ranjan Singh	CT	PMG
4	Sanjay Kumar Singh	HC	PMG

5	S. Balachandra Reddy	CT	PMG
6	Umesh Yadav	HC	PMG
7	Lalit Kumar	ASI	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On the basis of an input received about movement of an armed group of CPI(Maoist) under leadership of Rakesh Bhuiyan (Sub-Zonal Commander of 'Madhya Zone' BJSAC and 05 Lakh Rewardee) in general area of Bisaipur, Tarudag and Malang Pahar under P.S.-Chattarpur, Distt-Palamu (Jharkhand), special Ops planned under command Sh. Rajender Singh (AC). On 26/02/2018, one team of F/134 Bn moved out for special Ops. After de-bussing near Village Bisaipur, team advanced tactically on foot through forest and hilly terrain. Scout near Malanga Pahad at 0810 Hrs noticed some noises/suspicious activity in the north direction, Sensing grave probable danger ahead, the commander immediately alerted the team and along with his buddy moved tactically for verifying the suspicious movement. When the teams were advancing, suddenly heavy fire came from the front left side upon the team with automatic weapons. The Team immediately understood that they have been attacked by armed Maoists. Instantly, Comdr gave orders to Sections 2 & 3 to cover both flanks by advancing toward east and north-east direction tactically.

The front section challenged the CPI(Maoist) to surrender with their arms, but this could not affect the volley of fire coming from the Maoist's side. Armed Maoists sensed something scary and started indiscriminate firing upon the advancing buddy pairs. Despite imminent threat in front and on seeing that there was no way out for keeping the safety of own team and their weapons, Comdr decided to retaliate equivalently and directed his team to retaliate in self-defence and give a befitting reply to the armed Maoists. The exchange of fire commenced from both sides and continued without any sign of attrition. He directed front buddy pairs to immediately provide cover fire from their position and Comdr with his buddy crawled towards a nearby small tree, took the position and targeted the Maoist from a close quarter. Later on, the dead body of hardcore Maoist Rakesh Bhuiyan was recovered from this patch. The Comdr along with his buddy HC(GD) Praveen Kumar and CT(GD) Sanjeev Ranjan Singh continued his advance in front, ignoring the heavy fire and despite insufficient cover available, fired from different positions to make effective retaliatory fire.

Section No. 2. Sensing the urgency of assisting the team at the right flank, Comder launched a right flank attack with his buddy along with CT(GD) S. Balachandra Reddy and HC (GD) Umesh Yadav. During advance and ensuing exchange of fire, two other armed Maoist were neutralized. Due to unparalleled bravery, great tactical skill and operational appreciation shown by the team under command Sh. Rajender Singh (AC), Naxal started retreating in small groups and fled away taking advantage of forest vicinity, thick vegetation and undulated terrain. After the encounter, an extensive search was carried out and 04 (four) dead bodies of CPI(Maoist) (including SZC Rakesh Bhuyian, Area Commander Lallu Yadav and two other armed Maoist) and huge catch of weapons, ammunitions and other items were recovered from their possession.

In the entire course of operation, the extraordinary courage, tactical proficiency and gallant action shown by the small team led by Sh. Rajender Singh, AC his buddy No. 971280627 HC/GD Praveen Kumar displayed exceptional tactical acumen, decisive thinking and gallant action under intense hostile fire. The quality of bravery displayed by above Officer and his team has taken highest degree of risk and without caring for their lives, they kept on advancing towards Maoists under heavy fire and with their courage four hardcore Maoists (including Zonal Commander) the highest names in Maoist history of Jharkhand were killed.

In this operation S/Shri Rajender Singh, AC, Praveen Kumar, HC, Sanjeev Ranjan Singh, CT, Sanjay Kumar Singh, HC, S. Balachandra Reddy, CT, Umesh Yadav, HC and Lalit Kumar, ASI displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 26/02/2018.

(No. 11020/104/2018-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No.114-Pres/2020 —The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force (CRPF):—

S/Shri

1	Sanjay Mohanty	DC	PMG
2	Anuj Kumar Tyagi	SI	PMG
3	Pramod Kumar Dubey	CT	PMG
4	Manoj Kumar	CT	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 07.02.2018, an input was received about the presence of Maoist Leader Rakesh Bhuinya with his team in the forest area of Panchkheria village under PS Nawajaipur, Distt.-Palamu (JKD). The input was further corroborated with different sister agencies. On verification of input, a spl ops was planned and launched by QAT and one Young platoon of 134 Bn CRPF under command Sh. Sanjay Mohanty, Deputy Commandant (DC) along with troops of Jharkhand Police U/C Sh. Arun Kumar Singh, ASP (OPS) in the target area to nab the Maoists.

As planned, the troops laid multiple ambushes on the possible routes of Maoists for the whole night, but could not get any success. Since the input regarding Maoists movements was corroborated and verified, the teams decided to hold the area until further updates. The team commanders contacted their sources for fresh inputs about the Maoists who confirmed that Maoists are still in the nearby areas. This confirmation encouraged the troops to move further and find their target. Taking due precautions, troops started advancing towards Chetma & Junjulu Pahar in the wee hours of 08.02.2018. Realizing the gravity of the situation with high probability of facing the volley of fire, Shri Sanjay Mohanty, DC was leading the QAT from the front infusing motivation and courage amongst his troops. On getting closer to the indicated target i.e. Junjulu Pahar, party commander Shri Sanjay Mohanty, DC directed Young Platoon of 134 Bn and Jharkhand Police to lay cut-off at the pockets around the Pahar and provide mutual support in case of any need, while he, along with his QAT personnel advanced uphill.

As directed, troops of QAT/134 advanced from two different directions moving cautiously carrying out intensified search of the area. At about 1345 Hrs on 08.02.2018, the leading QAT Jawan CT/GD Pramod Kumar noticed some suspicious movements ahead. Once confirmed he immediately informed his commander regarding the presence of the armed Maoists at a distance. Sh. Sanjay Mohanty within no time alerted and sensitized the whole troops about the developments. Since QAT Jawans were familiar with the vicious and ill designs of the Maoists, every step was being taken carefully and tactically. After taking tactical positions, troops challenged the Maoists and asked them to surrender. The sudden warning from the troops left the Maoists stunned; perhaps they could not believe that SFs were so close to them. However, they recouped very quickly and opened indiscriminate firing upon the troops from different directions.

On hearing the gunshots, Shri Sanjay Mohanty, DC, took no time and directed his troops for the counter-attack against the Maoists. Leading the counter-attack from the front, he, along with SI/GD Anuj Kr. Tyagi, CT/GD Pramod Kumar and CT/GD Manoj Kumar of QAT 134 Bn charged towards the Maoists. Maoists were equipped with sophisticated weapons and were at tactically advantageous position. They were giving a tough battle to SFs and there was the likelihood of a prolonged and sustained encounter between the two. However, the troops were determined and hell-bent to take on them and not to return barehanded.

Though our troops were retaliating bravely, yet, it was not proving effective as the Maoists were in tactically advantageous position. A bold and courageous move was the need of the hour to hit the Maoists to avoid casualties to own troops. In such a demanding circumstance, Shri Sanjay Mohanty, DC, rise to the occasion owning the responsibility. Braving the flying bullets, he along with SI/GD Anuj Kumar Tyagi, CT/GD Pramod Kumar Dubey and CT/GD Manoj Kumar crawled forward to reach to a strategic point for launching an effective counter attack. The remaining troops of QAT were ordered to provide cover fire and they did so.

On reaching the strategic positions, the above four brave hearts wreaked havoc on the Maoists using UBGLs. This ferocious counter-attack from a handful of troops created havoc and chaos in the Maoists faction. Taking advantage of this, the above four troopers got even closer to Maoists and showered a barrage of bullets on them; Maoists ran helter-skelter looking for shelter/ escape. The Maoists started fleeing using the broken ground while firing on the advancing troops. In the meantime, SI/GD Anuj Kumar Tyagi fired H.E. bomb from Mortar that landed with perfection near the Maoists position, causing injuries to Maoists and denting their morale.

Troops did not stop here and continued with their counter-attack. Maoists were outwitted and could no longer sustain the wrath of SFs. They started fleeing under the cover of dense forest and hilly terrain and managed to escape. Once the firing stopped, troops carried out a thorough search of the area, wherein, they recovered dead body of a Maoist, weapons and miscellaneous incriminating items. Troops also apprehended one injured Mahila Maoist cadre from the spot.

Later on, on 10/02/2018, troops of A/134 Bn apprehended one more Maoist, said to be the area Comdr. Rajesh Yadav, in a separate incident, who during interrogation disclosed that in the gunfight during operation on 08.02.2018 several Maoists have sustained bullet injuries and are obtaining treatment at secluded places. One of the injured subsequently died and cremated secretly at some undisclosed place. This has the confirmation of the police records vide PS- Naudiha Bazaar SDE. No. 07/2018.

During the operation, Sh. Sanjay Mohanty, DC, SI/GD Anuj Kumar Tyagi, CT/GD Pramod Kumar Dubey, and CT/GD Manoj Kumar, fought bravely against the Maoists without caring for their own lives. They displayed sharp tactical acumen, courage, and responsibility while discharging their duties, despite being tired during the whole night ambush in the intervening night of 07 & 08.02.2018. The unparalleled bravery and gallant actions displayed by troops of QAT/134 under adverse conditions deserve the highest recognition.

In this operation S/Shri Sanjay Mohanty, DC, Anuj Kumar Tyagi, SI, Pramod Kumar Dubey, CT and Manoj Kumar, CT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 08/02/2018.

(No. 11020/03/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 115-Pres/2020 —The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force (CRPF):—

S/Shri

1	Daihrri Nenio	AC	PMG
2	Prahlad Singh	AC	PMG
3	Anil Sharma	CT	PMG
4	Vivek Kumar	CT	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

The National Highway - 44 in Jammu & Kashmir has been one of the most vulnerable road stretches from the perspective of militancy in South Kashmir. The primary reason for this is the high prospect of terrorist strike on the Security Forces Convoys during their move from Jammu to Srinagar and vice versa to cause mass casualties of troops. The stretch from Jawahar Tunnel to Srinagar particularly has been traditionally notorious for such attacks by the terrorists.

Although there is a well planned system of laying of Road Opening Parties (ROP) before move of SFs convoy by CRPF with supporting corridor protection by the Army, the limited strength of the troops available for the task leaves noticeable gaps in deployment which have been exploited by the terrorists time and again taking advantage of the flowing population along the highway and the numerous under construction and unoccupied buildings all along the undulating stretch.

On 4th Dec 2017, B/163 CRPF under supervision of Shri Prahalad Singh, Asstt. Comdt was deployed for ROP duty from milestone 227 - 231 on NH 44. At about 1240 hrs, when Up Convoy of Army (Part 4) was moving towards Srinagar, it was fired upon by militants at 228 milestone at village Bhadrugund under PS Qazigund, Dist Kulgam from the right side of

the highway. Constable Anil Sharma was deployed at the ROP picket on the left side of the highway alongwith three other personnel, placed at a distance from each other to cover the area. Considering the sensitivity of the situation, Anil Sharma without caring for his life immediately moved alone from his position came out on the open road and fired daringly at the terrorists. The instant reaction by Anil Sharma unnerved the terrorists and in an apparent display of annoyance, aimed their weapons at Anil Sharma. However, showing great alacrity, presence of mind and resolute courage, Constable Anil Sharma without loss of time in the absence of any cover immediately attained lying position on the road and continued to fire on the terrorists forcing the terrorists to retreat across the road and take refuge behind a large building.

Shri Prahlad Singh, Asst. Comdt. who was deployed at milestone 228.3 at Bonigam, on receipt of information about the attack, immediately rushed towards the incident site and also simultaneously informed Shri Daljit Singh, Comdt 163 Bn. No sooner had he reached at the incident site, than the terrorists opened a volley of fire on his Bullet Proof (BP) vehicle. Prahlad Singh completely undeterred retaliated by firing from the loophole in the vehicle. Simultaneously, he moved his BP vehicle off the road, quickly dismounted in its cover, took position on the rugged ground and resumed fire. The terrorists once again tucked themselves behind the building. Prahlad Singh had only three escort personnel with him and he was not aware about the number of terrorists present at the incident site. However, realizing the urgent need to cordon off the area to prevent their escape from the rear side of the building which was open and provided ample forest cover, Prahlad Singh without loss of time directed his escort personnel to cover the building from all sides. He himself ran to the rear of the building and as expected found the terrorists moving to the rear from the other side. On sighting him from a distance, the terrorists again opened fire on him, but, Prahalad immediately took position in a nullah at the rear of the building and targeted the terrorists. Due to this quick appreciation and bold action, the terrorists could not succeed in their plan of escaping from the rear side and were forced to move back to the front part of the building.

Shri Mohsen Shahedi, DIG (Operations) CRPF Anantnag who was on a visit to the Transit Camp, Qazigund located closeby, to witness operational demo, on receiving the information immediately rushed to the incident site alongwith Comdt 163 Bn & 90 Bn and Range QAT Anantnag and Unit QAT 163 Bn. On his arrival at the incident site and after talking to Prahlad Singh, DIG (Ops) Anantnag ordered for strengthening of the cordon around the suspect building. Thereafter, he tasked the Range QAT under command Shri. Daihrii Nenio to tactically move in BP Bunker with the HIT in ready position to cross the building from the front and look out for any suspect movement to confirm the presence of militants. When the Range QAT moved across and were facing the façade of the building, a burst was fired by the terrorists from the staircase of the building. The Range QAT members lead by Shri Daihrii Nenio retaliated the fire forcing the militants to again retreat into the building.

Once the presence of militants in the building was confirmed, Range QAT and Unit QAT 163 Bn were immediately tasked to occupy the front and left portion of the building respectively. Daihrii Nenio alongwith his buddy Constable Vivek Kumar took position in the front portion close to the target house. This was a risky position as it was virtually in the open without any effective cover against bullet fire or a grenade attack. However, since this was the only position which accorded some view on the movement of militants inside the building, from where the duo could put effective fire on the target, hence despite apparent grave threat, they took positions without loss of time. Since the terrorists continued to fire from behind a window in the building, Daihrii Nenio decided to fire UBGL to cause maximum damage. This was a difficult and extremely hazardous task as Nenio had to take position in the undulating open terrain and get exposed to give efficient fire. In a well synchronized act, Constable Vivek Kumar too moved in the open and gave covering fire as Nenio pounded UBGL on the terrorists one after another. This courageous act by the brave duo pinned down the militants till arrival of other SFs and reinforcements.

At this juncture, Army and civil police component joined the operation and further strengthened the cordon around the target house. Meanwhile, Nenio alongwith Vivek Kumar continued to put focused fire from their AK-47 on the position of the terrorists. Heavy exchange of fire continued between the security forces and the militants hiding in the under construction building. It was decided that RR would fire CGRL on the house from position across the road and CRPF led by Nenio and Vivek Kumar would give co-ordinated covering fire. After a concerted effort, the team successfully created a vent in the building. IED was laid to blast the house in which both Shri Nenio and Constable Vivek Kumar provided covering fire to perfection. During the process of laying of IED, the terrorists sighted the Army personnel getting close to the house and lobbed a grenade injuring one Army jawan. Shri Nenio alongwith his buddy Vivek Kumar without caring for their life immediately moved ahead firing indiscriminately at the hideout to prevent the terrorists from causing further damage and continued to do so till the jawan was safely evacuated from the place. Subsequently, the target house was blasted. Joint search parties were formed to retrieve dead bodies of the terrorists and weapons from the debris. Shri Nenio and Constable Vivek Kumar formed one such party. When the search was on, one of the terrorists fired from the debris, but the alert duo of Shri Nenio and Vivek Kumar immediately neutralized him and prevented any casualty/injury to troops. After a tedious search of the debris, bodies of three militants were recovered alongwith 02 AK-47 rifles, 01 AK-48 rifle, 04 magazines and 54 live

rounds. The operation was successfully concluded at 0135 hrs on 5th Dec 2017 without any civilian casualty and the troops reached their respective locations safely.

The neutralized terrorists were identified as Yawar Bashir Wani (Cat A+), Abu Furkhan (FT/Cat A++) Div Comdr South Kashmir and Abu Maviya (FT/Cat A+). The trio were associated in a host of attacks on the civilians, police and SFs including ambush on SHO Achabal and his party at Thajiwada, Anantnag on 16th June 2017, attack on Shri Amarnathji Yatri bus at Batingo on 10th July 2017 and attack on transit convoy of CRPF at Lazibal, Anantnag on 2nd Nov 2017.

The operation at Bhadragund was probably the first instance wherein the terrorists attacking a SF convoy could not flee from the incident site but were trapped and eventually neutralized. This was possible because of the rapid response and retaliation by CRPF troops which faced the daunting situation with exemplary courage and professionalism and more importantly effectively tackled the initial phase of the operation all alone. The architects of the successful operation were Shri Daihrii Nenio Asst Comdt, Shri Prahlad Singh, Asst Comdt, Constables Vivek Kumar and Anil Sharma who showed tremendous grit and exemplary valour in the operation.

In this operation S/Shri Daihrii Nenio, AC, Prahlad Singh, AC, Anil Sharma, CT and Vivek Kumar, CT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 04/12/2017.

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 116-Pres/2020 —The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force (CRPF):—

S/Shri

1	Rajendra Harijan	AC	PMG
2	Amarjeet Kumar Das	CT	PMG
3	Anup Dey	CT	PMG
4	Jayanta Boro	CT	PMG
5	Rangjalu Baro	CT	PMG
6	Rahul Kumar Pathak	CT	PMG
7	Dhiman Barua	CT	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 28/05/2018, an intelligence input was received from own source regarding the presence of an armed group of TPC Maoists led by Gireder Ganju (Zonal Commander) along with sub-zonal commander Nishant Ji, in general area of Tirdih, Dundur under Ps- Chhatarpur, Distt - Palamu (Jharkhand). After corroborating the information, an operation was planned by DIGP (Ops) Palamu, Commandant 134 Bn, S.P. Palamu, and Shri Rajendra Harijan, A/C to achieve the objective. As per the plan, two platoons of A/134 Bn under command Shri Rajendra Harijan, A/C (OC-A/134) with Civil Police moved out for Search and Destroy Operation on 28/05/2018. As the time was short and intelligence highly reliable, troops used civil pattern vehicles up to Dundu village from where they could enter the operating zone without getting noticed and secrecy/surprise intact.

While the troops of A/134 were advancing tactically towards the forest area of the Dundur village taking all the cautions, at approx 1130 hrs, the scout of the leading team noticed a suspicious movement in the forest area. Scouts observed the movement carefully and immediately informed his commander Sh. Rajendra Harijan, AC who verified it by using binoculars. The Commander immediately alerted his troops using field signals and briefed about the prevailing situation. The commander and troops were confirm of the Maoists presence but were not sure of their strength and ground features. Advancing without ascertaining the strength and locations would prove detrimental, so, commander decided to ascertain the

above details first and for the purpose, formed a small reccee party. Sensing the gravity of the situation and probable dangers ahead, team commander Shri Rajendra Harijan, AC decided to himself lead the reccee party consisting of Constable Rahul Kumar Pathak and CT(GD) Dhiman Barua. The reccee party started advancing towards the Maoists position stealthily.

When the troops were closing towards the Maoists, a volley of automatic fire welcomed them. The Maoists, sensing the encirclement, opened fire with intention to kill the SFs and snatch their weapons, ammunition & communication set. However, the troops were prepared for such a situation. Holding on to their nerves in the critical situation, Sh. Rajendra Harijan, AC along with his duo brave-hearts retaliated the fire and rushed for the cover. While doing so he passed orders to remaining troops to cover both the sides/flanks of Maoists tactically. He also challenged Maoists to surrender on top of his voice but was answered again by volley of fire. Determined to bring the Maoists to clutches of law, Sh. Rajendra Harijan, AC along with Constable Rahul Kumar Pathak and Constable Dhiman Barua continued their advance towards Maoists location providing mutual fire support to each other and using ground cover to their advantage.

Alienated from the warning of the troops and finding them close to their position, Maoists directed all their firepower on the approaching troops from multiple directions. The Maoists seem to be in no mood to surrender and left with no option but to launch counter offensive, the commander directed his troops to launch the counter-attack against the Maoists. As per strategy, the 2nd set of troops consisting of Constable Amajeet Kumar Das, Constable Rangjalu Baro, Constable Anup dey and Constable Jayanta Boro who were behind the reccee party, started flanking the Maoists. A heavy exchange of fire commenced from both sides. It was at this moment, Sh. Rajendra Harijan, AC, Constable Rahul Kumar Pathak, and Constable Dhiman Barua located the Maoists position at a close distance from them. The commander Sh Rajendra Harijan, AC directed the second party (Constable Amarjeet Kumar Das, Constable Rangjalu Baro, Constable Anup dey and Constable Jayanta Boro) who were flanking the Maoists, to open heavy fire upon the Maoists. Maoists too opened heavy fire on this party trying to run over them. The four personnel braved the heavy fire attack and continued firing upon them as directed by the commander. It was under this fire cover, did the reccee party led by Sh Rajinder Harijan, AC duly assisted by Ct Rahul Pathak and Ct Dhiman Barua charged towards the Maoists without caring for their own life firing accurately and effectively. Some of the Maoists were hit.

The ferocious counter-attack from the front and flanks by the above brave hearts destroyed the Maoist's defense and forced them to run towards the hillside: While running too Maoists were firing heavily on the flanking troops. The flanking troops namely CT Amarjeet Kumar Das, CT Rangjalu Baro, CT Anup Dey, and CT Jayanta Boro not only retaliated the Maoists firing with full might without caring for their lives but also chased the fleeing Maoists and hit some of them with their accurate firing while few managed to escape taking advantage of vegetation and undulating ground.

During post encounter search dead bodies of three Maoists, later identified as Amarjeet @ Rajesh Majhi (TPC Area Commander), Pawan Ji (TPC Area Commander) and Chandan Ji (TPC Area Commander) recovered from the encounter site. One AKM rifle, two SLR, two 303 rifle, one 315 bore rifle, huge quantity of ammunition and miscellaneous incriminating items were recovered from their possession. Besides, troops also apprehended three Maoists namely Vikas Paswan, TPC Dasta Member, Sonu Kr. Yadav, TPC Dasta Member, and Lallu Singh, Age TP Dasta Member from the encounter site. One of the apprehended Maoists had suffered bullet Injuries on his right thigh and was later admitted to District Hospital, Daltonganj, Palamu for treatment.

In this operation S/Shri Rajendra Harijan, AC, Amarjeet Kumar Das, CT, Anup Dey, CT, Jayanta Boro, CT, Rangjalu Baro, CT, Rahul Kumar Pathak, CT and Dhiman Barua, CT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 28/05/2018.

(No. 11020/54/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 117-Pres/2020 —The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/1st Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force (CRPF):—

S/Shri

1	Vinay Kumar Tiwari	Comdt.	1 st BAR TO PMG
2	Mukesh Kumar	SI	PMG
3	Mohd. Yousuff Itoo	ASI	PMG
4	Neeraj Kumar	CT	PMG
5	Shaid Hussain	CT	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On the intervening night of 22-23 January 2019, a credible input regarding the presence of a terrorist group in general area of Binnar Nallah of Tehsil Baramulla was received by Baramulla Police. Accordingly a joint operation was planned by Shri. Vinay Kumar Tiwari Commandant 53 Bn CRPF, Shri Mohd Yousif, Addl SP, Baramulla and Commanding Officer (CO) of 46 Rashtriya Rifles (RR) under the close supervision of Shri. Atul Kumar Goel, DIG, JKP, North Kashmir. The operation was meticulously planned keeping in mind the weather conditions and other issues including the increasing tendency of stone pelters who try to disrupt the operation to provide terrorists with an opportunity to flee. For better operational coordination and effective communication, the diverse operational components exchanged their wireless equipments and guides with each other besides having composite operational components. Baramulla being the northernmost district of the state of J&K, the presence of foreign terrorists are more in number who remain in a state of hibernation and rarely execute any heinous acts with an intention to carry on in their hideouts, accumulate the logistics and thereafter launch the cadres in South Kashmir after due planning. Therefore, operations in North Kashmir are undertaken majority of the times on receipt of credible actionable input.

Thus according to the plan, the suspected hideout was cordoned during the wee hours on 23 January 2019. The composite parties of 53 Bn led by Comdt. Vinay K. Tiwari, 46 RR led by CO 46 RR and the local police led by Mohd. Yousif, Addl SP Baramulla approached the suspected nallah (small drain where the terrorists were suspected to be hiding) by adopting the unconventional treacherous routes, maintaining high level of surprise till a tight cordon was established. All the possible escape routes were plugged off tactically to prevent every possibility of escape. The unprecedented heavy snow fall in January had led to extreme chilly conditions and coupled with dense bushes and hilly terrain was hampering the mobility of the troops. Unfazed by the treacherous terrain and severe cold conditions the troops moved on and succeeded in laying a tactically impeccable cordon. However, on account of poor visibility owing to heavy fog the search operation was suspended till 1000hrs. Once the visibility improved, the composite search parties constituted as per already evolved plan, commenced search of suspected Nallah assisted by continuous aerial surveillance by quadcopters. The composite search teams of 46 RR assisted by 4 Para (SF), Special Operations Group (SOG) Baramulla and 53 Bn CRPF thoroughly searched the nallah thrice but could not succeed in detecting the hideout.

At around 1300 hours, unwilling to give up, Shri. Vinay Kumar Tiwari, Comdt 53 Bn and Mohd Yousif, Addl. SP Baramulla with their small teams moved to the suspected hidden area again as they were convinced about the presence of terrorists. This time around the parties noticed boot marks in the snow. They tactically followed the tell tale signs which led them to suspected hideout. The hideout was most unassuming and difficult to track. The steadfastness, determination and never say die attitude of the troops under the shrewd and energetic command of Vinay Tiwari in the most bone chilling and hostile terrain was the reason why they could detect it. As soon as the hideout was detected, one composite component of the operational party led by Vinay Kumar Tiwari was deployed on the eastern side in order to tighten the innermost eastern flank of the hideout, second composite component of operational party led by No 135115561 Sub-Inspector Mukesh Kumar was deployed on the North-East flank while the third operational component led by Mohd Yousif laid the innermost cordon around the hide on its western flank along with Army/CRPF parties. Thereafter the terrorists were given ample opportunity to surrender, but they remained unmoved. Realising that they were exposed, the terrorists fired indiscriminately and lobbed hand grenades on the search party in a bid to escape by inflicting a chink in the cordon. Anticipating the move of the terrorists the composite parties of Army, Police and CRPF effectively retaliated duly preventing the escape bid. Exhibiting great synergy with different operational parties, the composite assault party of Sh Vinay Kumar Tiwari with his team including No 135115561 Sub-Inspector Mukesh Kumar, No 903061982 Asst. Sub-Inspector Mohd Yousuf Itoo, No 105261444 Constable Neeraj Kumar, No. 115143631 Constable Shaid Hussain and Shri Kaping Gil, Second-in-Command realigned themselves tactically. Meanwhile, some civilians working in the adjacent apple orchards were trapped in the cordon and had to be evacuated. Kaping Gill along with his troops ensured their safe evacuation from the encounter site unharmed. The hideout was a cave like structure covered with snow and bushes. Finding themselves totally cornered the terrorists made one last attempt to flee barging out of the hideout firing indiscriminately and lobbing grenades in all direction. The team under Vinay Tiwari were prepared for this onslaught and had assumed positions facing the mouth of the hideout taking natural cover provided by the snow and bushes. As soon as the three terrorists stepped out of the hideout, taking them on from close quarters, in a battle

of life and death, Shri. Vinay Tiwari, Comdt ably supported by Mukesh Kumar, Mohd. Yousif Itoo, Neeraj Kumar, and Shaid Hussain opened targeted fire at the terrorists and eliminated all the three of them.

The three slain terrorists were identified as Suhaib Akhoon @ Hurairah r/o Khanpora, Baramulla (B-Cat.), Mohsin Mushtaq Bhat r/o Qazihmam Baramulla (B-Cat.) and Nasir Ahmad Darzi @ Hamza r/o Sangrampora, Bhatpora, Jamia Qadeem, Baramulla (B-Cat.) and were affiliated to the Lashker-e-Toiba (LeT) terrorist outfit. Recoveries included three AK Rifles, magazines, 132 rds of ammunition, 02 Hand grenades and other incriminating material.

Suhaib Akhoon @ Hurairah was a PoK trained militant and self-styled operational chief of LeT for North Kashmir. The killing of all the three terrorists broke the back bone of LeT in North Kashmir putting an end to the atrocities on civilians and recruitment of innocent youngsters.

In the operation, Shri. Vinay Kumar Tiwari, Commandant, 53 Bn CRPF chose to lead from the front and displayed astute decision making skills and presence of mind, choosing not to turn back even when the others had given up the hope of hunting down the terrorists. His dogged determination and courage of conviction ultimately led to the discovery of the terrorist hideout and the elimination of the three terrorists. Sub-Inspector Mukesh Kumar, Asst. Sub Inspector Mohd Yousuf Itoo and Constables Neeraj Kumar and Shaid Hussain exhibited exemplary bravery, steely resolve and rare valour under the most trying conditions and followed their leader till the objective was achieved.

In recognition of their conspicuous act of gallantry, raw valour and unflinching commitment to duties in the face of grave adversity in keeping with the highest traditions of the Force, I hereby recommend Sh. Vinay Kumar Tiwari, Comdt (IRLA-4732) No. 135115561 Sub Inspector Mukesh Kumar, No. 903061982 Assistant Sub Inspector Md. Yousuf Itoo, No. 105261444 Constable Neeraj Kumar, No. 115143631 Constable Shaid Hussain of 53 Bn CRPF for the award of Police Medal for Gallantry (PMG).

In this operation S/Shri Vinay Kumar Tiwari, Comdt., Mukesh Kumar, SI, Mohd. Yousuf Itoo, ASI, Neeraj Kumar, CT and Shaid Hussain, CT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 22/01/2019.

(No. 11020/64/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 118-Pres/2020 —The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry (Posthumously) to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force (CRPF):—

Late Shri Mandeep Kumar	CT	PMG (Posthumously)
-------------------------	----	--------------------

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 12th May 2018, at about 0005 hrs, on receipt of credible intelligence input from Civil Police about the presence of 03 terrorists in the area of village Chinar Bagh under PS and District Pulwama in Jammu Kashmir (J&K), a joint cordon and search operation involving 183 Bn, CRPF, 55 Rashtriya Rifles (RR) and Special Operations Group (SOG), Pulwama was planned. The Chinar Bagh is a densely populated village with houses closely located to each other. The village is situated on the Pulwama - Srinagar road. Ever since the unrest erupted post the killing of Burhan Wani, South Kashmir in general and Pulwama in particular has been restive and witness to many fresh recruitment of locals and increased involvement of locals in law and order, whenever any operation was launched. The hostility of the locals towards the security forces makes conducting operations even more challenging.

After initial briefing SOG-182 Bn under command Shri K.K. Yadav, Asst. Comdt. and SOG-183 under command No 880977143 Asst. Sub - Inspector J.C Bora alongwith SOG-JKP Pulwama & 55 RR reached village Chinar Bagh at around 0020 hrs. Meanwhile, a small cordon of around 14-15 suspected houses was already laid by troops of 55 RR. SOG-182 & SOG-183, SOG Pulwama joined the inner cordon. Thereafter search of suspected houses was commenced by joint troops of SOG Pulwama, SOGs 182, 183 and 55 RR. When search of around 10 suspected houses were completed and the troops were advancing towards the next suspect house, terrorists who were apparently hiding behind the wooden dump on the eastern side of the house, fired a volley on the joint search party in an attempt to flee. Immediately, No. 115160302 Constable Mandeep Kumar and No 155060164 Sub- Inspector Shivam Pratap Singh who were in the inner cordon retaliated the fire but due to darkness, the exact position of the terrorists could not be ascertained. At the same time, effective fire by the duo helped confine the terrorists within a particular area. Meanwhile, Mandeep Kumar was hit and he sustained severe injuries in his hands and legs. This unexpected fire by the terrorist took the troops by surprise and everybody were pinned down or took shelter behind available cover. Constable Mandeep Kumar who was in the forefront and was immobilized on account of his injuries, did not panic and took position just behind the target house and continued to fire ensuring that the terrorists were

pinned down and unable to escape. This dare devil attempt on the part of Mandeep Kumar prevented any further loss to own troops. Meanwhile, he also observed that the other terrorist who was hiding in the target house was making an attempt to escape from the back side of house with the help of covering fire from his colleague. Losing no time and unmindful of the injuries and his own safety Constable Mandeep Kumar sprang out of his cover and advanced towards the terrorist blocking his escape route and fired at him. The terrorist fired back at Mandeep Kumar who was already severely wounded. The terrorists fire hit him on his vital parts and he fell down.

Since the cluster of target houses was fenced which not only obstructed the view, but also did not have any natural cover for the troops to go ahead and evacuate the injured Constable. The target house was fired upon with UBGLs and Rifles and in the process at around 0300 hrs fire broke out in the target house. Fire tenders were pressed into service to extinguish the fire. At about 0615 hrs after extinguishing the fire, joint search parties of CRPF, 55 RR and SOG, Pulwama Police searched the target area. After a thorough search, Force No. 115160302 Constable Mandeep Kumar was found who had already breathed his last. Some blood stains were found upto a distance which indicated that at least one of the terrorist had sustained injuries in the exchange of fire with Mandeep Kumar, though both the terrorists had managed to slip out of the cordon with the support of the local public. Since the crowd was swelling the joint authorities decided to call off the operation around 0700 hrs.

In this operation Late Shri Mandeep Kumar, CT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 12/05/2018.

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 119-Pres/2020 —The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force (CRPF):—

S/Shri

1	R D Ashemval Anal	SI	PMG
2	Nilamoni Deka	CT	PMG
3	Biswajit Das	CT	PMG
4	Rakesh Bhagat	CT	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 31st March 2018, at about 2200 hrs on receipt of a credible intelligence input from SSP Shopian about the presence of terrorists in two villages Kachdora and Dragad in Shopian district, a joint Cordon and Search Operation (CASO) was launched alongwith 34 Rashtriya Rifles (RR) at Kachdora village and with 44 RR in village Dragad. At about 2310 hrs Counter Terrorism Team (CTT) of A coy of 14 Bn under command of Sh. Ab. Kaipou, Asst. Comdt and Special Operations Group (SOG), Jammu and Kashmir Police (JKP), Shopian party of 34 RR party moved towards Kachdora. At about 2330 hrs, after reaching the target area at Kachdora and while the troops started laying the cordon of about 8-9 houses, the terrorists in panic opened heavy fire on the CTT party in an attempt to break the cordon. Troops immediately assumed safe positions and retaliated effectively. In the midst, braving the exchange of fire No.130140032 Sub-Inspector R D Ashemval Anal and his buddy No. 115137418 CT/GD Nilamoni Deka with two other personnel moved ahead and completed the cordon thereby preventing the escape. Additional reinforcements were called for, and Comdt 14 Bn, CRPF alongwith SSP Shopian rushed with additional troops. It was dark and therefore exact position of the adversaries could not be located. It was also learnt that some civilians were trapped in the cordoned which was preventing the troops from firing. The operation was thus suspended till first light and the cordon was further strengthened. As soon as the day broke, civilians were evacuated. The terrorists, meanwhile, continued to fire from one of the three storied concrete buildings. Being well fortified the retaliatory fire had no effect on them. Several rounds of UBGL were also fired into the building but even UBGL fire failed to unnerve them, leave alone neutralize. Regular announcements on the public address system from the local masjid to the public to throng the encounter site encouraged the crowd and they began gathering in the orchard area behind the target house where the CTT party was positioned in the inner cordon. The law and order situation was turning grim and the troops were finding it difficult to manage the law and order eruption. CTT party while engaging the militants in the gunfight in the cordon, had also to simultaneously engage the stone pelters, resulting in minor injuries to CTT Commander Ab. Kaipou on his nose. Since the CTT party was located relatively close to the target house and the terrorists were in a dominating position, the CTT party came under heavy fire from the terrorists. Sub-Inspector Ashemval Anal and his buddy undeterred by the fire effectively retaliated and managed to stem the fire of the terrorists. Sh. Ab. Kaipou despite sustaining injury, along with few personnel of

the CTT party, continued to keep the rapidly swelling crowds at bay, who were indulging in excessive stone pelting and threatening to storm the cordon. Shri Erick Gilbert Jose, Comdt, 14 Bn along with his protection party immediately rushed to augment the CTT party but on the way were intercepted by heavy fire from the top floor of one of the target house. The incoming fire as well as the simmering crowd cut short their advance towards the CTT party. Erick Gilbert Jose unmoved by the situation, maintained his calm and with the help of tactical skills succeeded in identifying the position of terrorists. Simultaneously, braving the stone pelters, he fired heavily on the suspect terrorist positions and continued to move forward provide covering fire so that his protection party could reach in support of CTT party. The aggressive response on the part of the Commandant help save the CTT party from being outnumbered and the cordon from being stormed by the stone pelters. However, the three storied target building being a concrete structure continued to be unaffected by any kind of fire providing safety and also provided the terrorists a distinct tactical advantage, providing them a clear line of sight, thereby preventing the forces also from approaching the building. At about 1300 hrs it was decided to demolish the building with IED. The main target building of three stories was razed to the ground after fourth attempt with powerful IEDs. When the troops of RR approached the second building to place an IED, two RR jawans were injured in the exchange of fire. Evacuating the injured jawans was a challenge as the adversaries continued to fire heavily. Ashemval Anal and his buddy Constable Nilamoni Deka who were positioned close to the injured jawan, putting their own life to risk crawled tactically towards him amidst heavy exchange of fire and evacuated him. Heavy exchange of fire continued for almost half an hour, but by then the second building was also in flames burning the building partially. When there was no more fire from the adversary for a long time, joint search parties were formed to search the debris. When the search party approached the debris, one of the terrorist who was still alive, suddenly let out a volley of fire seriously injuring one more jawan of RR. Search parties took position and retaliated the fire. The injured jawan lay precariously close to the terrorist, making evacuation a tough job. No. 115137445 Constable Biswajit Das and No. 145311886 Constable Rakesh Bhagat along with counterparts from RR and SOG moved forward tactically adopting fire and move tactics taking advantage of whatever little natural cover was available and reached very close to the injured jawan amidst heavy fire. The militant was watching the approaching troops and opened heavy fire on their positions. Biswajit Das and Rakesh Bhagat determined to save their injured colleague in a split moment exhibiting sharp reflexes and the confidence of trained soldiers moved out of their cover exposing themselves and fired at the surviving terrorist neutralizing him. Thereafter the search parties searched the debris resulting in the recovery of one dead body of a slain terrorist. Two more partially charred dead bodies were recovered from the debris of adjacent building. In the absence of JCB only part of the debris could be searched. Since the law and order situation continued to worsen it was decided to conclude the operation. Civil Police requisitioned for additional CRPF troops for withdrawal as information was received by police that large number of stone pelters were being ferried by vehicles from several villages around and were waiting for the troops on the way. However, Commandant 14 Bn, CRPF rather than waiting for reinforcements after assessing the situation chose to tactically withdraw from the encounter site without waste of time.

Subsequently when the debris was finally cleared two more bodies of slain terrorists were recovered who were identified as Ishfaq Ahmad Thokar of HM outfit categorized A+, r/o Paddarpora, Shopian, Atimaad Hussain Malik of LeT categorized C, r/o Amshipora Asthan Mohalla, Shopian, Sameer Ahmad Lone of HM outfit categorized C, r/o Hilloo Gund Mureed, Shopian, Gayas Ul-Islam Thoker of HM outfit categorized B, r/o Paddarpora, Shopian and Aaqib Iqbal Malik @ Tahir Bhai of HM outfit, categorized C, r/o Rangadh, Kulgam. Recoveries included two AK-56 rifles, one 5.56 Insas rifle, magazines, 109 rounds of 5.56 mm, 106 rds of 7.62 mm and 16 rds of 9mm.

In the operation, Sub Inspector R.D. Ashemval Anal, Constable Nilamoni Deka, Constable Biswajit Das and Constable Rakesh Bhagat exhibited exceptional bravery, courage under the most challenging circumstance staking their own lives to rescue their injured colleagues and also retaliating fiercely displaying raw valour and nerves of steel to eliminate the terrorists.

Therefore, in recognition of their acts of conspicuous gallantry, exemplary valour, highest degree of commitment and dedication to duties in the face of grave and imminent danger, I hereby recommend No 130140032 Sub-Inspector R.D. Ashemval Anal, No. 115137418 Constable Nilamoni Deka, No. 115137445 Constable Biswajit Das and No. 145311886 Constable Rakesh Bhagat of 14Bn CRPF, for the award of Police Medal for Gallantry (PMG).

In this operation S/Shri R D Ashemval Anal, SI, Nilamoni Deka, CT, Biswajit Das, CT and Rakesh Bhagat, CT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 31/03/2018.

(No. 11020/68/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 120-Pres/2020 —The President is pleased to award the President Police Medal for Gallantry (Posthumously) to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force (CRPF):—

Late Shri Utpal Rabha	CT	PPMG (Posthumously)
-----------------------	----	---------------------

Statement of service for which the decoration has been awarded

Acting on the specific inputs regarding the presence of top Maoist leaders with armed cadres in the general forest area of West Singhbhum, Khunti, Saraikela-Kharsawan, a joint Ops was launched by the troops of 209 CoBRA along with CRPF Units and State Police.

As per the plan, troops moved towards the target area on 07/06/2018 at around 0650 hrs, while troops were wending through the deep forested and hilly terrain, the alert scout of team no. 06 of 209 CoBRA, CT/GD Utpal Rabha observed suspicious movements of 3-4 men at the ridge/height upfront, at the distance of around 80 metres. He immediately alerted his team Commander and other team members nearby. Within no time, team commander Shri Hanuman Ram, Asst. Comdt. and scout, Force no. 115135344 CT/GD Utpal Rabha comprehended the situation & established the presence of armed Maoist cadres on the height (between Karra and Kasrauli villages). They immediately relayed the situation over VHF set to all. The teams advanced to encircle and nab the armed Maoist cadres.

The target was at the height of around 20 meters with a steep gradient & rough terrain with lean & scattered vegetation. Team no 6 was in the lead and heading towards the target stealthily. Meanwhile, sensing the presence of security forces, the CPI Armed Maoists, perched atop in their fortified positions (morchas) started indiscriminate firing on the head portion of team-06. Troops caught in the killing zone of the Maoists. They immediately took the position behind the available covers and tried to locate the Maoists position for countering their attack. During this run of heavy fire, the scout of team No. 06 CT/GD Utpal Rabha sighted the exact position of Maoists on two ridges ahead to the operating teams/ troops and communicated the same to his team commander. Absence of ground cover proved no barrier to the team commander Shri Hanuman Ram, Asst. Comdt. and he mobilised his team to engage the Maoists with heavy suppressive fire.

To obstruct the uphill advance of troops, Maoists concentrated their fire power on the troops in the lead. Undeterred with the heavy firing, scout of team No. 06 i.e CT/GD Utpal Rabha with CT/GD Ajay Kumar and CT/GD Dilip Oraon started flanking the Maoists from the right side. CT/GD Utpal Rabha fired UBGL grenade on fortified morcha of Maoists and inched closer towards their position. He continued his advance aggressively from the right flank using fire and move tactics along with his fellow troopers. The Maoists, perched atop, were firing intermittently, with sole aim of stopping the advance movement. While inching closer to the Maoist position, one bullet hit CT/GD Utpal Rabha's at upper part of left shoulder. Despite being hit, he took cover and started targeting the Maoists positions with his precise firing. Without caring for his own life despite being hit, he advanced and reached as close as to 40 meter of Maoists position. He crawled further to reach at a vantage and strategic point from where he could launch an effective counter attack on the Maoists fortified position. He loaded one grenade (UBGL) to fire on the Maoists morchas to dislodge them from their positions. While he rose and fired the UBGL, a bullet again hit him in the face area which later proved fatal. He fell down there only. During evacuation, CT/GD Utpal Rabha succumbed to the injuries and attained martyrdom.

The daredevilry and raw courage displayed by Constable Utpal Rabha not only ensured the safety of his team members but extraordinary valour with brewing energy exhibited by him inspired others to hold to the ground till end. Constable Utpal Rabha made supreme sacrifice in the line of duty for the Nation and the cause.

In this operation Late Shri Utpal Rabha, CT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 07/06/2018.

(No.11020/69/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 121-Pres/2020 —The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force (CRPF):—

S/Shri

1	Mohd Yones Khan	CT	PMG
2	Ramu Lohar	CT	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 12th September 2018 at about 2200 hrs, on receipt of a credible input about the presence of two dreaded militants suspected to be foreigners in Village-Teliyan Mohalla of Arampora, u/ps-Sopore, Distt- Baramulla (J&K), joint troops of 179, 177 and 92 Bns of CRPF, troops of 22 Rashtriya Rifles (RR) and Special Operations Group (SOG) under their respective Commanders rushed to village Teliyan Mohall, Arampora. Whereas, a local source confirmed the presence of two militants in Teliyan Mohalla, but he was unable to give the exact location/target house. Hence, an effective Ops plan was chalked out and the target area consisting of 08-10 houses. Troops of E/179 Bn u/c Inspector Surender Singh, QAT of 179 Bn u/c Shri Kartar Singh, Second-in-Command were assigned to cordon the suspected houses on the southern side, QAT of 177 Bn u/c of Shri Kalyan Singh, Second-in-Command cordoned the target area from the south extending to the south-east and QAT of Range Baramulla u/c Shri Manish Kumar extended the cordon to the south-east and SOG Sopore cordoned the eastern side with 22 RR completing the remaining cordon. Remaining troops of 92 Bn laid the outer cordon to prevent stone pelters from interrupting the operation.

Once the cordon was tightly established, joint teams were formed to carry out door to door search of the target houses under Commandants of 177 & 179 Bns of CRPF. As the search was on, at about 0155 hrs, the owner of one of the house informed about the presence of two terrorists in his neighbour's house. Immediately the cordon was strengthened around the suspected target house and an announcement was made on the public address system asking the terrorists to surrender. However, the warning did not elicit any response from the adversary. There were civilians trapped in the target house as well as adjacent houses who had to be evacuated before any action had to be initiated. However, putting themselves to risk, duly supported by the covering fire from the inner cordon, the civilians were safely evacuated by the joint troops. Once again an opportunity was provided to the terrorists to surrender which went unheeded. At about 0350 hrs firing indiscriminately the terrorists rushed out of the target house in a bid to escape by breaking the cordon. Effective retaliation by the troops compelled the terrorists to retreat. After a brief lull there was another exchange of fire and taking advantage of darkness one of the terrorist managed to sneak out of the house and took position in the nearby orchard. Since the darkness would have hampered the operation, the troops further tightened the cordon and the target house/orchard were lit up using halogen lights. The terrorists who had stepped out of the target house and was hiding in the orchard once gain engaged the troops in the exchange of fire. Since it was dark, the operation was temporarily suspended till first light with the cordon being kept intact. As the apple orchard was dense and indiscriminate exchange of fire would not have yielded any result it was decided to carry out a thorough search of the orchard. Accordingly, two small teams were formed under Commandants 177 and 179 Bns while the remaining troops remained positioned in the inner cordon to prevent any attempted escape by the terrorists. The search was commenced very tactfully. As the search party advanced, sensing the advancing troops the terrorist opened heavy fire targeting the search party exposing his position. No. 061775607 Constable Ramu Lohar of 179 Bn and No. 085341945 Constable Mohd Younes Khan of 177 Bn decided to take on the terrorist. Exhibiting stern resolve and a steely determination, throwing all caution to winds both of them moved towards the terrorist from two different flanks in a bid to take him by surprise. Slowly but stealthily adopting smaller postures they crawled their way to the proximity of the hiding terrorist. The terrorist suddenly found himself face to face with Constable Ram Lohar. Not knowing that Constable Mohd Younes had also inched closer to him he turned around in a bid to escape opening a heavy burst of fire. Both the Constable Ram Lohar and Mohd. Younes pounced at the fleeing terrorist and fired a volley of burst fire neutralizing the terrorist on the spot. Meanwhile, the second terrorist attempted to escape from the northwest of the target house, where the troops of 22 RR were in position. He ran into them and was eliminated in the process. After a prolonged lull a thorough search of the target houses and the apple orchard was undertaken by the search parties resulting in the recovery of dead bodies of two slain terrorists alongwith two pistols, UBGL thrower, six magazines and live ammunition apart from other incriminating material. The slain terrorists were identified as Ali @ Athar @ Saifullah and Umar @ Zia-Ur-Rehman both Jaish-e-Mohd (JeM) terrorists of Pak origin categorized A++.

In the operation No. 061775607 Constable Ramu Lohar of 179 Bn No 085341845 Constable Mohd Younes Khan of 177 Bn exhibited extraordinary initiative, exemplary valour, tactical acumen and selfless dedication and devotion to duties under the most adverse circumstances and kept their nerves intact when the situation so demanded and succeeded in eliminating the terrorist.

Therefore, in recognition of their conspicuous act of gallantry, raw valour and unflinching commitment to duties under grave adversity in keeping with the highest traditions of the Force, I hereby recommend No 061775607 Constable Ramu Lohar of 179 Bn & No. 085341845 Constable Mohd Younes Khan of 177 Bn, CRPF for the award of Police Medal for Gallantry (PMG).

In this operation S/Shri Mohd Yones Khan, CT and Ramu Lohar, CT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 12/09/2018.

(No. 11020/77/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 122-Pres/2020 —The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/1st Bar to the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force (CRPF):—

S/Shri

1	Gopal Ram	AC	PMG
2	Latif Ahmad Bhat	CT	PMG
3	Sreenivasulu P	CT	1 st BAR TO PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

During October 2018 foreign terrorists of Jaish-e-Mohd (JeM) including trained snipers infiltrated in sub-division Tral of South Kashmir. The terrorists carried out sniper attacks on the camps of 180 Bn CRPF and 42/RR five times within a span of a week, whereby 03 jawans attained martyrdom and a number of jawans were injured. An atmosphere of insecurity and fear spread amongst the security forces.

On 29th October 2018, a reliable input was received that on the same night terrorists of JeM may again carry out attack on A/42 Rashtriya Rifles, Mandoora, G/180 Bn and C/180 Bn CRPF u/PS-Tral. Accordingly, 42 RR laid an ambush near the camp of A/42 RR at Mandoora. QAT/180, CRPF u/c Shri Rajesh Kumar Barnela Asst. Comdt laid naka near village Sherabad and C/180 CRPF u/c Shri. Gopal Ram Asst. Comdt along with Special Operations Group (SOG), Tral laid naka at Pinglish crossing. At about 2220 hrs, the sniper team of JeM fired at the LMG sentry Morcha of A/42 RR camp at Mandoora and fled after fire. As they were fleeing they ran into the ambush party of 42 RR, but under the cover of darkness and taking advantage of the undulating terrain they managed to escape. On receipt of this information, Shri Rajesh Kumar, Comdt-180 Bn. CRPF deployed his troops on the escape routes covering village Mandoora, Chhan-ki-Tar and nearby apple orchards in order to cut short their attempted escape. The troops remained deployed the entire night and at first light search of the suspected area was carried out. However, not finding anything the troops closed at Mandoora camp.

The next day i.e. on 30th October 2018, at about 1150 hrs an input was received about the presence of terrorists of JeM in Village-Chhan-Ki-Tar which was approximately 02 kms from village Mandoora. Without loss of time QAT/180 u/c Shri Rajesh Kumar Barnela along with SDPO Tral and other members of the Civil Police and troops of 42 RR tactically moved from different routes to cordon off the village Chhan-Ki-Tar. In the meantime, Brig. Balbir Singh Commander 1st RR, Commanding Officer (C0) 42 RR, SSP Awantipora, Comdt-180 Bn CRPF, C/180 CRPF u/c Shri Gopal Ram Asst. Comdt along with SOG Tral also reached the said village. The troops swiftly and strategically laid a cordon of the village Chhan-Ki-Tar. C/180 started established the cordon to the south of village Chhan-Ki-Tar. As the troops were laying the cordon, the terrorists fired on the cordon party near the Wani Mohalla of village Chhan-Ki-Tar, from a double story house near the Masjid wherein one officer of RR had a miraculous escape. The troops of 42/RR, QAT/180, C/180 CRPF and police also retaliated the fire. Shri Gopal Ram with his buddy No. 065341084 Constable Latif Ahmad Bhat, No. 135279797 Constable Sreenivasulu P and his buddy No. 125340677 Constable Roomi Kumar who were near the bathroom block right opposite the double storied target house at the time of initial fire, took position and returned the fire. Astutely sensing that the terrorist would evade the cordon the officer instantly took decision and immediately moved his party to the under construction house on the south side of the target house to cover the target house from that direction. Gopal Ram and his buddy Constable Latif Ahmad Bhat and Constable Sreenivasulu P. took position behind a small pillar of the under construction house in front of the target house and were tasked to cover the main corridor gallery of the target house. His buddy Constable Roomi Kumar covered the cow-shed adjacent to target house in the west direction. The other members of his team and troops were tactically deployed at vantage positions. QAT/180 u/c Rajesh Kumar Barnela took position in another neighbourhood house on the west side and other two sides of the target house were covered by the troops of 42 RR.

Thereafter, announcement was made on the public address system asking the terrorists to surrender, but, in response the terrorists fired a volley from the north side of the house. The troops in the close cordon also retaliated the fire triggering a fierce gun fight. Even after a prolonged exchange of fire, no party was effectively able to engage the clandestinely positioned terrorists who had entrenched themselves in well fortified positions inside the house and were firing at the parties trying to approach the target building. The terrorists were also firing UBGL Rounds and grenades so as to break the cordon towards Gopal Ram and his buddy and two other jawans who were positioned behind waist-high walls of the under construction house at a distance of about 40 metres from the target house. However, Gopal Ram, Latif Ahmad Bhat, Sreenivasulu P. displaying great resolve and fortitude stuck to their positions foiling every attempt by the terrorists to dislodge them. At about 1730 hrs, the terrorists again lobbed 02 grenades in quick succession from the windows of the house on the front side which exploded and wrapping the entire area in dust and smoke. At the same time, one terrorist moved from the building on to the main corridor and tried to make good his escape by firing indiscriminately towards Constable Sreenivasulu P. Sreenivasulu unmindful of his personal safety, retaliated swiftly and accurately with effective fire and neutralized the heavily armed terrorist in the corridor, who was later on identified as Usman Hyder r/o Pakistan. Meanwhile, on the other side, the second terrorist fired indiscriminately from the left side window of the target house and tried to escape but Gopal Ram and his buddy Latif Ahmad Bhat who were in position behind the waist high wall barely managed to evade the fire, but picking themselves up after the onslaught, they found their bearings and retaliated with equal vigour eliminating him in the process. The killed terrorist was later identified as Showkat Ahmad Khan, r/o Handoora, u/PS Tral. By this time the target house was completely

up in flames bringing down the roof of the target house. The fire brigade was called to extinguish the fire. Subsequent search of the target house led to the recovery of charred bodies of 02 terrorists along with one American made M-4 Sniper rifle, one AK-47 Rifle, magazines, matching ammunition and other incriminating material. Usman Hyder was the dreaded JeM commander (A++ Category) and leader of the highly motivated sniper team of JeM, and nephew of the Pakistan based JeM Chief Moulana Masood Azhar.

This was one of the most challenging operation as the SFs were up against two well trained and heavily armed foreign terrorists who had spread havoc in the area. The only way to get over the threat was by eliminating the threat itself. Shri Gopal Ram, Asst. Comdt. exhibiting exceptional leadership qualities and tactical acumen manoeuvred the men under his command and managed to accomplish rare success. He kept his cool and demeanour under the most trying situation and came out triumph. Constables Latif Ahmad Bhat and Sreenivasulu P. displayed raw valour, nerves of steel and exemplary courage under persistent onslaught not giving up till they succeeded in eliminating the terrorists and thereby completely wiping out the threat of sniper attacks on the SFs.

For their rarest of rare act of gallantry, exceptional valour, raw grit and highest degree of commitment and dedication to duties, under imminent threat to life, in keeping with the highest traditions of the Force, I recommend Shri Gopal Ram, Assistant Commandant (IRLA-8567), No. 065341084 Constable Latif Ahmad Bhat and No. 135279797 Constable Sreenivasulu P for the award of Police Medal for Gallantry (PMG).

In this operation S/Shri Gopal Ram, AC, Latif Ahmad Bhat, CT and Sreenivasulu P, CT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 29/10/2018.

(No. 11020/78/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 123-Pres/2020 —The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force (CRPF):—

S/Shri

1	Tilak Raj	AC	PMG
2	Rattan Singh	HC	PMG
3	Birender Singh	CT	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

In the background of the attack on Yatris during Shri Amarnathji Yatra 2017 at Batingo in Anantnag, South Kashmir, the sensitivities were extremely high during the Yatra in 2018. To preempt any such attempt by the militants, 24X7 laterals were placed on the National Highway and cut off timings for move of the Yatris was enforced strictly. A new concept of vehicle tracking through RFID was introduced to maintain close observation on move of each and every Yatri/tourist vehicle. However, despite the numerous measures, the threat remained very high. Moreover, the passing of the Yatri convoy through Anantnag town presented a massive challenge for the SFs due to the large flow of population and busy market stretches on New Khannabal -Pahalgam (NKP) road.

Taking advantage of this situation, militants planned to move close to the route of the Yatra with the intention of striking at the Yatra on the slightest opportunity. The Intelligence agencies were however keeping close track and input was received on the night of 24th July 2018 regarding movement of two militants in the Lal Chowk area of congested and busy Anantnag town. This was further developed and the location pointed to their halt in a civilian house in Mehman Mohalla. Accordingly, joint CASO was planned with 1 RR, SOG JKP and 40 Bn CRPF. Immediately on receipt of information, Comdt 40 Bn detailed A coy of 40 Bn, Counter Insurgency {(CI (Ops)) Coy under command of Shri Tilak Raj, Asstt Comdt and after briefing directed them to move for the location. Sensing large scale law and order problems, Comdt- 40 Bn being Nodal Officer also detailed five coys in the vicinity of the target house to keep stone pelters at bay and prevent them from reaching close to the suspect house with the intention of disorienting the troops and helping the militants to escape.

On reaching the location Shri Tilak Raj moved his troops close to the suspect house bound by bound. It was located in a very congested and densely populated area and thus extremely inconvenient from operation point of view. The chances of collateral damage were high. The narrow lanes and bylanes did not allow deployment of a large team. Hence, Shri Tilak Raj focussed on tactical placement of troops at the most vantage points and for the purpose he chose just two persons for deployment under his command as other SFs also formed part of the operational team. He placed Force No: 911324756 Head Constable Ratan Singh and Force No: 065112414 Constable Birender Singh in front part of the target house on the left in the inner cordon. There was hardly any proper cover except the depression of the drains and the bends at the

corner of the houses. There was high probability of fire from the militants in this area. Nevertheless, it was important to cut off the area as militants stood a strong possibility of opening fire on the troops to make good their escape from this zone. Thus, the party took frontal position sideways in tactical manner to minimize threat of militant fire and readied themselves for action.

Firstly, announcement was made on PA system for the to surrender. However, the terrorists responded by opening heavy fire in the direction of the deployed troops. Shri Tilak Raj, Asstt Comdt and his team faced a volley of bursts and just moved out in time to save themselves. However, undeterred by the terrorist's fire he shouted to his buddies Ratan Singh and Birender Singh to fire back at the terrorists and himself made immediate counter-fire by leading the troops from the front. The instant reaction from Shri Tilak Raj, AC, Head Constable Ratan Singh and Constable Birender Singh prevented a major damage to the troops and forced the militants to move back inside the building to save themselves. However, all of a sudden the terrorists surprised by appearing again and lobbed grenades in the lanes where the troops were deployed. The troops took immediate cover and somehow managed to prevent any casualty. It was now clear that small arms fire would not cause any problem for the terrorists. After some deliberation and there being no possibility of firing CGRL/MGL due to constraints of space, it was decided to fire UBGL. This was a risky affair as both the firer and the troops giving cover support had to move out from their safe positions. Shri Tilak Raj, AC took up the challenge. UBGL was fired by the troops of RR in which the CRPF party consisting of Shri Tilak Raj, Ratan Singh and Birender Singh gave significant covering fire in the process encountering grave risk to their lives. After heavy fire was put on the target house, there was no response from the militants. It was expected that the two rooms on the first floor of the building had been significantly damaged and the chances of the terrorists remaining alive was remote.

After taking stock of the situation, it was decided to conduct search of the building by forming joint search teams. Accordingly, Shri Tilak Raj, Asst. Comdt., Head Constable Ratan Singh and Constable Birender Singh also formed one search team along with others from RR and SOG JKP. The teams moved tactically inside the building. During the search as the team closed in, all of a sudden the terrorists fired on the troops but the alert team of Shri Tilak Raj reacted quickly and neutralized one of them. Subsequently, the other terrorist was also killed by the other search party.

After a tedious search of the debris, bodies of two terrorists were recovered along with 01 AK-47, 01 INSAS Rifle, 04 magazines, mobile phone and camera etc. The operation was successfully concluded at around mid-day without any civilian casualty and the troops reached their respective locations safely. Throughout the operation, an intensely hostile mob continued to pelt stones in the vicinity of the encounter site but the law and order troops managed to keep them away and with tact prevented any collateral damage.

The neutralised terrorists were identified as Bin Yamin Dar (Cat-B) r/o village Bonpora, Khudwani (Kulgam) and Abid Hussain Bhat (Cat-C) r/o village Sazan, Dist Doda (Jammu) of LeT outfit. The militants were highly motivated and associated in a host of attacks on the civilians, police and SFs.

The operation at Lal Chowk was a challenging operation and extremely sensitive in view of the then ongoing Shri Amarnathji Yatra. The militants were however neutralised in a very well co-ordinated and synergised operation. This was possible because of the active involvement of CRPF troops which faced the daunting situation with exemplary courage and professionalism. The application and use of UAV of 40 Bn CRPF was the high point of the operation as it helped the SFs to track the movement of the militants in the building and finally nail them. The familiarity of the CRPF team with the area including the umpteen lanes and by lanes on account of their daily deployment also proved advantageous in taking crucial tactical decisions in the initial stages of laying of inner cordon. The architects of the successful operation were Shri Tilak Raj, Asst. Comdt., Head Constable Ratan Singh and Constable Birender Singh who showed tremendous grit and exemplary valour in the operation by providing effective fire of 22 rounds, 15 rounds and 16 rounds respectively from their AK-47 rifle despite considerable threat to their lives.

In this operation S/Shri Tilak Raj, AC, Rattan Singh, HC and Birender Singh, CT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 25/07/2018.

(11020/79/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 124-Pres/2020 —The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force (CRPF):—

S/Shri

1	Pravat Kumar Behera	AC	PMG
2	G Vijaya Kumar	HC	PMG
3	Shoukat Ahmad Rather	CT	PMG

4	Nasser Ahmed	CT	PMG
5	Narsapure Rakesh Prabhakar	CT	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

The tremendous thrust created by the Security Forces during the Shri Amarnathji Yatra 2018 in maintaining security in Kashmir Valley did not allow any opportunity to the militants to target the SFs/Yatris during the two month long event. This created a lot of pressure on the militants and they saw the upcoming Urban Local Bodies (ULB) and Panchayat Elections as an opportunity to put their nefarious designs into act by moving close to the National Highway.

On 14th Sept 2018, in the evening after dusk, Comdt 18 Bn CRPF received intelligence input from own sources that during move of some militants along the stretch of National Highway they were attacked by a bear in which one of the militants was apparently injured. It was further contended that the militants were on the lookout for shelter and assistance to the injured. In view of the input and sensing a likely encounter on confirmation of location of the militants, Comdt 18 Bn CRPF alerted his troops for action on short notice.

At around 0015 hrs on 15th Sept, SSP Kulgam informed Comdt 18 Bn CRPF regarding movement of 3-5 militants in Chowgam village under PS Qazigund in Kulgam and requested him for operational troops to conduct CASO. The input was corroborated with the developing information already available with Comdt 18 Bn. Accordingly, Shri Henzang, Comdt briefed Unit QAT and CTT and quickly despatched them for the location. The troops reached village Chowgam around 0040 hrs and joined troops of 9 RR and SOG JKP. Considering the sensitive operation at hand, DIG (Ops) CRPF Anantnag also directed one HIT of Range QAT to join the operation under command of Shri Pravat Kumar Behera, Asstt Comdt. The Range QAT was placed in the inner cordon in the South-west direction and Unit QAT 18 Bn in South-east. The remaining stretch was occupied by 9 RR with SOG. CTT under command of Second-in-Command 18 Bn was deployed in the outer cordon near the target house to pre-empt any law and order situation in the absence of regular LO troops at the site at that point in time. Subsequently, DIG (Ops) CRPF Anantnag also reached the location and after an analysis of the ground situation briefed the troops on likely scenario and desired action.

Around 0100 hrs, on identification and confirmation of the target house when the search party moved close after laying of the initial cordon, all of a sudden the militants hiding inside opened fire on the troops. In the process two jawans of 9 RR got injured. In order to save the injured jawans, it was extremely important that they were evacuated immediately without loss of time. The sudden reaction by the militants disoriented the troops. However, in this hour of crisis, Shri P K Behera, Asstt Comdt, Range QAT Commander without any delay and without caring for his personal safety rose from his position and alongwith his buddies Force No: 005030245 Head Constable G Vijay Kumar and Force No: 125075344 Constable Showkat Ahmad Rather fired a volley on the target house from where militants had targeted the troops. This had the desired effect as the militants had no option but to stop the fire and move back inside the target house.

Simultaneously, P K Behera shouted to the Unit QAT personnel of 18 Bn CRPF placed contiguously in the cordon for help to rescue the injured jawans. Upon his call, Force No: 055070997 Constable Nasir Ahmad and Force No: 135252763 Constable Narsapure Rakesh Prabhakar of 18 Bn responded immediately and without caring for their personal safety jumped across the perimeter wall of the target house into the compound to reach the injured personnel. Concurrently, other members of the team synchronised and provided effective covering fire to enable Constables Nasir Ahmad and Narsapure Rakesh Prabhakar to safely evict the injured personnel of RR. This was a risky and challenging task but was effected successfully in a well-coordinated action by Range QAT and Unit QAT 18 Bn.

On confirmation regarding presence of militants in the suspect house, the inner cordon was strengthened further. P K Behera, Asstt Comdt alongwith Head Constable G Vijaya Kumar and Showkat Ahmad Rather who were in the inner cordon in South-west direction did not have any proper cover as the perimeter fencing of the house extended only from the South-east to North direction. However, it was extremely important that despite the threat the positions were maintained so as not to allow space to the militants to slip away. This was crucial aspect and challenging as well as it was continuously raining. P K Behera alongwith his team braved the odds and stuck to their ground and positions.

It was subsequently revealed that militants had made 4 males and 2 females hostages inside the house. After some deliberation between the senior officials present at the site, the militants were approached through mobile and an appeal was made to let go the civilians. Initially, the militants seemed reluctant but after lot of persuasion they finally let off the civilians.

No sooner had the hostages come out of the target house, than militants started heavy fire on the troops from all sides of the target house. From the array of fire, it was now clear that there were minimum 4-5 militants holed up in the building. Range QAT and Unit QAT personnel retaliated the fire vehemently and forced the militants to rescind thereby nullifying any possibility of their escape. Thereafter, intermittent firing continued from both sides for nearly three hours. It was decided to blast the target house by laying IED. Again both the Range and Unit QAT personnel provided necessary thrust by giving covering fire support. In the process a part of the house was damaged. After this firing stopped from the side of the militants. However, due to incessant rains and poor visibility it was decided to wait till morning to commence search of the target house.

At break of dawn, the militants again started fire in different directions. In the process a volley of burst was fired on P K Behera, Asstt Comdt and his buddies. However, they had a narrow escape and immediately changed their positions. P K Behera identified position of one of the militants at a window in the target house. He immediately made a plan to target the militant with multi-grenade launcher (MGL) with assistance from his buddies. This was not an easy task as in order to fire from MGL one had to come out in open and it also required covering fire support. Shri P K Behera firstly changed his position towards the right side. G Vijay Kumar who was well trained in MGL volunteered for the act. On directions from Range QAT Comdr, he fired two grenades from his MGL in quick succession and in the process P K Behera and Constable Showkat Ahmad Rather ably supported him by moving out in the open to give covering support even while they clearly risked fire from the militants on themselves. In the process, one grenade hit right at the window neutralising the militant positioned there instantly. The valiant act by the team resulted in a great achievement for the Forces.

In order to blast the remaining portion of the target house another IED was blasted with the assistance of covering fire from Range and Unit QAT. Resultantly, the complete house collapsed. Joint search teams were formed to clear the debris. It so happened that when the search was in progress, two militants who were still alive fired from within the debris. However the duo of Unit QAT 18 Bn namely Constables Nasir Ahmad and Rakesh Narsapure who were closest to them quickly retaliated and neutralised the militants on the spot before they could cause injuries to the search teams.

The neutralised militants were identified as Gulzar Ahmad Padder r/o village Taki Gopalpora in Kulgam, Faisal Rashid Rather r/o village Yamrach, Yaripora, Zahid Ahmad Mir r/o village Okay in Kulgam, Zahoor Ahmad Bhat r/o village Nagnaad in Kulgam and Masroor Ahmad Bhat r/o village Fathepora, Anantnag. All were Category "A" militants. The significant recoveries included 04 AK-47 rifles, 04 AK-47 magazines, 01 UBGL and 05 UBGL grenades. Despite a very hostile mob all around the encounter site, the LO troops tactfully and professionally dealt with the situation and ensured safe withdrawal of the operational troops.

The operation at Chowgam was a major achievement for the SFs in the run up to the ULB and Panchayat Elections in the Valley. The movement of the militants in large group indicated their sinister designs. A large credit for the successful operation can be attributed to the rapid response and forceful retaliation by CRPF troops which faced the daunting situation with exemplary courage and professionalism and also took timely initiative in conducting the rescue operation for the injured personnel. The architects of the successful operation were Shri P K Behera Asst. Comdt. Head Constable G Vijaya Kumar and Constable Shaukat Ahmad Rather from Range QAT Anantnag and Constable Nasir Ahmad and Constable Narsapure Rakesh Prabhakar from Unit QAT 18 Bn CRPF who showed tremendous grit and exemplary valour in the operation by providing timely and effective fire of 39 rounds, 02 grenades & 22 rounds, 32 rounds, 19 rounds and 25 rounds respectively from their AK-47 rifles.

For display of exceptional and conspicuous bravery, raw courage, utmost dedication and commitment to duty in the face of grave and continuous threat to their personal lives, Shri Pravat Kumar Behera, Assistant Commandant (IRLA-9590) of 40 Bn CRPF, Force No: 005030245 Head Constable G Vijaya Kumar of 24 Bn CRPF and Force No: 125075344 Constable Shaukat Ahmad Rather of 163 Bn CRPF of Range QAT CRPF Anantnag and No: 055070997 Constable Nasir Ahmad and No: 135252763 Constable Narsapure Rakesh Prabhakar of 18 Bn CRPF are strongly recommended for award of Police Medal for Gallantry (PMG).

In this operation S/Shri Pravat Kumar Behera, AC, G Vijaya Kumar, HC, Shoukat Ahmad Rather, CT, Nasser Ahmed, CT and Narsapure Rakesh Prabhakar, CT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 15/09/2018.

(No. 11020/80/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 125-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry (Posthumously) to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force (CRPF):—

S/Shri

1	Devendar Mohan Sharma	DC	PMG
2	Late Mahesh Kumar Meena	CT (Posthu)	PMG (POSTHUMOUSLY)

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 22nd Sep' 2018, late evening, on receipt of a credible input about the terrorists of Jaish-e-Mohammad (JeM) holding a meeting in Tantre Mohalla, Village-Aripal u/PS Tral in Pulwama District of J&K to execute fidayeen attack on

security forces camps in Tral, a joint Cordon and search Operation (CASO) was planned and launched on 23rd in the wee hours at about 0400 hrs by 180 Bn, CRPF, 42 Rashtriya Rifles (RR) and Special Operations Group (SOG) of JKP, Tral.

Tral sub-division of district Pulwama in South Kashmir has traditionally been a stronghold of various terrorist outfits with foreign terrorists of JeM tanzeem virtually establishing their hideout in the mountainous region of North Tral. The thick forest and difficult terrain provides a safe and natural shelter for the terrorists. Village Aripal, under PS Tral is located to the north of Sub-Division Tral on Tral-Satura road approximately 18 kms from Tral and 01 km from the camp of A coy of 180 Bn CRPF. Aripal village is a large village divided into several mohallas. To the east of village Aripal lies the Zarilwain mountain and to the west lies the Wantiwan mountain ranges covered with dense pine forests and on the southern side of the village flows the Aripal nallah. The village is situated at a height of 5,940 feet from mean sea level.

Acting on the input Tante Mohalla of village Aripal was cordoned off by D/42 RR, A/180 and SOG Aripal by 0530 hrs. When the cordon was completed a team of QAT/180 under command Shri Devendar Mohan Sharma Dy. Comdt, F/180 under command Insp/GD H.M. Mehato and 01 Platoon of HQ/180 with Shri Rajesh Kumar, Comdt-180 along with SDPO Tral reached the village Aripal at about 0600 hrs. At about 0615 hrs, the search teams of CRPF, RR and civil police were formed to search the houses and interrogate the inmates of Tante Mohalla. As the search party led by Shri Devendar Mohan Sharma, Dy Comdt along with his buddy No. 075005505 Constable Mahesh Kumar Meena approached the house of Fayaz Ahmad Dar and questioned him, he appeared nervous and scared. He was also hesitant to enter his own house and during interrogation revealed that late on the previous night an armed Pakistani terrorist had barged into his house and was still present in his house. On confirmation of the presence of armed terrorist in that particular house, the cordon around the house was further strengthened by QAT-180 with Shri Devendar Mohan Sharma and a team of 42 RR and SDPO Tral and his party. At about 0800 hrs an announcement was made for the terrorist to come out of the house and surrender before the forces. However it met with no response. At about 0820 hrs few Tear Smoke Shells were fired inside the house to induce the terrorist to come out of the house but the terrorist responded with a small burst of fire which was duly retaliated by Shri Devendar Mohan Sharma and his buddy in close cordon. At about 0845 hrs few MGL rounds were fired inside the target house. Thereafter there was no fire from the adversary. Since there was no response, taking cover of tactical bullet proof shield 02 army jawans moved towards the entrance corridor of the house to locate the terrorist. As the duo reached near the staircase, a grenade was lobbed by the terrorist who had taken position behind the stairs compelling the jawans to withdraw. At about 0915 hrs 02 UBGL rounds were fired by Devendar Mohan Sharma inside the house, but by then the terrorist had changed his position and he fired on the troops from the windows by changing position continuously. The terrorist was also lobbing grenades towards the troops who had positioned themselves behind the compound wall in a bid to approach the house.

Thereafter Devendar Mohan Sharma exhibiting initiative and seizing the lead along with his buddy moved closer to the target house and fired 02 UBGL rounds from different directions inside the house. After the UBGL fire, once again there was no fire from the adversary and neither any movement was observed within the house. It was now assumed that the terrorist had been killed in UBGL fire. At about 1030 hrs after waiting for some time a joint team was sent to the window to locate the body of the terrorist. Barely had the jawan peeped in through the window, that, the terrorist fired a burst almost injuring the trooper. At about 1100 hrs the plan was reviewed by Shri Rajesh Kumar, Comdt-180, CO-42 RR and SSP Awantipora and it was decided to use flame thrower available with QAT/180 Bn and 42 RR from two different sides simultaneously, so that the terrorist did not change the position inside the house. At about 1200 hrs, when the team of 42 RR was spraying the fuel inside the house, the terrorist lobbed two grenades through the window behind compound wall of neighborhood house which incidentally did not inflict any damage. At about 1215 hrs, he was noticed with AK-47 shifting his position swiftly to another room and this was the only time that the heavily armed terrorist was observed moving in the well fortified house. At this juncture, Devendar Mohan Sharma leading from the front displaying extraordinary courage and raw valour along with his buddy Mahesh Kumar Meena decided to move forward near a huge walnut tree from where he could target the terrorist. The terrorist, meanwhile observing their movement fired at the duo. The bullets just missed its target as the duo immediately ducked. However, not to be cowed down and with utter disregard to their personal safety they again moved ahead and succeeded in locating the terrorist inside the room from where he had fired at them. Without giving an opportunity to the adversary, Devendar Mohan Sharma and his buddy Constable Mahesh Kumar Meena acted swiftly and put effective targeted fire and neutralized the heavily armed terrorist. Subsequent search of the house led to the recovery of the dead body of the slain terrorist along with 01 AK Rifle, 02 Magazines and 30 rounds of matching ammunition. The killed terrorist was identified as Adnan r/o Pakistan (Category-A) a highly trained JeM commander.

However, on 5th January, 2019 No. 075005505 Constable Mahesh Kumar Meena was severely injured while gallantly fighting with armed terrorists in an encounter at Tante Mohalla, Village Aripal, PS Tral and attained martyrdom on 14th January 2019 while undergoing treatment.

In the operation, Shri. Devendar Mohan Sharma, Dy. Comdt displayed exceptional qualities of a leader, great professional acumen and tactical skills, subjecting himself to the highest risk in trying to hunt down the terrorist. Late Constable Mahesh Kumar Meena displayed audacious courage, strong determination and a steely resolve, unmindful of his own safety while executing the task despite being pitted against a highly trained and determined terrorist.

In recognition of their conspicuous act of gallantry, indomitable courage, firm resolve and unflinching commitment to duties in the face of grave adversity, in keeping with the highest traditions of the Force.

In this operation S/Shri Devendar Mohan Sharma, DC and Late Mahesh Kumar Meena, CT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 23/09/2018.

(No. 11020/81/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No.126-Pres/2020 —The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry (Posthumously) to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force (CRPF):—

Late Shri Nirmal Ghosh	CT(Posthu)	PMG(Posthumously)
------------------------	------------	-------------------

Statement of service for which the decoration has been awarded

An intelligence input was received from a reliable source about the movement of a group of 10-12 Armed Maoists in the Hilly/ forest area of village Barubeda, U/ Ps- Galudih/Boram, and Distt: East Singhbhum (Jharkhand). Accordingly, an operation was planned to verify the input and nab the Maoists. One young platoon from each Coys C, E & G/193 Bn, and Jharkhand Police SAT with F/169 Bn launched an area domination cum search operation in the area of Sukalara, Dalapani, Jhantipahari, Kudlung, Baniagorotola, Barubeda Hilly Area of Distt: East Singhbhum.

On 11/07/2018 at about 0905 hours when the team of G/193 Bn U/C Sachin Kumar, AC was searching the area, suddenly, a volley of fire came upon them. Maoists have ambushed the troops. Immediately, troops took the position and started retaliating the Maoists firing. Exchange of fire took place for almost 02-03 minutes. The heavy retaliation from the troops forced Maoists for the retreat. Meanwhile, on the nearby axis, as per the Ops plan Young platoon of C/193 Bn U/C Hilarious Barla, AC, along with C/ Police was tactically searching the area when they heard the gunfight. They got alert and continued with their task. At about 0915 hours While the troops of C/193 were advancing in Dalapani Hilly/ forest area, Maoists opened indiscriminate firing upon them. Troops immediately took the position.

Maoists were firing from their hidden positions, making difficult for the troops to locate them. The constraint was barring the troops in launching an effective counterattack against the Maoists. Time was slipping out from the troops as they were caught in the killing zone of the Maoists. The only chance of survival was to locate the enemy and counter attack them. The chances of survival of the troops were infirm when a ray of hope flared up as CT/ GD_Nirmal Ghosh could locate the exact place from where the Maoists were firing. Other men were not able to do so, due to heavy firing from Maoists and thick foliage, Constable Nirmal Ghosh was carrying 51 MM Mortar; a high trajectory weapon that needs open space for effective firing. It was thick vegetation around and Maoists were at a close distance which prevented him from firing from his Mortar. Meanwhile, other troops were struggling against the Maoists as they could not locate their positions. At this juncture, Constable Nirmal Ghosh took a bold move as he decided to leave his cover and go to their fellow troops to indicate the positions of Maoists, enabling them to launch an effective counter attack before the Maoists run over through their defense.

It was a fatal move as the bullets were flying around and Maoists were watching every activity of troops. Yet, defying all the odds, Constable Nirmal Ghosh went to his nearby soldiers indicating the Maoists firing position. He hopped from one soldier to others, shouting and motivating them to eliminate the Maoists. Since verbal indications on Maoists position was not proving very effective for his fellow soldiers, he took the UBGL of Constable Anshuman Kumar and fired a grenade at the enemy. This act of Constable Nirmal Ghosh enthused the men to pinpoint the enemy's firing place and bring effective fire on them. But, as afraid, the Maoists noticed the open movement of Constable Nirmal Ghosh. They directed their firepower towards him, and a bullet hit the daredevil that proved fatal. He succumbed to his injuries and attained martyrdom, but, not before making a favorable ground for his fellow troops. He made supreme sacrifice at the altar of duty while serving the motherland and protecting his brothers in arm. The sacrifice of Constable Nirmal Ghosh made the way for launching an effective counterattack against the Maoists. The audacious counter-attack from the troops forced the Maoists to run on their toes.

Troops who were trapped in the killing zone could survive and fight back only because of the valor and gallant action of Constable Nirmal Ghosh. Had he not shown the troops, the firing position of Maoists, it would have been impossible to launch the counter-attack/break the ambush.

In this operation Late Shri Nirmal Ghosh, CT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 11/07/2018.

(No.11020/82/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 127-Pres/2020 —The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force (CRPF):—

S/Shri

1	Manish Kumar	AC	PMG
2	Rajinder Kumar	HC	PMG
3	Kakade Nishant Arun	CT	PMG
4	Ajay Kindo	CT	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 26th October, 2018 at about 0330 hrs, on receipt of a credible input about the presence of heavily armed terrorists in VillagePazalpora,PP-Watergam,u/PS-Dangiacha, PD-Sopore, and Distt. Baramulla (J&K), Quick Action Team (QAT) of 92 Bn u/c Sh. J.P Singh, Second-in-Command of 92 Bn reached village Pazalpora and joined the troops of 22 Rashtriya Rifles (RR) and Special Operations Group (SOG), Sopore. Meanwhile, troops of 177 Bn, 179 Bn & Range QAT Baramulla also reached the said village. Thereafter, a joint operation was planned by Commandant 92, 177, 179Bns of CRPF. CO-22 RR and SSP, Sopore and accordingly inner cordon was placed by troops of 92 Bn on the northwest side, 177 Bn on the south-western side, 22 RR in the northeast & SOG, Sopore on the southeast side. Outer cordon was placed by troops of 179 Bn and remaining troops of 22 RR & SOG, Sopore. Range QAT Baramulla was kept reserve for room intervention/ search in case the situation arose. While the initial cordon was being placed, the terrorists sensed the presence of troops and fired indiscriminately targeting joint troops which was effectively retaliated by the troops. However, in the initial onslaught, 01 jawan of 22 RR received bullet injuries who was immediately evacuated to the hospital, but he succumbed to his injuries. In the meantime, DIG (Ops) NKOR Baramulla also reached the encounter site and supervised the operation. After the initial setback cordon was further tightened and cut-offs were placed on the likely escape routes. Intermittent fire continued for some time, though thereafter a lull descended. The cordon was kept in place till first light, when it was decided to evacuate trapped civilians and search the target house & nearby houses. As the search/rescue operation was highly risky, Range QAT Baramulla under command young officer Shri Manish Kumar, Asst. Comdt was detailed to carry out room intervention and search along with QATs of 22 RR & SOG, Sopore. Joint search parties exercising due caution evacuated all the trapped civilians safely. Thereafter, announcement was made on the public address system asking the terrorists to surrender, but it met with no response. Therefore search of target house, adjacent houses and nearby orchards/vegetated area was planned to locate the terrorists. When the search operation was on, as the search parties moved towards one suspect house, the terrorists opened indiscriminate fire on the search parties. Manish Kumar who was leading the search party along with his buddy No.135250127 Constable Kakde Nishant Arun were alert to the eventuality and tactically assuming position retaliated the fire. However, taking advantage of the undulated ground and natural cover, the terrorists moved out of the house and took position in the vegetated area available outside. Since the position of the terrorists was obvious, exchange of fire ensued. Manish Kumar and his buddy Kakde Nishant Arun displaying exemplary courage a steely resolve, tactically and stealthily advanced towards the terrorists. However, one of them breaking free advanced tactically towards the cordon placed by QAT-92 Bn and QAT-177 in an attempt to break the cordon while the other terrorists provided covering fire. The alert cordon parties noticed the approaching terrorist and opened fire compelling the terrorist to beat a hasty retreat. The terrorist was now trapped between the search party led by Manish Kumar and his buddy Kakde Nishant Arun and troops of 92 and 177 Bns in the inner cordon. The terrorist had carefully taken cover of undulating ground thereby effectively avoiding the SFs fire. The moves of the terrorist was being closely observed by No. 005071609 Head Constable Rajinder Kumar of 92 Bn and No. 065176245 Constable Ajay Kindo of QAT 177 Bn, who were the last men in their parties and accordingly informed their respective commanders. They found themselves in a position to launch and neutralize the terrorist. Having got the nod from their Commanders both Rajinder Kumar and Ajay Kindo left their designated positions and tactically advanced towards the position of the terrorist stealthily. As they inched very close to the terrorist's position, he was alerted and opened fire which both Head Constable Rajinder Kumar and Constable Ajay Kindo managed to evade, at the same time they knew that they were at striking distance from the terrorist. It was now or never. Knowing very well the hazard of taking on an armed terrorist, the duo decided to take the gamble. Both of them moved into directions so as to flank the terrorist from two sides so as to confuse him and take him by surprise. The moment the fire from the adversary died down the duo came out of the cover and fired at the terrorist grievously injuring him. In desperation firing indiscriminately, he tried to crawl back where Manish Kumar and his buddy Kakde Nishant Arun were already in position. After a brief see-saw battle in which heavy fire was exchanged, the quartet managed to eliminate the terrorist. The second terrorist was engaged and neutralized by the troops of 22 RR and SOG, Sopore. During the subsequent search of the area, dead bodies of two slain terrorists were recovered. They were identified as Usama and Zahid, both of Pak origin having allegiance to Lahkar-e-Tayiba (LeT) terrorist outfit. Recoveries included two AK-47 rifles, 07 magazines, 161 rds of ammunition, two hand grenades, knife, wire cutter, mobile phones and many other incriminating material.

The operation was highly risky as the SFs were up against well armed and highly trained terrorists capable of wreaking havoc. However, Shri Manish Kumar, Asst. Comdt, displayed exemplary leadership qualities and great professional and tactical acumen in leading his men courageously against a well trained adversary. Constable Kakde Nishant Arun, Head

Constable Rajinder Kumar and Constable Ajay Kindo displayed extraordinary bravery, raw valour, great tactical skills and unflinching commitment to duties while engaging and neutralizing the terrorist.

Therefore in recognition of the their extraordinary bravery, conspicuous act of gallantry, unflinching devotion to duties in the face of grave adversity in keeping with the highest traditions of the Force, I hereby recommend Sh. Manish Kumar, Assistant Commandant (IRLA – 9032) of 3 Bn, No.135250127 Constable Kakde Nishant Arun of 176 Bn CRPF, No. 005071609 Head Constable Rajinder Kumar of 92 Bn & No 065176245 Constable Ajay Kindo of 177 Bn, CRPF for the award of Police Medal for Gallantry (PMG).

In this operation S/Shri Manish Kumar, AC, Rajinder Kumar, HC, Kakade Nishant Arun, CT and Ajay Kindo, CT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 26/10/2018.

(No. 11020/83/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 128-Pres/2020 —The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/1st Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force (CRPF):—

S/Shri

1	Kumar Mayank	2-IC	PMG
2	Rajbardhan	AC	1 st BAR TO PMG
3	Jadav Chandra Borah	ASI	PMG
4	Mohd.Hussain	CT	PMG
5	Ravindra Singh Tomar	CT	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 30 April 2018, on receipt of a credible input at around 0900 hrs from the Civil Police about the presence of 2-3 terrorists including the dreaded local terrorist Samir Tiger of Hizbul Mujahidin (HM) in the area of village - Drabgam u/PS- Rajpora, District-Pulwama in Jammu and Kashmir (J&K), a joint Cordon and Search operation (CASO) was planned by SSP Pulwama, Second-in-Command of 182 Bn CRPF and Commanding Officer (CO) of 44 Rashtriya Rifles (RR). Samir Tiger had joined HM in 2016 and was largely involved in recruitment, training and initiating local boys to terrorism. He was also instrumental in planning attacks on security forces and was involved in eleven such cases in Pulwama district. The security forces were in constant hunt for him. It was just the previous day that he had challenged an officer of the SFs in a video clip threatening him of dire consequences. Drabgam is a large densely populated village with a number of lanes and by-lanes and houses closely built. Pulwama in general and Drabgam in particular has always been hostile towards the security forces which was an even greater challenge. Drabgam is surrounded by forests and apple orchards all around, thereby providing appropriate cover and escape routes to the terrorists.

On arrival in Drabgam, the security forces had to initially tackle the large mob that had gathered to disrupt the operation which had been the tradition off late. Shri Kumar Mayank, Second -in-Command, 182 Bn, directed the law and order components to swiftly deal with the aggressive mob and simultaneously a close cordon was laid around 08-10 suspected houses. The suspect house was a double storied concrete structure surrounded by an almost 6 ft high tin sheet fence and an iron gate. When the troops were laying the cordon, the terrorists opened fire from the double storied building confirming their presence Major Rohit Shukla of 44 RR and his buddy were victims of this unexpected onslaught and were injured. Both of them were immediately evacuated from the site and further dispatched to the hospital. Since the presence of the terrorists were confirmed, the cordon was squeezed further by Kumar Mayank, who was the senior most officer present on the spot. Troops of 44 RR took positions behind the target house on the north, troops of 182 & 183 Bn were deployed on the east and west of the target house. One Bullet proof bunker was placed at the main gate blocking any kind of passage if the terrorists made an attempt to escape and more bunkers were placed to block other escape routes as well. In order to avoid civilian casualties, the civilians within the cordoned off area were evacuated to safer confines. The terrorists tried to obstruct the evacuation process and fired at the BP gypsy of Kumar Mayank being used to evacuate the civilians. However, no harm was caused to anyone. Thereafter, announcements were made on the public address system asking the terrorists to surrender but it had no impact and firing continued from the target house. The forces also retaliated the fire. Shri. Rajbardhan, Asst Comdt of 183 Bn, CRPF alongwith No. 880977743 Assistant Sub Inspector J.C. Borah and No. 075340365 Constable Mohd.

Hussain had taken position on the first floor of a school building facing the target house which provided them with a clear view. Meanwhile, it was decided by all available commanders unanimously that Kumar Mayank, 2-I/C alongwith his buddy No. 075222229 Constable R. S. Tomar and some elements of 44 RR would try to enter the target house from the rear side by crossing 10 fit wide Nala.

Accordingly, the party proceeded to the rear from the west of the suspect house. After removing the tin sheets erected as a fence when they entered the premises another volley of fire a grenade greeted them injuring one jawan of the RR on his left hand forcing them to retreat as the injured jawan had to be evacuated to safety. Amidst volley of bullets and lobbing of grenades, Kumar Mayank and his team evacuated him to safety. Since the target house was not being impacted by any kind of fire, troops of RR proceeded to plant IEDs. Covering fire was provided by the team of Rajbardhan from the front and by Kumar Mayank and his team as by now they had occupied the upper portion of a residential house on the Eastern side. Heavy fire with various weapons including UBGL was put on the target house setting the target house ablaze. However, that did not dampen the spirits of the terrorists specially Samir Tiger who was a veteran and had made good many an escapes from the encounter site. However, the resultant heat and the constant bombardment was increasingly becoming perilous to withstand. The compound of the house had apple trees and piles of logs scattered all around. Taking whatever natural cover was available, two terrorists ran out of the house firing indiscriminately and frantically advanced towards a structure embedded with the fence housing a small shop. Kumar Mayank, his buddy Constable R. S. Tomar and the party could observe their movements and took targeted shots at the fleeing terrorists. It hit one of the terrorist but somehow with the assistance of his colleague both of them managed to reach the upper portion of the shop and took position from where they could also have a view of the security forces. Meanwhile, Rajbardhan and his team consisting of J.C. Borah and Mohd. Hussain who were placed bang opposite the target house at a dominating spot could observe the advancing terrorists. The moment both of them approached the upper portion of the shop Rajbardhan and his team let out a burst of bullets severely debilitating the terrorists further. Despite sustaining injuries, they continued to fire and also lobbed grenades from very close range. However, emerging out of the initial shock of the grenade blasts, Kumar Mayank, Rajbardhan, J.C. Borah, R.S. Tomar and Mohd. Hussain fired intensely at the terrorists. When there was no firing from the adversary for a prolonged period of time, a joint search party comprising of 182 & 183 Bns of CRPF, 44 RR and Civil Police carried out the search of the partially demolished house, the shop as well as the adjacent premises, resulting in the recovery of dead bodies of two slain terrorists. They also recovered two rifles one AK-56 and one AK-47, magazines, 77 rds of 7.62 ammunition, one Chinese grenade and other incriminating material. The slain terrorists were identified as Samir Ahmad Bhat @ Tiger @ Faisal category A++ of HM outfit, r/o Village Drubgam, PS Rajpora, District Pulwama and Mohd. Aqib Khan, r/o Rajpora, P.S- Rajpora, District Pulwama.

In this operation S/Shri Kumar Mayank, 2-IC, Rajbardhan, AC, Jadav Chandra Borah, ASI, Mohd. Hussain, CT and Ravindra Singh Tomar, CT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 30/04/2018.

(11020/85/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 129-Pres/2020 —The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/1st Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force (CRPF):—

S/Shri

1	Rakesh Rao	Comdt.	1 st BAR TO PMG
2	Jitender Sahu	DC	PMG
3	Shofiqul Islam	CT	PMG
4	Banbari Lal	AC	PMG
5	Akhilesh Pandey	HC	PMG
6	Kamlesh Singh	CT	PMG
7	Deep Chand Singh	CT	PMG
8	Lekh Raj	CT	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

In the aftermath of two tragic incidents on 11 March 2017 and 24 April 2017, in which 37 CRPF jawans were martyred, a special joint operation (CRPF & DRG/STF Chhattisgarh Police) named “Ops Prahar” was launched from

23/06/17 to 25/06/17 to curb the offensive of Maoists in the area. Troops of 201 CoBRA were given the area of village Tondamarka of Sukma district; alleged PLGA Battalion HQ. The area is at around 20 km aerial distance from any of the SF camp. DRG/STF was given separate target area of village Badekedwal; around 4 km from Tondamarka.

As per the plan, four parties of 201 CoBRA under overall command of Shri Rakesh Rao, Commandant, left for the target area at 0400 hrs on 23 June, 2017. Troops searched their target areas whole day and busted one Maoist camp. The Maoists managed to escape from the camp. In the evening, they took a halt (LUP) near the target area. Maoists used this opportunity/time for re-grouping/planning to hit back.

On 24th June 2017 troops left their LUP and continued the search of the area. At around 0830hrs Maoists in large number encircled the troops and started heavy firing upon them. Troops took their positions and started retaliating the Maoist's offensive. At around 1020 hrs SP Sukma informed that some of DRG/STF troops have been hit in the encounter with the Maoists and need to be evacuated/airlifted immediately but they are under Maoist's seize. Helicopter has been indented to evacuate the injured, subject to secure landing conditions. An urgent re-enforcement was required for evacuation of the injured troops as well as to save the lives of others. Maoists have surrounded the DRG/STF troops. The heavy firing from the Maoists have forced the troops for the shelter leaving meagre scopes to retaliate.

At this call, the party commander of 201 CoBRA directed SAT (Special Action Team) along with two teams to approach the given area and re-enforce the DRG/STF troops. Sensing the gravity of the situation Commandant 201 CoBRA decided to lead the SAT. Shri Jitender Sahu, DC and Shri Banbari Lal, AC, were leading the other two teams. CoBRA troops approached the target GR in parallel formation. Team of Shri Banbari Lal, AC, covered the left flank and Team of Shri Jitender Sahu, DC, covered right flank. Front was covered by SAT. When the CoBRA party was about 200 yards short of marked place for Helicopter, it reached over the area and started hovering over the given GR near village Tondamarka. On the other hand, Maoists were continuously firing on the troops.

On noticing the re-enforcement party close to them, Maoists started heavy firing upon the left flank and front portion with SAT. Undeterred to the fatal threats, Sh Banbari Lal, AC held the ground and retaliated the Maoists offensive with full might. Leading from the front, he kept on advancing towards the injured troops. The audacious counter attack forced the Maoists to run for their lives. Maoists took a back for a while. Using the opportunity Sh Banbari Lal, AC with his team reached to injured troops. Meanwhile Maoists again regrouped themselves and started heavy firing upon the CoBRA teams. Maoists were firing from well-defended positions leaving lesser scopes for effective counter attack from the SFs. Helicopter was still hovering and waiting for the favorable moment for landing on the ground at this moment.

Constable Kamlesh Singh, Constable Deep Chand and Constable Shofiquil Islam of SAT, on getting indication from their commander suddenly came out of their covers and opened a barrage of bullets on the Maoists. This unexpected counter attack awestricken the Maoists as their fire subsided for a while. Using this moment, Shri Jitender Sahu, DC with his Team also reached close to the DRG/STF troops and established contact with them.

The heavy firing from both sides was preventing the landing of helicopter. Helicopter was still hovering above the marked GR as pilot could not get any indication from the DRG/STF to land. It was the time when Shri Jitender Sahu, DC took the initiative. He directed the troops to fire in heavy bunches upon the Maoists. The ploy worked. Due to the heavy fire from the troops, Maoist's firing subsided. Amid the raining bullets Shri Jitender Sahu came forward in the open, waiving his hand, giving indication to Helicopter to land. He did not bother about his own life to save the lives of injured personnel. Under the cover fire of the CoBRA teams, injured were taken to helicopter and were evacuated from the site. The gravity of the situation may be adjudged from the fact that the Helicopter got 03 bullet hits and had to undertake emergency landing at Sukma.

After evacuating the injured personnel, troops focused on countering the Maoists attack. The concentrated counter attack from the troops forced the Maoists for another retreat. Troops continued the search and moved towards their assigned areas. Maoists in small groups were following the troops from distance and waiting for the opportunity to hit them again. While DRG/STF troops were moving through the Durma village, Maoist again surrounded them and started heavy firing upon them. Again, CoBRA troops were requested for the re-enforcement. Rising to the call, two CoBRA teams reached the area and augmented the counter attack against the Maoists. Maoists again retreated from the site but this time with different plans.

After rescuing DRG troops second time near Durma village when two CoBRA teams were moving ahead, Maoists tried to encircle them. However, they were taken by surprise by the tactical acumen of Commandant 201 CoBRA. Team commander had already positioned unit SAT and two teams in that direction anticipating the tactics of Maoists. Before the Maoists could encircle the rescuing CoBRA Teams, they were intercepted by SAT and two other teams of CoBRA. A fierce gunfight ensued between the CoBRA troops and the Maoists. Displaying exceptional courage and gallant action Shri Rakesh Rao led the counter attack. Under the inspiring leadership of their commander, Shri Jitender Sahu, DC, Shri Banbari Lal, AC, Head Constable Akhilesh Pandey, Constable Kamlesh Singh, Constable Deep Chand, Constable Shofiquil Islam and Constable Lekh Raj Sharma fought from the front and inflicted heavy damages on Maoists.

Maoists tried to flee away from the encounter site by taking their dead and weapons along. Amid the heavy cover fire, Maoists were dragging the dead bodies of their fallen cadres. Head Constable Akhilesh Pandey and Constable Lekh Raj

Sharma noticed a dead body of Maoists being dragged by their fellow cadres. The duo adopting fire and move tactics approached the dead Maoists but could not recover his body, but, the weapon (SLR). Meanwhile Constable Kamlesh Singh, Constable Deep Chand and Constable Shofiquil Islam adopting fire and move tactics could recover dead body of One Maoist. Dead body of Maoist was later on identified as UikaLakku @ Mahesh Kawasi, Section Comdr of PLGA Bn No.1. The audacious counter attack devastated the core strength of the Maoists and forced them to run for their lives. It was a day long battle with the defamed PLGA Bn No.1 of Maoists. This Maoist unit had been involved in many tragic incidents against the SFs and considered to be the strongest among their formation. After thrashing the elite unit of Maoists in their own citadel, troops reached Burkapal camp next day i.e on 25/06/2017 at around 0700 hrs.

In this operation S/Shri Rakesh Rao, Comdt., Jitender Sahu, DC, Shofiquil Islam, CT, Banbari Lal, AC, Akhilesh Pandey, HC, Kamlesh Singh, CT, Deep Chand Singh, CT and Lekh Raj Sharma, CT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 24/06/2017.

(No. 11020/92/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 130-Pres/2020 —The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/2nd Bar to Police Medal for Gallantry/5th Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force (CRPF):—

S/Shri

1	Naresh Kumar	AC	5 th BAR TO PMG
2	Ravi Sharma	AC	2 nd BAR TO PMG
3	Vijay Prakash Yadav	CT	PMG
4	Anish Kumar Singh	CT	PMG
5	Younis Ahmad Dar	CT	PMG
6	Devendra Kumar	CT	PMG
7	Mahipal Singh	HC	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 04th May 2018, an actionable intelligence was received regarding the presence of terrorists in Gasi Mohalla, Chattabal, Srinagar, J&K. To nab the ultras, a joint team of Valley QAT and SOG, Srinagar led by Sh. Naresh Kumar, AC, Sh. L. Ibomcha Singh, AC, and Sh. Ravi Sharma, AC left for the target area. Taking due cautions and moving tactically troops laid a strong cordon around the suspected houses. After that, a cluster of 15-20 suspected multi-storied houses was identified for search. These clusters of houses were very closely located and connected.

As the party was tactically moving within the inner cordon, they noticed the suspicious movement. Acting swiftly Sh. L. Ibomcha Singh moved in that direction to chase the suspect when a volley was fired upon him from one of the suspected houses. Sh. L. Ibomcha Singh was hit by the bullet on his right foot. He was immediately evacuated from the site by the fellow troops. Meanwhile, announcements were made over the public address system asking the terrorists to lay down their arms but went in vain.

Seeing no response from the terrorists, troops started searching the houses one by one. One terrorist was hiding in a double storied structure and had safely ensconced on the first floor and therefore could keep a bird's eye on the activities outside. As the search team reached close to the target house they were fired upon heavily. Taking appropriate cover search party retaliated the attack. A heavy encounter ensued between the troops and the terrorist. Finding him cornered and unable to sustain the onslaught of troops, the terrorist, in a bid to escape from the site stormed out of the house firing heavily upon the troops. Sh. Naresh Kumar sensed the plan of the terrorist. He, with his buddy constable Vijay Prakash Yadav, intercepted the terrorist and fired upon him to prevent his escape. Meanwhile, Sh. Ravi Sharma and constable Anish Kumar Singh also reached close to the terrorist and augmented the counter-attack. Before the terrorist could plan any further move the above four brave hearts dashed forward in the line of fire and in a fierce exchange of fire killed the first terrorist.

The killed terrorist was identified as "LeT" commander, Shawkat Ahmad Tak. The battle was not over yet as there were two other terrorists holed up in the house and were firing on the troops.

Heavy exchange of fire continued between the terrorists and the troops. Any attempt to move closer to the target house was fiercely resisted by the terrorists with a very heavy volume of fire. At about 0800 hrs, MGL fire was employed by the commanders, however, the same could not make any significant impact as the terrorists were well entrenched. It was then decided to use CGRL to make an opening in the target house. It was a very risky move as the troops were close and to fire from the CGRL, one has to come out from the covers. At this juncture, rising to the call of duty, RL commander Head Constable Mahipal Singh accepted the challenge. Exhibiting great tactical skill and professional acumen, he fired HEAT and HE rounds on the target house. While providing cover fire to the CGRL team from adjacent house, Constable Younis Ahmad Dar and Devendra Kumar got severe splinter injuries but didn't budge from their location and displaying indomitable resolve, nerves of steel and unflinching commitment held their positions.

Due to multiple openings made by the precise firing of CGRL, movements of terrorists were now clearly visible in the building. As the law & order situation at the encounter site was aggravating and became highly volatile, at around 1130 Hrs it was decided by the commanders to conduct room intervention to flush out the terrorists from the target. Subsequently, a small team was formed for the purpose. Taking the terrorists on surprise, the team entered the target house from the adjacent building using ladders to bridging the gap between the two buildings. As per the plan, the team led by Sh Naresh Kumar and Sh Ravi Sharma with constable Vijay Prakesh Yadav and constable Anish Kumar Singh started clearing the room taking due caution. While moving ahead, troops sensed the presence of terrorists near the stairs. Adopting fire and move tactics they lobbed hand grenades towards the stairs. Finding the troops close to them, terrorists retaliated the attack with a return grenade attack followed by a heavy volume of firing. Undaunted to the fatal threats, troops held their nerves and retaliated the attack with full might. In the close combat, displaying raw courage, troops dashed forward and took the terrorists in the head-on battle. The audacious counter-attack resulted in the killing of the remaining two terrorists namely Fayaz Hamal and Abu Hamza (FT).

The achievement of the joint forces in neutralizing the 03 dreaded terrorists of "LeT" could be attributed to the tremendous grit, determination, exemplary valor and never say die spirit of the CRPF.

In this operation S/Shri Naresh Kumar, AC, Ravi Sharma, AC, Vijay Prakash Yadav, CT, Anish Kumar Singh, CT, Younis Ahmad Dar, CT, Devendra Kumar, CT and Mahipal Singh, HC displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 05/05/2018.

(No. 11020/188/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 131-Pres/2020—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry(Posthumously) to the under mentioned officer of Railway Police Force (RPF):—

Late Shri Jagbir Singh Rana	CT	PMG(Posthumously)
-----------------------------	----	-------------------

Statement of service for which the decoration has been awarded

Shri Jagbir Singh Rana, Constable S/o Sh. Chander Singh Rana was posted on at RPF Post, Adarsh Nagar. During his deployment at this post, he performed his duties with full dedication and integrity.

On 21.04.2019, Constable Jagbir Singh Rana was deployed at Signal No. 07 in the shift of 20.00 hrs to 08.00 hrs. As per independent witness Sh. Rajender, on 21.04.2019 around 21.30 hrs. three children were sitting on the Railway track between Adarsh Nagar and Delhi Azadpur Station (Annexue-A). A train on the same track from Delhi side was approaching towards the children. Constable Jagbir Singh Rana anticipated the life threat to those children and tried to alert the children but children couldn't hear the alert and continued moving to cross the track. In exemplary display of bravery, he immediately rushed towards the children without caring for his life. In an attempt to save the lives of the children he got fatally hit by the speedily approaching Kalka Shatabdi Express (Train No. 12012). The statement of Loco Pilot of 12012 Kalka Shatabdi Sh. Anil Kumar also substantiates the exemplary display of courage and devotion to duty by Constable Jagbir Singh Rana wherein for saving the precious life of 03 children, he himself got fatally hit by 12012 Kalka Shatabdi and made supreme sacrifice.

Thus, by not caring for his life, he displayed exemplary bravery as a member of the Force, which shows his devotion and dedication to duty and excellence as a member of the Force.

The brave act of Constable Jagbir Singh Rana in line of duty was extensively covered by print & electronic media and social networking sites. By doing supreme sacrifice, he has kept and displayed the highest traditions of the Force and has set an exquisite example for others to follow.

After his last breath, eyes of Constable Jagbir Singh Rana were donated to eye-bank with consent of his family.

In this operation Late Shri Jagbir Singh Rana, CT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 21/04/2019.

(No. 11020/205/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No.132-Pres/2020 —The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Shashatra Seema Bal (SSB):—

S/Shri

1	Narpat Singh	AC	PMG
2	Pradeep Kumar	HC	PMG
3	Bheem Singh	HC	PMG
4	Ganesh Singh Rana	CT	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 27.07.2018 an information was received about the presence of hard core Maoists of BJSAC including Vijay da @ Nand Lal Manjhi, Balbeer Mahato @ Roshan Da, Tala Da @ Sahadev Rai @ Agni alongwith 10-15 Arms cadre in the forest area of Kachhua Kander under Police Station-Gopikander, District- Dumka (Jharkhand). This area has strategic importance due to bank of Bansloi river and its location near the border area of District Godda and Pakkur. Since long BJSAC is trying to increase its influence in this area. The Kachhua Kander area has dense vegetation with thick under growth. The terrain is undulating, hilly with rough gradient which make the area hostile and challenging for conducting operation there into. However, difficulties could not deter the pathos of the real soldier.

An operation was planned by 35th Battalion, Dumka and State Police Jharkhand to nab the Maoists present in Kachhua Kander forest area. To carry out this denting and challenging task responsibility was assigned to SAT (Small Action Team) of 35th Battalion under Command of Shri Narpat Singh, Asstt. Commandant. The two Coys namely A-Coy Narganj, Police Station - Kathikund, District- Dumka (Jharkhand) and D-Coy Gopikander, Police Station- Gopikander, District- Dumka (Jharkhand) were kept as reserve/re-enforcement. The overall supervision of the operation was under Shri Parikshita Behera, Commandant, 35th Bn. SSB, Dumka (Jharkhand) and SP Dumka.

The SAT led by Shri Narpat Singh, Asstt. Commandant consists of 22 well trained and highly motivated commandos with one District Police personnel.

As per the plan the SAT left Bn. HQ Dumka at 1330 hrs on 27.07.2018 & LUP was taken near Narganj for the night. On 28.07.2018, Shri Narpat Singh AC & Shri Parikshita Behera, Commandant 35th Bn. SSB, Dumka keep on planning & verifying the location of the naxals in that area. On same day at 1400 hrs SAT (Small Action Team) assembled at COB Narganj and moved by Vehicles up to Jungle area of Amdiha village for covering the time and distance so that Naxal can be nabbed before the dark in the rainy season. SAT de-bussed near jungle of Amdiha village which was 4 (four) Kms. from Kachhua Kander and two teams were constituted for action in two flanks. Team-1 under the command of Shri Narpat Singh, Asstt. Commandant moved tactically from left i.e. North-East side towards Kachhua Kander area via a hilly track of Mahuagari forest by avoiding the normal routes and Team-2 moved tactically from Right side i.e. North-West of Kachhua Kander Jungle.

Though it was raining heavily both team continued moment through dense forest and hilly area and Shri Narpat Singh, Asstt. Commandant maintained regular contact with Team-2, Commandant and DC (Ops). Team-1 reached on the top of the hill, named Sarkhipahar. At about 1500 hrs, CT (GD) Ganesh Singh Rana noticed a few Bivouacs made with Plastic sheets at the foot hill of Sarkhipahar which was 01 (one) Km. away from Kachhua Kander village towards East in the deep forest. On further close observation by the help of Binocular, the Team-01 commander saw a group of Approx- 10-15 personnel in the camp who were engaged in training like activities. He also observed that they were in possession of automatic weapons and few were in OG uniform.

The commander briefed Team-1 to proceed tactically towards their camp. Shri Narpat Singh, Asstt. Commandant contacted to Team-2 and shared the information and instructed to advanced tactically in the direction of

Naxal camp. Team-1 started moving towards the Naxal camp tactically and reached at about 1600 hrs. about 50 Mtrs. from the camp. The motive of the Commander was to nab the Naxals but suddenly Team-1 came under a heavy volley of fire. As was expected, Maoist probably had noticed the presence of Security Forces and were prepared to attack them. Maoists, from their well-occupied defense camp area, opened indiscriminate fire upon the troops. Shri Narpat Singh, Asstt. Commandant, Head-Constable (GD) Pradeep Kumar and Head Constable(GD)Bheem Singh immediately retaliated Maoists firing giving the Maoists lesser opportunity to cause any damage to Security Forces (SFs). The rest of the troops also retaliated to the Maoists fire. Shri Narpat Singh, Asstt. Commandant ordered Team-1 to hold the position and retaliate the fire in the control manner. Heavy firing with loud noise from Naxals was continued. Had the Team-1 not retaliated they would have been killed in heavy firing by the Naxals. Shri Narpat Singh, Asstt. Commandant saw few Naxals positioned behind thick trunk of a tree and they were targeting Team-1 from left side. It was realized by Shri Narpat Singh, Asstt. Commandant that if these Naxals are not neutralized they will definitely cause heavy damage to Team-1. At that time Shri Narpat Singh, Asstt. Commandant decided to attack on Naxal by advancing from left side to suppress the Maoists fire. He alongwith HC (GD) Pradeep Kumar (Team-1 2 I/C) crawled in rough terrain and in heavy volley of fire without thinking of themselves and for saving the life of their team members. They crawled from left flank to take position by crossing the broken and undulating land. They reached behind a wooden log and again challenged the Armed Maoists to surrender but Maoists increased the volume of fire, then Shri Narpat Singh, Asstt. Commandant and HC (GD) Pradeep Kumar retaliated to neutralized the Naxals.

Due to this decision, the fire which was coming from thick trunk of tree got stop and Naxals were forced to leave their well tactically settled camp. The exchange of fire was continued for approximate 50-60 minutes.

After the firing had stopped, Shri Narpat Singh, Asstt. Commandant contacted to Team-2 and ordered to both teams to move forward tactically and to start searching of Naxal camp. During search, the team found two dead bodies of Naxals and also recovered 01 SLR, 01 HE Grenade, Magazine-04 and a lot of assorted ammunition. Then both teams re-orged and matter was reported to higher Headquarters.

In this operation S/Shri Narpat Singh, AC, Pradeep Kumar, HC, Bheem Singh, HC and Ganesh Singh Rana, CT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 28/07/2018.

(No. 11020/94/2019-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

No. 133-Pres/2020 —The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/3rd Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force (CRPF):—

S/Shri

1	Ashok Kumar	2-IC	3 rd BAR TO PMG
2	Vipin Kumar	CT	PMG

Statement of service for which the decoration has been awarded

Village Pidiya in Bijapur District of Chhattisgarh has earned a name of infamy not due to any of its inherited factor but for the CPI (Maoists) who chose it to be their west Bastar division headquarters. The only misfortune of this gullible village is that it lies near to the district boundary of Bijapur and Dantewada and is surrounded by thick forest with poor or no line of communication. Reaching to the area is a herculean task for the police forces and state administration and taking the advantage, the CPI(Maoists) run their writ and frequently organize meeting in the villages of the area to engage innocent villagers in furtherance to their nefarious designs.

On 22 June 2017, an intelligence input about the presence of an armed group of CPI(Maoists) under the command of commander Ganesh of West Bastar division was received by Shri Ashok Kumar, Second-In-Command, 204 cobra, who, immediately embarked on a mission to neutralize the armed group. He chalked out a plan in consultation with Superintendent of polices of Bijapur and Dantewada and further discussed the plan with DIG (Ops) Bijapur, CRPF. After minutely analyzing the sparse of the area, vegetation, rivulets, strength of CPI(Maoists), core areas of CPI(Maoists) dominance and other operational requirements, five strikes comprising of mixed elements of security forces were formed to be inducted into the area for the task and each strike was given a separate area for search.

Accordingly, Shri Ashok Kumar, Second-In-Command, 204 Cobra moved from Basaguda base camp with two teams of 204 Cobra and component from DRG and STF on 22 June 2017 at 1610 hours towards the target area. Reaching to

the core area, as said earlier, was not an easy task and the troops had to make two night halts in the jungle, while keeping their movement a surprise. The troops under command Shri Ashok Kumar, Second-In-Command reached close to their target i.e. village Pidiya only on 24 June 2017. And as was expected, moving into the core area without getting noticed was a near impossible thing, the CPI(Maoists) who had got the whiff about the movement of security forces opened heavy fire from a tactically advantageous position at the team of Shri Ashok Kumar, Second-In-Command while it was negotiation a rivulet at around 1040 hours.

That was the moment which a battle hardened trooper cherishes and craves for. An enemy with his gun blazing at the front securely entrenched behind covers, and a challenge to neutralize it. Shri Ashok Kumar, Second-In-Command who had been toiling for two days to make contact with the enemy of the nation, immediately came in action and ordered the troops to retaliate with full intensity and vigour and make a tactical advance. But it seemed that the CPI(Maoists) had no dearth of ammunition on that day. A slight movement from the troops was meted with intense fire putting their lives under risk. One such attempt was him-self made by Shri Ashok Kumar, Second-In-Command with his buddy constable Vipin Kumar, but the moment they moved out of the covers a barrage of bullets flooded their surroundings and they had a narrow escape. Shri Ashok Kumar, Second-In-Command was not the one to let the CPI (Maoists) have the day of which they would boast for long for taming the security forces.

He immediately planned and made a second move wherein he send two teams, one each to the either flanks of Maoists, while him-self lying low at the centre with some of his intrepid fighters. The moment the two teams reached to the flanks and opened fire at the Maoists, the Maoists too engaged them in a fierce gun-fight. That was the moment which Shri Ashok Kumar, Second-In-Command was waiting for. Seeing that the Maoists had got engaged in a gun-fight with the flanking teams, he dashed forward along with constable Vipin Kumar and other intrepid troopers, without caring for their own lives and throwing all precautions in air, to gain an advantageous ground just at the face of enemy ambush. Before the enemy could understand the game-plan of Shri Ashok Kumar, Second-In-Command and fire at them, he and his team had succeeded in occupying the ground. But only half of the battle had been won by then. The second half of the battle of uprooting the enemy and giving them a scar was yet to be fought.

The same game-plan was yet again played by Shri Ashok Kumar, Second-In-Command. Knowing that to hit the enemy from a close distance it was imperative to press the enemy from one side and hit the other, he ordered the troops at right to open heavy fire and make a tactical advance. The Maoists fell to the trap and as they concentrated their fire on the advancing troops at right, Shri Ashok Kumar, Second-In-Command and constable Vipin Kumar crawled ahead from their covers and with their precise fire inflicted injury to two of the Maoists, who, after getting injured were noticed fleeing backwards into the core of ambush party. Perplexed by the presence of troops at such a close distance, the Maoists opened fire at Shri Ashok Kumar, Second-In-Command and had constable Vipin Kumar not pulled him behind the covers just in the nick of time, Shri Ashok Kumar, Second-In-Command would have received severe bullet injuries. Thereafter in daring act bravery, Sh. Ashok Kumar, Second-In-Command and constable Vipin Kumar threw themselves open to the fire of Maoists with their gun raining bullets and succeeded in killing a Maoist who after getting bullet injury just fell flat on the ground.

The pressure of ever advancing troops, sustaining of injuries and the dead body of one of their cadres forced the Maoists to rethink their strategy and they soon switched to their old strategy of fleeing from the area with the help of supportive fire of each other. The troops chased the fleeing Maoists for some distance but the Maoists fled taking advantage of their familiarity with the area and escape routes. During the search of the area, Dead Body of a Maoist along with one SBML Rifle, one Tiffin bomb, four empty cases of SLR Rifle, fourteen empty cases of AK-47, One Hand Grenade, Electric wire, 50 gm of Explosive and other uniform items were recovered.

For making the operation a big success the credit goes solely to Shri Ashok Kumar, Second-in-Command and Constable Vipin Kumar. During the encounter they advanced towards the enemy without caring for their own lives and never looked for covers. They fought very bravely and with valour and showed courage of the highest order in a fierce encounter which took place at a close distance. In the close combat the death always remained just a whisker away from them. A slight miss would have cost them with their lives. To honour the brave act in the face of grave threats to lives and also for displaying valour and gallant of highest order.

In this operation S/Shri Ashok Kumar, 2-IC and Vipin Kumar, CT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion of duty of a higher order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 24/06/2017.

(No. 11020/107/2018-PMA)

(No. 18004/01/2020-CA-II)

JAGANNATH SRINIVASAN
Officer on Special Duty

MINISTRY OF AGRICULTURE & FARMERS WELFARE
(DEPARTMENT OF AGRICULTURE, COOPERATION & FARMERS WELFARE)

New Delhi, the 13th August 2020

No.8-65/2017-PP.II —In partial modification of Government of India, Ministry of Agriculture & Farmers Welfare, Department of Agriculture, Cooperation & Farmers Welfare Notification No.8-97/91-PP.I dated 26.11.1993, as amended from time to time, it is hereby notified for general information that the following entries shall be included by way of addition or replacement under the relevant heads specifying officers, by designation, who are authorized to inspect, fumigate or disinfect and grant phytosanitary certificates in respect of plants and plant materials intended for export to other countries, which require such certificates: —

II. STATES/UTs:

Tamil Nadu

- (v) Deputy Director of Horticulture,
Department of Horticulture,
Madurai(TN)
(Tamil Nadu)
{ Code No. 'S'(TN) 4 }
- (vi) Deputy Director of Horticulture,
Department of Horticulture
Coimbatore(TN)
(Tamil Nadu)
{ Code No. 'S'(TN) 5 }
- (vii) Deputy Director of Horticulture,
Department of Horticulture,
Thoothkudi(TN)
(Tamil Nadu)
{ Code No. 'S'(TN) 6 }
- (viii) Deputy Director of Horticulture,
Department of Horticulture,
Trichy(TN)
(Tamil Nadu)
{ Code No. 'Nadu

ATISH CHANDRA

Joint Secretary

Note: The original Notification was issued by Department of Agriculture & Cooperation vide Notification No. 8-97/91-PP.I dated 26.11.1993 and subsequently modified vide Notification No. 8-97/91-PP.I dated 25.11.97, Notification No. 8-70/98-PP.I dated 30.09.1999, Notification No. 8-86/2000-PP.I dated 06.11.2001, Notification No. 8-86/2000-PP.I dated 06.05.2002, Notification No. 8-86/2000-PP.I dated 30.05.2002, Notification No. 8-33/2003-PP.I dated 7.6.2004, Notification No.8-217/2004-PP.I(pt.) dated 11.05.05, Notification No.8-217/2004-PP.I(pt.) dated 20.06.05, Notification No.8-217/2004-PP.I(pt.) dated 8.12.05, Notification No.8-217/2004-PP.I(pt.) dated 9.1.06, Notification No.8-217/2004-PP.I(pt.) dated 26th December, 2011, Notification No. 8-217/2004-PP.I(pt.) dated 30th January, 2013, Notification No. 8-217/2004-PP.I(pt.) dated 6th July, 2015, Notification No. 8-217/2004-PP.I(pt.) dated 21st June, 2016, Notification No. 8-217/2004-PP.I(pt.) dated 12th January, 2017 and Notification No. 8-65/2017-PP.II dated 13th April, 2017 and Notification No. 8-65/2017-PP.II dated 11th August, 2017 and Notification No. 8-65/2017-PP.II dated 14th March, 2018, Notification No. 8-65/2017-PP.II dated 10th April, 2018, Notification No. 8-65/2017-PP.II dated 10th May, 2019 and Notification No. 8-65/2017-PP.II dated 16th July, 2019, Notification No. 8-65/2017-PP.II dated 10th December, 2019 and Notification No. 8-65/2017-PP.II dated 21st February, July, 2020.